ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३६६ म अंक १५ मार्च २०२३ (वर्ष १६ मास १८३ अंक ३६६)

[विदेह ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

Videha e-Journal: Issue No. 366 at www.videha.co.in



समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अक्षर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मात्र आखर नहि खाम्ह निर्माण कऽ उद्देश्य (*गद्य-पद्य नहि*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ई त्रिभुवनहि उत्तम ठाकुर कीर्तिहि लती कोना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति:

: :

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.१.रमाकर चौधरी- किडनी आ डाक्टर संबंधित बीमारी/ किडनी बीमारी संबंधित अन्य आवश्यक बात/ किडनी सम्बन्धित बीमारी हेतु उपचार/ लिवर (यकृत) / जिगर/ लिवर बीमारीक सुरक्षा, डाक्टर जांच आ उपचार/ हृदय(Heart)/ हृदयक बाह्य संरचना/ हृदयक आंतरिक संरचना/ हृदय मे अवस्थित वाल्व(वाल्व)/ हृदय सँ सम्बन्धित बीमारी(अस्थिर एनजाइना)- हृदय सँ सम्बन्धित किछु सामान्य बीमारी आ बीमारी विशेषक लेल अवकारक परीक्षण

२.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'- लघुकथा- कनहूसी

२.३.आचार्य रामानन्द मण्डल- आदर्श पुत्र

२.४.आचार्य रामानंद मंडल- सादा जीवन उच्च विचार

२.५.आचार्य रामानंद मंडल- मैथिली साहित्य मे परिवर्तन स आस जागल

२.६.नवीन्द्र नारायण मिश्र- सनिसर वाली काकी

२.७.कुमार मनोज कश्यप- टी0

२.८.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१७)

२.९.जगदीश प्रसाद मण्डल- मोड़पर (धारावाहिक उपन्यास अगारहुम पड़ार)

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल- सिमारक मगड़

२.११.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २३ म खण्ड

२.१२.चित्र रचल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

२.१३.चित्र रचल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र- थाकल छी मुदा थकलहुँ नहि

३.२.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.३.उदय नारायण सिंह नचिकेता- २ टा कविता

४.विदेह पेटार VIDEHA ARCHIVE

४.१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

४.२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

४.३.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

४.४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

४.५.विदेह स्त्री कोना

४.६.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

४.७.विदेह ई-लर्निंग

४.८.मिथिला रत्न

४.९.मिथिलाक खोज

४.१०.१. मैथिलीम छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- ध्यान लेखक पंकज झा प्रकाशनक नूतन साहित्य धानिक खुलासापन पाठकीय टिप्पणी)

४.१०.२. प्रसंग- ध्यान लेखक पंकज झा प्रकाशनक यूनान साहित्यिक धानिक खुलासापन पाठकीय टिप्पणी आ किछु प्रमाण



ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म

: ◌ : : : :

ब्रह्मदेसँ प्रार्थना ज द्युलोकम, अंतरिक्षम, पृथ्वीयन, जलम, औषधम, वनस्पतिम, विश्वम, सब देवतागणम आ ब्रह्मम शांति दऽअय।

ॐ-ब्रह्मदेव, द्यौ-सूर्य-नक्षत्रगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्युलोकक बीच, आपः-जल, विश्वेदेवा- सब देवा, ब्रह्म- सर्जक।

, , , , , , , ।

-, --, - , :-, - , - ।

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

, ↓↑↓ ↑। ↓↓↓ ↓↑।

स भूमिं [illegible] विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

↑ ↓↑ ↓। ↑ ↓॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित कएने अछि, दस आंगुरक गनतीक बाहर सेहो अछि ओ।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्याग्ँ शूद्रो अजायत॥

↓◌↑ ↓ ↑॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्।

↓ ↓↓ ↑↑।

मुदा पएरसँ भूमियाक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

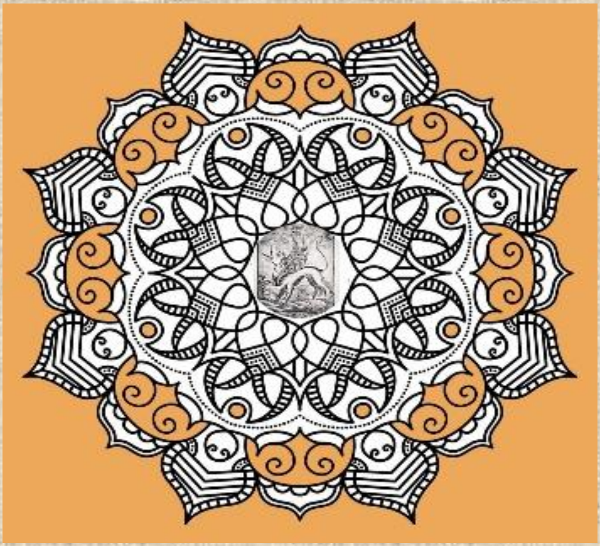
☸ (Wheel of Dharma)

□(Swastik)

□ (सिद्धिनस्तु, सिद्धम , Devanagari Anji)

(Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

(Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६७ पर टिप्पणी

१नूतन अंक सम्पादकीय -गजेन्द्र ठाकुर.१.

१

MAITHILI SIGN LANGUAGE (DEVANAGARI / MITHILAKSHAR/ KAITHI / NEWARI)

मैथिली संकेत लिपि (संकेत भाषा)

मैथिली संकेत लिपि मूक बधिर लेल सांकेतिक भाषा अछि।

अमेरिका (American Sign Language- ASL) आ ब्रिटिश (British Sign Language- BSL) मे संकेत लिपि निर्माण भेल जे विश्व भरिमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। अमेरिका (American Sign Language- ASL) एक हाथसँ आ ब्रिटिश (British Sign Language- BSL) दुनू हाथसँ संकेत करैत अछि।

भारत आ नेपालमे सेहो संकेत लिपिक निर्माण भेल।

भारतक संकेत लिपिकेँ (Indian Sign Language- ISL) कहल जाइत अछि जे Indian Sign Language Research and Training Centre http://www.islrtc.nic.in/ *द्वारा विकसित कएल गेल आ ओकरामे एकरूपता आनल गेल। आइ.एस.एल. डिक्शनरी आ सं*

कए रखाम किछु एन. सी. ई. आर. टी. कए याथी उपलब्ध अछि लिंक https://www.youtube.com/@islrtcnewdelhi4069/playlists *पर।*

-

कचटगय आधारित देवनागरी लिपिमे रमेश एम. कागलकर http://rameshkagalkar.appspot.com *मराठीमे आ* Nepal National Federation of the Deaf & Hard of Hearing (NFDH) *नेपालीमे एकरा विकसित कलहि। एमयानन कान्हनस 2021 म अमल इत आश्विन, सूनील कुमार काथ्यानायू आ वी. श्रीनिवास चक्रान र्री तमिल आ आन ईंग्लिक लिपि लल अयन संकल्पना प्रस्तुत कलहि।*

मुक-वधिन स्कूल सरम माटा-माटी अमेरिकन साइन लैंग्वेज पढायल जाइत अछि मुदा ईंग्लिक सिक्राश्च ब्रिटिश साइन लैंग्वेज द्वारा वर्णी नीकसँ प्रदर्शित कएल जा सकैत अछि। *मैथिली (देवनागरी, मिथिलाक्षर, कैथी, नवाठी- चानु कचटगय आधारित) संकेत लिपिब्रिटिश* (British Sign Language-BSL) यन आधारित अछि आ दुनू हाथसँ संकेत कएल अछि।

संकेत लिपि वीडियो

मात्र याथीक माध्यमसँ संकेत लिपि नै सीखल जा सकैत अछि। एन. सी. ई. आर. टी. २२ रखाम संकेत लिपिक वीडियो जारी कए अछि, जइमे मैथिली, नेपाली, मराठी आ तमिलक लिंक नीचाँ दल गेल अछि। शेष सर टा रखाक लिंक ओ याथीक अन्तमे दल गेल अछि।

मैथिली: https://youtu.be/Jo3T3E2OJRM

नेपाली: https://youtu.be/9_A3EK_fV24

मराठी: https://youtu.be/93BVVsJVUks

तमिल: https://youtu.be/6ecBHlL_Hu4

ई पोथिया सभक विशेषता अछि:

१.ई सभ ध्वनि सेहो अछि, से मूक-बधिरक अतिरिक्त आन लोक आ दृष्टि बाधित लोक लेल सेहो उपयोगी अछि।

२.ध्वनिक संग पोथियामे संकेत लिपिक प्रयोग भेल अछि।

३.पोथियामे ट्रांसक्रिप्ट सेहो देखाओल अछि जाहिमे ओहि भाषाक संग ओकर हिन्दी आ अंग्रेजी अनुवाद सेहो देल गेल अछि। ई लिंक https://ncert.nic.in/bs-2021.php पर ई बारहो भाषाक पी.डी.एफ. सेहो उपलब्ध अछि जाहिमे ओहि भाषाक लिपिक पाठक संग ओहि भाषाकेँ देवनागरी आ रोमन लिपिमे सेहो लिखल गेल अछि, जे हिन्दी आ अंग्रेजी अनुवादक अतिरिक्त अछि।

संकेत लिपि कोष

संकेत लिपि कोष **https://www.islrtc.nic.in/** लिंकपर उपलब्ध अछि।

RESOURCES:

Indian Sign Language Research and Training Centre based Projects of ISL http://www.islrtc.nic.in/

ISLRTC YouTube Channel (for ISL Dictionary and some NCERT Books): https://www.youtube.com/@islrtcnewdelhi4069/playlists यना

Ramesh M Kagalkar http://rameshkagalkar.appspot.com

Nepal National Federation of the Deaf & Hard of Hearing (NFDH)

Empowering Speech and Hearing Impaired: A Unified Fingerspelling System for Indic Scripts- (https://empower2021.iiitb.ac.in/paper2021/) Authors (1)AMAL JUDE ASHWIN F, Bhupat & Jyoti Mehta School of Biosciences, Department of Biotechnology, IIT Madras, India (2) SUNIL KUMAR KOPPARAPU, TCS Research, Tata Consultancy Services Limited, India & (3) V. SRINIVASA CHAKRAVARTHY, Bhupat & Jyoti Mehta School of Biosciences,

Department of Biotechnology, IIT Madras, India

SIGN LANGUAGE VIDEOS IN 22 LANGUAGES https://www.youtube.com/@videha_ejournal (courtesy:BHASHA SANGAM https://ncert.nic.in/bs-2021.php)

MAITHILI : https://youtu.be/Jo3T3E2OJRM

NEPALI : https://youtu.be/9_A3EK_fV24

MARATHI : https://youtu.be/93BVVsJVUks

KONKANI : https://youtu.be/gTjPY_ebTfU

GUJARATI : https://youtu.be/kEVuFO8mYuM

SAMSKRIT: https://youtu.be/IU6o_oNSckQ

BANGLA: https://youtu.be/JTrOw8vVTtA

ASAMIYA: https://youtu.be/MpX9d-NI7dg

ODIYA: https://youtu.be/XROIdeGqnXk

SANTHALI : https://youtu.be/3lxtfz3_R-c

Hindi : https://youtu.be/2PoOrwsnY88

URDU: https://youtu.be/6UWTq5Z9U2c

PUNJABI: https://youtu.be/gWw4IQFCZ2w

DOGRI: https://youtu.be/DPKtPI9qJbY

KASHMIRI: https://youtu.be/vIVr4E5H-6c

BODO: https://youtu.be/DhRLfc-uWLA

SINDHI: https://youtu.be/SJAmLreMz4s

TAMIL: https://youtu.be/6ecBHlIL_Hu4

MALAYALAM: https://youtu.be/nW9e5eO6a_E

KANNADA: https://youtu.be/UOSdbM9Qs1w

TELUGU: https://youtu.be/_Gz1Sudph3Q

MANIPURI: https://youtu.be/WBHcO-wShJk

KEYMAN TIRHUTA/ VEDIC SANSKRIT KEYBOARD FOR WINDOWS/ MAC OS/ LINUX UBUNTU-WASTA_LINUX-DEBIAN OS/ ANDROID PHONE/ APPLE IPHONE-IPAD/ WEB

. ◌

𑓇 𑒬𑓂𑒩𑒲𑓁𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢𑒱𑒖 𑒑𑓂𑒪𑓀𑒑 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 :

I.

FOR WINDOWS DESKTOP

GO TO https://keyman.com/windows/download.php

OR

GO TO https://keyman.com/keyboards?q=tirhuta

Download "Tirhuta" Keyboard from https://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.tirhuta.exe?_ga=2.26983796.856782072.1678802904-87949676.1676042074 if you are comfortable with Remington Inscript Keyboard (it

uses "Mithila Uni" font) otherwise Download "Malar Tirhuta" keyboard fromhttps://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.malar_tirhuta.exe?_ga=2.26983796.856782072.1678802904-87949676.1676042074 if you are comfortable with phonetic writing (it uses "NOTO SANS TIRHUTA" font).

GO TOhttps://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.itrans_devanagari_sanskrit_vedic.exe?_ga=2.267216455.856782072.1678802904-87949676.1676042074 (For Vedic Sanskrit phonetic keyboard)

II.

FOR APPLE MAC OS

Go to https://keyman.com/mac/download.php and download the software.

III.

FOR LINUX DESKTOP

GO TO https://keyman.com/linux/download.php

IV.

FOR ANDROID PHONES

GO TO "GOOGLE PLAY STORE" on your phone and download Keyman APP (details at https://keyman.com/android/)

V.

FOR APPLE IPHONE/ IPAD IOS

GO TO APPLE APP STORE ON YOUR PHONE AND DOWNLOAD KEYMAN APP. (details at https://keyman.com/iphone-and-ipad/)

VI.

FOR ONLINE WEB TYPEWRITER

GO TO https://keymanweb.com/

http://videha.co.in/

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६७ पर टिप्पणी

अंक ३६७ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

समस थिक दुर्वादल, आशीर्वादक,

माल-जाल अछि चरैत, अपन स्वादक।

उम्मेद अछि ज राजकिशोर मिश्रजी अपन रचनाशीलता बनौने रहताह।

शम्भू कुमार सिंह आ राजेश जनकपुरी जी लागातार आबि रहल छथि स नीक। कुमार मनोज कश्यप जीक लघुकथा केर विषय ठीक अछि मुदा ठाकन अंतकेँ आर ठोस बनाओल जा सकै छलै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.रमाकर चौधरी- किडनी आ ओकर संबंधित बीमारी/ किडनी बीमारी संबंधित अन्य आवश्यक बात/ किडनी सम्बन्धित बीमारी हेतु उपचार/ लिवर (यकृत) / जिगर/ लिवर बीमारीक सूचना, ओकर जांच आ उपचार/ हृदय(Heart)/ हृदयक बाह्य संरचना/ हृदयक आंतरिक संरचना/ हृदय मे अवस्थित वाल्व(वाल्व)/ हृदय

सँ सम्बन्धित बीमारी(अस्थिर धड़कना)- हृदय सँ सम्बन्धित किछु सामान्य बीमारी आ बीमारी चिन्हैक लेल आवश्यक परीक्षण

२.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'- लघुकथा- कनकुसी

२.३.आचार्य रामानन्द मण्डल- आदर्श पुत्र

२.४.आचार्य रामानंद मंडल- सादा जीवन उच्च विचार

२.५.आचार्य रामानंद मंडल- मैथिली साहित्य मे परिवर्तन के आस जागल

२.६.रवीन्द्र नारायण मिश्र- सनिचर वाली काकी

२.७.कुमार मनोज कश्यप- टी0

२.८.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१५)

२.९.जगदीश प्रसाद मण्डल- माटयन (धारावाहिक उपन्यास अगिला भाग)

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल- सिमानक झगड़ा

२.११.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २३ म खण्ड

२.१२.बिहनि कथा दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

२.१३.बिहनि कथा सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

२.१.रमाकान्त चौधरी- किडनी आ डाकन संबंधित बीमारी/ किडनी बीमारी संबंधित अन्य आवश्यक बात/ किडनी सम्बन्धित बीमारी हेतु उपचार/ लिवर (यकृत) / जिगर/ लिवर बीमारीक सूचना, डाकन जांच आ उपचार/ हृदय(Heart)/ हृदयक बाह्य संरचना/ हृदयक आंतरिक संरचना/ हृदय मे अवस्थित वाल्व(वाल्व)/ हृदय सँ सम्बन्धित बीमारी(अस्थिर एनजाइना)- हृदय सँ सम्बन्धित किछु सामान्य बीमारी आ बीमारी विवरणक लेल अवकालक परीक्षण



रमाकान्त चौधरी, सेवानिवृत्त चीफ मैनेजर, राष्ट्रीय स्टेट बैंक

किडनी आ डाकन संबंधित बीमारी/ किडनी बीमारी संबंधित अन्य आवश्यक बात/ किडनी सम्बन्धित बीमारी हेतु उपचार/ लिवर (यकृत) / जिगर/ लिवर बीमारीक सूचना, डाकन जांच आ उपचार/

हृदय(Heart)/ हृदयक बाह्य संरचना/ हृदयक आंतरिक संरचना/ हृदय मे अवस्थित वाल्व(वाल्व)/ हृदय सँ सम्बन्धित बीमारी(अस्थिर एनजाइना)- हृदय सँ सम्बन्धित किछु सामान्य बीमारी आ बीमारी चिन्हैक लेल आवश्यक परीक्षण

१

किडनी आ एकर संबंधित बीमारी

पाचन तंत्र मे किडनीक भूमिका अति महत्वपूर्ण होइत अछि। आइ काल्हि देखि रहल छी जे अधिकांश लोक किडनी सम्बंधित बीमारी सँ ग्रसित भ' जाइत छथि। हम किडनी आ एहि सँ सम्बंधित बीमारी आ एकर सूजन आ उपचार विषय मे चर्चा करय रहल छी।
किडनीक भूमिका शरीर मे उपस्थित लवण, पोटासियम, हॉर्मोनस इत्यादि कें नियंत्रित करै मे मुख्य अछि।
किडनिक बीमारी अहाँक खान-पिनैक आदत , जीवन चर्या, आ वंशानुगत कारक इत्यादि कारण सँ होइत अछि।
किडनी पीठ मे होइत अछि, ठीक पाँजरक निच्चा मे। एकर आकार मुट्ठी जकाँ होइत अछि। ई मनुष्यक
दुनु भाग मे रहैत अछि । एक टा एक भाग आ दोसर दोसर भाग मे।
किडनी स्वस्थ रहैक लेल परम आवश्यक अंग होइत अछि। ई रक्त के छानि शुद्ध करैत अछि। रक्त मे अवस्थित विषाक्त पदार्थ, व्यर्थ पदार्थ या अन्य सब दोषपूर्ण पदार्थ के छानि कें हटा दैत अछि। ई व्यर्थ पदार्थ सब थैली मे जमा भ' जाइत अछि आ ई

पश्चात माध्यम सँ बाहर निकलि जाइत अछि।

किडनी शरीरक पीएच(PH) नियंत्रित करैत अछि, ई एक तरहक हॉर्मोन स्रावित करैत अछि जे रक्त चाप नियंत्रित करैत अछि, रक्त कोशिका निर्माणक प्रक्रिया मे सेहो किडनिक भूमिका अछि आ ई एक तरहक

विटामिन डी कें सक्रिय करैत अछि जे आँत द्वारा कैल्शियम अवशोषण मे सहायक होइत अछि। एहि तरहेँ किडनी अति महत्वपूर्ण अछि।

अधिक रक्त चाप आ मधुमेह सँ किडनी क्रमिक रूप सँ खराब भ जाइत अछि। अधिक दिन अनेक तरहेँ शरीर रुग्ण रहलाक कारण सँ सेहो किडनी पर असरि पड़ि जाइत अछि।

किडनीक खराबी सँ अनेकानेक शारीरिक समस्या आबि जाइत अछि। हड्डी कमजोर, नस कमजोर, शरीर मे विटामिन आ यौगिक तत्व सबहक बहुत कमी इत्यादि होमय लागैत अछि। अंतत बहुत दिन धरि किडनी खराब रहैत अछि त अंततः पूर्ण रूपेण किडनी काज करब बन्द क दैत अछि आ तखन मरीज कें डायलायसिस पर राखि रक्त क साफ शरीर सँ बाहर करय पड़ैत अछि। एहि सँ बीमारी छूटैत नहि अछि बल्कि किछु समय धरि एहि उपचार सँ जिंदगी जरूर बाँचल रहैत अछि। तेँ हमरा किडनी करा स्वस्थ बनल रहय एहि पर प्रारम्भ सँ ध्यान देबाक चाही।

किडनी सबन्धित अनेक तरहक बीमारी होइत अछि।

1. दीर्घकालिक किडनी बीमारी।

जखन रक्तचाप बढल रहैत अछि या मधुमेह रहैत अछि तखन धीरे धीरे ई किडनी मे अवस्थित ग्लोमेरुलाइ क क्षति पहुँचबैत

अछि। (ग्लामुनलाॅ कितनी म अनस्थित अर्थात लघु नक नाहिका हाॅत अछि तथा ॅॅउह नक क छनेत अछि आ दाषयुर्ण यदार्थ क हटबेत अछि। क्रमसः धीन धीन अधिक नक चाय तथा मधुमह सँ उा अंतः युर्णनुयधा उाति ट जाॅत अछि आ तखन करेत छी उा कितनी काज कनाय वह क दलक अर्थात कितनी हल। ओहि तनहक कितनीक खनावी दीर्घकालीक वीमानी कहल जाॅत अछि।

2. कितनी म याथन।

जखन व्यर्थ यदार्थ तथा खनिज तत्व(minerals) सरक क्रिस्टिलीकनध कितनी म ट जाॅत अछि तखन उा (0ास याथन नुय म कितनी म खनावी करेत अछि। अक्षन छाट याथन यशाव माध्यम सँ निकलि जाॅत अछि मगन नमहन तँ शल्य चिकित्सा सँ वाहन निकालल जाॅत अछि। समय सँ उयवान कय युर्ण नुयधा ओहि सँ वंगा टल जा सकेत अछि।

3. (ग्लामनुलानक्राॅटिस

जखन (ग्लामनु अर्थात कितनिक अंदनक छाट नलनाहिका संक्रामित टs

हलि (inflamted) जाॅत अछि , उाकना "(ग्लामनुलानक्राॅटिस" कहल जाॅत अछि। कखना काल वच्चाक जन्म काल उा ट जाॅत छैक यनञ उा अयन 0ीक ट जाॅत छैक। ओकन उयवान ओरीॅह्क्लान दनाॅ सँ टय जाॅत अछि।

4.यॉलीसिस्टिक वीमानी।

कितनी म साधानध सिस्ट ट सकेत अछि। कखना काल ओहि सिस्ट सरक कानध कितनीक कार्य नाधित हाॅत अछि।

5. मुत्र प्रणालीक संक्रमध (Urinary tract infection) आ

तत्पश्चात किडनी बीमारी।

मूत्र प्रणाली मे जीवाणु द्वारा संक्रमण होयब सामान्य थिक। ई संक्रमण, बैक्टीरिया द्वारा होइत अछि। ई पूर्णतया दवाइ सँ ठीक भ सकैत अछि। अगर ससमय संक्रमित छोड़ि देल जाइत अछि तखन संक्रमण किडनी धरि पहुँचि जाइत अछि। तहि सँ क्रमिक रूपेण किडनी कार्य बाधित होइत अछि। अंततः किडनी खराब भ जाइत अछि। तेँ समय रहैत मूत्र प्रणालीक संक्रमण चिकित्सक सलाह अनुरूप दवाइ खा पूर्णतया ठीक क लेबाक चाही।

२

किडनी बीमारी संबंधित अन्य आवश्यक बात

किडनी बीमारीक लक्षण

जतेक धरि लक्षण नहि अबैत अछि ततेक धरि किछु पता नहि चलैत अछि जे किडनी क्रमिक खराब होइ क तरफ अछि। तेँ हमु सबकेँ रोकथाम (prevention) हेतु ध्यान रहक चाही आ समय समय पर जांच सेहो करबाक चाही। शुरू मे लक्षण त पता सेहो नहि चलि पबैत अछि आ बहुतो लोक ध्यानो नहि द पबैत अछि।

(क)शुरू मे लक्षण

1. अपन प्रति दिनक दिनचर्या पर , काज सँ पर थाकल नहि क पबैत छी आ चिकित्सक सदैव क अनुमान लगा। दवाइ सेहो द रहल अछि।

2. थकान थकान क अनुभूति होइत अछि। शारीरिक स्फूर्ति कम भ गेल अछि ई अनुभूति कs आलस्य मे रहैत छी।

3. ठीक सँ सुतैत नहि छी। कहैत छी ज नींद म दिक्कत र नहल अछि।

4.अनुचि सब्द र जाइत अछि। रोजन नूचि पूर्वक नहि करैत छी।

5.अनुरव करैत छी जगह जगह हमन माँग पड़ी उठ नहल अछि।

6. येन ऊन टखना फूलि जाइत अछि।

7.आँखि कन निचूलका हिस्सा सब्द फूलि जाइत अछि।

8. शनीनक व्रवा नूज र जाइत अछि।

9. दन नात्रि म पशावक वेग किछु अधिक आवय लगैत अछि।

ई सब रोल छोट छोट लक्षण। मगन एहि सब लक्षण सँ एहि निष्कर्ष पन कदाचित नहि जा सकैत छी ज किडनी वीमानी रैय गेल। मगन संरावना त अछिय ज हो न हो कहीं किडनी वीमानी नहि त र नहल अछि। ऍ जांच कना पक्का र जाय तहि म कान हर्जा।

(ख)किडनी वीमानीक किछु गम्भीन लक्षण जकना पन ध्यान दनाय अति आवश्यक होइत अछि।

हन समय जी मिचलैत नहव, नइ होयव, रोजन कनवाक बिल्कुल इच्छा नहि होयव, पशाव रोनाइ बिल्कुल कम र जायव, लाल नक्त कणिका कम र जायव, शनीन म पानि जमा र जायव(fluid retention), शनीनक पाटासियम स्तन सामान्य सँ अधिक एकाएक

𑒩 𑒖𑒰𑒨𑒥, 𑒯𑒵𑒠𑒨(heart) 𑒏 𑒆𑒣𑒩𑒲 𑒦𑒰𑒑 𑒣𑒹𑒩𑒲𑒏𑒰𑒩𑓂𑒛𑒱𑒨𑒧 𑒤𑒴𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒥 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒄 𑒮𑒥 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒞𑒳𑒩𑒢𑓂𑒞 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒠 𑒔𑒱𑒏𑒱𑒞𑓂𑒮𑒏 𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲।

𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑓂𑒨 𑒏𑒰𑒩𑒏

𑒏𑒱𑒛𑒢𑒲 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

1. 𑒁𑒑𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒧𑒡𑒳𑒧𑒹𑒯 𑒮𑒿 𑒑𑓂𑒩𑒮𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒍 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒝 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒱𑒛𑒢𑒲 𑒐𑒩𑒰𑒥 𑒦 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

2. 𑒁𑒑𑒩 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒠𑒻𑒫 𑒩𑒏𑓂𑒞 𑒔𑒰𑒣 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒍 𑒋𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒱𑒛𑒢𑒲 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒼𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

3. 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒖𑒿 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒱𑒛𑒢𑒲 𑒩𑒼𑒑 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 , 𑒞𑓄 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒏𑒱𑒛𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒹𑒪।

4.𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒅𑒧𑓂𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒏𑒱𑒛𑒢𑒲 𑒮𑓀𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒹𑒪।

𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒝

चिकित्सक लोकनि निश्चित रोगक परीक्षण करय पता करैत छथि जे किडनी बढ़ियां जकाँ अपन कार्य क रहल छैक वा नहि। अगर नहि त की स्थिति छैक। आ तद अनुकूल उपचार करैत छथि।

1. GFR परीक्षण।

ई परीक्षण अछि "ग्लोमेरूलर फिल्टरेशन रेट"

एहि परीक्षण सँ पता चलि जाइत अछि जे किडनी कतेक नीक जकाँ अपन कार्य क रहल छैक। अर्थात किडनिक कार्यक वास्तविक स्थित की छैक।

2. अल्ट्रासाउंड / सी टी स्कैन

एहि सँ चिकित्सक देखि ई पता करैत छथि जे किडनिक आकार प्रकार (shape/size) ठीक अछि कि नहि, कोनो ट्यूमर नहि त छैक, पेशाब नली(Urinary tract) सेहो देखि लैत छथि। एहि तरहेँ देखि पता करैत छथि जे किडनी सामान्य अछि वा नहि।

3. बॉयाप्सी

एहि परीक्षण म चिकित्सक मरीज कँ बेहोश क एक टा छोट टुकड़ी किडनी म सँ निकालि परीक्षण करैत छथि आ पता करैत छथि जे कोन तरहक बीमारी छैक आ किडनी क कतेक जोखिम पहुँचल

छैक।

4. पेशाब परीक्षण

एहि परीक्षण सँ चिकित्सक पता करैत छथि जे पेशाब मे कहीं एल्ब्युमिन नहि त आबि रहल छैक। एल्ब्युमिन एक तरहक प्रोटीन छैक आ ओकर पेशाब मे उपस्थित बाबैत छैक जे किडनीक क्षति भ' रहल छैक।

5.रक्त क्रोटीन स्तर परीक्षण

ओकर सामान्य स्तर होइत अछि 0.5 सँ 1 .0 धरि। जँ सामान्य सँ बढल अबैत अछि तखन ई इंगित करैत अछि जे किडनी क क्षति भ' रहल छैक।

एहि तरहेँ ई सब विभिन्न तरहक परीक्षण होइत अछि जाहि सँ चिकित्सक लोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि जे किडनीक बीमारी छैक वा नहि। अगर छैक तँ कोन स्थिति मे छैक। तद अनुकूल उपचार करैत छथि।

२

किडनी सम्बन्धित बीमारी हेतु उपचार

वास्तविकता अछि जे एकर उपचार मे ई ध्यान देल जाइत अछि जे बीमारी होइक कारण की सब छैक। कहीं शरीरक रक्त चाप नहि त बढ़ल रहैत छैक, कहीं मधुमेह नहि त बढ़ि गेल छैक, कहीं कोलेस्ट्रॉल नहि त बढ़ल छैक, ई सब ध्यान मे रखैत चिकित्सक द्वारा दवाइ दैत छथि जाहि सँ ई सब नियंत्रण मे रहैक आ किडनीक खराबी और नहि बढ़ै । किडनी अपन कार्य करैत रहैक ओकर ध्यान देल जाइत अछि, अर्थात ओकर कार्य करैक क्षमता संतुलित रहैक। एहि मे चिकित्सक फुलनाइ कम होइ लेल तथा लाल रक्त कणिका मे वृद्धि होइक लेल(जँ एनीमिया भऽ गेल छैक) दवाइ द सकैत छथि अगर एहि सब तरहक लक्षण देखा पड़ैत छैक।

समुचित डाइट या खानपानक महत्व दवाइ सँ कम नहि तँ ओहि पर ध्यान देनाय अति आवश्यक भऽ जाइत छैक। किडनी संदर्भित बीमारीक कारण सभ कें दूर करबाक लेल नीचा लिखल किछु परामर्श अछि।

1. खान पान और दवाइ क प्रबन्धन द्वारा होबाक चाही जे मधुमेह बिल्कुल नियंत्रण मे रहय।

2.अधिक कोलेस्ट्रॉलयुक्त पदार्थ नहि खेबाक चाही।

3. प्रति दिनक आहार मे नूनक मात्रा कम करी।

4. जे पदार्थ हृदय(heart) स्वास्थ्य लेल बढ़ियां नहि छैक जेना तेल घी के आहार मे वर्जित या कम करू। जाहि लेल बढ़ियां जे होइत छैक जेना हरल सब्जी इत्यादि ताकेना पर ध्यान देबाक चाही।

5. मदिरा पान तथा सिगरेट बिल्कुल वर्जित।

6. प्रति दिन शरीर सँ कार्यशील

(active) रहू। हल्का टहलनाइ फायदा करत।

7. अपन शरीरक वजन नियंत्रित रहबाक चाही।

ई एक बेर किडनी खराब भ गेल तँ जा जौन अधिक खराब नहि हो ताहि लेल उपचार होइत अछि । आगाँ ई खराब होइत जायत तँ अंततः किडनी अपन कार्य करय पूर्णतः बन्द कय दैत छैक। एहना परिस्थिति मे मात्र डायलीसिस उपचार या किडनी ट्रांसप्लांट सैह दु टा उपाय अछि। डायलीसिस मे रक्त के गंदगी के छानैक प्रक्रिया शरीर सँ बाहर मशीन द्वारा होइत अछि । 3-

4 घंटा लागि जाइत छैक प्रक्रिया मे। अस्पताल सप्ताह मे औसतन 3 बेर करावय पड़ैत छैक। (मरीजक हालत जरूर होइत अछि तखन उपचार)

ट्रांसप्लांट मे जँ किडनी डोनर तैयार होइत छथिह तखन हॉस्पिटल तथा चिकित्सक कँ सब तरहेँ किडनी मैचिंग संदर्भित संतुष्टि उपरान्त किडनी ट्रांसप्लांट कऽ देल जा सकैत अछि।

सर्वोत्तम तथ्य अछि जे सभ किडनी क अपन स्वास्थ्य क प्रति जागरूक होयबाक चाही। एक तँ डाइट दिन चर्या, आहार - विहार होयबाक चाही जे किडनी खराब होयबाक संभावना बिल्कुल नहि वा बहुत कम होइक। दोसर संभव कारण सँ प्रभावित छी वा नहि , कहीँ खराब होनाइ प्रारम्भ नहि त भ गेल ताहि लेल नियमित जांच अवश्य करबाक चाही ताकि समय रहैत प्रतिकार कऽ सकी।

विशेष ध्यान देबाक योग्य बात जाहि सँ किडनी संबंधित बीमारीक संभावना क कम कएल जा सकैत अछि।

1. जँ एस्पिरिन या आइब्रूफेन दवाइ खाय पड़ैत अछि तँ चिकित्सक परामर्श सँ डाक्टर खानाक प्रबन्धन हेतु अवश्य संपर्क करु। कारण

ओ किडनी कें क्षति पहुँचबैत अछि। कारण कनु कम खाय क प्रयोजन होइछैक। अपन मोन नहि। चिकित्सक केर अनुशंसा परम आवश्यक।

2.दिन राति म पानि उचित सँ कम कथमपि नहि पिबू। शरीरक मुताबिक जे उचित अछि अवश्य पीबू।

3.रक्त चाप तथा मधुमेह बीमारी बिल्कुल नियंत्रण म रहय ताहि लेल प्रबन्ध करबाक चाही।

4. सिगरेट आ मदिरा सँ परहेज केनाय नीक रहत।

5. खान पान म नूनक मात्रा कम रहय ओकर प्रयास बढ़ियाँ रहत।

6. अधिक नून, अधिक जानवर वला प्रोटीन(चिकन), पालक, बीट, शकरकंद म ओहन रसायन सेहो होइत अछि जाहि सँ किडनी म पथरीक संभावना बढ़बैत अछि त ओ सब समीचीन रूप सँ खेबाक चाही।

7. बिना चिकित्सक परामर्श अह्वाघाहिस कैल्सियम सप्लीमेंट सेहो ठीक नहि। कारण कोना कोना सप्लीमेंट किडनी पथरीक संभावना बढ़बैत अछि।

सब किछु क बाद ई प्रयत्न होयत जे समय समय पर सब किछु लल नियमित जांच कराओल जाय ताकि समय पर समुचित खान पान और दिनचर्या सँ सब किछु नियंत्रण कए सकी।

४

लिवर (यकृत) / जिगर

लिवर(Liver)

लिवरक नाम यकृत , जिगर , कलजा सेहो अछि।

पाचन तंत्रक एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग अछि। ई एक प्रकारक ग्रंथि छी।

शरीरक आंतरिक अंग मे लिवर सबसँ

भारी अंग /ग्रंथि होइत अछि। एकर आकार फुटबॉल जकाँ होइत अछि। मुख्यतया ई पेटक उपरका भाग मे दाहिना तरफ होइत अछि। डायफ्राम क नीचाँ आ आमाशय(stomach) सँ ऊपर। एकर थोड़ बहुत भाग पेटक बांयाँ तरफ तक सेहो रहैत अछि।

एकर वजन करीब ३८ किलो होइत अछि। शरीर मे पाचन क्रिया

तथा शरीरक सुरक्षा(defence) मे लिवरक बहुत अधिक महत्व अछि। शरीरक अंदर सैकड़ों रासायनिक क्रिया मे लिवरक भूमिका महत्वपूर्ण अछि। शरीर मे आन अंगक अनावश्यकीय रसायन सभ लिवर द्वारा स्रावित होइत अछि तेँ ओकरा आवश्यक ग्रंथि कहल जाइत अछि।

सारांश मे लिवरक मुख्य कार्य अछि

1. पाचन तंत्र सँ अएल वसा सभ रक्त कें शुद्ध क अन्य अंग कें आपूर्ति करैत अछि।

2. शरीरक अंदर रासायनिक प्रक्रिया मे जे कारा हानिकारक(toxic) रसायन बनैत अछि तकरा हानिरहित(detoxify) करैत अछि।

3. दवाइ जे हम सभ खैत छी। ओकरा मेटाबोलाइज क शरीर द्वारा अवशोषित होबाक योग्य रसायन मे परिवर्तित करैत अछि।

4.शरीरक अंदर विभिन्न तरहक कार्य हेतु विभिन्न तरहक प्रोटीनक आवश्यकता पड़ैत छैक जेना कि रक्तक थक्का बनबैक लेल प्रोटीन। ई प्रोटीन सभ लीवर बनबैत अछि।

5.शरीर मे जे ऊर्जाक उपयोग होइत अछि ग्लाइकोजन रूप मे। भोजन सँ प्राप्त ग्लूकोज सँ ग्लाइकोजन मे परिवर्तनक कार्य लिवर

करैत अछि आ ई ग्लाइकोजन लिवर कोशिका एवं शरीरक मांसपेशी कोशिका मे जमा रहैत अछि। एहि संरक्षित ऊर्जा सँ शरीर जरूरत पड़ला पर ऊर्जाक उपयोग करैत अछि।

6. कोलेस्ट्रॉल एवं ट्रायग्लीसराइड्स निर्माण मे लिवर के भूमिका होइत अछि।

7.लिवर पित्त(bi l e) के निर्माण करैत अछि जे केवल तेल भोजन के पचबै मे सहायक होइत अछि।

8.लिवर इन्सुलिन हॉर्मोन तथा अन्य हॉर्मोन सब के तोड़ैत अछि आ ओकर उपयोग मे अनेक योग्य बनबैत अछि।

9. लिवर केवल तेल भोजन सँ विटामिन (विटामिन ए , विटामिन डी, विटामिन ई, विटामिन के, विटामिन बी 12)आ खनिज सब(आयरन जेना टीन रूप मे जाहि सँ नया रक्त कण बनैत अछि) के संग्रहित करैत अछि आ आवश्यकतानुसार ओकर सरुक काज शरीर मे होइत रहैत अछि।

10. लिवर भोजन मे लल तेल वसा (fat) के अलग करबाय आ ओकरा संग्रहित करबाय के कार्य करैत अछि। आवश्यकतानुसार जखन आवश्यकता होइत अछि, ओहि सँ शरीरक हेतु ऊर्जा निर्गत होइत अछि।

11. लिवर शरीर मे जरुरत होइ बला एंटीबाडी आर एंटीजन सहक सङ्ग निर्माण करैत अछि।

एहि तरहेँ लिवर शरीर मे बहुत महत्वपूर्ण काज सब करैत अछि। लिवर स्वस्थ रहय ताहि लेल उचित खान पान आर दिनचर्या अति आवश्यक अछि।

लिवर विषय मे एक महत्वपूर्ण तथ्य अछि जे ई बहुत शक्तिशाली होइत अछि। ओकरा अपन पुनर्निर्माण क क्षमता अद्भुद अछि। शरीरक करीब 10 प्रतिशत रक्त लिवर मे रहैत अछि।

३

लिवर बीमारीक लक्षण, ओकर जांच आ उपचार

लिवरक बीमारी आ ओकर लक्षण एवं उपचार।

जँ अपन खान पान आर जागरुकता सुदृढ रहय तँ अधिकाधिक संभावना रहैत अछि जे लिवर सम्बन्धित बीमारी सँ बाँचल रही।

लक्षण हेतु की सब पर ध्यान देबाक चाही , किछु बात निम्न बत

रहल छी।

1. मदिरा पान बिल्कुल नहि करू आ जँ करब करैत छी तँ बिल्कुल अल्प मात्रा एवं संजमित रूप सँ।

2. शरीरक वजन अगर बढ़ि रहल अछि तँ ओहि पर ध्यान दियौक जे अधिक नहि बढ़ए।

3.मधुमेह बीमारी खास क टाइप 2 रूपा सँ बाँचल रहू। कम और समुचित ग्लायसमिक लोड वला आहार सँ त एहि बीमारी सँ बाँचल रहल जा सकैत अछि।

4. शरीर पर कोनो तरहक टैटू नहि बनबाबक चाही।

5. शरीर म जँ सूईया लेबाक प्रयोजन पड़ैत अछि तँ ध्यान देबाक चाही जे जाहि सूईयाक प्रयोग भ रहल अछि ओ बिल्कुल दोसरा क सूईया दे म प्रयोग नहि भेल हो। अर्थात बिल्कुल नया ।

6. दोसराक शरीरक रक्त या शरीर तरल सँ संपर्क सँ सुरक्षित रहबाक चेष्टा करू।

7. खून चढ़ेबाक प्रयोजन पड़ला पर ध्यान देबाक चाही जे खून पूर्ण

सुरक्षित अछि।

8. असुरक्षित सम्भोग बिल्कुल नहि।

9. किछु डाक्टर रसायन या टाक्सिन होइत अछि जाहि सँ लिवर बीमारीक संभावना रहैत अछि। ओहि सँ सुरक्षित रहक चाही।

10. किछु कँ आनुवंशिक इतिहास रहैत छन्हि लिवर बीमारी कँ। हुनका बिल्कुल सतर्क और सजग रहवाक चाही।

11. साफ सफाइ पर ध्यान देवाक चाही। भोजन खवा म, पिवा म, यानि विवेक म इत्यादि सब म ताकि कोनो तरहक संक्रमण सँ दूर रही।

12. बिना चिकित्सक अनुशंसाक दवाइ अन्धाधुन्ध नहि खवाक चाही।

13. जँ संभावना हो त हेपटाइटिस बला लोकक संपर्क म आबि सकैत छी तँ टीका ल लिअ (वयस्कन।

लिवर बीमारीक कारण आ ओकर विभिन्न प्रकार।

1. *संक्रमण*

परजीवी (parasites) एवं वायरस सँ लिवरक संक्रमित होवाक संभावना रहैत अछि। संक्रमण हेला पर लिवर मे सूजन भऽ जाइत छैक आ ओकर कार्य करैक क्षमता धीरे धीरे कम होमय लगैत अछि। जाहि व्यक्ति क लिवर ,वायरस सँ संक्रमित होइत अछि ओकर रक्त, सीमन, [illegible] भोजन, पानि आ संपर्क सँ ई पसरि सकैत अछि। सामान्यतया तीन तरहक हेपटाइटिस वायरस होइत अछि।

हेपटाइटिस A

हेपटाइटिस B

हेपटाइटिस C

2. *इम्यून सिस्टम आधारित*

शरीरक इम्यून सिस्टम प्रदान सँ व्यक्तिक कोनो अंग प्रभावित भऽ सकैत अछि जकरा □टो इम्यून डिस□र्डर कहल जाइत अछि।

एहि मे ओ लिवर प्रत्यारोपण होइत अछि जकरा ऑटो इम्यून लिवर बीमारी कहल जाइत अछि। मुख्यतया तीन प्रकारक ई बीमारी होइत अछि।

1.ऑटो इम्यून हेपेटाइटिस

2.प्राइमरी बायलरी कोलनजायटिस

3.प्राइमरी स्क्लेरोसिंग कोलनजायटिस

3. *वंशानुगत लिवर बीमारी*

ओ माता पिता दुनू मे या कोनो एक मे लिवर बीमारी हेतु असामान्य जीन रहैत अछि तँ संतानमे रहैत अछि ज जकर वजह मे ई वंशानुगत बीमारी होइक।

एहि बीमारिक नाम अछि

1.हिमाक्रोमेटोसिस

2.विल्सन लिवर बीमारी

3.अल्फा-1 एन्टीट्रिप्सिन कमी लिवर बीमारी।

4. *लिवर कैंसर*

5. *लिवरक अन्य बीमारी*

लिवर मे वसा केर जमाव(Non Alcoholic Fatty Liver Disease)

अल्कोहल सेवन आधारित लिवर बीमारी।

लिवर बीमारी केँ जँ बिना उपचार छोड़ि देल जाइत अछि तखन लिवर सिरोसिस भऽ जाइत छैक आ अंगक ओ काज करनाइ बिल्कुल बन्द कऽ दैत छैक। तँ ओकर उपचार बिना देरी प्रत्यारोपण अवश्य करबाक चाही।

𑒪𑒱𑒫𑒩 𑒮𑒲𑒩𑒼𑒮𑒲𑒮𑒏 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱।

𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒮𑒲𑒩𑒼𑒮𑒲 𑒧𑒹 𑒮𑒠𑒻𑒫 𑒩𑒼𑒑 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻 𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒯𑒥 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱। 𑒞𑒹𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒔𑒱𑒏𑒱𑒞𑓂𑒮𑒲𑒨 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒢𑒰𑒃 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱।

𑒍𑒢𑒰 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢 𑒧𑒹 𑒥𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।

1. 𑒞𑓂𑒫𑒔𑒰 𑒂 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒣𑒲𑒨𑒩 𑒦 𑒖𑒰𑒨𑒥।

2.𑒣𑒹𑒙 𑒠𑒩𑓂𑒠 𑒂 𑒣𑒹𑒙 𑒤𑒴𑒪𑒪 𑒩𑒯𑒥।

3.𑒣𑒻𑒩 𑒂 𑒙𑒐𑒢𑒲 𑒧𑒹 𑒮𑒴𑒖𑒢

4.𑒔𑒧𑒛𑓃𑒲 𑒧𑒹 𑒐𑒳𑒖𑒪𑒰𑒯𑒙।

5. 𑒣𑒹𑒬𑒰𑒥𑒏 𑒂 𑒣𑒻𑒐𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒩𑓀𑒑 𑒐𑒴𑒥 𑒣𑒲𑒨𑒩।

6.𑒁𑒞𑓂𑒨𑒡𑒱𑒏 𑒁𑒩𑒳𑒔𑒱

7.थकान थकानक अनुभूति

8. नष्ट स्नाक प्रतिर्फि

लिवर बीमारीक परीक्षण हेतु जांच

डाक्टर गँ विशिष्ट रूप सँ जाँच हेतु अलग अलग जांच होइत अछि, मगर सामान्यतया एल एफ टी (Lever Function Test) सँ एक नजरि मे बहुत किछु पता चलि जाइत अछि जे लीवर बढ़ियां सँ काज कऽ रहल अछि वा नहि। आगाँ अल्ट्रासाउंड, सी टी स्कैन, बायोप्सि , हेपेटाइटिस पैनल कएल जाइत अछि , जे सुनिश्चित होइत छल जे कोन तरहक लिवर बीमारी अछि।

*लिवर बीमारिक उपचार। *

लिवर बीमारीक जाँच मे कोन तरहक बीमारी परीक्षण मे आयल अछि ओहि अनुरूप चिकित्सक उपचार करैत छथि। किछु गँ एहन

खराबी नहि अछि जे मात्र दिनचर्या ठीक केला सँ दूर भऽ जाइत अछि जेना अल्कोहल बन्द कऽ देनाय, अपन वजन आहार एवं दैनिक व्यायाम सँ नियंत्रित करनाय।

किछु डाक्टर लिवर बीमारी जेना संक्रमण आधारित बीमारी। एहि हेतु चिकित्सक दवाइक अनुशंसा करैत छथि।

किछु डाक्टर लिवर बीमारी जाहि मे शल्य चिकित्सा एवं ट्रांसप्लांट हेतु आवश्यकता होइत अछि।

सारांश मे इहो बात सत्य अछि जे लिवर शरीर मे अति महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली अंग अछि। किछु बीमारी डाकर शक्तिशाली होवाक कारण सँ किछु परहेज मात्र सँ आराम भ जाइत अछि। (जेना कि हेपटाइटिस -A) लिवर एक मात्र अंग अछि जकरा पुनःसृजन(Regenerate) करैक क्षमता होइत अछि। जाहि सँ सम्बंधित बीमारी होइ लेल बाहरी कारक जकरा लोक अपन सावधानी राखि रोकि सकैत अछि। सावधानी रखला सँ बचाव बिल्कुल संभव अछि एवं उपचार सँ बचाव पर अधिक जोर देल जाय ओ श्रेयस्कर अछि।

६

हृदय(Heart)

मानव हृदय

हृदय मुट्ठी आकारक एक अंग होइत अछि जे सम्पूर्ण शरीर मं सभ अंग के रक्त भेजैक लेल रक्तक पंप करैत अछि।

हृदय रक्त वाहिका तंत्रक मुख्य और प्राथमिक अंग थिक आ ओकर चारि प्रकोष्ठ होइत होइत अछि । ई प्रकोष्ठ सभ मांसपेशी सँ बनल रहैत अछि तथा ओ विद्युतीय आवेग सँ संचालित होइत रहैत अछि।

हृदय वक्ष(thorax) के अंदर छातीक बाँयाँ भाग मे अवस्थित रहैत अछि। शरीरक सभ अंग सँ आयल रक्त के हृदय पंप कए लंग्स(Lungs) मे पहुँचबैत अछि आ ओतय सभटा रक्त□क्सीजन सँ युक्त भए जाइत अछि। पुनः ई □क्सीजनयुक्त रक्त लंग्स सँ हृदय मे लौट अबैत अछि आ हृदय ई □क्सीजनयुक्त रक्त कें पम्प कए सम्पूर्ण शरीरक सभ अंग के पठबैत अछि। हृदयक विषय मे ई एक रोचक बात अछि जे मनुष्यक हृदय पूरा जिनगी मे औसत करीब साढ़े तीन अरब बेर धड़कैत अछि। एकर वजन मात्र 200 सँ 425 ग्राम होइत अछि। रोज ओ 6000 सँ 7500 लीटर रक्त कें पम्प करैत अछि।

हृदयक मुख्य कार्य

1. यम्य क७□ऑक्सीजनयुक्त नक्त कँ सर अंग म य(0नौ।

2.शनीनक सर अंग लल आवश्यकीय गन्न आ हॉर्मोन संवनध हनु कार्य कनैत अछि।

3. शनीनक अंग सर सँ थुन □ऑक्सीजनयुक्त नक्त कँ प्राप्त कनाय आ ङाकना यम्य क७ □ऑक्सीजनयुक्त कनैक लल लंग्स म य(0नौ।

4. शनीन म उयस्थित कार्वनडाऑक्सी □ऑक्साइड एवं वकान यदार्थक यनिवहनक (transporting) कार्य कनैत अछि।

5. शनीनक नक्त चाय सामान्य वनन नखैत अछि।

एहि गनहँ हृदय, नक्त आ नक्त नलिका ऑक्सी मीनू मिलि ह्रदय प्रणाली (cardio vascular system) कहबैत अछि आ ङा सदैव कार्य कनैत नहैत अछि।

हृदय आ परिसंचरण तंत्र

हृदय कँ अपन कार्य सुचारू रूप सँ करबाक लेल परिसंचरण तंत्रक भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होइत अछि।

एकर विभिन्न प्रकार

1. फुफ्फुसी(पल्मोनरी) परिसंचरण।

(Pulmonary Circulation)

एहि परिसंचरण मे हृदयक दाहिना भागक वेंट्रिकल सँ ऑक्सीजन रहित रक्त(De-oxydised blood) फुफ्फुस (लंग्स) मे जाइत अछि ऑक्सीजनयुक्त होइक लेल आ पुनः ओ ऑक्सीजनयुक्त रक्त बनि हृदय मे अबैत अछि।

2. दैहिक परिसंचरण(systemic circulation)

ओहि यनिसंचनक्ष माध्यम सँ □क्सीजनयूक्त नक्त कें ह्रदय द्वाना यम्य कओ सम्पूर्ण शनीनक अंग सभ कें यहुँचायल जाइत अछि आ ओहि शनीनक अंग सँ □क्सीजननहित (de-oxydised blood) कें यूनः ह्रदय मं आनल जाइत अछि।

3. कानानी यनिसंचनक्ष(coronary circulation)

स्वयं ह्रदय माँसयशी सँ वनल होइत अछि आ ओ सम्पूर्ण शनीनक अंग सभ क □क्सीजनयूक्त नक्त लगातान क्रम मं यहुँचवैत नहैत अछि । ओकना निनंतन कार्य कनैक हेतु सेहो अलग सँ □क्सीजनयूक्त नक्त चाही। जाहि यनिसंचनक्ष माध्यम सँ □क्सीजनयूक्त नक्तक आयूर्ति ह्रदय कं होइत अछि ओकना कानानी यनिसंचनक्ष कहल जाइत अछि। ई अयोंग जनूनी यनिसंचनक्ष होइत अछि।

ओही तनहँ मस्तिष्क क अलग सँ विल्कुल ताजा ओन शुद्ध □क्सीजनयूक्त नक्त निनन्तन कार्यशील नहैक लल चाही ज कि यनसंचानित होइत नहैत अछि।

१

हृदयक बाह्य संरचना

हृदयक बाह्य संरचना।

(1).हृदयक बाह्य संरचना मे सर्वप्रथम पेरीकार्डियम होइत अछि। हृदय एक पातर सँ दुपातर कोठरी मे अवस्थित रहैत अछि। एहि कोठरी कें पेरिकार्डियल कोठरी कहल जाइत अछि। एहि कोठरीक देवाल दोनू परत झिल्ली युक्त मे रहैत अछि आ एकरा पेरीकार्डियम कहल जाइत अछि।

ई पेरीकार्डियम, हृदय कें बाहरी झिल्ली सँ चारू कात सँ घेरि सुरक्षित कर रहैत अछि।

ई एक टा पातर स्रावित सदृश करैत रहैत अछि जे हृदय लेल चिकनाइ(Lubricant) पदार्थ थिक आ एहि सँ हृदय अन्य अंगक घर्षण सँ सुरक्षित होइत अछि।

हृदय जे फैलैत सिकुड़ैत अछि ताहि लेल सेहो पेरीकार्डियम मे एतेक खाली जगहक(hollow space) व्यवस्था रहैत अछि जाहि सँ हृदय कें अपन पूर्ण अधिकतम आकार लेबा मे आसानी रहैक

। अर्थात हृदयक जगह समावेश (positioning) लेल पेरीकार्डियम युक्त रहैत अछि।

पेरीकार्डियम 2 परत मे रहैत अछि। (क)पहिल बाह्य परत केँ विसरल परत कहल जाइत अछि। ई परत सीधा हृदय क बाहर भाग सँ सटल रहैत अछि।

(ख) विसरल परत सँ ठीक बाद दोसर परत रहैत अछि जे पेरीटल परत कहल जाइत अछि।

पेरिटल परत (थैलीनुमा(sac) रूप मे रहैत अछि जे हृदयक बाह्यतम भाग मे रहैत अछि । कैविटी युक्त एहि परत मे तरल रहैत अछि जे कि हृदय लेल चिकनाई(lubricant) उद्देश्यक पूर्ति करैत रहैत अछि।

(2). हृदयक बाह्य संरचना मे आन हृदय भित्तिक (Heart wall)

विषय मे चर्चा करैत छी।

हृदय भित्तिक तीन परत होइत अछि।

प्रथम परत एपिकार्डियम होइत अछि। ई बाहरक परत मे एक पातर झिल्ली जकाँ परत सदृश रहैत अछि जे चिकनाई (lubricant) प्रदान करैत रहैत अछि आ बाह्य रोग सँ सुरक्षित रखैत अछि।

दोसर परत केँ मायोकार्डियम कहल जाइत अछि। ई माँसपेशी उत्तक सँ बनल मोट परत रहैत अछि । पम्प करैक काज एही मायोकार्डियम द्वारा होइत अछि। ओकरा हृदय भित्तिक मध्य परत कहल जाइत अछि।

तेसर परत केँ एंडोकार्डियम कहल जाइत अछि। सबसँ भितुरका परत होइत अछि जे हृदयक अंदर कोष्ठ(प्रकोष्ठ) एवं वाल्व सभ

कँ अपन शरीरक अंदर रखने रहैत अछि। ई हृदयक अंदरूनी देवाल पर रक्त कँ सटै(stick) सँ बचबैत छैक ताकि रक्त थक्का बनबा सँ सुरक्षित रहल जा सकै।

एहि तरहेँ ई रक्त हृदयक बाह्य संरचना।

६

हृदयक आंतरिक संरचना

रक्त प्रवाह नियंत्रण हेतु हृदयक अंदर प्रकोष्ठ एवं वाल्व निर्माण कार्य करैत अछि। मानव हृदय मे चारि गोट प्रकोष्ठ(चेम्बर) होइत अछि। निम्न चारूक नाम अछि।

1.बाम भागक एट्रियम

2.दहिना भागक एट्रियम

3. बाम भागक वेंट्रिकल

4.दहिना भागक वेंट्रिकल

एट्रियम/एट्रिया

एट्रिया वेंट्रिकल स छोट होइत अछि। एट्रियाक देवाल वेंट्रिकल कँ तुलना मे पातर आ पेशिक कम माँसपेशी वला होइत अछि।

एट्रिया रक्त प्राप्त करैत हेतु एक प्रकोष्ठ होइत अछि जे बड़ी नस(Large vein) सँ रक्त प्राप्त करैत अछि।

वेंट्रिकल

वेंट्रिकल रक्तवहन प्रकोष्ठ होइत अछि संगहि ई अधिक माँसपेशी

सँ बनल होइत अछि। ई पम्प करैक काज करैत अछि। पम्प

करए ई रक्त कँ संचरण(सर्कुलेशन) हेतु धकेल दैत छैक।

ई बड़ी धमनी सँ जुड़ल रहैत अछि जकि रक्त पनिसंचरण हेतु रक्त निर्गत करैत अछि।

दहिना एट्रियम एवं दहिना वेंट्रिकल वाम भागक प्रकोष्ठ(एट्रियम एवं वेंट्रिकल) सँ तुलनात्मक दृष्टि सँ छोट होइत अछि।

एकर (दहिना भागक प्रकोष्ठ) देवाल सेहो कनी पातर होइत छैक, आकार सेहो कम होइत छैक, कनी कम मांसपेशी वला होइत अछि कारण दहिना आ वाम भाग वला प्रकोष्ठक कार्य अलग

अलग अछि।

ई दहिना तरफ सँ रक्त अबैत अछि ओ फुफ्फुस (पल्मोनरी) परिसंचरण सँ मगन नाम त्याग वला रक्त ई प्रकोष्ठ सँ अबैत अछि ओकरा पम्प कए सम्पूर्ण शरीरक सब अंग मे पठाओल जाइत अछि। प्रकोष्ठक कार्यक अनुरूप ओकर आकार एवं प्रकार होइत अछि।

रक्त वाहिका(Blood vessels)

मनुष्य मे बन्द परिसंचरण तंत्र होइत अछि। ओकर अर्थ ई अछि जे एहि परिसंचरण तंत्र मे रक्त बन्द नलिका मे बहैत अछि।

रक्तक दबाव आ गति अधिक रहैत अछि। पदार्थक आदान प्रदान ऊतक तरल सँ होइत अछि।

एहि तरहक परिसंचरण मे वाहिकाक(vessels) आकार प्रकार आवश्यकतानुसार कखनो छोट आ कखनो पैघ होइत अछि।

हृदयक नाड़ी संरचना मे अनेकानेक रक्त वाहिका कार्य करैत अछि, जेना ओ हृदय अंतर्गत अन्य प्रमुख(major) रक्त वाहिकाक संग मिलि एक नेटवर्क बनल रहैत अछि तथा समग्र रूपेण पद्धति (systematic)सँ कार्य करैत रहैत अछि।

रक्त वाहिका(Blood vessels) विभिन्न प्रकारक होइत अछि ।

1. नस(vein) : - नस द्वारा □क्सीजनरहित(De oxygenated) रक्त हृदय मे पहुँचैत अछि। हृदय मे पहुँचला सँ पहिले रक्त ऊर्ध्वशीनियन एवं सुपीनियन वेना कावा मे जाइत अछि आ ओतय सँ ओकर निकासी दहिना भागक एट्रियम मे होइत अछि।

2. केशिका(capillaries):- धमनी ओर नसक बीच एक रक्त वाहिकाक नेटवर्क अ बहुत पातर सूक्ष्म जकाँ होइत अछि एकरा केशिका (capillary) रक्त वाहिका कहल जाइत अछि।

3.धमनी(Arteries):- रक्त वाहिका जकर दीवार(wall) मांशपेशी सँ बनल(Mascular) होइत अछि आ ओ एक सूक्ष्म जकाँ होइत अछि। हृदय सँ □क्सीजनयुक्त रक्त शरीरक विभिन्न अंग मे ओही रक्त वाहिका द्वारा जाइत अछि। एहि रक्त वाहिका कें धमनी कहल जाइत अछि।

सबसँ नमहर धमनी ऐआटा कहल जाइत अछि जकर शाखा प्रशाखा विभिन्न अंग सँ छोट छोट धमनी सँ जुड़ल रहैत अछि। एहि छोट छोट धमनी सँ सब अंग धरि □क्सीजनयुक्त रक्त आपूर्ति होइत रहैत अछि।

९

हृदय मे अवस्थित वाल्व(वाल्व)

वाल्व हृदयक कोष्ठ सभ मे रक्त के बीच स्थापित सँ बनल रहैत स्थित अछि जे रक्त के सदैव आगाँ दिस जाय , पाछाँ दिस घूरि नहि अबैक आदि लेल उपस्थित रहैत अछि। वाल्व सुनिश्चित करैत अछि जे रक्तक बहाव एक दिशा (Unidirection) मे होइक।

वाल्वक कार्यक अनुसार ई दु प्रकारक होइत अछि।

1.एट्रियोवेंट्रिकुलर वाल्व:- एट्रिया और वेंट्रिकलक बीच जे वाल्व होइत अछि ओकरा एट्रियोवेंट्रिकुलर वाल्व कहल जाइत अछि। दहिना कातक एट्रिया आ वेंट्रिकल के बीच जे वाल्व होइत अछि तकरा ट्रिकसपिड(Tricuspid) वाल्व कहल जाइत अछि।

ओही तरहें बामा तरफ एट्रिया आ वेंट्रिकल के बीच जे वाल्व होइत अछि तकरा मिट्रल(Mtral) वाल्व कहल जाइत अछि।

2.सेमि□लुनर वाल्व(अर्ध चंद्राकार वाल्व):- बामा कातक वेंट्रिकल तथा एओर्टाक बीच जे वाल्व होइत अछि तकरा सेमि□लुनर वाल्व कहल जाइत अछि। ओही तरहेँ दहिना कातक वेंट्रिकल तथा

पल्मोनरी धमनीक बीच एक टा वाल्व रहैत अछि तकरा सेमि□लुनर वाल्व कहल जाइत अछि।

हृदय सँ सम्बन्धित बीमारी(अस्थिर एनजाइना)- हृदय सँ सम्बन्धित किछु सामान्य बीमारी आ बीमारी चिन्हबाक लेल आवश्यक परीक्षण

* *अस्थिर एनजाइना**

एहि मे छाती , बाँह, जबड़ा, कन्धा, गर्दन मे दर्द एवं खिंचाबक अनुभूति होमय लगैत अछि। आराम क स्थिति मे या काफी मेहनत नहियों कएलाक स्थित मे एहि तरहक दर्द होइत अछि।

साँस फूलनै,पसीना एनै, नब्ज होनै, पेट मे दर्द होनै, चक्कर एनै, थकान लगनै,बेहोशी एनै इत्यादि सभ सेहो भ सकैत अछि। कखनो काल एहि सब लक्षण कें ठीक सँ नहि बुझि पबैत छथि। मरीज एहि सब पर ध्यान देबाक चाही।

कखनो काल पेट मे गैसक कारण सँ सेहो छाती मे दर्द होइत अछि। ई किछु खेला पिलाक कारण सँ होइत अछि आ ई थोर कालक बाद स्वयं ठीक भ जाइत अछि।

स्थिर एनजाइना मे दर्द शरीरक स्थिति बदलला पर आराम होइत अछि। समुचित दवाइ और आराम एकर उपचार थिक। अस्थिर एनजाइना कें गंभीर मानि तुरन्त और शीघ्राति शीघ्र नीक चिकित्सक एवं चिकित्सालय सँ संपर्क करबाक चाही। एहि मे दर्दक अनुभूति

शनीनक कामा पैटर्न म ह्लाॖॖग नह्लैग अछि। शनीनक पैटर्न यन निर्ऽन नहि नह्लैग अछि ।

**अस्तिन ज्ञनजाॖॖनाक नाम्क या अन्य हृदय सम्बन्धित वीमानी सर लल यनीऊध(Tests)*

1. नक्त यनीऊध:- नक्त यनीऊध कऽ चिकित्सक हृदयक ट्रायानिन(cardiac troponin) स्तन दखैग छथि। ज्ञहि स्तन कं दखि ऊा सुनिश्चित कनैग छथि ज छातीक दर्द हृदय घातक ज्ञनजाॖॖनाक कानध सं अछि या अन्य कानध सां चिकित्सक ऊाकन अलावा वसा, कालसट्रॉल, सनकना ज्ञवं प्राटीन सरक सह्ल स्तन दखैग छथि जाहि सं चिकित्सा कनै म सुविधा ह्लानि। ट्रायानिन I कन सामान्य स्तन 0-0.04 मानल जाॖॖग अछि।

2. ॖॖलक्ट्राकार्डियाग्राम(ECG):-

ज्ञहि यनीऊध सं ॖॖी यता चलैग अछि ज हृदयक अंदन विद्युतीय आवगक(electrical impulse) की स्थिति अछि?हृदयक धड़कन कहीं कादी अधिक -कम नहि गं ठीक वा धड़कन ठह्ल वा नहि? हृदयक धड़कन (Heart rhyme) सं ज्ञहि पैटर्न कं यता

चलैत अछि ज हृदय म रक्त प्रवाह मंद अछि या तेजी अछि?

एहि तरहें ई परीक्षण हृदयगत बीमारी म महत्वपूर्ण होइत अछि।

3.छातीक एक्स- रे(X-ray):-

छातीक एक्स -रे सँ चिकित्सक ई सुनिश्चित करैत छथि ज कहीं अन्य कारण सँ त नहि छातीक दर्द अछि। एहि सँ हृदय क आकार कँ देखल जाइत अछि। लंग्स(फुफ्फुस) सेहो देखल जाइत अछि।

4. तनाव परीक्षण(Stress Test):-

तनावक दरमियान हृदयक कार्य करैक स्थिति की रहैत अछि , एहि दरमियान संदर्भित अन्य पैमाना सेहक परीक्षण , हृदयक धड़कन इत्यादि हेतु तनाव परीक्षण कराएल जाइत अछि। एहि परीक्षण म मरीज कँ व्यायाम , या चिकित्सीय साइकिल पर चढ़ा कँ जांच कएल जाइत अछि।

चिकित्सक ई देखैत छथि ज तनावक स्थिति म हृदय केहन प्रतिक्रिया

करैत अछि।

5. इकोकार्डियोग्राम परीक्षण(Echo cardiogram Test):-

एहि परीक्षण मे ध्वनि तरंगक माध्यम सँ चलैत(moving) हृदयक चित्र प्राप्त होइत अछि। एहि सँ देखल जाइत अछि जे हृदय अंदर रक्तक बहाव सामान्य अछि वा नहि। ई परीक्षण तनाव स्थिति मे सेहो करायल जाइत अछि जकरा तनाव इकोकार्डियोग्राम(stress Echo Test) कहल जाइत अछि।

6.न्यूक्लियर तनाव परीक्षण(Nuclear Stress Test):-

एहि परीक्षण कें एमपीआइ(MPI) परीक्षण सेहो कहल जाइत अछि। एमपीआइ(MPI) अर्थात मायोकार्डियल परफ्यूजन इमेजिंग। एहि परीक्षण सँ हृदय मांसपेशी मे रक्तक प्रवाह आराम क स्थिति मे तथा तनावक स्थिति दुनु स्थिति मे कहैत अछि ई पता लगैत अछि। एहि परीक्षण मे एक रेडियोधर्मी अनुरेखक(radio active tracer) रक्त मे इंजेक्शन द्वारा देल जाइत अछि। एकटा विशिष्ट स्कैनर सेहो लागल रहैत अछि जे देखैत अछि जे कोना कोना रेडियो एक्टिव ट्रेसर रक्त द्वारा हृदयक धमनी मे जाइत अछि। जाहि ठाम उपस्थिति न्यून या बिल्कुल नहि रहैत अछि ओ दृष्टिगत भ जाइत अछि। एहि परीक्षण मे किछु समय तँ लगैत

अछि मगन गनान यनीऊध (थान सटीक श्वञ्ञ्ग अछि।

7.कार्तिअक कंयूटनीकृग टामाग्रारही (CT) यनीऊध:-

अहि यनीऊध सँ ञ्ञी यगा चलैग अछि ज कहीं ह्रदयक आकान कहीं नमहून((enl arged) नहि गँ रअ (गल अछि। ञ्ञहा यगा चलैग अछि ज ह्रदयक धमनी कगय यागन र (गलैक अछि।

8.अमआनआञ्ञ(MRI) यनीऊध:- कार्तिअक मैग्नेटिक नजानंस ञ्ञमजिंग।

अहि यनीऊध म चुम्बकीय ऊत्र अवं नतिया गनंगक माध्यम सँ ह्रदयक अवं उाकन नक्त नहिका सरक निस्थग श्वाटा लल जाञ्ञग अछि । नीक सँ यगा चलैग अछि ज ह्रदयक संनचना अवं नक्त नहिकाक स्थिगि कहून अछि।

१. कोरोनरी एंजियोग्राफी:-

एहि प्रक्रिया मे हृदयक रक्त वाहिकाक (Blood Vessels) अवलोकन एवं प्रक्रिया हेतु एक्स-रे केर प्रयोग होइत अछि। एहि प्रक्रिया केँ कार्डियक कैथेटेराइजेशन सेहो कहल जाइत अछि। एहि प्रक्रिया मे एक पातर ट्यूब जकरा कैथेटर कहल जाइत अछि, ओकरा बाँहि वा ग्रोइन(जाँघ आ धड़क बीचक स्थान) मे उपस्थित रक्त वाहिकाक माध्यम सँ हृदयक धमनी मे प्रवेश कराओल जाइत अछि। एक विशेष रंग(dye) केँ कैथेटर मे इंजेक्ट कएल जाइत अछि। ओहिना स्थिति मे एक्स रे द्वारा जे फोटो खिंचल जाइत अछि ओ बहुत स्पष्ट बनबैत अछि जे कोना कोना रक्तक बहाव धमनी सभ मे भ रहल अछि। कोनो रक्त प्रवाह अवरुद्धता या धमनी अवरुद्धता केँ पता चलि जाइत अछि एहि प्रक्रिया सँ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.संाष कूमान नाय 'वटाही'- लघूकथा- कनरूस्री



संाष कूमान नाय 'वटाही'

लघूकथाकनरूस्री -

"कान व७ कूकूयाग अछि। वूसना जायग अछि जना कान म किछ्र कूनवूनायग अछि। कान म काठी दला सँ नीक रs जायव ", ॐ रूसरूसायग वूढिया काकी आंगन सँ निकलीही।

मिथिला म कहवी छै कान कौना ल" -s ग्गल।"
दासनक गय कनवे गँ उाहीना हा७ग। ॐ वनवनायग हमन काका गली दिस सँ दालान यन अवॊग वजलाह, "व७ दिन सँ गाना कहॊग

छियैक , करनहुसी लकऽ नहि उठ, गँ गुँ हमरा बुनवक बुझैत छौ। 'हन वहे स खन खाय वकनी खाय अँचान' , गँ आव बुझहौ। उकन हाथक गीमन गाना व७ नीक लगैत छलैह आउन खुव खा। "

काका काकी क दमेस कऽ कहैत छलथिह्न,
"अहाँ कँ कहन छलहुँ कुवना क रीन क -ऽ दियौ स गँ कालियै नहि ।"

काका कँ 'गउ वल' वैज गेलहि कथी कहलौहौ " -, हन वाज ; हमन गाछ निनीछ-, खगखलिहान-, घनघनानी वगैनह गाहन - वाय कँ छियैय ज वाँटि दियौ? आउन रीन कऽ दियौ ? धनमा कँ ससुन कँ अनजल छियैय । सिमनी वाली कँ गान अनजन छौ। "

आगाँ आउन वजैत काका क्विहन ,
" हम रौ नहि कनवौ। जकना जाऽ जवाक छौ स जा। खुव छिनहाना खलै जा। काया म जहिया घून लागि जौ गँ अविजउैह । हमन "उयानि कँ खैहं। -उयानि....

काका काकी कँ कहैत वजलाह , " गुंहां घंघान जा, व७ दिन गऽ गेलौ नाजकुमान कँ उँ0 चटला। आउन उहा दुनू सान कँ कहौ अयन दुनिया दखगै। ससुन -हमन घन खाली कनगै। अयन - आउनसान कँ साधि कँ खगै। व७ गऽ चुकलै सनकानी सना। नै

माधो कँ लना नै उधो कँ दना। "

नत वल वजला दखि कs काकी घनानी दिस यउलीह। काका किछु दुनि हुनका याँछा दौउल गेलाह " - " नूका ...। नूक छिनना कँ....नूक....नूक मादन क

काकी गाछी दिस निछाह हागि गेलीह। काका हुकमेँ 013 हs गेलाह। वनवनैं चूय हलाह। घनानी यन लकउी यन वैसलाह। कनक दन सूस्ही क हुन दलान दिस निदा हलाह।

अखना धनि काका कुकुयेँ छलाह , "सान सह खाली खायग अछि आउान घन म घूसिउेँ अछि ।"

दलान सँ आंगन दिस निदा हलाह। आंगन म घूसैं वजलाह - घन खाली कन गूँ दुनू । कानाना कहिया नै खगम ह "ेलो। यनङ गाना दुनू लल कनाना छव कनै। हाग दुनू साना। दुनू गांट कँ निकाल वाहना। वयेंगी नहि छङि दुनू कँ। सवहुक लल कामधंधा - "छै आउान गाना दुनू लल काम नहि छै ।

कुवना गाम यन अगहन 2020 सँ घन उागनन छै आउान यलट् हागुन 2020 सँ वंवङ्ली सँ आयल गँ उे कँ नाम नहि लेग छै।

कुवना कहेँ अछि ज शहन म कामधंधा नहि छै। दिल्ली म उे - हाटल म काज कनैं छल उाकन मालिक कनाना सँ मनि गेलाह।

हारल बन्न रहs गेलै।

पलटू कँ अपन खिस्सा छै। उ आब बारह नहि उ लल बारहे अछि। कन्ना काल म उनका कालकाग सँ येन आवs पडलै रखन जाकs जान बचलै।

उ माय सँ कहने छै चौक पन कही पाया कँ हमना एकटा "-"दाकान खालि दग।

काका कहने छथिन्ह ज उनका दाकान नहि चलेल हगे। ओ लवडा बेटेन छै। टाका बूना दग। -लूब्बा संगे उटेन-

ओ एक जिद्द पन अडल अछि हम बारह नहि जायब। " -किछु कनब ग कनब घर पन।

कन्ना काल म मृत्युका -ांडव देखि कs पलटू घबडायल छै। नाना नहि मनहीउ ज उ आब शहर जायग। आब उ मनग ग गाम म, जीबग ग गाम म। चाह खाकs मरै चाह बिन खाकs। शहर कँ जिनगी कँ ननक मानेग अछि उ।

'बउआ कहे मौसी गाम जायब' ओ कहवी कृवना लल सही छै। कृवना बंगलान, गुवाहाटी, बंबओ , दिल्ली, लुधियाना, चन्नओ वगैरह घूमिघाम क-s घर उगनन छै। उनका कगो नीक नहि लगेग छै। उ हनदम घनवाली क खांचा म नूकाल नहेग अछि।

सए काज ञकना लल वकान छै। जियण ग विंदास सँ , मनण ग विंदास सँ। कमनीखटनी चनन्नी खनचा नृयया। जयनगन के सैरून - वन्नूक नाणि क-यन वन्नूकs खलाञ्ञ्ण अछि।

ञकन करूव अछिलिखल ढला आञान -नाचू गँ टाका लल। यढल - चलन नीक नहि छै। -चान मसियौण। चालि-स्टेशन ननावी। चान गुञिया वन्नक नाखि क-घननाली कन गरूनाs लालरूनियन यानि - जयनगन कनैण दिन काटि नरूल छै। वाय -यीव नरूल छै। खजौली कमैण रूञी मलकनी छै। गँ सनियरूँ काका क-कँ कमैणन 'नञ वल' वजs लगैण छन्हि।

नणन कन काज नीक छलै। मालिक नीक छलै। अञानी ग्रूय सँ झञल काज छलै। अञानी क रिंञन नियाटिक वाद शयन गिनs लगलै आञान ञकन मालिक दिवालिया ए गेलाह।

चलनी लकs यानि ञ्चा। ञ्ञी एs नरूल छै। रूनीशान ए कुवना दनदन कँ टाकन खा नरूल छै-, यनञ्च मान मारूिक काज ञकना नहि एट नरूल छै। ञक वनख सँ सौंस एानण घूमि नरूल अछि आञान यिकनिक अयन आय मैन नरूल छै।

नीकलिखल नम्मा यन वञआञ्ञ्ण छथि। काना काज नहि -नीक यढल-एटैण छै। मरूँगाञ्ञी सएरूक नौकनी खा नरूल छै। निजीकनञ्च नौकनी खा नरूल छै। आव यट एल सएरूक यञ्चाञ ।

काकी कँ कानहूसी कक सर मउगी हूनका गलवजीनी वनौन नहेग छै। रनि टाल म काकी आगि लगौन नहेग छै। क वटखोकी हमना घन म नजन लगौलक। कमौग यूग घन डागनलक। मिथ्रौलिया नाला रगगा सँ दखा कS वटखोकी सर कँ घन म अगनाही लगौवे।

काका कँ आंगन म उत्तनदक्खिन दिस लटा दन छन्हि। माथा लग-आगि जैन नहल छै। ओकटा तावा म कूश नाखल छै। काकी नान याछि नहल छथि। आव काका किनका नहि उटौन्हि। आव डा चूथी साधि ललैथ। आव काकी कान कनहूसी वन्न र गेलै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

२.३.आचार्य नामानन्द मण्डल- आदर्श पुत्र



आचार्य रामानंद मंडल

आदर्श पुत्र

गोपालपुर गाम मे दुगो परिवार रहै। पुरवारी टोला मे गरीबन दास अपन पत्नी जसोदा आ बेटा रूदन दास के संगे रहै। रूदन दास गाम के प्राइमरी स्कूल मे पंचायत शिक्षक रहै। ओकर बिआह भ गेल रहै। गरीबन दास छोट मोट गृहस्थ रहलन। अपन खेती बारी करै। जोइम शिक्षक रहला के बावजूद रूदन अपन बाबू के खेती बारी मे संग दै। रूदन के पत्नी अपन सास के संगे घर के काज संभालै। गरीबन दास भैंसी भी पालै। सुबह सांझ गरीबन भैंसी दुहै त रूदन अपना गमछा स माछी के उड़ाब आ डांस के मारै। त जसोदा धूंआ धुकुन करै। शेष समय मे गरीबन दास भक्ति भजन करै। गरीबन दास कबीर पंथी रहलन दाढ़ी केश बढ़ैल रहलन। गला मे तुलसी के कंठी रहै। कंठी मे एकटा बड़का तुलसी के दाना रहै। उजर चनन नाक स उपर माथा तक रहै। आस पड़ोस मे कहीं भंडारा होय त दूनू बापुत जाय। धीरे धीरे रूदन दास भी कबीर पंथ के अनुयायी भ गेल रहै। माय बाप के आज्ञाकारी रहै। ओ स्कूल मे भी बच्चा सब के खुब पढ़ाबै। ओ व्यवहार कुशल रहै।

पछियारी टोला मे रामपूजन शर्मा अपन पत्नी सुमित्रा आ बेटा आशुतोष संगे रहै। रामपूजन शर्मा बगल के गाम सानपुर के निम्न नहि उच्च विद्यालय मे सहायक शिक्षक रहलन। ओ एकटा संपन्न

किसान छी रहलन। आशुतोष पढ़ में बड़ तेज रहय। पटना इंजिनियरिंग कॉलेज स पास केला क बाद अमेरिका क एगो कंपनी में काज करे लागल। बाद में ओहीं अपन सहकर्मी स प्रेम विआह क लेलन। ओहीं रहे लगलन। मातापिता स माय बाबू स बात करैत रहलन। रुपया पैसा क कहियो जरूरत न पड़ल।

एखन सेवा निवृत्त बाप आ माय क ज पुत्र स प्रेम आ सेवा मिल क चाही वो आशुतोष देब में असमर्थ हो गेलन। बाबू माय मातापिता स लाख कहलन कि आशुतोष तु अब इंडिया आ जा। हमरा पोता क छी ल आबा। हम पोता आ अपन पुतोहु क देख क बाद छी। पैसा इंडिया मे कमी होअ। पैसा कमाय क काम जरूरी न होअ। एखन आशुतोष कहे कि पापा अंहा क पुतोहु लालिता जाय क लेल तैयार न छैया। लालिता कहै हेत कि एतेक क क्वालिटी म हम समझौता न कर सकब आ पापा वो प्रिगनेंट छी हेत।

पापा हमरा माफ क दुं। हम एतेक न आय सकब। रामपूजन शर्मा आ सुमित्रा बिमान पर गेल। बेटा पुतोहु स माफ पैसा दुनिया स गुजर गेलन। गाम क दयाद म क एगो संतोष मातापिता स सब समाचार आशुतोष क देलक। आशुतोष कहलक हम अखी बच्चा क हास्पीटल में छी। हमरा बेटा जनम लेलक छैया। एहन परिस्थिति म तु सब काम क्रिया कर दहु। हम दु लाख रुपया पैसा खाता में ट्रांसफर क देत छियौ। दयाद आ गाम क लोग सब मिल क दुनु गोटे क एक चिता पर राखि क दाह संस्कार क देलक। मुखाग्नि

देलक दयाद के भतीजा संतोष। खूब राज भोग रहल लेकिन रामपूजन शर्मा के एकलौता पुत्र आशुतोष न आयल। ताकर संपत्ति के देखरेख संतोष करैत छथि। अन्न उपजा के बेच के संतोष, आशुतोष के खाता में ट्रांसफर के दैत छथि।

कुछ दिन बाद गरीबन दास बिमार पड़ लेल। रूदन दास अपना बाबू के खूब सेवा केलन। स्कूल से छुट्टी लेके दिन राति एक टांगे पड़ रहलन। लेकिन बाबू सरलोक चल गेलन। रूदन कबीर पंथ के अनुसार अपन बाबू गरीबन दास के समाधि देलन। जेम दयाद संगे गाम के सब लोग शोग ललन। साधु समंग रहल। भंडारा रहल। गाम के सब लोग रूदन के बड़ाई करैत छथि। भगवान रूदन जैसन बेटा सब के दए परंतु आशुतोष जैसन बेटा दुश्मन के न दए। रूदन अपना पत्नी संगे अपना माय के खूब सेवा करैत छथि। रूदन आइ गाम में आदर्श पुत्र मानल जाइत छथि।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजवंशी मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी 1950 योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटिया। 2022 प्रकाशित रचना - सीतिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। 2022 पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक*

मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढ़ी नाम्रा-विहान पिन-843302

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.आचार्य रामानंद मंडल- सादा जीवन उच्च विचार



आचार्य रामानंद मंडल

सादा जीवन उच्च विचार

एक दिन कमाली जी भेंट कर आयल रहथि।

हम पूछली -जमशेद साहेब कि हाल चल हए।

कमाली जी बजलन-ना त कानान कालि म कब्र म चल गेलन।

सरदी खांसी रहऊ।

हम नि: शब्द हो गेली। हम अतीत म खो गेली।

बीपीएससी के अनुशंसा पर प्राथमिक शिक्षक के पद पर मध्य विद्यालय, फुलवारी म ज्वाइन कैली रहा। विद्यालय म दूटा आउर

शिक्षक ब्राइन कैलन। इसनाहिल जी आ कमाली जी। मान कि तीन टा शिक्षक ब्राइन कैली। ओहा पहिल सं काज कनैत नहलन। प्रधानाध्यापक क रूप म चौधरी जी आ सहायक शिक्षक क रूप मं नाथ जी,जमशेद साहब आ नैना कुमानी।

ब्राइन कैला क पहिलका निहनान क प्रधान जी वतैलन आइ विद्यालय म हाल उ पढाइ हायत आ काल्हि शुक्र हऊ। काल्हि विद्यालय म साप्ताहिक वंदी नहत। हम अचकचैली। शुक्र क वंदी। वा वतैलन कि अपन विद्यालय उर्दू विद्यालय हऊ। शुक्र क मूसलमान लाग झुम्मा क विशेष रूप सं नमाज पढैत हऊ। तइला शुक्र क वंदी नहइ हऊ । हिंदी विद्यालय म शनि क हाल उ पढाइ हाय हऊ आ नविवान क वंदी नहइ हऊ । हम न जानइत नही इ सव नियम कानून। हिंदी आ उर्दू स्कूल। पनंच इसनाहिल जी आ कमाली जी इ सर जनैत नहलन।

सर शिक्षक म ढीला ढीली कुर्ता पायजामा आ साधारण चप्पल पहिन वाला जमशेद साहब ज्यादा लाकप्रिय नहा।

गांव म री वा लाकप्रिय नहलन। हुनकन पढी गांव म ममहना आ सम्मान नहा। मामी क वा ममानी वालैत नहलन। वा गांव क हिंदु लाग स यथोचित संबंध नाखैत। किनका नाना-मामा कहैत नहलन त किनका सान सं संवाधित कनैत नहलन। सान-वहनाइ म मिथिला क पनम्पनागत गानी-गनियाअल कनैत नहथि। वा विद्यालय क वा वैंक मैंसजन नहत। गुख्यान्हगत मान मध्य विद्यालय स संवद्ध दूटा प्राथमिक विद्यालय क वतन नियमां वाहे वनावत आउन द्वजनी स

लक यमंट गक कनावथि। अ्ञ्ञम ७क दिन द्रुगनी मं निगनद्य नियत्र जमा कना दासन दिन वेंक स ग्राङ्ग लाना गसन दिन ग्राङ्ग यन प्रधानाध्यायक सं दस्फाऊन कना क वेंक मं जमा कनाना। चौथा दिन वेंक सं गुगान कनाना। प्रधानाध्यायक आ जमशेद सारुव कौशियन सं गुगान लक मांना म नख क वेंक मं ७क जगह वे0 जाञ्ञ्ग नहलन। सर शिऊक दूनका आगे अद्विनृाकान म वे0 जाञ्ञ्ग नहा सवस यहिल नुयया क गडी क गनान। वाद म गुगान यंजी खाल क नाम यढगन आ नाम यूकान क गुगान कनैग आ नाम क आगा साटल नाजस्व टिकट यन दस्फाऊन लञ्ञ्ग नहलन। येवा यालट क हिसाव कनैग नहलन। वेंक म दासना गुष्ठ निद्यालय क यमंट हाञ्ञ्ग नहा शिऊक सर क एंट घाट हाञ्ञ्ग नहा। यूननका शिऊक सर अयन यमंट ल क अयन अयन घन क नास्ता यक७ लथि। यनंच जमशेद सारुव नयका शिऊक सर क नाक क नाश्ना,वाय आ यान खुआ क वाजथि-आवि अंहा सर अयन घन जाउ। नयका शिऊक सर क काना गनहक दीक्षाग न हाय स दूनकन चिंता नहैया। काना गांव क गार्जियन आञ्ञ्ल। दूनका सर क नयका शिऊक सर क यनिचय कनावथि आ गर्व सं कहैग कि ञ्ञ सर वीयी७ससी प्रगियागिना यनीऊा यास क क शिऊक वनलन ह७। निद्यालय आ गांव क लल प्रगिष्ठा क वाग ह७। निद्यालय क सारु सहाञ्ञी, यढाञ्ञी आ कार्यालय कार्य सर यन दूनकन नजन नहञ्ञ्ञन। वद्या सर क खुव यढावैग आ खलावैग। हं,उर्दू निद्यालय क नहिगा यढाञ्ञी क माध्यम हिंदी र गेल नहा ञ्ञ हालग उर्दू ना उर्दू क जानकान शिऊक क अराव क कानन हा गेल नहा। मूसलमान क वद्या सर

उर्दू गांव क प्राइमरी मदरसा म पढ़। मदरसा सरकारी विद्यालय क शैक्षणिक अवधि क पहिल ता बाद मं संचालित होइत रहै।

जमशेद साहेब नयका शिक्षक सब क बाल नियम क पैमान करनाइ क साथ लेखा बही क संधारण संग कार्यालय कार्य क काम क सिखाबथि। आ बालाय कि आगू अंहा सब क काज देत। अंहा सब ऊ पाठ्याधारी छी। ऊ पद एक जायब। जमशेद साहेब सादा जीवन आ उच्च विचार मं विश्वास राखथि।

कमाली जी टोकलन-दयानंद बाबू अंहा खा गेली। हम कहलियन जमशेद साहेब म खा गेली। कते निक आदमी रहल जमशेद साहेब। कमाली जी बजलैन-हं। हुनका सन आदमी आबि मिलैत कंहा हए। हमरा ता याद अबै हति।

हम पूछली-आइ कालि अंहा कंहा पोस्टेड छी। कमाली जी बजलैन-मध्य विद्यालय,हुसैना म हेडमास्टर छी।

हम पूछली-इसनाहिल जी कंहा हतन।

कमाली जी बजलैन-ता मध्य विद्यालय पनिहास म हतन।

हम पूछली-प्रधानाध्यापक चौधरी जी कंहा हति।

कमाली जी बजलैन-हमरा न पता हैय।

हम पूछली-राय जी कंहा हतन।

कमाली जी बजलैन-ता त स्वर्ग सिधार गेलन।

हम कहली -नाया जी निक लाग नहथि।

कमाली जी वजलैन -हं।

हम पूछली -नैना जी कंहा हगिन।

कमाली जी वजलैन -निटायर्ड हाक घन यन हगन।

हम पूछली -जमशेद साहेव क वटी -वटा क कि हाल चाल हउ।

कमाली जी वजलैन -वटी क त विआह हा गेलऊ। आ वटा उव्र शिआ प्राप्त क नहल हउ।

नाष्टा यानी क क कमाली जी चल गेलन। आऊ हम प्रधानाध्यापक स निटायर्ड हाक जीवन विना नहल छी। यनंच जमशेद साहेव क याद न गेल। वा धार्मिक नहगन यन कडुन नऊ नहथि। नमजान म नाज दिन गांव म क मस्जिद मं टिहिन मं ऊसनाहिल जी आ कमाली जी क संग जाऊन नहलन। हुनकन मधुन व्यवहान, सादा जीवन आ उव्र विचान मन म याद नह गेल।

-आचार्य नामानंद मंडल, सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र दवी, पिता-स्व०नाजधन मंडल, पत्नी-प्रमिला दवी, जन्म तिथि-०१ जनवनी १९६० याग्यता- एम-एससी (नसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। नुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लखन आ आलख। प्रकाशित पाथी - मैथिली कविता संग्रह*

रासा क न वांटिया। २०२२ प्रकाशित नचना - समिया कविता संग्रह याथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाना। २०२२ यत्रिका -मिथिला समाज, घन -वाहन आ अयूर्वा (मैसाम)। अखवान -दैनिक मैथिल यूनर्जागनध प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- यूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, तुमना, सीतामढी। स्थायी यता-ग्राम-यियना विशनयून थाना-यनिहान जिला-सीतामढी। वर्तमान यता-यियना सदन,मूनलियाचक वार्ड-04 सीतामढी यास्ट-चकमहिला जिला-सीतामढी नाज्य-विहान यिन-843302

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.७.आचार्य रामानंद मंडल- मैथिली साहित्य मे परिवर्तन स आस जागल



आचार्य रामानंद मंडल

मैथिली साहित्य मे परिवर्तन स आस जागल

बात शुरू करब प्राचीन स अजित आजाद तक। प्राचीन आ महाकवि विद्यापति मैथिली मे साहित्य न रचलन। ओ संस्कृत आ अवहट्ठ मे साहित्य रचलन। महाकवि त अवहट्ठ के देसिल बयना कहलन। ओइ समय मे मैथिली भाषा नाम न रहय। बाद मे एकर नाम मैथिली भाषा नाम पड़ल। अंग्रेज भाषाविद अब्राहम ग्रियर्सन

क भाषा सर्वे निर्माण क अहम योगदान छय। पनन्दू ना मैथिली क विभिन्न बोली दक्षिणी मैथिली, पश्चिमी मैथिली आ ठेठी आदि क चर्चा कैलन। बाद मे राहुल सांकृत्यायन दक्षिणी मैथिली क अंगिका आ पश्चिमी मैथिली क वज्जिका नाम देलन आ मैथिली स अलग मानलन। २००३ मे मैथिली भाषा संविधान क अष्टम सूची मे जुड़ल। हालांकि आइयो तक अंगिका-वज्जिका क भाषा क दर्जा न मिलल छय। हालांकि भाषा क लेल स्वतंत्र ज्ञानी छय आ मैथिलिया मे स्वतंत्र ज्ञानी छैब करा। महाकवि संस्कृत आ देसी रचना मे साहित्य रचलन त दुनू क प्रकृति भिन्न रखलन। एकरा बाद मे संपादन मे देसिल रचना क संस्कृतनिष्ठ बना देल गेल। कायस्थ आ ब्राह्मण मिल क मिथिला पर लगभग 300 सौ वर्ष शासन कैलन। बाद क शासक मैथिली आ मैथिल पर आधिपत्य जमैलन। मान कि ब्राह्मण आ कायस्थ क संस्कृतनिष्ठ बोली क मैथिली आ ब्राह्मण आ कायस्थ क मैथिल बनैलन। बाबाजी मैथिल महासभा एकर घोषणा कैलक। दोसर जाति क मैथिल महासभा मे प्रवेश निषेध क देलक। एकर विरोध यादव महासभा कैलन परंतु अनन्य शादन नष्ट क नष्ट गेल। सबस महत्वपूर्ण छै बात रहल जे हमन बोली भाषा आ शासन भाषा बोली बना देल गेल। बाद मे साहित्य अकादमी मैथिली भाषा विभाग अछै सिद्धांत क प्रश्रय देलन। साहित्य अकादमी क निर्माण स २०२२तक संयोजक पद पर गैर ब्राह्मण संयोजक न बन पायल आ २०२० तक गैर सवर्ण क अकादमी क मूल पुरस्कार न देल। २०२१क मूल अकादमी पुरस्कार पंगु उपन्यास पर जगदीश प्रसाद मंडल गैर सवर्ण क काफी विरोध क बाद मिलल। आ २०२२ क मूल अकादमी पुरस्कार निर्विवाद रूप स ब्राह्मण अजित

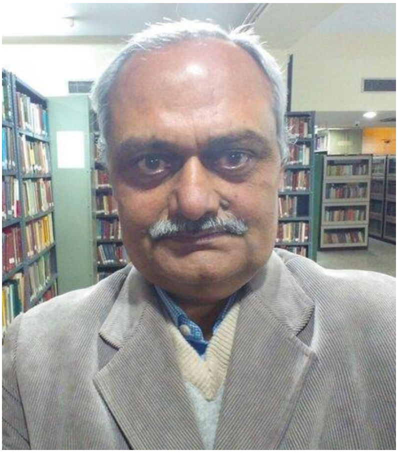
आजाद क मिलल। ग २०२२ म अकादमी क मैथिली रासा क संयाजक यद यन रानी मग स यहिलनान (गैन वारन रासानिद य्रा उदय नानायक्ष सिंह नविकाग स निर्वाचिग रूलन। अव हिनका स मिथिला आ मैथिली रासी क वड आस रूया। यनंगु [illegible] कांटक गाज रूया। कना मैथिली क रासा आ वाली म सामंजस्य वे(0यग़। कानन दुनू म साहित्य नवल जा नरूल रूया। जानकानी क मूगाविक अं(ग्रेजी क यांच (शैली मं अं(ग्रेजी साहित्य नवल जा नरूल रूया। मैथिली मया वाली न करूक (शैली करूल ना मानल जाय। अकादमी क सरू कासांग समानशी वनाव क आनश्यकगा रूया। नविकाग जी रासानिद रूगन यनंगु मानक,नान आ (0ठी क मिटाव म मैथिली रासानिद कौकस स नियटना[illegible] कांटा रूनल नारू रूया। अ[illegible] क लल मैथिल-मैथिली रासी क यूनजान सरूयाग क आनश्यकगा रूया। हालांकि संयाजक यद यन अ[illegible] यनिवर्गन स मैथिली साहित्य साधक आ मिथिला -मैथिली अरियानी क आस जागल रूया। नन संयाजक क वधा[illegible]ी संग शुरूकामना।

-आचार्य नामानंद मंडल सामाजिक चिंगक सीगामढी, *सनानिवृग्न प्रधानाध्यायक, माग-वष्ठ दवी, यिग-स्न०नाजधून मंडल, यत्नी-प्रमिला दवी, जन्म गिथि-०१ जननवी १९६० याश्यगा- उम-उससी (नसायन शास्त्र), उम उ (हिन्दी)। नृचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविगा - कहानी लखन आ आलख। प्रकाशिग याथी - मैथिली कविगा संग्रह रासा क न वांटिया। २०२२ प्रकाशिग नचना - समिया कविगा संग्रह याथी - जनक नंदिनी जानकी आ (शौर्य गाना। २०२२ यत्रिका*

-मिथिला समाज, घन -वारुन आ अपूर्वा (मौसाम)। अखवान -दैनिक मैथिल पूनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, जमना, सीतामढी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता- पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढी पत्र-चकमहिला जिला-सीतामढी नाम्न-विहार पिन-843302

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.नवीन्द्र नारायण मिश्र- सनिसर वाली काकी



नवीन्द्र नारायण मिश्र

सनिसरवाली काकी

हम जहिआसँ मोन पाड़ैत छी,सनिसरवाली काकीकेँ ओहिना देखलिअनि। उज्जर चक-चक नूआ पहिरने माथ झपने,बहुत नहु-नहु बजैत अपन बात कहैतथि। अह्नाखम अपन दियादिनी बनमावाली काकीक संग नवका पोखरिपर स्नान-पूजा करबाक हेतु जाइतथि। रस्तामे एकाधगोट आओर संग भऽ जाइतथिन। सभगोट घाटपर स्नान कऽ घर-बाहरक गप्प-सप्प करैतथि, महादेवकेँ जल ढारैतथि आ वापस घर जखन आबि रहल होइतथि तखन गामक लोकसभ ओछाओन छोड़बाक उपक्रममे रहैत

। जाड़क मास रहैत गाँ अधिकांश लोक घूरक सेवन करैत रहैत। रान-रान चाह पीवाक चलनि ओहि समय गामसभमे नहि रहैक। मुदा कड़ा-कड़ा चाह पीबैत छलाह,से सभ अङनबोकयन पहुँचि जाइत छथि। किसानसभ जन अछवन्ह बलि जाइत छथि। ओँ अगहनक मास अछि गाँ दिनवज-दिनवज दाउन होवए लगैत। क्रमशः मौसम बदलैत,लोकक दिनचर्या तदनूकुल बदलि जाइत। मुदा सनिसनवाली काकीकेँ नित्य ओहिना देखिअनि। माघमासमे हुनका ओढ़ना ओढ़ने नहि देखिअनि। स्नान-पूजा कए लौटैत काल जाड़क मासमे थर-थर कपैत किछु-किछु मंत्र पढ़ैत ओ नायस अपन घर आबि जाइत छथि।

हमसभ नेना रही, जवान भेलहुँ। मुदा सनिसनवाली काकी ओहिनाक-ओहिना रहथि। हुनका कहिओ रनिमान हँसैत नहि देखलिअनि। जखन कखनो हुनकर आङन जाइ गाँ ओ कानो-न-कानो काजमे बाझल रहथि। हुनकर हाथक बनाओल भोजनक प्रशंसा गामक कनी गोक कम। कौकवन हमना हुनका ओहिठामसँ नोत होइत छल। आव साबैत छी गाँ साचिओ नहि जाइत छी। कतेक मनोयोगपूर्वक ओ भोजन बनबैत छलीह। आङनमे जाइते लगैत जना कोनो बड़ पवित्र स्थानपर आबि गेल छी। साँस आङनमे एकटा खढ़ नहि देखाइत। सदिखन चमचम करैत रहैत छलनि हुनकर आङन।

ओहि आङनमे गेलाक बाद एकटा अद्भुत शांतिपूर्ण वातावरण रहैत छल। कुलमिला कए चारिगोट ओहिघरमे रहथि। राइजी) स्वर्गीय अनुग्रह नारायण झा),सनिसनवाली काकी,वनमावाली

काकी, आ कामदेव राय। यद्यपि संबंधमे ओ काका लगैतथि तथापि हमसभ ततसँ हुनका रायजी कहैत छलिअनि। ओ काशीसँ संस्कृत पढ़ने छलाह। ज्योतिष छलथि। हमर गामक मुखिआ सेहो निर्विरोध चुनल गेल छलथि। भूदान आंदोलनमे विनोबा भावे संग बहुत सक्रिय छलाह। एकबेर तँ ओ अपनसभटा जमीन भूदान आंदोलनमे दान कए देने छलथि। हुनका लौकिक ओएह जमीनसँ जीविका चलैत छलनि। तँ लगैत अछि जे स्वावलंबनमे ओ की काज कए देने छलथि बादमे बनमा वाली काकीक प्रयाससँ ओ जमीनसभ वापस भेल छल।

हमर प्रपितामह स्वर्गीय गुमानी मिश्र बहुत संपन्न लोक छलथि। हुनका छओटा पुत्र आ दूटा पुत्री छलथिन। एकटा पुत्र विआहक बाद कम वयसमे मरि गेलखिन। एकटाकेँ कोनो संतान नहि भेलनि। चारिटाकेँ संतानसभ भेलनि। एकटा कन्याक विआह बहेरागामा)जनकपुर लग,नेपालमे} छलनि। दोसर कन्याकेँ विआहक बाद गाम बसाओल गेलनि। ओहि समयमे बेटीकेँ बसनाइ,गाममे रहिनमानकेँ राखब, लोकनिक बात बुझल जाइत छल। हुनका जमीन,कलम,पोखरि सभबीजमे हिस्सा देल गेल छलनि। हुनका तीनटा पुत्र भेलनि। ओहिमेसँ एकटा छलथि रायजी। दोसर छलथि- स्वर्गीय जगदीश झा। ओ नारायण हाइस्कूल मधुबनीमे पढ़ैत छलथि। गेनखलीमे नाम कान छलथि। मुदा कम वयसमे टीबी बिमारीसँ हुनकर मृत्यु भए गेलनि। हुनक पत्नीकेँ हमसभ बनमा वाली काकी कहिअनि।)बनमा बगिआ लग कोनो गाम छैक।) हमसभ ततामे हुनकर एकटा पुत्रहाटा देखने छही जे हुनकर पतिनान लगमे

हुनकर एकटा निसान छल। गेनखलीम ओ बहुत नाम पगमासर जिगन नहथि। सदा हमसर ननाम दखन नही। वनमावाली काकी बहुत जागा कए छूी दुनु वस्तु नखन नहथि। हुनका एकटा पुत्र छथि कामदव राछू। वावाक वहिनक नाम नहनि दुर्गा दाछू। दुर्गा दाछूक पसन पुत्रक विआह सनिसनवाली काकीसँ नहनि। हम कहिआ हुनका नहि दखलिअनि। लाकसर कहैत ज ओ विआहक किछुए दिनक वाद टीवी विमारीसँ मनि गेलथि। पकनवाद सनिसनवाली काकी विधवा रए गेलीह। हुनकन सौंस जीवन ओहिना उजना सानी यहिनन वीति गेलनि।

हम जखन कखना ओहि आङन जाछू,सनिसनवाली काकीकेँ काज कनैत दखिअनि। घनक काजसँ जखन हुनसपि हानि गँ चनखा काटथि। ओहि समयम चनखा चलवाक एकटा हवा वहल नहैक। हमनसरक गामम खादी रंजान नहैक। ओहि माध्यमसँ कपका गनीव महिलासरक गुजन हाछूप छलैक। महिला कप्हिनसर महीन सँ महीन पाग काटथि। जपक महीन पाग पकन पपक वसी दाम रहिपैक। पाग कपक महीन रहल पकन निर्णय खादी रंजानक कार्यकर्ता कनैत छलाह। चनखासर सदा कैक प्रकानक हाछूप छलैक। सरसँ येघ चनखाकेँ अंवन चनखा कहल जाछूक। ओहि चनखाम एकहि संग कैकटा सूप निकलैत छल। ओकना चलवएम वसी यनिश्रम जनुन हाछूप छल मुदा सूपक उत्पादन सदा कैक गुना वसी हाछूप छल। कप्हिनसर अयन-अयन सूप खादी रंजानम जमा कए दथि आ पकना वदलाम वसीकाल खादी कयङा दल जाछूप छल। टाका कम काल देप छल। एहि पनहसँ कपङान

परिश्रम कए ई सभ अपन देह मयैत छलीह आ पटा ऐतैत छलीह। सरिसबवाली काकी आ बरमा वाली काकी दुनूगोटे आंगनक चरखा चलबैत छलि।

सरिसबवाली काकीक स्वरमे अद्भुत मधुरता रहनि। भगवतीक गीत,विआहक समयक गीत,बरक परिछन आ बेटीक बिदा काल समदाउन ई एतेक मधुर गबैत छलीह जकर वर्णन करब मोसकिल अछि।

हुनकामे सामाजिक काजमे मदति करबाक जबरदस्त प्रवृत्ति छलनि। ककरो घरमे विआह,उपनयन होइत तँ ई दिन-राति एक कए दैथि। उपनयनक मरबामे लिखिआ-पढ़िआ करबामे हुनका महारत छल। सौंस मरबामे तरह-तरहक चित्रसभ हाथसँ बनबैत छलीह। आइक समय रहैत तँ हुनकर एहि प्रतिभासभकेँ समाजमे प्रचार होइत,हुनका किछु आर्थिक लाभ होइतनि। मुदा ओहि समयमे से सभ तँ नहि रहैक। मधुबनी चित्रकलाक प्रचार-प्रसार एलैक जरूर मुदा बहुत देरीसँ। तेँ हुनका सन-सन कतेको मौलिक कलाकारसभ साधना करैत-करैत एहि संसारकेँ छोड़ि देलथि।

गाममे ककरो बेटीक विआह होइतैक तँ मधुश्रावणीमे कनिआँकेँ खिस्सा कहबाक हेतु ई जाइत छलीह। हुनका सभकिछु कंठाग्र रहनि। लग-पासक महिलासभ बैसैथि,कनिआ बैसैथि, जँ बर आएल छथि तँ ओहो बैसैथि आ सभगोटे नियमपूर्वक हुनकर खिस्सा सुनैथि।

मधुश्रावणीक समाप्तिपर जे विधि-व्यवहार होइत से सभ ओ करैत छलीह। बदलामे हुनका की भेटैत छलनि? जँ कनिआक सासुरसँ हुनका लेल नूआ आबि गेल तँ से हुनका भेटि जाइत छलनि नहि तँ हाकला। मुदा हुनका ओहिसभसँ निर्लिप्त देखिअनि। जेना ओ ओहि पृथ्वीपर व्यवसाय सभकिछु सहि जेबाक हेतु आएल होथि। कहिओ ककरो कोनो गपक प्रतिवाद नहि, आग्रह नहि, इच्छा-अभिलाषा नहि।

बैकबर पावनिसभमे हुनका अपना ओहिठाम किछु-किछु बनबैत देखिअनि। जेना तिलासंक्रान्तिमे चूड़लाइ बनबएमे ओ हमर माएकेँ मदति करथिन। ओहि काजमे तँ बनमावाली काकी सेहो लागल देखिअनि। सभ गोटे गप्प-सप्प करथिन आ चूड़लाइओ बनबैत रहथिन। ओहि तरह छिट्टाक-छिट्टा चूड़लाइ बनैत छल आ हमसभ तकरा कतेक दिन धरि खाइत रहैत छलहुँ।

सनिसरवाली काकीकेँ अपन कोनो संतान नहि रहनि। राइजीकेँ सेहो अपन कोनो संतान नहि रहनि। हुनकर पत्नी कहि नहि कहिआ शुरुएमे मरि गेलखिन। कहाँदनि हुनकासभकेँ एकटा पुत्र भेल रहनि जे दस बर्खक भए कए मरि गेलथि। बनमा वाली काकी सेहो शुरुएमे विधवा भए गेलथि। मुदा संयोगसँ हुनका एकटा पुत्र भेल रहथिन-कामदेव राइ। तीनू हनिकरमे ओएहटा संतान रहथि। साल भरि पहिने अस्सीसालक बएसमे हुनकर मृत्यु भए गेलनि।। हुनका भरल-पूरल परिवार छनि। सनिसरवाली सभदिन हुनके अपन संतान बुझि जीबि गेलीह। कहिओ ककरासँ

किछु अपेक्षा नहि। भगवान छोड़ि ककरा मदति करबाक नहि । कहियो काल हुनका माएक लग नाम पाछाँ देखिअनि । साइत मानस गेल कष्ट असह्य भए जाइत हेतनि। काहुँ नँ ओकरा अभिव्यक्ति बाहेर छलैक ।

नौकरीक क्रममे हम बाहर चलि गेलहुँ । एकदिन सुनलिऐक जे सनिसनवाली काकी नहि रहलीह । सदा-सर्वदाक लेल एकटा दुखी आत्मा एहि संसारकेँ छोड़ि गेलीह । बिना किछु कहने,बिना किछु मंगने ।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिम्रिआ घाठी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष॰२०१७ १.भानसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष॰२०१८ ४. हसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष॰२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष॰२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन

वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि गेल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक पराग(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि गेल अछि सबकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि गेल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहत (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१.कुमार मनोज कश्यप- ढीठ



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

ढीठ

ट्रेन खुजिते स्टेशन पर भीड़ खतम होअऽ लागल छलै। एकटा महिला अपन नेना के कोरा मे लेने सुग्गा-मैना बना घूमा-घूमा कऽ खोआबैक यत्न कऽ रहल छलीह। मुदा नेना छलै कि खेबा लेल किन्नहुँ तैयार नहिं.... मूँह छीप लै... आ कोरा सँ उतरबाक हेतु प्रयासरत! खोआबैक प्रयास मे असफल भेला पर स्त्री के चेहरा पर कखनो-कखनो तामसक रेख बिजलौका जकाँ चमकि जाइत; मुदा उत्छ मे विलायित सेहो भ' जाइत। ओ ओकरा नव-वधू वा लोक के देखा-देखी पोल्हबै जे कहुना एका-दु कौर आन खा लै। सफलता-असफलता के बीच खेल चलिते छलै कि सहसा मैल सऽ कारी चिक्कट भेल अर्धनग्न देह, जाड़ सऽ दाँत कटकटबैत, बन-बन खसैत पोंटा सुड़कैत

एकटा पाँच-छौ साल क छौंडा याचना म आँगन जाउन उदि स्त्री क वाट छकि ललकै। "हइ ....कल्लन!!! कहुन ढो0 लगा कs 0ाढ अछि! सयनीर न दखियौ! राजे छुं कि नहिं .... एखन लगिया दवौ। छुगहुन नहिं गन!! माय-वाय जनमा कs छाति दलकनिहं रीख माँगे लौ। जा ज जनमलकौ गकन खा गs ...।" स्त्री गामस वजैन नहलीह। मुदा उा छौंडा उदिना निर्विकान याचना म 0ाढ।

"मम्मी! हमना दुख नै अछि गैया आदाँ मूँह म Qसै छौ। उा खाय्य लै माँगेयै गैया उाकना नै दै छियै?' ननाक प्रगिनाद सुनि कुपित उा स्त्री 'हूँह ....!!! 'कहैत नना क कान सs एक कात उगानि वाटी म वाँचल सामग्री नलक यटनी यन हकs लागल नहथि।

उा छौंडा एखना उदिना एक टक वाटिय दिस दखि नहल छल।

-कुमान मनाज कश्यप, सम्प्रगि: रानग सनकान क उय-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टानन-4, टाय्यय-5, किदनय्य नगन यूर्व (दिल्ली हाट क सामन), नय्य दिल्ली-110023 मा. 9810811850 / 8178216239 य्य-मल : writetokmanoj@gmail.com

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.८.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१७)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - रुनाजपुर,दरभंगा, सासुर - गोढियारी (वलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग - १७)

पूर्व कथा:

पुरंदर आ पुरुरवा क एक संग दानवगण सऽ युद्ध करबाक लेल मिलाप होय क सूचना भेटला पर पर दानवराज केशि अत्यंत कुपित होइत अछि । ओ एहि बेरक युद्ध मे दुनू क पराजित कऽ अपन श्रेष्ठ बनबाक दृढ निश्चय कयने अछि ।

आब आगू:

मणि,माणिक,रत्न एवं स्वर्ण जड़ित पर्यंक पर सुतल सुतल पुरुरवा अन्यमनस्क सन होमय लगलाह । ओ एक श्रेष्ठ क माध्यम सऽ अमरपुर भ्रमणक अपन अभिलाषा इन्द्र क प्रेषित कयलन्हि । इन्द्र अत्यंत प्रसन्न भेलाह । ओ राजाक संग स्वयँ चलबाक प्रस्ताव कयलन्हि । रथ प्रस्तुत भेल । दुनू गोटे ओहि रथ पर बैस गेलाह । अश्व तीव्र वेग सऽ चलऽ लागल । पहिल राजमार्ग पर रथ दौड़ैत रहल,पुन: एक चौक आयल जाहि ठाम सऽ रथ एक अन्य दिशा मे घुमि गेल । आब मार्ग क दुनू कात मे उन्नत वृक्ष दृष्टिगत भऽ रहल छल । ओहि वृक्ष मे पारिजात,कल्पवृक्ष समेत विभिन्न प्रकारक अन्य अनेकों वृक्ष छल,जे देखबा मे अत्यंत मनोहर लागि रहल छल । रथ किछु दूर आर चलैत रहल तत्पश्चात इन्द्रक संकेत पाबि ठमकि गेल।

इन्द्र पुरुरवा क रथ सऽ उतरबाक संकेत कयलन्हि। पुरुरवा रथ सऽ उतरि गेलाह । दुनू आब नंदनकानन क दिशा मे प्रस्थित भऽ रहल छलाह । इन्द्र मार्गक दुनू कात लागल वृक्ष सबहक फलपुष्प क विषय मे जानकारी पुरुरवा क दऽ रहल छलाह ।

उद्यान क मध्य मे अनेक स्वर्ण निर्मित सिंहासन अवस्थित छल । ओहि मे सऽ दूटा सिंहासन पर ओ दुनू बैस गेलाह । सारथी

सँ इन्द्र किछु कहलन्हि,सारथी चलि गेल। किछु देरी क बाद किछु दिव्य फल पुरूरवाक समक्ष सारथी प्रस्तुत कयलक। एक फल पुरूरवा खलथि। फल खाइतहि मात्र ओ अपना मे स्फूर्ति क अनुभव करs लगलन्हि। ओहि फल क खाइतहि मात्र हुनक शरीर मे अपरिमित शक्ति क संचार होमय लागल। पुरूरवा एहि अनुभव सँ आश्चर्यचकित भय गेल छलाह। इन्द्र क संग समसामयिक विषय पर चर्चा करैत रहलाह किछु काल धरि। तत्पश्चात ओ अपन समक्ष क रमणीक विहंगम दृश्य पर दृष्टिपात कयलन्हि। निकट मे एक रमणीय सरोवर छल,जाहि मे भाँति-भाँति क पुष्प मुकुलित छल। ओ सब पुष्प पृथ्वीक पर अलभ्य छल।

पुरूरवा ओहि सरोवरक दिशा मे प्रस्थान कलथि, इन्द्र अपना स्थान पर बैसल एक पुष्पक सुगंधि सँ अपना क प्रफुल्लित करबा मे व्यस्त छलाह। सरोवर क निकट पहुँचि पुरूरवा चारू दिशा मे दृष्टिपात कएल,मुदा हुनका अन्य कोनो जीवक उपस्थिति क आभास नहि भेलन्हि। ओ पुष्करिणी क घाट पर बैस अपन दुनू पैर क जल मे डुबा ललथि। हुनका अत्यन्त आनंदक अनुभूति भेलन्हि। पुष्करिणीक मनोहर दृश्यावली क अवलोकन मे व्यस्त पुरूरवा एहि बात सँ अनभिज्ञ छलाह कि दुटा सुंदर नेत्र हुनका निर्निमेष निहारि रहल छल। ओहि नेत्रक स्वामिनी क मुग्ध दृष्टि हुनक शरीर क छू रहल छल।

उर्वशी चित्रलेखा क संग ओहि पुष्करिणी मे स्नान करबा हेतु आयल छलीह ,मुदा हिनका सबहक रथ क देखि एक झुरमुट क निकट चित्रलेखा क संग चुपचाप बैस गेलीह। उर्वशी अपन दृष्टि उठा कs जाक बनि पुरूरवा क देखथि हुनक सुंदरता मे हुनका डाबहि

अधिक अस्तित्वहीन दृष्टिगत होइछ। ओ राजा निमग्न भऽ उठलीह ।
चित्रलेखा उर्वशी के मनक राजा पढ़बाक प्रयास कयलथि,मुदा
असफल भेलथि । ओना उत्सुकता तऽ हुनका छलन्हि पुरुरवा के
देखबाक । उर्वशी अपन मन कें अपन धीमा करैत बजलीह चित्रलेखा
सँऽ -
"नारद काक सुंदर रूप छन्हि ,काक बलिष्ठ दुनू भुजा । काक उन्नत
हृदय-स्थल । यौवन में तऽ पुरुरवा बढ़ल -चढ़ल छथि । हमरि
नारदक प्रशंसा सऽ अधिकहि यावि भेल छी सखि। "
"हँ ! गौं सच कहलह सखि! एहन पुरुष तऽ हमहुँ आइधरि
नहि देखने छलहुँ । अपन राजा इन्द्र पर्यन्त एहन नहि छथि। "
चित्रलेखा सहज अस्तित्व छलीह।
"हँऽऽऽऽ इन्द्र तऽ हिनक पगधूलि के बराबर नहि छथि। "
किछु काल ओतहि बैसला उपरान्त चित्रलेखा बाजि उठलीह- "हमसब
कखन धरि बैसल रहब एतऽ, चलऽ सखि मानसरोवर पर अपना
सब स्नान कऽ ली। "
" नहि-नहि! एतहि बैसऽ ने किछु देरी,आन दासन छोड़ि किएक
जयबह ?" उर्वशी चित्रलेखा के नाकेँ बाजि उठलीह।
उर्वशी पुरुरवा के देखबा में अपना के बिसरि गेल छलीह । हुनक
हृदय में मन्थन-मन्थन सन किछु दर्दक अनुभूति भऽ रहल छलन्हि
। हुनक मनक दशा विचित्र छल। एक मन में इच्छा होइन्हि पुरुरवा
के देखैत रही। दोसर मन कहन्हि शीघ्र पुरुरवा के हृदय सऽ
लपटाय हुनका आलिंगनबद्ध कऽ लथि । ओहि दशा में समय व्यतीत
होइत जाय । मुदा हुनक ओहि इच्छाक पूर्ति होनाइ संभव नहि
छल । ओ तऽ मात्र मनक कल्पना छल!ओ मनहि में रहल!

पुरुरवा उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। ओ एक गोट सुंदर पुष्प अपन हाथ मे लऽ इन्द्र क दिशा मे प्रस्थान कलथि -
"अत्यन्त सुंदर उद्यान अछि अपनक" - हास परिहास करैत पुरुरवा इन्द्र सँ कहलथि। इन्द्र मात्र विहुँसैत रहलाह। तत्पश्चात पुरुरवा आपस जयबा हेतु उद्यत भऽ गेलाह। इन्द्र स्वयं आपस जयबा हेतु व्यग्र छलाह। ओ अपन अनेक आवश्यक कार्य छोड़ि कऽ एतऽ आयल छलाह। युद्धक तैयारी वास्ते उचित निर्देश जे देमऽ क छलन्हि हुनका अपन सेना क। दुनु गोट रथ पर आरूढ़ भऽ पुनः आपस चलि देलाह, - इन्द्रक नगरी अमरावतीक दिशा मे।

सैन्य व्यूह रचल सुसज्जित देवागणक रथ,घोड़ा,हाथी सभ प्रस्थान कलक। पुरुरवा अपन विष्णु प्रदत्त रथ पर विराजमान छलाह। ई रथ इन्द्रक रथ सँ अधिक सुंदर छल। सेना क प्रयाणक काल शची इन्द्र क रानी,अनुजा,गोरावन आदि क मंगल टीका लगौलन्हि। पुरुरवा सुंदर अप्सरा सभ क देखि रहल छलाह जे सभ प्रमुख देवगण क मंगलटीका लगा रहल छलीह। ओहि तारा सम जगमगाइत अप्सराक झुण्ड मे हुनक दृष्टि एक पर जाकऽ स्थिर भय गेल! जकरा ओ मुग्ध दृष्टि सँ देखैत रहि गेलाह - ओ छलीह विस्तृत व्योम मे ताराक मध्य चन्द्रमा सन जगमगाइत !अप्सरा सभ मे श्रेष्ठ "उर्वशी"!
उर्वशी मंगल टीका मात्र पुरुरवा क ललाट पर लगौलीह। उर्वशी सँ मंगल टीका लगाबय हेतु पुरुरवा क झुकऽ पड़लन्हि। विहुँसैत राजा उर्वशी क कहलथि - "ई नृप आइ धरि कतहु नहि झुकल

। मुदा अप्सरा अपन ! एक मात्र आहाँ छी जनिकर सम्मुख इ राजा आइ नतमस्तक भेल अछि। "

उर्वशी राजा दिशि देखलथि हुनु क दृष्टि एक आसन सँ उठि मात्र क लेल मिलल आ पुरुरवा अपन दिल उर्वशी क जादू भेलआँखि मँ तुरंत अनुरक्त करऽ लगलाह । उर्वशी मधुर स्वर मँ कहलनि - "कहब नहि सकऽ बला राजा क अपन सम्मुख सकल यादि हम अपना क अपार सौन्दर्यशालिनी मानैत छी। आइ हम धन्य भऽ गेलहुँ | हम एकर सम्मान नखनाक पुना प्रयास करब । हमर कामना रहत जे नृपति पुरुरवा हमर आँगनिक अन्य ककरा समक्ष नहि सकथि। "

नृप देखलथि,उर्वशीक नेत्र पनियायल छल! हुनक हृदय कसकि उठल! अन्दर विलाप करऽ लागल! दिल मँ इच्छा भेलनि जे उठि सुंदरीक नेत्र कमल क सुखक क अपन उत्तरीय क कोरा बना लथि! मुदा इ एखनि संभव नहि छल । दिल तऽ हुनक आन बहुत किछु कहैत छलनि - मुदा ओ सभ किछु समयाचित नहि छल। आइ पुरुरवा अपना क लुटायल-हेरायल सन अनुभव कऽ रहल छलाह! एक बेर अपन समक्ष उठल उर्वशीक ओहि नयन मँ अपना लेल प्रेम,अपनापन,आन कतेका भाव देखि ललथि पुरुरवा । आइ पुरुरवाक ब्रह्मचर्य हुनका जीर्ण भेल सन धराशायी होइत अनुभव भेलनि ।

मात्र एक बेर उठल ओ नेत्र-कमल पुरुरवाक हृदय मँ प्रेमक सागर प्रवाहित कऽ देलक । उर्वशी क प्रति प्रेम हुनक दिल मँ हिलकोर मारऽ लागल। ओ अपन कन्या क अपना हाथे थामि कऽ रथ मँ प्रविष्ट भेलाह । रथ मँ प्रविष्ट भेलाक पश्चात ओ देखऽ चाहलथि

उर्वशी क ! मुदा गाs धनि ओ थाल एक मंच यन नाखि अप्पनाक रीउ मं कगद गुमि गेल छलीह।
एम्हन उर्वशीक हृदय अपन वश मं नहि छलनि । ओ विनह-वेदना सs व्यथित रs उठल छलीह । हृदय मं एक हूक सन उठि नहल छलनि । किछु काल धनि ओ अपना क संयत नखनाक प्रयास कलनि ,मुदा सब व्यर्थ रल । ओ अपना क सम्हानि नहि सकलीह आ आखिन मं चानाहीन रs धनाशाई रय गेलीह । उर्वशीक स्थिति अत्यन्त सावनीय रय गेल अछि, हूनक वीमानी गंरीन अछि,ई समाचान मात्र अप्पना तक सीमित नहि नहल । सबहक संग यूनुनवाक कर्ण गोचन रल ई वात । हूनका ज्ञात रs गेलनि ई प्रेम अग्नि क ज्वाला मात्र हूनक रस्म नहि कs नहल छनि,उर्वशी पर्यन्त एहि ज्वाला सs निदग्ध रल छथि । ई प्रेमाग्नि दूनू क ह्रदय मं एक समान प्रज्वलित अछि ।
एम्हन ईह्र उर्वशीक ई स्थिति देख एक अप्पना क हूनका उठाकs हूनक कक्ष मं लs जाई क नाम्ह एवं उचित चिकित्सा कनावय क संकेत कलनि । ओ एहि घटना क अमंगल सूचक बूझs लगलाह । यनंच ओ यूद्ध क स्थगित कनना मं असमर्थ छलाह। किएक त यूद्ध प्रयाणक उचित मंगल लग्न कन लग्न-संकेत यूनाहित कलनि । ताहि संs क्रोधानिष्ट ईह्र सब क यूद्ध हेतु प्रयाण कननाक नाम्ह कहलनि । दु:ख मं विह्वल रहिताहुँ यूनुनवा ईह्र क संग-संग यूद्ध क नाम्ह प्रयाण कयलथि ।

क्रमश:

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.९.जगदीश प्रसाद मण्डल- माउथन (धारावाहिक उपन्यास ७गानक्म यठाव)



जगदीश प्रसाद मण्डल

माउथन (धारावाहिक उपन्यास)

७गानक्म यठाव

सन्हेन वर्खक अवस्थाम कामसन पहुँच गेला अछि। सनकानी सवा गँ नहलैन नहि ज अवकाशक संग पेंशन रहिगैन। ज्ञा बनन गा

झूठो नै कहऽ पडि रहल छैन।

लगातार बारह घण्टा झूठो कलाक पछाति कामसन तना पहुँचला। चुनम-चुन जहिना देह रहल छैन तहिना काजक ठामनाहटिसँ मन रहऽय गेल छैन। पतिनातम मात्र दुःऽय गोर छैथ, अपन आ पत्नी। पाँचा बटी अपन-अपन सासुर बसै छैन आ समुचित जिनगी नहि रहैन बटा, गुलाब दिल्लीम रहै छैन।

समुचित जिनगीक मान रहल जे जखन गुलाब स्कूलम जाऽऽ-जाकन रहल तखन कामसनक आर्थिक स्थिति पतना गेल छलैन। ठना, बटाक जन्मक उपलक्षम नीक जकाँ राज-राग कन छला आ राज खनिहारा सर माथपर हाथ दैत कहल रहब कनथिन जे 'बौआ पितासँ पैघ पद्म पबह आ पैघ ऽऽजीनियरा हबह।' मुदा जहिना नायू स्वनुप बदल छलैन तहिना नायूम मिलि नायूमण्डल बनि गेलैन। एकलौता बटा हाऽऽक कानरोँ, दुनू बकरीक मान माता-पिताक पूर्ण ऽऽछा रहैन जे गुलाबकँ नीक रहन-सहन आ नीक शिक्षा दियाबी मुदा जीवनक आर्थिक प्रवाह गँ कामसनक सुखि गेल छलैन, गँए निवानक धान सरहा म्रियमाण हाऽऽत ठाए पहुँच गेलैन जेठाम बटाक प्रति सनाक रावना मनम रहितौं नहितो कामसन नहि कऽ सकला।

तना पहुँचित कामसन दखलैन जे पत्नी दर्दसँ छटपटा रहली अछि, किया दखनिहार नहि जे ताँक्टरा बजा अनितैन। थकानसँ कामसनक देह अपन चुनम-चुन रहल, बहाणीक अवस्थाम, दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलैन। अपन मन करए लगलैन जे जिनगीक कान माठयन, कान नष्ट छुटल आ कान पकठाएल स अखनो नहि बुझि पब रहल छी। पुन: अपन मन कहलकैन, पचास बर्खसँ ऊपर धनिक

न अपन पिताक जिनगी छल, मुदा पछातिक गँ पतीक पिताक नहल। उदा न साथक छथि।
हारल-थाकल कामसनक मुहसँ अपन निकललैन- "यएह छी जीवन, कानि जीबू कि हँसि जीबू!"

(समाप्त)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.जगदीश प्रसाद मण्डल- सिमानक सगरा



जगदीश प्रसाद मण्डल

सिमानक सगता

आइक एहन परिवेश बनि गेल अछि जे जमहन ताकू तमहन सीमानक सगता उठि गेल अछि। से करब जे अपन सरक बीच अछि आ दुनियाँक आन देशम नहि अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। सरकेँ अछि। कबीर दास यएह ने कहने छथि, 'दो पाटन के बीचम बाँकी बँच ने काय।' जखन दुटा पाटन हएत तखन दुनूक अपन-अपन उकाङ्क्षिक सीमा हेब करत। करब जे शून्य सीमा विहीन अछि। मुदा कोना शब्द उड़िना नञ न उठिकs ठाढ़ होएत, उकरा आधार (लक्ष्य) चाही। ॐ शून्य शून्य होएत तँ शून्य शब्द कोना बनत। खाएत जे से, अखन शून्यक प्रश्न नहि, अखन अंकक प्रश्न अछि।

चाहे अपना लगसँ दुनियाँकेँ देखू आकि दुनियाँक बीचसँ अपनाकेँ देखू, बात बनावट बूझि पड़त। ओही तँ बूझल बात अछिए जे जेठाम अपन ठाढ़ छी तेठामसँ पूब दिस तकैत-तकैत पच्छिम होएत लगम

पहुँच जाएब तहिना पश्चिमसँ तकैत-तकैत पूब देखैत पूब-पूब देखैत लगैत पहुँच जाएब। तहिना उत्तर-दक्षिणक बीच सेहो अछि...। दलानपर असगर बैसल रघुनाथक मन ध्यान-मग्न होइत गेलनि। जहिना रविक्क पानिमे दुनियाँक सकल सारू देख पड़ैत, तहिना ध्यान-मग्न पानिमे धानाखेल-मटियाखेल देखाइत पड़ैत। एहन धानाखेल-मटियाखेलमे अपनाकेँ देख लव आकि आनकेँ देख लव, उपर असान सहज अछि जहन बूझि छैथ। एकर मान ओहिना नहि ज नहियेँ देख सकै छैथ। पहिल उदाहरण आँखिक ओतेक न खगल अछि ज मटियाखेलाकेँ रविक्क आँखिये रविक्का सकैत। उना, कहबी छै ज 'जखन जागी तखन भोर', मुदा एहना तँ सम्भव अछि ज उकरा बूझि-करैमे हजारो-लाखो बरख सेहो लगि सकैए। कहब ज एहना अकरहक कोन भेल अछि.? हँ भेल नहि अछि सामान्य अछि। बूझल बात अछिए ज लाखो बरख पूर्व मनुक्ख ओ वनजीवन आएल, सभ किछु लऽ कऽ आएल, मान मनुक्खक सभ अंग-प्रत्यंग। गौतम की ओहो बूझि अछि ज न मनुक्ख अपन देहक सभ अंग देख-बूझि सकल अछि आ न दुखसँ निवृत्त होएबाक मार्गकेँ पकैड़ सकल अछि। कहब ज सभीनक की मार्ग? जकर अनुसन्धान अखनो निरन्तर मान तँतरन सभ तँतरन भेला पछाइत पुनः अपनाकेँ शोधकर्ता बनि नाचि-नाचि अबै छैथ।

निचानक बानमे रघुनाथ असगर राम-लक्ष्मण-सीता जकाँ बान-बान बौआइत-ढहनाइत, मुदा न बानक उत्तर भेटै आ न छाओ देखै आ न बनबासीएकेँ कोनो देख पबै। देखिया पब कना सकैत, बनि कऽ बास करब आकि बास करिकऽ बनब। ओहो प्रश्न तँ अछिए। सम्भवा आ सुलभा अछिए। सब देखन छी ज बनएह सीमन्त-बाल

पुरुखाक रूप बना ठाढ़ करैत आ मैथिलीक रूप बनैबा अछि। एकर माने ई नहि बूझब जे पुरुखा मैथिलीमे रहैत आ मैथिली पुरुखामे रहैत। यएह दुनियाँक रीति त प्रीत, बयीतित, कुरीत, सुरीत सभ बनबैत। बूझल बात अछिए जे सीमेन्ट-बालु निर्जीव अछि मुदा करैत निर्माण अछि जे सजीवकेँ निर्जीव बना दैत आ निर्जीवकेँ सजीव। जेना विचारक बाटसँ विचारीक सहयोग हटैत बनक विचारक बाट हटैत, तहिना एक-दोसराक सहयोगक खगता आ ठाकर पूर्ति होइत यथाशक्ति पूर्ति, करा आ करैत रहैत स गोँ रहए बूझि छैथ, जे यतेन अछि।

घाराएल-मटियाएल-रानियाएल-बाराएल आ सुखाएल विचारक बटसँ देवनाथक मन एना उठिल होइ गेलै जे एकाएक ठाकह विचारक कबूला कतेक श्यामलाल काका ठाम बिदा भेल। रस्ताम कातए कटानि-मटानि छल आकि खढ़-पात जमल छल आकि चलैत-चलैत जे चिक्कन बाट बनि जाइत, स छल, स सभ देवनाथ किछु ने बूझलक।

श्यामलाल कक्काक समय प्रश्नोत्तरीक रहैन। प्रश्नोत्तरीक समयक माने भेल विचार-विमर्शक बीच, अपनाँक प्रश्न आ श्यामलाल कक्काक उत्तर। एकर माने ई नहि भेल जे ओ अपनाँक प्रश्न कोनो घटना-विशेषसँ अछि गोँ ठाइ घटनाक जीवन्त गवाह भेला। जीवन्त घटनाक गवाह ओ होथि जे आँखिसँ देखलैन। घटनाक प्रवाह अछि, जे कतौ-कतौ पाछूसँ अबैत ठाकर विकसित रूप रहैत गोँ कतौ-कतौ वर्तमानक स्वरूप सेहो रहैत। ठाना, कल्पना स्वरूप भविष्यक अनुमान लगौनिहारक कमी सेहो नहियेँ अछि। सभ अपन-अपन अनुकूल भविष्य रचना सेहो अछिए। बूझल बात अछि जे अपनाँ पान साए

ओकाबर रुकैआक ओकरा ताबीज कीनि तनातनिम पहीरि लिअ, सरस्वती माता अहाँकेँ दहीन भऽ जनी, अखन बाम छैथ। खाएर ज अछि, जाब तक भतियाह बुधि रहत ताब तक अहिना भतिया धसान होइत रहत।

श्यामलाल काका आ रघुवीर भाय दरबज्जापर बैसल ठहाका मारि हँसि रहल छला। दूनूक हँसी देख दीनानाथक मनमे सेहो दूनू रंगक विचार उठि गेलैन्ह। पहिल उठलै ज हमरा देख दूनू गोरे हँसि रहला अछि। दोसर उठलै ज ऊँ कहीं तय-समयक क्रममे उठैत सीमानपर पहुँच हँसल होथि, ज हँसी-ठाकर होइन। ठाना, हँसबा-हँसबमे भेद अछि। ओकरा होइत तृप्तिक खुशीसँ हँसब आ दोसर होइत मजेक कऽ मजाक रूपमे हँसब। आधार दूनूक अपन-अपन अछि। तँए आधारहीन नहियेँ कहल जा सकैए।

दीनानाथकेँ संयोग भेलै। संयोग ई भेलै ज तेबीच चाह आबि गेलैन्ह। बूसल बात अछि ज जेठाम देशक उत्थान-पतन सन समस्या रहैए, तहूठाम चाह देखते समाधानकर्ता चाह देखते अपन विचारकेँ राखि पहिने चाह पीबिते छैथ। मुदा जहिना चाह-पानक दोकान पनहक तय-समयक भाजन रहैए अछि तहिना चाह-पान बनमे दूआरा-दरबज्जाक गति तहन अछिए। चाह पीबैक क्रममे रघुवीर भाय बजला-

"काका, अजीब गति दुनियाँक अछि.!"

श्यामलाल काका बजला-

"रघुवीर, अखुनका अप्पन समय तँ प्रश्नोत्तरीक अछि, मुदा बीचमे जाब चाह चलैए तैँ बीच किछु कहि दैत छिअ।"

रघुवीर भाइक प्रश्नमे सह लगबैत दीनानाथ बाजल-

"बाल-यान बनल जखन प्रश्न छी तखन तँ बाल-यानक बीच न जनाबा रहs जेबा चाही।"

प्रश्नक उत्तर दैत श्यामलाल काका बजला-

"की अजीब अछि रघुवीर। अजीबाकेँ सजीब आ सजीबाकेँ अजीब बनौल जाइए। तइ बीचमे नाना की अजीब बुझि पड़ै छए? जखन अजीब छी तखन अजीब-अजीब ढंगसँ लोक बुझब करत।"

मन-मन रघुनाथो अपन विचारकेँ ठेकिया रहल छल जे जखन विचारक बल चलत तइ विश्राम अपना विचार घाँसिया चुप-चाप अपन प्रश्नक उत्तर टारकीक माछ जकाँ टारिया लेब।

रघुवीर राय बजला-

"काका, बाल-यानक तँ समय उसैन गेल, तँए ओ विचारकेँ एतइ छोड़ि अपन नुर्दिगम अविरौ। धनसँ बलान धनि एक मगज सबौन यसौन गेल अछि।"

रघुवीर राय साँयल-तायल प्रश्न उठौने छला मुदा श्यामलाल काका कृष्णक विचार नुप जकाँ प्रश्नकेँ बुझलैन। तँए प्रश्नकेँ स्थानीक रूक जकाँ बनबैत बजला- "की मगज रघुवीर?"

रघुवीरक मनमे प्रश्न जेना सनिया कs नखल छलैन तहिना बजला-

"सीमानक मगज, काका।"

बालक पछातिक खलहा यानक सिढ़ी मूहसँ रूक श्यामलाल काका बजला-

"बौआ, सीमानक मगजक विचार नुप अछि। तँए एक-एक प्रश्नक उत्तर, एक दिनक बैसानमे हब सम्भव नइ अछि।"

विश्राम रघुनाथ बाजल-

"काका, एहना तँ देखब करै छी जे एकटा शब्द मात्र शीर्षकक शब्द,

रामायण-महाभारत सन मोट-मोट ग्रन्थक सेहो नाम कहि सकैत तखन सीमानक निशान कोन चीजी छल।"

श्यामलाल काका बुझि गेला जे रघुनाथक प्रश्न अबुझ मनक उपज छी, नहि कि सबुझ निशानक, तँए महत्व नहियो। महत्वहीन अछिए। बजला-

"रघुवीर अपना जगहपर आबह।"

रघुवीर राय बजला-

"काका, याह सागक लत्ती जकाँ मनक निशान बिनु सिरक छुछुआइत घुमैत मुदा आन लत्ती तँ से नहि अछि। ओकरा गिरह-गिरहमे सिर निकलै छै, तँए निशानक प्रश्न उठैत सिरवधू होइए, तेँ ठाम ठाँइ-ठ किछु बाजि देब आ किछु छोड़ि देब, तखन बुझनिहार बुझत की। बुझब तँ भेल जे डाइ शब्दक वस्तुक स्वरूप बुझि सकइ।"

श्यामलाल काका बजला- "हूँ।"

बीचमे बैसल रघुनाथ अकबका गेला। अकबकाइक कारण भेलै जे रघुवीर राय की बजला आ श्यामलाल काका की जबाब देलखिन। ओ बुझल नहियेँ जे 'हूँ' आ 'नइ' कोना प्रश्नक सहसँ येह जबाब होइए तखन ने, से तँ बुझल नइ रहइ। मनमे ओहिना उठइ जे जखन पीनू गोल समकक्ष छी मात्र समकक्ष, तखन पीनूक निशानकेँ ने समतुल करब नीक हएत। फेर अपन मनमे उठलै जे जखन रघुवीर राय आ श्यामलाल कक्काक बीचक प्रश्न-उत्तर चलि रहल अछि तखन बीचमे टाक-टाक करब, अनका जे होइ, मुदा अपन मन कहैत जे ओ कोनो उचित नहि हएत। तँए, चुप्प रहब सहसँ नीक। नीक कहा ने, अनका गाइयक दुध मंगनीए भेटत।

रघुवीर राय बजला-

"काका, जखन प्रश्नक निनाट नुय अछि, नखन वाट-घाटक चर्चा कs दियौ, वाँकी सनातन-मील, याखैन धान-धून टयला यछाऽऽन करवौ।"

नघुवीन राऽऽक निवान सुनि श्यामलाल कक्काक मन विहुसलैन। विहुसैक कानध रहलैन जे कम-सँ-कम एका गोन गँ निवानक संगी रहट नहल अछि। श्यामलाल काका वजला-

"जहिना वैाग्य स्मनुय जीव-जन्तुसँ लs कs महामानव धनि अछि, जे प्रनाहित अछि, नहिना अयन मनसँ लs कs दुनियाँक मनक वीच सहा अछि। गँए, सीमानक मगजा रहव कना किना।"

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुवनी जिलाक वनमा गाममे 5 जुलाई 1947 ऽऽस्वीमे रहलैना। मण्डलजी हिन्दी एवं नाजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता यावि जीविकायार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न रहs नुचि पूर्वक समाज सवाम लागि गेला। समाजमे व्याप्त नुढिवादी एवं सामन्ती व्यवहान सामाजिक विकासमे हिनका वाधक वूमि पडलैना। हलन: जमीन्दान, सामन्तक संग गाममे पूनजोन लडाइ ठाढ़ रहs गेलैना। हलन: मण्डलजी अयन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत कलाह। 2001 ऽऽस्वीक यछाऽऽन साहित्य लेखन-उत्रम एला। 2008 ऽऽस्वीसँ विभिन्न यत्र-यत्रिकादिमे हिनक नचना प्रकाशित हुअए लगलैना। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उयन्यास ऽऽत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवनत लेखन अद्वितीय सिद्ध रहs नहलैन अछि। अखन धनि दर्जन रनि नाटक/एकांकी, याँच साएसँ ऊयन्न गीत/काव्य, उन्नैस गोट उयन्यास

आ साठ आओसाओ कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साओसँ उपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। हुनी अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभ द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर अवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साउन दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिटी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ग्राम्या-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

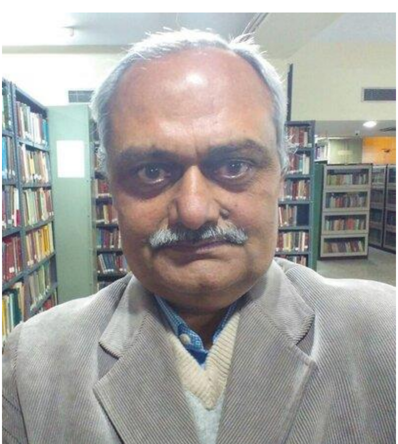
नवना संसान : 1. ॢॢब्रधनूषी अकास, 2. नागि-दिन, 3. गीन ॐ0 ॳगानन्दम माघ, 4. सनिना, 5. गीतांजलि, 6. सूखाॳल पाखनिक जाॢॢ0, 7. सगवध, 8. वूनौगी, 9. नरुसा चौनी, 10. कामधेनू, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- ॳकांकी संचयन। 14. मिथिलाक वटी, 15. कम्प्रामाॢॢज, 16. ममलिया विआह, 17. नम्राकन उकौग, 18. म्रपंनन- नाटक। 19. मौलाॢॢल गाछक रूल, 20. उन्धान-पगन, 21. जिनगीक जीग, 22. जीनन-मनध, 23. जीनन संघर्ष, 24. नै धाउॳ, 25. वउकी वहिन, 26. गादनक आ0 अन्नान, 27. सधना-निधना, 28. Q0 गाछ, 29. ॢॢजाग गमा ॢॢजाग वँचलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सूचिगा, 34. माउपन, 35. संकल्प, 36. अन्हिम ऊध, 37. कृष्ठा- उपन्यास। 38. पपस्निनी- प्रवन्ध-निवन्ध-समालोचना। 39. कल्याधी, 40. सगमाॳ, 41. समभौगा, 42. गामक गमघैल, 43. वीनांगना- ॳकांकी। 44. गनगन, 45. वजन्मा-वूमन्मा- वीहैन कथा संग्रह। 46. शंगुदास, 47. नटनी खढ- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सगरैंया पाखैन, 51. गामक शकल-सूनग, 52. अपन मन अपन धन, 53. समनथाॢॢक रूग, 54. अपूपन-वीनान, 55. वाल गोपाल, 56. रकमाउ, 57. उलवा चाउन, 58. पगमाउ, 59. गढ़नगन हाथ, 60. लजविजी, 61. उकउ समय, 62. मधूमाछी, 63. पसनाक धनम, 64. गुउा-खुड्डीक नाटी, 65. रूलहान, 66. खसैग गाछ, 67. ॳगच्छा आमक गाछ, 68. शुरचिन्हक, 69. गाछपन सँ खसला, 70. उरियाॳल गाम, 71. गुलगी दास, 72. मूउियाॳल घन, 73. वीनांगना, 74.

स्मृति शेष, 75. वटीक चेनूख, 76. क्रान्तियाग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. चैंतीस साल यहूआ गेलौं, 79. दारुनी हाक, 80. सुरिम्मानी जिनगी, 81. दखल दिन, 82. गयक पियाह्रल लाक, 83. दिवालीक दीय, 84. अयन गाम, 85. खिलगाउ रुमि, 86. चिगननक शिकान, 87. चौनस खगक चौनस उपज, 88. समयसँ यहिन चग किसान, 89. रौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. यसनाक माल, 92. कृषियाग, 93. हानल चरुना जीगल नुय, 94. नहै जाकन यनिवान, 95. कर्ताक नंग कर्मक संग, 96. गामक सूनग वदैल गेल, 97. अन्तिम यनीजा, 98. घनक खर्च, 99. नीक 0कान 0कलौं, 100. जीननक कर्म जीननक मर्म, 101. संचनध, 102. रुनि मन काज, 103. आंचल आशा चलि गेल, 104. जीनन दान तथा 105. अयन सानी- लघु कथा संग्रह।

ऊनचनायन **अयन**

मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन पठाउ।**

२.११.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २३ म खण्ड



रवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- २३ म खण्ड

२३

गामक सीमासँ बाहर होइते काल जयन्तक आँखिसँ नोर झहर-झहर खसि रहल छल । जानकीधामसँ शिक्षा प्राप्त करबाक बाद ओ साँझे सावन होइत जे हुन कहिओ गाम छोड़ि कए जानकीधाम गेलाह। गाम जएबाक हेतु ओ ताक उत्सुक छलाह जे अपन शोधग्रंथक उपसंहार लिखबाक हेतु ओतए नहि रुकलाह । सोचलाह -"गामक सुरम्य ओ सुखमयी वातावरणमे ई काज बड़ी नीक होएत । ओहिमे अपन-माटि पानिक स्वाद रहत।" मुदा परिस्थिति एहन भए गेल जे ओहिठामसँ अचानक हुनका विदा होअए पड़लनि। यद्यपि मोनमे ई भावना छलनि जे ओ एकदिन फेर अपन माटि-पानिमे घूरि अओताह । जानकीधाम जाएब तँ एकटा मात्र तात्कालिक समाधान छल । मुदा ई भेल बड़ा कष्टकर घटना। जाहि ठाम माताक अनन्य सिनेह ओ पिताक वात्सल्यपूर्ण सानिध्यमे हुनकर पालन भेल ताहिठामक मोह बिना तोड़ने ओ बाहर जा रहल छलाह। एक हिसाबे हुनका ई बेमारी बुझाइनि । जान बचलि लाखो स बड़ी नीक । तथापि ओ जीवैत छथि आ अपन प्राणप्रिय मातृभूमिसँ वंचित भए एकबेर फेर दूर जा रहल छथि। हुनका नागबाबापर मोन-मोन बेकबेर तामस होनि । मुदा फेर अपनाकेँ रोकथि ।

"धर्मकेँ नागबाबा ओ हम आइ एहि जगह एलहुँ अछि.नहि तँ जयन्त नामक व्यक्ति कहिआ ने बागमतीक धारमे बहि गेल रहितथि आ ककरा एहि बातक पता लगैत कि नहि। तेँ ने सुधाकर यमराज छथि। हुनका हिसाबे तँ हम खराब नहीं। मुदा होनी प्रबल।"- जयन्त गुमसुम भऽ गेल सन सोचैत रहथि कि रस्ताक कातमे महादेवक मंदिर देखलनि। मोनमे एलनि जे दर्शन कऽ ली। "सायद महादेव हमर दुख कम कऽ सकथि।" माधव सेहो हुनकर संग गेलाह। महादेवक दर्शन कऽ ओ निकलल छलाह कि गोविंद ताक देलखिन-

"गाममे टुनटुन अएलाह अछि। किछु जरूरी समाद छनि।"

जयन्त आ माधव ओम्हरे विदा भेलाह। एहिबीच गोविंद आ नागबाबा गप्प करऽ लगलाह।

"बड्ड अनर्थ भऽ गेल।"- गोविंद बजलाह।

"की भेलैक?"-नागबाबा पुछैत छथि।

"बजबाक साहस नहि भऽ रहल अछि।"

"बजबहक नहि तखन बुझबैक कोना?"

"टुनटुनसँ गप्प कऽ लिअ।"

"कतऽ छथि टुनटुन?"

"महादेवक दर्शन करए गेलाह अछि।"

"ठीक छैक। आबए दिऔन्।"

गोविंद ओहि दुर्घटनाक समाचार जयन्तकेँ नहि देबए चाहैत छलनि। हुनका डर छलनि जे ओ ओकरा बरदास्त नहि कए सकताह। मुदा ओकरा कतेक काल नुकाएल रहितथि।

टुनटुनकेँ देखिते नागबाबा पुछैत छथि -

"की बात छैक से हुनिका कए बाजह।"

"सुधाकर आ डाकर लठैतसभ बुलडोजरसँ पाठशालाकेँ गाड़ि देलक। आब सुनैत छी ओहि जगहपर अपन घर बनाओत।"

"गौंआसभ किछु नहि कहलकै?"

"क की कहितैक? कते संघर्ष नहि भेल चाहलक। हुन डाकरा संग गाँ गुंडासभक मुँह छैक। सौंसे दछिनबारिटोलक युवकसभ डाकर पाछू-पाछू बमकैत अछि।"

"से कहू? कहून भए गेल गाम? थानाक संग देखबान कए नहि?"

"से नहि बाबा। डाकबारिटोल लोक जान लगा देलक। थाना धरि गेल। मुदा दारोगाजी सेहो डाकर संग भए गेलैक। उनटे डाकबारिटोलक लोकसभकेँ धमका देलकै। गाली-बात चलबाक परिस्थिति भए गेलैक। सभ जान-बचान भागल।"

जयन्त एहि समाचारकेँ बकर-बकर सुनैत रहि गेलाह । किछु बाजल नहि भेलनि । पाठशालाक दुर्गतिक समाचार सुनि हुनकर हृदय विदीर्ण भऽ गेलनि । हुनका मोन होइत छल जे तुरंत गाम घूमि जाइ। मुदा नागबाबा अड़ि गेलाह ।

"सभ किछुक समय होइत छैक । अखन अहाँकेँ गाम गेनाइ उचित नहि होएत । सवाल मात्र अहिठाम भवनक नहि अछि। कोना अहिठाम लोकक कमी थोड़े छैक । मुदा ओ सभ मूढ़-मूढ़ अभिमानी रहैत अछि। यदि अहूँ सएह करए लागब तखन की हएत? एतेक पढ़ि-लिखि कऽ अहाँ अपन उमंगकेँ एहिसभमे नष्ट करी से उचित नहि होएत । अस्तु,धैर्यपूर्वक सही समयक प्रतीक्षा करू । संप्रति हमरा लोकनि पूर्वनियोजित कार्यक्रमक अनुसार जानकीधाम चली । अहिठाम अहाँक शोधग्रंथक निर्माण करऽल जाएत । संगहि विद्वान लोकनिसँ विमर्श कऽ आगूक कार्यक्रम बनाओल जाएत । गोविंद आ माधव पाठशालाक सुधि लेबाक हेतु पर्याप्त छथि । ओही दुनुगोटे टुनटुनक संग गाम लौटि जाथि आ स्थितिक जानकारी लेथि । मुदा बेसी हड़बड़ नहि करथि । समय अएलापर पाठशाला बनिऐ कऽ रहत,एकरा रोकब ककरो वशक बात नहि अछि ।"

"जे अहाँक निर्णय । "-जयन्त बजलाह ।

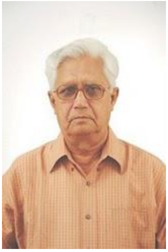
गोविंद आ माधवकेँ इच्छा रहनि जे ओ सभ जयन्तक संग रहथि । तथापि नागबाबाक बात मानि हुनका प्रणाम कऽ टुनटुनक संग गाम विदा भऽ गेलाह । जाइत काल जयन्त कहलखिन-

"चिंता नहि करब। हमहू अएब करब।"

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अफजल पुर, मातृक: सिम्हिआ झाढ़ी, वृत्ति: रेलवे सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्थल मण्डलीय मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. शैक्षिक विश्वविद्यालय प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष१२०१७ १.रेलसँ साँस धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष१२०१८ ४. रूसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकाटन(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष१२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष१२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.ऊँ एहन छिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष१२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक पदचाप(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष१२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सहकिछु(उपन्यास) २२.नाष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)



दिनेश कुमार मिश्र, मिथिलाक बाढ़ि, धार आ डाॅक्यन बनाउल छहनवाह /, सहर्ष हुनकर बहिनी महानद्या, बागमतीक सद्गति!, दुइ पाटनक बीच(कोसी धारक कथा) ..., न घाट न घर, बगान्त यन मजबून मिथिलाक कमला धार, गुम्ही धार आ गकनीकी माटा-हूंकी। दिनेश कुमार मिश्रक सरटा पाथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि निदहू आकाॅइनमः http://videha.co.in/pothi.htm

(साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा यनाशन द्वारा दिनेश कुमार मिश्र जीक पाथी सरसँ पैनाक पैना चाना कs अपना नाम उपन्यास छपवाउल गेल अछि, जकना छद्म समीउक कमलानद झा ओ चान लेखक पंकज झा यनाशनक निसर्व कइ छथि ! लिंक http://videha.co.in/investigation.htm यन स्क्रीनशाॅट अपटट कअल गेल अछि। (

बहिनी महानद्या(पछिला अंकसँ आगाँ) दिनेश कुमार मिश्र -

<u>बाढ़ि आ ओकर ऐतिहासिक संदर्भ</u>

गंगा बसिनक निर्माणक प्रक्रिया समुद्रसँ समुद्रम यानिक यात्रा आ

नदीक मार्ग बदलबाक कारणकेँ बूझबाक बाद एकटा बात स्पष्ट रूपसँ सामाँ अबैत जे पृथ्वीक विस्थापनकेँ रोकबाक कोनो आशा नै अछि। बरखा होइत रहत आ जखन ई पानि माटिपर खसत तखन कटाव होयत, नदी अपन नक्शा बदलत आ बाढ़ि अबैत रहत। मनुष्य अपन बौद्धिक कौशलसँ माटीक कटाव, नदीक मार्ग परिवर्तन आ बाढ़िसँ कनी बदलाव आनि सकैत। ओकर हैसियत अखन धरि एतेसँ नै अछि। एतऽ एकटा बात ध्यान देबऽ योग्य अछि जे उत्तर बिहार वा गंगा घाटीक पूरा मैदान एकटा उपजाऊ क्षेत्र अछि, जकर उपजाऊ शक्ति बाढ़िक समय नदीक पानिक संग आयल गादक कारण निश्चित रूपसँ बढ़ल अछि। प्राचीन कालसँ कृषि समृद्ध क्षेत्र रहबाक कारण ई क्षेत्रमे विभिन्न सभ्यताक विकास भेल। प्रकृति मुदा हिस्सा नै बाँटैत अछि। जँ गुलाब अछि तँ संग-संग काँट सहल। एतऽ-एतऽ बरखाक रूपमे मी० पानिक समृद्ध स्रोत अछि, नदीक जाल किछु दूर धरि पसरल अछि, ओतऽ बाढ़ि, कटाव आ नदीक मार्ग परिवर्तन बसी सुनबामे अबैत अछि। नदी एकटा पैघ क्षेत्रमे थाल/बालु पसारि कऽ ओकरा समुद्रमे पहुँचेबाक एकटा सशक्त साधन अछि, जे बाढ़िक समय अपन उत्पत्तिसँ समुद्र तक पहुँचैत अछि। असलमे ई पानिक जमीनक निर्माण नदीक स्वाभाविक गुण अछि। गंगा घाटीक ई क्षेत्र एक समयमे समुद्रक बालु आ नमकीन पानिक क्षेत्र रहल होयत। मुदा बरखाक कारण उत्तरमे हिमालयक काँच माटि नीचाँ बहय लागल जइ कारण जमीन उपजाऊ होबऽ लागल। हम जइ ठामक गप्प कऽ रहल छी ओकर भूमि दुनियाँक सभसँ उपजाऊ जमीनमे गानल जाइत अछि आ ई नदीकेँ जल संसाधनक एकमात्र स्रोत मानल जाइत अछि। भौतिकवादी

मान्यताक अलाव हुनका सभक लेल नदीक महत्व एकटा जीवनदायी शक्ति सन बनल अछि। भारतक संस्कृतिक आधार नदी बनल अछि। एतुक सभ्यता ओ नदी सभक कारण अनादि कालसँ विकसित भेल अछि आ समयक संग प्रकृतिक कोरमे लीन भऽ गेल अछि, मुदा ओ नदी सभक संग हमर सभक संबंध सदिखन शुद्ध आ प्रेम मातृशक्ति आ ओकर उपासक सन बनल अछि। जतऽ महर्षि वेद व्यास महाभारतमे नदी सभक प्रति अपन श्रद्धा व्यक्त करैत छथि ओ 'विश्वस्य मातरः' अर्थात लोकमाता कहै छथि। कौटिल्य सन विद्वान एहेन स्थानकेँ निवासक लेल वर्जित मानैत छथि, जतऽ कोनो सुन्दर नदी निरंतर नै बहैत अछि। ओ नदीक महत्वकेँ रेखांकित करलनि 'न तत्र दिवसम् वसेत'- एहेन स्थानपर एक्को दिन लेल नै रहबाक चाही। अपन सभक शुभ संस्कारमे भारतीय लोकनि देवता आ पूर्वजक संग-संग नदीक आह्वान करब कहियो नै बिसरै छथि। गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आ कावेरीक स्मरणक बिना हमर सभक कोनो शुभ कर्म पूर्ण नै होइत अछि। पवित्रताक उदाहरण देबऽ लेल नर्मदाकेँ मान पाउ छी आ गंगाक संतान कहल जायमे गर्वित होइ छी। 'मृत्युपर गंगा प्राप्त करबाक' इच्छा कबीर सन साधकमे मात्र ओ लेल नै भेल जे ओ अपन जीवनक अधिकांश समय गंगा तटपर बितेने छला। कोनो नदीकेँ भावसँ गंगा कहबाक परंपरा आइयो हमरा लोकनिक मनमे जीवित अछि। भगवान श्रीकृष्णक चर्चा 'कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन' कर बिना अपूर्ण नहि जाइए, तँ कतेक बेर वाल्मीकि भगवान रामकेँ सरयूक सोझाँ प्रणाम करैत देखलनि। ओम्हर कालिदासक लेखनकेँ लालित्य देलनि। तीर्थक अवधारणा (तीर्थक शाब्दिक अर्थ नदीक कात थिक) नदीक महिमाक

माघ्याकेँ अस्थिक दलक अछि। एहन विशेष अवसरपर नदीमे स्नान करबाक हजारो लोकनिक अलग यत्रतत्र अछि। गंगा दशहरा, माघ पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, संक्रान्ति आदि बहुत रास एहन अवसर अछि जखन हजारो लोकनिक पूर्वज लोकनि लोककेँ नदीक समीप अनबाक व्यवस्था कएने छला। नदीक शुद्धताक निर्वाहक लेल उत्सर्जन आदिक विरुद्ध शास्त्रमे सख्त दिशा निर्देश छल। बिहारक छठि पर्व सूर्य पूजाक संग-संग नदीक प्रति हमर सबहक श्रद्धाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। हमर एहि समृद्ध धरोहरक एगो छोट कड़ी अछि उत्तर बिहार, किशनगंज, पूर्णिया आ कटिहार क पूर्वी जिलासँ बहयवाली महानंदा नदी। महाभारतमे कौशिकी (कोसी) नदीक समीप बहैत दूटा नदी नन्दा आ अपरनन्दाक उल्लेख अछि, जाहि पाण्डव लोकनि निर्वासन कालमे गेल छला। मानल जाइत अछि जे महाभारत कालक अपरनन्दा वर्तमानक महानन्दा अछि। महानन्दाक सहायक नदी कंकाईक वर्णन सेहो महाभारतमे भेल अछि जाहि एकरा कंकानन्द कहल गेल अछि। सब साल कटिहार जिलाक दुर्गापुर आ कल्याणीमे माघ पूर्णिमाक दिन मेला लगा कऽ महानन्दाक प्रति श्रद्धा व्यक्त कएल जाइत अछि। एहि दिन एहि इलाकामे काढ़ा गोला लग गंगाक कातमे मेला सेहो लगैत अछि ।

महानन्दा नदी

महानन्दा उत्तर बिहारक एकटा मुख्य नदी अछि। एहि नदीक उद्गम पश्चिम बंगालक दार्जिलिंग जिलाक करसडांगसँ ६ किमी उत्तरमे हिमालयक चिमल अछि, जाहि सँ एहि २०६२ मी. ऊँचसँ गंगा धरि

३१६ किमी.क यात्रा प्रारम्भ करैत अछि। कनकाइक संगमक बाद महानन्दा बागसान लग बरही-गुवाहाटी राष्ट्रीय राजमार्ग ३१ (राष्ट्रीय राजमार्ग ३१) पार कऽ बगताब पहुँचैत जाऽ ठाकर धारा दू भागम बँटैत अछि। बगताबम लगभग सीधा दक्षिण दिस बहयवला धाराकँ मौआ शाखा कहल जाइ छै आ महानंदाक अधिकांश जल प्रवाह आइ-काल्हि ऐ धारासँ गुजरैत अछि। मौआ शाखा स्वयं आगू बढ़ैत परार नदीक दहिना कात एकरा संग मिलैत अछि। ई शाखा आगू मौआक पास कटिहार-बरसोइ रेल लाइन आ लाभा लग कटिहार-मालदा रेल लाइनकँ पार करैत अछि। महानन्दाक मौआ शाखाक एकटा आन सहायक नदी घासिया एकरा लाभाक नीचाँ भेटैत अछि। एतऽसँ महानन्दाक मौआ शाखा पश्चिम बंगालक मालदा जिलाम प्रवेश करैत सुलमना लग गंगा नदीम मिलैत अछि। बगताबम महानन्दाक एकटा आन शाखा जे दक्षिण-पूर्व दिशाम बहै छै, बरसोइ लग कटिहार-बरसोइ रेल लाइन पार करैए। बरसोइक नीचाँ ई धार सेहो दू भागम बँटैत अछि। जेम सँ पूर्व दिस बहयवला धारा बेसी सक्रिय अछि, पश्चिम दिस बहय बला धारा उजरा-पुजरा भऽ गेल अछि आ ऐ म गाद-बालुक जमाव अछि। ई धारा पुनः सुधानीपुर लग मुख्य धाराम आबैए। आब ई संयुक्त धारा बांग्लादेशक गोदागिरी घाट लग गंगा संग मिलैत अछि। महानन्दाक कुल जलग्रहण क्षेत्र २४,१७३ वर्ग किलोमीटर छै, जैमसँ ७२९३ वर्ग किलोमीटर नेपालम, ६६११ वर्ग किलोमीटर पश्चिम बंगाल म, १९,७११ वर्ग किलोमीटर बिहारम आ बाकी बांग्लादेशम पडै छै। ढेंगरा घाटक ऊपरम ऐ नदीक तलहटीक ढलान अपेक्षाकृत अधिक छै, जे धनगरा घाटक नीचाँ आस्ते-आस्ते

कम होइत जाइ छै, जइ कारणे नदीक प्रवाह क्रमशः धीरे-धीरे कम होइत जाइ छै, आ नदीक उपयोग अन्हार ओकर किनारपर क्रमशः जाइ छै। निचला भागमे बोआ शाखाक बेड स्लोप ०.०९९ मीटर प्रति किलोमीटर अछि जखन कि बरसोइ शाखाक बेड स्लोप ०.१४६ मीटर प्रति किलोमीटर अछि। साठिक दशक आ आगुक सरकारी रिपोर्टक अनुसार जे ढलानक अभावक परिणामस्वरूप महानन्दाक निचला भागमे करीब एक सप्ताह जल-जमाव रहै छल, जकर परिणामस्वरूप तत्कालीन पूर्णिया (वर्तमान कटिहार) क दक्षिणी भागक विनाश भेल। जे सब रिपोर्टक अनुसार कटिहारक जे दुर्दशामे महानंदा नै बरन् कारी कोसी आ गंगा नदीक सेहो काफी योगदान छल। महानन्दाक सहायक नदीक विशेषता रहल अछि जे ओकर धार बदलैत रहैत अछि, संगहि ओकर नाम सेहो ओहिना बदलैत रहैत अछि। जेना परार नदीक अनेक नाम अछि जेना परार, परमान, परमीन, कठवा, रीगा, कंकर, फूलहर वा गंगाजरी। जेना-जेना जगह बदलैत अछि, नदीक नाम सेहो बदलैत रहैत अछि। तहिना बकरा नदीक नाम अलग-अलग स्थान पर बकरा, कटुआ धार वा दबनी रूपे जाइत अछि। ओकर जलग्रहण क्षेत्रमे करकाइक बहुत भाग नव-पुरान धारा छितराएल अछि। मची, दाउक, रमजान, कुलिक, सुधानी आ नगर नदीक स्थिति सेहो लगभग एहन अछि। जे नदी सभक धार बँटैत रहैत अछि, जे मे बहैत पानिक मात्रामे परिवर्तन होइत रहैत अछि आ तहिना ओकर महत्त्व सेहो बढ़ैत वा घटैत रहैत अछि। जे क्षेत्रक सर्वेक्षण पहिल बेर १७७९ मे ब्रिटिश शासनक स्थापनाक बाद जेम्स रेनल नामक सैन्य अधिकारी द्वारा कएल गेल छल। ओइ समयक महानन्दाक

प्रवाह मार्गक आधिकारिक वर्णन नेपालक नक्सासँ स्पष्ट अछि। एकर बाद डॉ. फ्रांसिस बुकानन हैमिल्टन (१८०९-१०), मॉन्टगोमरी मार्टिन (१८३८), आ डॉ. डब्ल्यू.डब्ल्यू. हंटर (१८७७) सेहो ई नदीक क्रमक विवरण देने छथि। महानन्दाक विषयमे ई कहल जाइ छै जे ई आर्य प्रवासक अंतिम पूर्वी सीमा गँ छलिए, ई क्षेत्रक इतिहास पश्चिमसँ आबैवला आक्रमणकारी आ मूल निवासीक बीचक संघर्षक सेहो रहल छै। इम्पीरियल गजेटियर □ऑफ इण्डिया भारतीय शाही)) राजपत्रक अनुसार 'महानन्दा पश्चिमक हिन्दी भाषी क्षेत्र आ पूर्वक बंगाली भाषी क्षेत्रक बीचक सीमाक काज करै छै। जनसंख्याक आंकड़ाक अनुसार हिन्दी भाषी आबादी ९४.६ प्रतिशत जखन कि मात्र ५ प्रतिशत बंगाली भाषी छै। मुदा डॉ. ग्रियर्सनक अनुमान छलन्हि जे लगभग एक तिहाइ लोक बांग्ला बजैवला हेतै आ ई बात सही लगैत अछि। महानन्दा सीमा रेखाक रूपमे सेहो काज करैत अछि। पूर्णिया जिलामे पूबमे दू तिहाइ आबादी मुसलमान छल, जखन कि पश्चिममे एक तिहाइसँ कम। मुदा महानन्दाक बिना कोसीक वर्णनक अपूर्ण रहत। कोसी नेपाल आ बिहारक एकटा बड़का महत्वपूर्ण नदी अछि, जे ५४०० मीटरक ऊँचाइपर हिमालय पर्वतक मुख्य श्रृंखलासँ निकलैत अछि, तिब्बत, नेपाल आ उत्तर बिहार होइत लगभग ७२५ किमी यात्रा कलाक बाद ई कुर्सेला (कटिहार) लग गंगामे मिलैत अछि। बिहारमे ई नदीक लम्बाइ २५४ किमी अछि जखन कि मैदानमे ई नदीक कुल लंबाइ ३०१ किमी अछि। तीन धारा अर्थात सूर्य कोसी, तामा कोसी आ अरुण कोसीक संगमसँ बनल कोसी नदीक कुल जलग्रहण क्षेत्र ५८,५९४ वर्ग किलोमीटर छै जइमे ५,१०४ वर्ग

किलामीटन (ग्लभियन छै। यौनाधिक लख, किंनदंगी, लाककथा आ लाकगीनक अलाव कासीक निषयम लिखिन जानकानी अंग्रेज लाकनि द्वाना गैयान कएल गेल छला। हुनकान सवक यात्रा-वृत्तांत आ सर्वेक्षण नियार्टम ए नदी सम्क निषयम वहुत चर्चा एल, उाना हुनकान मुख्य उद्देश्य छल ए उत्रक प्राकृतिक संसाधनक दाहन कS नाजस्व वसुली कएल जाय। फ्रांसिस वूकानन (१९०९-१०) आ नॉवर्ट मॉन्टगोमनी मार्टिन (१८३८) क यात्रा-वृत्तांत आ हंटनक स्टैटिस्टिकल अकाउन्ट्स □रु वंगाल"" (१८७७) म ए नदीक निषयम वहुत लिखल गेल छै। ए निर्कोतिसँ यता चलै छै ज कासी वहुत दिनसँ चैनल वदलै लल वदनाम अछि, जकन कानण छै एकन अधिक गाद। १७३६ सँ १९५० क वीच उयलब्ध अभिलेखसँ अनुमान अछि ज ए कालखंडम ई नदी यूर्णियासँ यूर्व वहैत छल, स आव ११० किमी यश्चिम दिस शिफ्ट एS गेल अछि आ सुयौल, मधुवनी, सहनसा, खगड़िया जिलासँ गुजनैत अछि आ गंगासँ मिलैत अछि। स्थानीय लाकक कहव छनि ज कासी कहिया मालदा (यश्चिम वंगाल) हाइत वहैत छल आ वूकानन हैमिल्टनक अनुसान ई नदी मालदासँ यूव सहा वहल हएत। वूकानन लिखै छथि- "कासीक कातम नहनिहान स्थानीय निद्वान वा यंडित लाकनि एना धनि कहै छथि ज प्राचीन कालम कासी दक्षिण यूर्व दिशाम ताजयुन धनि वहै छला। जकन वाद ई यूव दिस वहै छल आ अंतताः व्रह्मयुत्रसँ मिलै छल आ एकन गंगासँ काना संवंध नै छला। हमना नै वूझल अछि ज ए कथनक आधान की अछि, लाककथा वा किंवदंती। उँ ई किंवदंती अछि तँ ई कनी वसी निश्वास कनय याग्य एS जाइत अछि, मुदा ई हएव एकदम संभव वूझाइत

अछि। संभव अछि जे मालदाक पूर्व आ उत्तरमे अवस्थित पोध-पोध सभ्यताक कहिया कोसी आ महानन्दाक अवशेष छल। ... उपनाक पश्चिमोत्तरमे कोसीमे कमसँ कम कंपनीक सीमामे कोना नदी बाम कात मे मिलैत अछि, मुदा ओसँ कछुएकटा धार जरूर अछि। उत्तरक पहाड़सँ आबयबला बहुत रास नदी आब महानंदासँ मिलैत अछि आ ई एकदम संभव अछि जे ई नदी पहिने कोसीसँ मिलैत छल जखन कि एकर धार पूर्वोत्तर दिस छल....।" हंटर (१८७७) मुदा बुकाननक विचारसँ सहमत नै छला आ कहलनि जे "डॉ. बुकानन हैमिल्टनक ई सुझाव जे कोसी ब्रह्मपुत्रसँ मिलै छै, हुनकर बाकी सिद्धांतक तुलनामे कनी कम संभावित लगैत अछि। लगैत अछि जे पूर्वमे ब्रह्मपुत्रक मार्ग ममन सिंहक पूब छल। कोसी अपन पूब दिसक मार्गमे, पहिने करतोआ सँ मिलल, जे स्वयं एकटा नदी अछि, जे आत्रेयी आ तीस्ताक पानिसँ पुष्ट अछि। हम अपन पाथी अकाउन्ट ऑफ दिसिट्रिक्ट बंगाल खण्ड) VIII पृ० १३९, १४२, १६२) मे हिन्दू कालक ग्रान्थसँ ऐ नदीक आकार आ महत्वक आधारपर महत्वकेँ रेखांकित कने छी आ कहने छी जे ई नदी स्पष्ट रूपसँ मानव प्रजातिक सीमा रेखाक काज करैत अछि जे आइयो देखबामे अबैत अछि। हँ ई मानी जे पहिने करतोआमे कोसी आ महानन्दाक संगे छाड़ै छल तखन पूर्व कालमे करतोआक पोध आकारक कारण बुझि सकै छी आ तखन राजशाही जिलाक वनिस्पत जंगल आ ममन सिंहक मधुपुरक बीचक नाक मैदानक कारण सेहो बुझि सकै छी। ऐ शताब्दीक प्रारंभमे जखन उत्तरमे ब्रह्मपुत्र बहै छल ताकर तर्क सेहो स्पष्ट भऽ जायत। असलमे पूर्णिया आ दिनाजपुरक बीच एक ऊँच जमीन एखन नै अछि जाऽ कोसीक धार कहियो नै बदलल हुअए।

एकर निम्न धानक अनेक नाम छै- सौना, वनंठी, कनिकासी, मनाकासी, गिलाव धान, हैयाधन, बाबाजी धान, ममनी धान, खेमूना धान, मिर्चैया धान, लगुनिया धान आदि-आदि। जहि धानमे कासीक मुख्य धान बड़ छल से कासी बनि गेल। ई गनहुं कासी आ महानन्दाक बीचक क्षेत्र सदिखन बाढ़ि आ जल कटानक क्षेत्र रहल अछि, जकर बहुत श्रेय कासीकेँ जाइ छै। मुदा जतऽ धरि बाढ़िक प्रश्नक गप्प अछि, महानन्दाक शोर कासीक शोरमे कखनो-काल सुनबामे अबैत अछि। " घनघोर जंगल, दुर्गम सड़क आ कम दुनीयन नदीक उपस्थिति- संरचना: ई सब कारणसँ पाण्डव लोकनि अपन निर्वासन लेल ई क्षेत्रकेँ चुनने हेता जे पौराणिक कथामे बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। कहल जाइत अछि जे महाभारत कालमे ई क्षेत्र कर्णक अधीन छल। कुर्सेला, जतऽ कासी गंगासँ मिलैत अछि, कौरव राज्यमे पड़ल आ तखन कुरुशिलाक नामसँ जानल जाइ छल। एक समय मनिहारी (कटिहार) क मूल नाम मणिहारन छल जतऽ भगवान श्री कृष्णक अँठीक नग हेरा गेल छल। सिमल जंगल जतऽ अर्जुन अस्त्र निवासमे अपन हथियार नुका देने छला ओ वर्तमान समयमे अछि जे कटिहार-बरौनी सड़कपर एकटा चलन स्टेशन अछि। तहिना किशनगंज जिलाक ठाकुर गंज शहरक विषयमे एकटा किंवदंती अछि जे ई राजा विराटक राज्यक हिस्सा छल आ एहि ठाम भीम अपन निर्वासनमे भनसिया(ठाकुर) क रूपमे बितेने छला। ई ठाममे भटधला आ सगधला नामक दु टा पोखरि अछि, जहिमे भीम चाउर आ साग राखैत छला। ठाकुरगंजसँ करीब दूर ओ स्थान अछि जतऽ भीम कीचककेँ मारि देने छला। ई जिलासँ बाहर निकलयबलाक पुलनामे बाहर जबाक पनंपना उल्लेखनीय

अछि। पूर्णियाक लोक खास मेहनतिसँ बचै छथि आ माछी-मारीक तलाशमे जिलासँ बाहर जनाइ नीक नै लगै छनि। उपरोक्तकेँ देखैत जनसंख्या कम अछि, जमीन आसानीसँ उपलब्ध अछि आ श्रम कम। ई किछु एहन बात अछि जे पूर्णियाक लोककेँ बाहर निकलैसँ रोकैत अछि। एत संख्यामे लोक खीक मौसममे अस्थायी रूपसँ बाहरसँ आबै छथि। ई बात १९६३ मे कहल गेल। इनक छायन बैसलासँ एहन दुर्घटना होइत अछि जइमे लोकक मृत्यु भऽ जाइत अछि आ ई तरहक घटनामे कोसी, महानन्दा दाआवक लोकक मृत्यु भेल अछि। भेलन ढहलासँ सहल मनला आ खाटकूसक हाथसँ सहल। १९६३ सँ १९९३ क बीच किछु एहन निश्चित रूपसँ भेल जे पूर्णियाक खास मेहनतिसँ बचयवला लोक आ माछी-मारीक तलाशमे जिलासँ बाहर जनाइ पसिन नै करय वला लोक जानक कीमत चूका बाहर जा कऽ दासनाक खास मेहनत करवा लेल मजबूर भेला। जखन कि कहिया स्थिति एहन छल जे कटाइक समय आ जखन असमक चाहक बगानमे मजदूरक जरूरत पड़ैत छल तँ कटिहार आ ओइठाँसँ आगू जायवला ट्रेनमे उत्तर प्रदेश आ बिहारक अलग-अलग हिस्साक मजदूरक भीड़ रहैत छल..। असलमे ओँ एहन मजदूर कटनीक समय पूर्णिया नै जाइत तखन फसल खास कऽ झारक कटाइ एकदम संभव नै होइतै। समृद्धिसँ दुर्दशा दिसक ई यात्रा पछिला तीस बर्खमे भेल। पछिला चारि दशकमे विकासक प्रवाह ई तरहेँ स्पष्ट रूपसँ देखबामे आबि रहल अछि। कोसी-महानन्दा दाआवक ई ऊपर अचानक मजदूरक मामलामे सनसनीस कना भऽ गेल? एकर एगो कारण छै जे ई ऊपरमे बाढ़िक कारणसँ बेसी जमीन बहुत दिन धरि पानीमे डूबल रहै छै आ खेती-बारी संभव

नै छै। ओना ई सभ लल खाली बाढ़ि एकमात्र कारण नै अछि, कारण आओर ओँ उत्पन्न विद्रोहम बाढ़ि आबि गेल अछि गँ दक्षिण विद्रोहम चौदी अछि, मुदा ओतुक्का लोकके निकासक लगाएल ओहिना खनाय यनिश्राम एखैन नहल अछि जाक उत्पन्न विद्रोहक लोककेँ। ओतऽ बाढ़ि नै अछि, तैयो ओ किए भऽ नहल अछि? ओतऽ सभा बच्चा सभ स्कूल नै जाइत अछि, ओतऽ सभा लोक मजदूरीक खोजम निकलैत अछि।' मुदा संग हमना सभ लल ओ यथायथ मुश्किल अछि जे ओ सभटा जनसंख्या बढ़लाक कारण अछि। कृषि एहन क्षेत्र अछि जाहिम भाजपानक अधिकाम संभावना अछि। गँ ओँ कोना गनहुँ खरी-बाढ़ी ठीक भऽ जाय गँ कोका लोक जमीनसँ हटि जायत आ हुनक छायन दीठ कनक कम भऽ जायत। महानन्दा नै, मुदा कासीक बाढ़ियन चर्चा यछिला शताब्दीक उत्पनार्धसँ चलि नहल अछि। भानाक अन्य भागम कासीक उदाहरण बाढ़ आनैबला नदीक दल जाइत अछि आ ओ नदी कोना बाढ़िक चर्चाक केन्द्रम बनल नहैत अछि। स्वतंत्राक बाद ई नदीयन नियंत्रण कनबाक प्रयास भेल, आ ई संग लगाएल यूना गंगा आ ब्रह्मपुत्र घाटीम नदीयन नियंत्रण कनबाक प्रयास भेल आ ई क्रमम महानन्दाक सभा आबि गेल।

(अगिला अंकम जारी)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

२.१३.निरा नवल सुशील (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)



सुशीलक रचना संसार एना छै -हुनकर रचना संसार छन्हि : (१९७३) (उपन्यास), गामवाली (१९८२) (उपन्यास), रामनी १९९१ पहिल मंचन) (नाटक), प्रकाशन २०१३ आ अस्मिता (आ ओ) चानु पाथी हुनकर अनुमतिसँ (२०१६) (लघुकथा संग्रह) विदेह पेटारमे उपलब्ध अछि लिंक www.videha.co.in/pothi.htm पर।

कमलानन्द झाक पोथी "समय समाज आ सवाल :मैथिली उपन्यास" मे (२०२१) लिखै छथि-यात्राक लगभग सय -मैथिली उपन्यास" -वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना

यन गनिमायूक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय (गौनीनाथकेँ जाऽऽन छनि। " गँ की कमलानन्द मा सूशीलसँ ऽऽी श्रेय छीनि ललनि? चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द मा कन स्वार्थी दूनियाँसँ दून, छलछद्मसँ दून - सूशीलक जादूवला साहित्यक निश्छल दूनियाँमा।

गामवाली (उपन्यास(यछिला अंकसँ आगाँ) सूशील -(

सरक आँखिक काँट गामवाली आऽऽ उा ववून सहा कटि (गल।

उाकना चाहऽ वला, नै चाहऽ वला आ काग नहनिहान, गीनू गनहक लाक खूश अछि। उाकन अन्दिम संस्थान क कनैा? जादव समाज आकि ब्राह्मण समाज। जादव समाज आ ब्राह्मण समाजक लाक यहुँचै छथि मालिक मान सानमनि मा लग, उा छथि याउयाउ - कनैा, मसलनम उाढ0ल।

गामवालीक संस्थान जादव समाज मिलि कऽ कनैा।

(गाअन टालीक लाक उाकना गामवाली कहव शुनू कलकै आ हन वरनटाली, कैथटाली, जालहा टालीक लाक सहा उाकना गामवाली कहऽ लगलै।

गामवालीक नन वूढ़, उा गसन वहू छली, यहिलसँ वच्चा नै हलै गँ दासन वियाह आ हन दासनाम वच्चा आ यहिलामा। आ हन गसन वियाह सौख ललि। वावू यैनूखक गय छै, क काम वहू उवि सकैऽ।

स्थानचन यादव मान स्नचनमाकँ लाक मनखाह वना दलकै, अयन वलजानी उाकना घना कऽ दऽ जाऽऽ (गलै आ गहन लाहव मवा

घुरि गेलै गाममे।

गामवाली सीमित नहि, ओकर जिजीविषा आर प्रबल भऽ गेलै बादमे। बड़ मानसँ आनाजादी करैत नहलि, कारण अनबन नै भेलै। अमिल धनिहान समाज लग धनसन, कुलटा बुभिनिहान लग कम्मो किछु नै। जे ओकरा संगे रोजीक सम्बन्ध रहँसी ठाँ करै ताकर ओ जबाब दै रहँसि कऽ। गुअनटालीसँ ओकरा गामवाली कहवाक प्रधान रहलै आ सौंस गाम यसनि गेलै।

मुदा गामवालीक कारण सम्बन्ध अयन जे गामक अयन पूनान सासुनक यनिबानसँ नै रहलै। मुदा खान-पान, लव दव सौंस बाहन-गछसँ छूटल रहलै।

आइ ओकर मृत्युक बाद ओकर प्रशंसक कम नै छै, मानसँ आयलि आ मानसँ चलि गेलि।

धनक ओठल बूढ संगे गामवालीक बियाह भेल रहै, यगिक गसन यन्नी। सखा-याग लग बूढ दासन बियाह कलनि रहन दासना आ यहिलासँ बच्चा भेलनि। गसन यन्नी सख लग, लोल लग कलन्हि।

छिननवा मनसा सर ओकरा दुनि करऽ चाहलकै आ स्थानबनमाकँ मनखाह बना देलकै।

आ उपन्यासकार शुरू करै छथि स्थानवन यादनक खिस्सा।

ओ पैघकँ बाबा, काका, राइ आ छोटकँ बौआ, बच्चा आ नूनू कहथा। कारण आँगन नै रहै जगऽ ओकर प्रणय नै रहै।

दाऽऽ, काकी, वहिन, वचियासँ उाकन मूँह टूटै। मुदा कनियाँ-युगनाक अंगनाम ह0 दS जाऽऽ साऽऽ किया दखन हौ। वुढि-पुर्नेनियाँक ह0 कलायन रानहूक अंगना उा धखाऽऽ जाऽऽ ठल। वावी, माय आ यिउस (श्रद्धीक स्त्री कहिनथिन- ओहन लजकाटन रS कS वैदगिनी कना कनै ठह।

(अगिला अंकम जारी(

अयन मांग्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन पठाउ।**

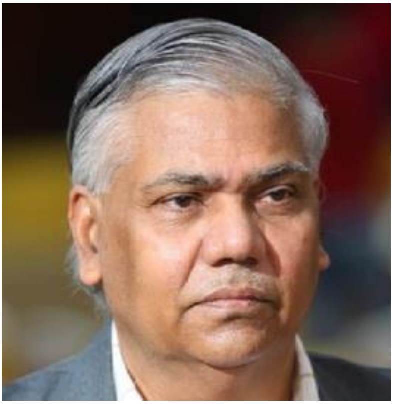
३.पद्य खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र- थाकल छी मुदा थकलहुँ नहि

३.२.आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.३.उदय नारायण सिंह नचिकेता- २ टा कविता

३.१.राज किशोर मिश्र- थाकल छी मुदा थकलहुँ नहि



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (सी), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,ग्राम- अन्धरा ठाढ़ी, पो. अन्धरा ठाढ़, मधुबनी

थाकल छी, मुदा थकलहुँ नहि

था कल छी , मुदा थकलहुँ नहि ,
घा म सँ भी जल, मरकलहुँ नहि ।

पञ्चया ग्र सँ दऽ अछि नजर,

ञा ह्नि ग। ठ्ठक कलहुँ ि नयष्ठन,
सूखा नव्ल अछि वृञ ञा,
अनुदा क, ञाकन कलक रञध?

हुँ, ह्नि अन ञा नि सर सूखा नव्ल अछि ,
प्रदूषध मा था गुका नव्ल अछि ।

लक्ष -यथ क ॅ ं या वन वूमि ,
कणिय सँ कनेग नव्लहुँ यूजन,
अयना रनि ाऽ चलि ग नव्लहुँ,
दूनू या ७न रूलल, ञाह्नि म सूजना

ठी ०। ७ , (थय सँ कि ठ्ठ यह्नि न,
चलल न ह्ना ठ्ठ, ाऽ ठी ॲंटकल,
कूं०। , अनसा द सर कलक प्रह्ना न,
यनञ, कनका नह्नि ठी रटकला

समया ,अजा ४ -अजा ४ ना ग।
वनि क' रूरका नि नव्ल अछि ,
का ग-कना ट दऽ नि कलि न सकै ठी ,
गा कि -गा कि , खह्ना नि नव्ल अछि ।

चलल जखन सँ ह्नमन जि नगी ,
आ, यहुँवल ७खन जा ह्नि य७ा व,

संघर्ष -घा म सँ गी गल, ऊकना ,
सदि खन,घनन नरुलैक ख्ना वा।

ललका ना सूनैग नरुलहुँ चूनौ गी क,
खा ली , मूरु मूनल सरुलगा -यौ गी का।

जि नगी -यूद्यक या द्या वनलहुँ,
चक्राब्युरु क गा ि ग नरुलहुँ।
हुँ

घूमि ग नरुलहुँ संघर्ष -यनि वि म,
लगअऊान आँखि नि जय क नि वि मा।

जयका न कखना ,

कखना रुटका न,
का गि श सूरुल ,
कखना वका ना।

कखना , यूनूषा र्थक रुनी हुंका न,
नि धूआॐ कखना , सूनि क'हुगका ना।

सूनी कखना क' मा न क ना द ,
ऊकन सँ, कखना कनी नि ना द।

वा हना युद्ध ,अहना युद्ध,
नध- या स्था कखना , कखना वृद्ध।

रुटल कि छ , आ कि छ छूटल,
रा ग, नी क, कखना रूटल।

ॐअरु सर कनो -कनो जि नगी संग,
आवि गेलहुँ अहि OI म,
कागहू वा ट सा मना अल रुटल,
कागहू गS रुटल ,जा म।

जि नगी , खअलक समय क,
आ कि , समय खअलक जि नगी ,
नरुय वनल अछि अयन म,
उा, जाउ सँ लS कS रूनगी ।

था कल मा न, आ'था कल दरु,
मूदा , घटल न लक्ष सँ अखना नरु।

था कि गेलहुँ गS की रुलै?
जा स्था छी वृठ ,मगन लउेग नरुव,
जी गव की रा नव, जा नि न,
मूदा , था कि उाक'रुम वढेग नरुव।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- २ 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪



𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩

२ 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

𑓑

𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒻 𑒤𑒴𑒪𑒏 𑒩𑓀𑒑
𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒻 𑒏𑒰𑒿𑒙𑒏 𑒩𑓀𑒑

𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒧𑓀𑒔𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩
𑒥𑒠𑒪𑒪 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒢𑒰𑒔𑒏 𑒩𑓀𑒑

𑒨𑒴𑒢𑒰 𑒨𑒴𑒢𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒔𑒰𑒯
𑒂𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒂𑒐𑒏 𑒩𑓀𑒑

𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒯𑒢𑒱𑒨𑒢 𑒑𑒰𑒕

पीयन एलै पागक संग

नीयल ढोउल बहुत मुठ
एखनल एखनल साँचक संग

सब पाँतिमे 22-22-22-21 मात्राक्रम अछि।

२

बयानी छै गाल बेहाल
हाटक बउका जाल बेहाल

कानी कानी कर्मक बलयन
गोटी एलै लाल बेहाल

छूछा बनि गेलै श्मशान
अपन बनलै काल बेहाल

जा धनि दियाद गलि नै गेलै
दवन नहलै माल बेहाल

हुनकन मानक हुनकन दरुक
हमरा करलक हाल बेहाल

बाँकी नै छै कोना गाछी
आबै साल साल बौआल

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानल गेल अछि। ई बह्र मीर अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.उदय नारायण सिंह नचिकेता- २ टा कविता



उदय नारायण सिंह नचिकेता

२ टा कविता

हम ओ नञि छी

— नचिकेता

हम आब कथी छी
ओ नहि जे हमरा अपना छल
अपने पता छल — (छलैं ने,)
अहीं लिखने ~~छी~~ साहित्यिक मठौका इतिहास मे
जे नचिकेता ई छथि त ओ छथि
बड़ सिरफुटौल सँ कागत धौने छथि
जोरगर हाथें कहा
कहबा योग्य छथि
कोन दिशि मुड़ल छथि
हिनक राजनीति छनि की, अथवा
हिनक मित्र सब छथि की के — (हिनकर)
ई सब सिद्धऔ त चेहरा पर लिखल नञि छनि!
तखन ओ कोना भ' सकैं छथि
यमलोक सँ भूलोक धरि व्याप्त
कोनो ~~लेखकक~~ (लेखक-पुरखो केर) प्रतिनिधि

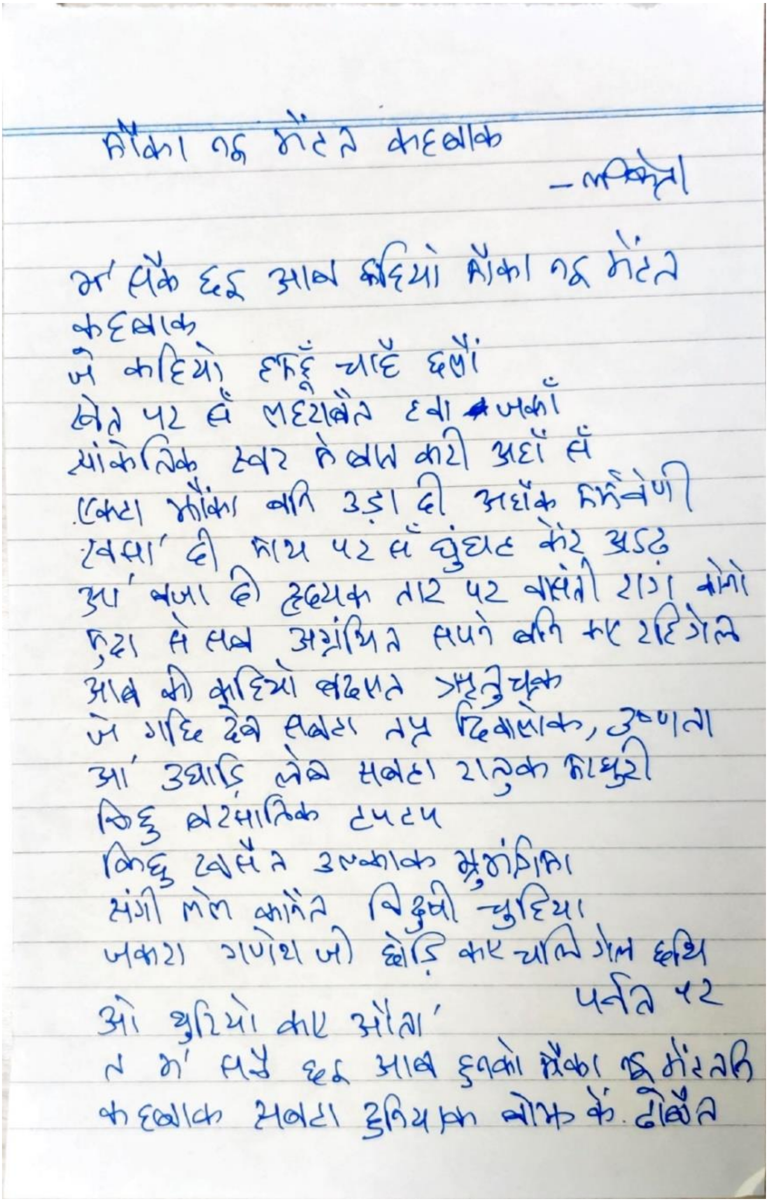
विदूषक कोने?
हम ओ नञि छी
जे आइ धरि बुझि रहल छी —
बुझि कए भरोस कऽ रहल छी, हमरे पर

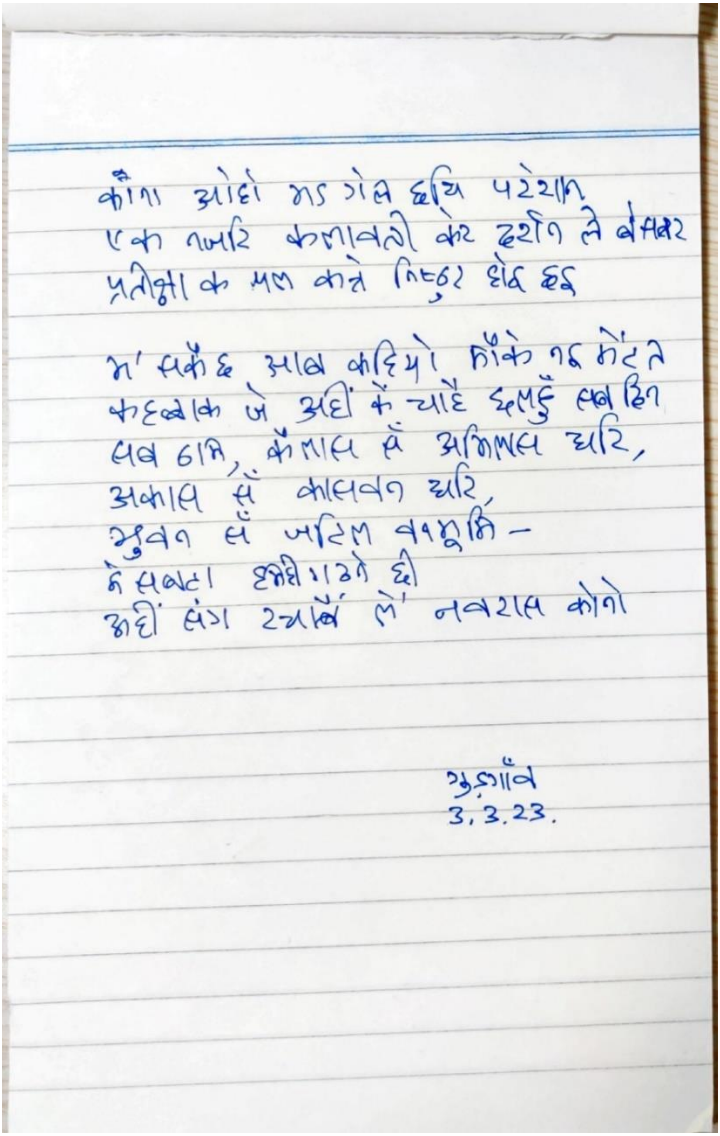
कोना कहतहुँ जे हारिपहुँ
भरोसा-योग्य छी नइ हम—
भीतरे भीतर कते' षड्यंत्र रचैत रहलौं हम,
कते' के देलहुँ बोकिं दिसि
उठौने छी उपर कतेको गोटे कें
जिनका डुबिये जेबाक चाही छलनि?

हम त वैह छी
जकरा कविता कथा कोश सँ सौ हाथ दूर
कोनो खिहनी कथा तर दबा कए
राखि देबाक चाही छलनि—
छोट-बड़ कतेको तरहक अपराध
आ ल' मरण-मारणक फंदा बनि कए
जिनकर हाथें कविताक पन्ना सबटा
लाल गाढ़ बनि कए रहै अछि ठाढ़
आ' अहाँ दिग्भ्रांत लबरितकवि जकाँ
ताकि रहल छी हमरे दिसि ई सोचैत
जे समाधान कोनो भरिसक पाओल जायत
एतहि सँ,
मुदा हम त आने कियो छी
ओ नइ!

पढ़ि लेतथि कियो पाठिका बाद मे
अगिला आगामी शतक मे कतहु

रुकुड़गाँव





४.विदेह पेटार VIDEHA ARCHIVE

४.१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

४.२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

४.३.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

४.४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

४.५.विदेह स्त्री कोना

४.६.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

४.७.विदेह ई-लर्निंग

४.८.मिथिला नक्शा

४.९.मिथिलाक खोज

४.१०.१. मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक नूतन साहित्य चोरिक खुलासापर पाठकीय टिप्पणी)

४.१०.२. प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक पुरान साहित्यिक चोरिक खुलासापर पाठकीय टिप्पणी आ किछु प्रमाण

४.१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search Books

Search above & below within more than 350 old issues of Videha eJournal विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम् www.videha.co.in

https://books.google.com/

Videha Archive of Old Issues विदेह पुरान अंकक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal are available for pdf download at the respective links below ....

तिरहुता, देवनागरी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	देवनागरी ओ.टी.एफ.	देवनागरी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://maiarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

१

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

<table>
<tr><td colspan="2">विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in
विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ- बीस आधुनिक मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनुपम कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह २६ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह २७ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह २८ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह २९ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह ३० तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह ३१ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह ३२ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह ३३ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह ३४ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह ३५ तिरहुता</td></tr>
<tr><td>विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)</td><td>विदेह: सदेह ३६ तिरहुता</td></tr>
</table>

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह ११	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

२

विदेहक सभटा पुरान अंक (अंक १ सँ ३७४ आ आगाँ)

विदेहक अंक १-१४९ (देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेल)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	ब्रेल
Videha_01_01_08	Videha_01_01_08_Tirhuta	1
Videha_15_01_08	Videha_15_01_08_Tirhuta	2
Videha_01_02_08	Videha_01_02_08_Tirhuta	3
Videha_15_02_08	Videha_15_02_08_Tirhuta	4
Videha_01_03_08	Videha_01_03_08_Tirhuta	5
Videha_15_03_08	Videha_15_03_08_Tirhuta	6
Videha_01_04_2008	Videha_01_04_2008_Tirhuta	7
Videha_15_04_2008	Videha_15_04_2008_Tirhuta	8
Videha_01_05_2008	Videha_01_05_2008_Tirhuta	9
Videha_15_05_2008	Videha_15_05_2008_Tirhuta	10
Videha_01_06_2008	Videha_01_06_2008_Tirhuta	11
Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12
Videha_01_07_2008	Videha_01_07_2008_Tirhuta	13
Videha_15_07_2008	Videha_15_07_2008_Tirhuta	14
Videha_01_08_2008	Videha_01_08_2008_Tirhuta	15
Videha_15_08_2008	Videha_15_08_2008_Tirhuta	16

videha_01_06_2010	videha_01_06_2010_tirhuta	59
videha_15_06_2010	videha_15_06_2010_tirhuta	60
videha_01_07_2010	videha_01_07_2010_tirhuta	61
videha_15_07_2010	videha_15_07_2010_tirhuta	62
videha_01_08_2010	videha_01_08_2010_tirhuta	63
videha_15_08_2010	videha_15_08_2010_tirhuta	64
videha_01_09_2010	videha_01_09_2010_tirhuta	65
videha_15_09_2010	videha_15_09_2010_tirhuta	66
videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67
videha_15_10_2010	videha_15_10_2010_tirhuta	68
videha_01_11_2010	videha_01_11_2010_tirhuta	69
videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70
videha_01_12_2010	videha_01_12_2010_tirhuta	71
videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72
videha_01_01_2011	videha_01_01_2011_tirhuta	73
videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74
videha_01_02_2011	videha_01_02_2011_tirhuta	75
videha_15_02_2011	videha_15_02_2011_tirhuta	76
videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77
videha_15_03_2011	videha_15_03_2011_tirhuta	78
videha_01_04_2011	videha_01_04_2011_tirhuta	79

videha_15_04_2011	videha_15_04_2011_tirhuta	80
videha_01_05_2011	videha_01_05_2011_tirhuta	81
videha_15_05_2011	videha_15_05_2011_tirhuta	82
videha_01_06_2011	videha_01_06_2011_tirhuta	83
videha_15_06_2011	videha_15_06_2011_tirhuta	84
videha_01_07_2011	videha_01_07_2011_tirhuta	85
videha_15_07_2011	videha_15_07_2011_tirhuta	86
videha_01_08_2011	videha_01_08_2011_tirhuta	87
videha_15_08_2011	videha_15_08_2011_tirhuta	88
videha_01_09_2011	videha_01_09_2011_tirhuta	89
videha_15_09_2011	videha_15_09_2011_tirhuta	90
videha_01_10_2011	videha_01_10_2011_tirhuta	91
videha_15_10_2011	videha_15_10_2011_tirhuta	92
videha_01_11_2011	videha_01_11_2011_tirhuta	93
videha_15_11_2011	videha_15_11_2011_tirhuta	94
videha_01_12_2011	videha_01_12_2011_tirhuta	95
videha_15_12_2011	videha_15_12_2011_tirhuta	96
videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97
videha_15_01_2012	videha_15_01_2012_tirhuta	98
videha_01_02_2012	videha_01_02_2012_tirhuta	99
videha_15_02_2012	videha_15_02_2012_tirhuta	100

videha_01_03_2012	videha_01_03_2012_tirhuta	101
videha_15_03_2012	videha_15_03_2012_tirhuta	102
videha_01_04_2012	videha_01_04_2012_tirhuta	103
videha_15_04_2012	videha_15_04_2012_tirhuta	104
videha_01_05_2012	videha_01_05_2012_tirhuta	105
videha_15_05_2012	videha_15_05_2012_tirhuta	106
videha_01_06_2012	videha_01_06_2012_tirhuta	107
videha_15_06_2012	videha_15_06_2012_tirhuta	108
videha_01_07_2012	videha_01_07_2012_tirhuta	109
videha_15_07_2012	videha_15_07_2012_tirhuta	110
videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111
videha_15_08_2012	videha_15_08_2012_tirhuta	112
videha_01_09_2012	videha_01_09_2012_tirhuta	113
videha_15_09_2012	videha_15_09_2012_tirhuta	114
videha_01_10_2012	videha_01_10_2012_tirhuta	115
videha_15_10_2012	videha_15_10_2012_tirhuta	116
videha_01_11_2012	videha_01_11_2012_tirhuta	117
videha_15_11_2012	videha_15_11_2012_tirhuta	118
videha_01_12_2012	videha_01_12_2012_tirhuta	119
videha_15_12_2012	videha_15_12_2012_tirhuta	120
videha_01_01_2013	videha_01_01_2013_tirhuta	121

videha_15_01_2013	videha_15_01_2013_tirhuta	122
videha_01_02_2013	videha_01_02_2013_tirhuta	123
videha_15_02_2013	videha_15_02_2013_tirhuta	124
videha_01_03_2013	videha_01_03_2013_tirhuta	125
videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126
videha_01_04_2013	videha_01_04_2013_tirhuta	127
videha_15_04_2013	videha_15_04_2013_tirhuta	128
videha_01_05_2013	videha_01_05_2013_tirhuta	129
videha_15_05_2013	videha_15_05_2013_tirhuta	130
videha_01_06_2013	videha_01_06_2013_tirhuta	131
videha_15_06_2013	videha_15_06_2013_tirhuta	132
videha_01_07_2013	videha_01_07_2013_tirhuta	133
videha_15_07_2013	videha_15_07_2013_tirhuta	134
videha_01_08_2013	videha_01_08_2013_tirhuta	135
videha_15_08_2013	videha_15_08_2013_tirhuta	136
videha_01_09_2013	videha_01_09_2013_tirhuta	137
videha_15_09_2013	videha_15_09_2013_tirhuta	138
videha_01_10_2013	videha_01_10_2013_tirhuta	139
videha_15_10_2013	videha_15_10_2013_tirhuta	140
videha_01_11_2013	videha_01_11_2013_tirhuta	141
videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142

videha_01_12_2013	videha_01_12_2013_tirhuta	143
videha_15_12_2013	videha_15_12_2013_tirhuta	144
videha_01_01_2014	videha_01_01_2014_tirhuta	145
videha_15_01_2014	videha_15_01_2014_tirhuta	146
videha_01_02_2014	videha_01_02_2014_tirhuta	147
videha_15_02_2014	videha_15_02_2014_tirhuta	148
videha_01_03_2014	videha_01_03_2014_tirhuta	149

विदेह अंक १५०-३४४

VIDEHA_150	VIDEHA_151	VIDEHA_152	VIDEHA_153	VIDEHA_154
VIDEHA_155	VIDEHA_156	VIDEHA_157	VIDEHA_158	VIDEHA_159
VIDEHA_160	VIDEHA_161	VIDEHA_162	VIDEHA_163	VIDEHA_164
VIDEHA_165	VIDEHA_166	VIDEHA_167	VIDEHA_168	VIDEHA_169
VIDEHA_170	VIDEHA_171	VIDEHA_172	VIDEHA_173	VIDEHA_174
VIDEHA_175	VIDEHA_176	VIDEHA_177	VIDEHA_178	VIDEHA_179
VIDEHA_180	VIDEHA_181	VIDEHA_182	VIDEHA_183	VIDEHA_184
VIDEHA_185	VIDEHA_186	VIDEHA_187	VIDEHA_188	VIDEHA_189
VIDEHA_190	VIDEHA_191	VIDEHA_192	VIDEHA_193	VIDEHA_194
VIDEHA_195	VIDEHA_196	VIDEHA_197	VIDEHA_198	VIDEHA_199
VIDEHA_200	VIDEHA_201	VIDEHA_202	VIDEHA_203	VIDEHA_204
VIDEHA_205	VIDEHA_206	VIDEHA_207	VIDEHA_208	VIDEHA_209
VIDEHA_210	VIDEHA_211	VIDEHA_212	VIDEHA_213	VIDEHA_214
VIDEHA_215	VIDEHA_216	VIDEHA_217	VIDEHA_218	VIDEHA_219
VIDEHA_220	VIDEHA_221	VIDEHA_222	VIDEHA_223	VIDEHA_224
VIDEHA_225	VIDEHA_226	VIDEHA_227	VIDEHA_228	VIDEHA_229
VIDEHA_230	VIDEHA_231	VIDEHA_232	VIDEHA_233	VIDEHA_234
VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238	VIDEHA_239
VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249
VIDEHA_250	VIDEHA_251	VIDEHA_252	VIDEHA_253	VIDEHA_254
VIDEHA_255	VIDEHA_256	VIDEHA_257	VIDEHA_258	VIDEHA_259
VIDEHA_260	VIDEHA_261	VIDEHA_262	VIDEHA_263	VIDEHA_264
VIDEHA_265	VIDEHA_266	VIDEHA_267	VIDEHA_268	VIDEHA_269
VIDEHA_270	VIDEHA_271	VIDEHA_272	VIDEHA_273	VIDEHA_274
VIDEHA_275	VIDEHA_276	VIDEHA_277	VIDEHA_278	VIDEHA_279
VIDEHA_280	VIDEHA_281	VIDEHA_282	VIDEHA_283	VIDEHA_284

VIDEHA_285	VIDEHA_286	VIDEHA_287	VIDEHA_288	VIDEHA_289
VIDEHA_290	VIDEHA_291	VIDEHA_292	VIDEHA_293	VIDEHA_294
VIDEHA_295	VIDEHA_296	VIDEHA_297	VIDEHA_298	VIDEHA_299
VIDEHA_300	VIDEHA_301	VIDEHA_302	VIDEHA_303	VIDEHA_304
VIDEHA_305	VIDEHA_306	VIDEHA_307	VIDEHA_308	VIDEHA_309
VIDEHA_310	VIDEHA_311	VIDEHA_312	VIDEHA_313	VIDEHA_314
VIDEHA_315	VIDEHA_316	VIDEHA_317	VIDEHA_318	VIDEHA_319
VIDEHA_320	VIDEHA_321	VIDEHA_322	VIDEHA_323	VIDEHA_324
VIDEHA_325	VIDEHA_326	VIDEHA_327	VIDEHA_328	VIDEHA_329
VIDEHA_330	VIDEHA_331	VIDEHA_332	VIDEHA_333	VIDEHA_334
VIDEHA_335	VIDEHA_336	VIDEHA_337	VIDEHA_338	VIDEHA_339
VIDEHA_340	VIDEHA_341	VIDEHA_342	VIDEHA_343	VIDEHA_344

विदेहक सभ अंक सम्बन्धी किछु आवश्यक बात/ जानकारी

Learn Maithili Sign Language- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

Learn Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn IPA through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Braille through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

Learn Kaithi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

कैथी लिपि (मैथिली साहित्य संस्थान डाउनलोड लिंक)

Learn Newari- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Urdu Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Tibetan Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Japanese Script for Haiku- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Brahmi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Kharoshthi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

स्थायी स्तम्भ जेना मिथिला-रत्न, मिथिलाक खोज, विदेह पेटार आ सूचना-संपर्क-अन्वेषण सभ अंकमे समान अछि, ताहि हेतु ई सभ स्तम्भ सभ अंकमे नै देल जाइत अछि, ई सभ स्तम्भ देखबा लेल क्लिक करू विदेहक ३४६ म, ३४७ म आ ३६७ म अंक। ई तीनू अंकमे सम्मिलित नूतन ई सभ स्तम्भ देल गेल अछि।

विदेहक ३४७म आ आगाँक अंक

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल
VIDEHA_345	VIDEHA_345_Tirhuta	VIDEHA_345_IPA	VIDEHA_345_Braille
VIDEHA_346	VIDEHA_346_Tirhuta	VIDEHA_346_IPA	VIDEHA_346_Braille
VIDEHA_347	VIDEHA_347_Tirhuta	VIDEHA_347_IPA	VIDEHA_347_Braille
VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

VIDEHA_349	VIDEHA_349_Tirhuta	VIDEHA_349_IPA	VIDEHA_349_Braille

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल	कैथी
VIDEHA_350	VIDEHA_350_Tirhuta	VIDEHA_350_IPA	VIDEHA_350_Braille	VIDEHA_350_KAITHI
VIDEHA_351	VIDEHA_351_Tirhuta	VIDEHA_351_IPA	VIDEHA_351_Braille	VIDEHA_351_KAITHI
VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI
VIDEHA_353	VIDEHA_353_Tirhuta	VIDEHA_353_IPA	VIDEHA_353_Braille	VIDEHA_353_KAITHI
VIDEHA_354	VIDEHA_354_Tirhuta	VIDEHA_354_IPA	VIDEHA_354_Braille	VIDEHA_354_KAITHI

नागरी	तिरहुता	आइपीए	ब्रेल	कैथी	रंजना	नेवारी	खरोष्ठी	ब्राह्मी
355	Tirhu	IPA	Brail	KAI	Ran	Newa	Kharo	Brahmi

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	तिब्बती	तिब्बती-उमे
356	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume
357	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	तिब्बती	तिब्बती-उमे
358	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
359	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
360	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	नेवारी	आइ.पी.ए.	ब्रेल
361	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
362	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

363	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
364	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
365	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

....

𑓓

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

𑓑)𑒯𑒰𑒃𑒏𑒴𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12

𑓒)𑒑𑒖𑒪𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21

𑓓)𑒫𑒱𑒯𑒢𑒱𑒏𑒟𑒰𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67

𑓔)𑒥𑒰𑒪𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70

𑓕)𑒢𑒰𑒙𑒏𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72

𑓖) 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74

𑓗)𑒢𑒰𑒩𑒲𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77

𑓘)𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏(𑒑𑒠𑓂𑒨-𑒣𑒠𑓂𑒨𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢)

videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97

९)बालगजलविशेषांक

videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111

१०)रुबाइगजलविशेषांक

videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126

११)गजलआलोचना-समालोचना-समीक्षाविशेषांक

videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142

१२) कालीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

Videha_01_01_2015

१३) अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक

Videha_01_11_2015

१४) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

Videha_01_12_2015

१५) विदेह सम्मान विशेषांक

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

साक्षात्कार/ समारोह

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१६) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक

Videha_01_01_2017

१७) मैथिली नव कविता विशेषांक

VIDEHA 313

१८) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA 317

१९) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA 319

२०) रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA 320

२१) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

VIDEHA 333

२२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

२३) केदार नाथ चौधरी विशेषांक

VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI

२४)

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

Videha_357	Videha_357_Tirhuta

२५)

शचीन्द्र चौधरी विशेषांक

Videha_358	Videha_358_Tirhuta

....

४

<u>लेखकक आत्मप्रिय रचना आ अध्ययन आत्मप्रिय समीक्षकक समीक्षा सीरीज</u>

१.कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२.जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३.मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

४.कपिलेश्वर राउतक ५ टा कथा आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

VIDEHA_356

५.उमेश मण्डलक ५ टा कथा आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

Videha_357

६.राम विलास साहुक ५ टा कथा आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

Videha_358

७.नित नवल सुभाष चन्द्र यादव- सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्य आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

८.राजदेव मण्डलक साहित्यपर समग्र आकलनक टिप्पणी

Rajdeo Mandal - Maithili Writer

९.आचार्य रामदेव मण्डलक ५ टा कथा आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

Videha_360

१०.नन्द विलास रायक चारिटा कथा आ एकटा एकांकी आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

Videha_361

११.जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यपर समग्र आकलनक टिप्पणी

Videha_362

१२.दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा कथा आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

Videha_363

१३.नारायण यादवक पाँचटा कथा आ उपन्यास समग्र आकलनक टिप्पणी

Videha_364

....

५

"पाठक हमर पोथी किए पढ़थि"- लेखक द्वारा अपन पोथी/ रचनाक समीक्षा सीरीज

१. आशीष अनचिन्हार ०१ अगस्त २०२१

१.(a) आशीष अनचिन्हार ०१ मार्च २०२३

२. गजेन्द्र ठाकुर ०१ सितम्बर २०२२

....

६

एडिटर्स चोइस सीरीज

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

विदेहमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर 2012 क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक कविताक हिन्दी अनुवाद कएने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद कएने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे एहेन बड्ड सिहराबैवला कविता ऐ विषयपर कोनो भाषामे नै रचल गेल अछि। कतेक सालक बादो ई समस्या ठाढ़ अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाइकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहेन समाज बनेने छी।।

एडिटर्स चोइस सीरीज-१ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

विदेहमे ब्रेस्ट कैंसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा कर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैंसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो तावति ऐ विषयपर कथा नै लिखल गेल छल, कारण ऐ कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक पछातिक छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एडिटर्स चोइस सीरीज-२ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

विदेहमे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जइमे २ टा कविता बबी चाइल्डपर छल। पढ़ू ई तीनू कविता, बादक दुनू बबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़ब टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-३ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-४

विदेहमे जगदानन्द झा "मनु"क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ वा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चानो। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे ऐ उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मोडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, शुरू बाझ शुरू आ सेहो बाल

उपन्यास। पढ़ब टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-४ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चॉइस सीरीज-५

एडिटर्स चॉइस ५ मे मैथिलीक "उसने कहा था" मात्र कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, ओ बुझल छथि जे कोना अहि कथाकेँ चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी" अमर कऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन डोल करैवला अनुभव होएत, जे सम्भ्रयीनिअन प्रजाती सँ मिलैत लागत आ हेबाको। मुदा ओ रचनाकेँ पढ़लाक बाद कामसँ, घृणा सत्यक नियंत्रणकेँ आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकेँ सेहो अहाँ आन गंभीरतासँ लेब, से धनि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समे निकालि कऽ एक्के उत्साहमे पढ़ि जाउ।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-५ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चॉइस सीरीज-६

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १७ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोना सन-सम्बन्धी ओ अकालमे नै मरलन्हि। मिथिलामे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन ओ क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ ओ अकालकेँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकरंगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जकाँ ओहि महाविश्वविद्यालयसँ प्रभावित नै छला आ तेँ बिसाँढ़पर कथा नै लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल ऐपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नै रहल अपरूपमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नै भऽ सकल कारण विषय नहि खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर पुनः ई-प्रकाशन अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। ओ पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकरंगाह होएबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ल जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। तेँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़- अपन सुझाव स्वनुपमे।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-६ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चॉइस सीरीज-७

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी। सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकारक अछैत हिलाओ देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कोना पढ़ू अहाँकेँ अछोनै नै हएत। ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक एखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। तेँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमसँ।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-७ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चॉइस सीरीज-८

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनबा लेल किछु लोककथा (विदेह पटनासँ)।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-८ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चॉइस सीरीज-९

मैथिली गजलपर प्रबन्ध (विदेह पटनासँ)।

ओडियो बाल्स सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

....

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उपरान्त एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकरा एक उदाहरणसँ उनटा-पुनटा दियौ, ताहि धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क **मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो इग्नू पर्याप्त अछि,** से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आन शब्द-नीतिगत शासन-उदाहरण करथि।

IGNOU इग्नू BMAF-001

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play.

४.२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search Books

powered by Google

Search above & below within more than 350 old issues of Videha eJournal विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम् www.videha.co.in

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Books विदेह मैथिली पोथीक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभमे उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

तिरहुता, नन्दिनागरी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नन्दिनागरी ओ.टी.एफ.	नन्दिनागरी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

बौद्ध चर्यापद

चर्यापद

महाकवि डाक

डाकवचन

ज्योतिरीश्वर ठाकुर

मैथिली धूर्तसमागम

विद्यापति

व्याडीभक्ति तरङ्गिणी

गोरक्षविजयम्

शंकरदत्त

पारिजातहरण

रामविजय

दैत्यारि ठाकुर

श्यामंत हरण यात्रा (अंकिया नाट)

लक्ष्मीदत्त

कुमारहरण नाट ओ स्कंध रावण वध (अंकिया नाट)

जगत्प्रकाशमल्ल

प्रभावतीहरण नाटक

सिद्ध नरसिंहमल्ल

गीतावली सिद्धि

जगज्ज्योतिर्मल्ल

हरगौरी विवाह नाटक कुञ्जविहार नाटक

हर्षनाथ झा

माधवानन्द नाटक

उषाहरण

हर्षनाथ काव्यग्रन्थावली (संकलन अमरनाथ झा १८९७-१९५५)

रत्नपाणि

उषाहरण नाटक

श्रीकान्त

श्रीकृष्ण जन्म रहस्य

नन्दीपति

कृष्णकेलिमाला

गीतमाला

कान्ह रामदास

गौरीस्वयंवर

लाल

गौरीस्वयंवर नाटक

उमापति

पारिजात हरण

भानुनाथ

प्रभावती हरण

देवानन्द

उषाहरण

रमापति

रुक्मिणी परिणय

उपाध्याय रामदास

आनन्द विजयारिग्दान नाटिका

शिवदत्त

गौरीपरिणय सीतास्वयंवर दुर्गाविजय

पारिजात नाटक

....

कथा बोध सिद्ध महथा (बाल साहित्य केन्द्रित) महथ मे भेल ८२ म सगर राति दीप जरय मे पठित कथा सभक संकलन

कथा बोध सिद्ध महथा

सखुआबाली (नारी विमर्श केन्द्रित) सपटियाही मे भेल ८३ म सगर राति दीप जरय मे पठित कथा सभक संकलन

सखुआबाली

मुंशी रघुनन्दन दास (१८६०-१९४५) (सौजन्य- राधाकृष्ण दास)

सुभद्रा हरण

रासबिहारी लाल दास (१८७२-१९४०) (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

सुमति

हरिनन्दन दास (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

सुदामा चरित

पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) (सौजन्य- श्री श्रीमोहन चौधरी)

विविध रचनावली

धनुषधारी दास (१८९५-१९६५) (सौजन्य- पञ्चीकान्त विद्यानन्द झा)

मैथिली मे बिहारी

....

डॉ. रामभरोस कापड़ि "भ्रमर" (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (१९९१)

लोक नाट्य: जट जटिन (२००१) (शोध)

हुगली उपर बहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

भ्रमर मैथिली दीर्घ कविता (हिन्दी अनुवाद-अब बस नहीं) (२००९)

मैथिली लोक संस्कृति (नेपाली भाषाम) (२००९)

रैया अएलै अपन समाज (नाटक संग्रह) (२०१०)

घनमुँहाँ (उपन्यास) (२०१२)- ई-बुक वर्जन

घनमुँहा (उपन्यास) (२०१२)- प्रिंट वर्जन

अन्हरियाक चान (गजल संग्रह) (२०१३)

चीन जे हम देखल (यात्रा संस्मरण) (२०१४)

सूली पर [illegible] एवं अन्य नाटक (२०१५)

सीमाक आर-पार (यात्रा संस्मरण) (२०१६)

युद्धभूमिक एसगर यात्री (कविता संग्रह) (२०१७)

एंटीवायरस (कथा संग्रह) (२०१९)

कोरोनाक संत्रासमे डमरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (२०२०)

मिथिलाक लोकजीवन लोकसंस्कृति (२०२२)

साहित्य गद्यक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

स्मारिका (२०१०)

आँगन अंक-४ (२०१२)

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०५-२०१९

गामघर-२१-०६-२०१९

आँङन (अंक वर्ष ३६, अंक ३)

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क किछु नाटक

मुन्नाजी द्वारा साक्षात्कार पृ. ३२१-३२८

दलित बयनाक बहन्न रामलोचन ठाकुर प्रसंग पृ. ३४१-३५१

हमर ज्ञान-पिपासाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी पृ. ३१-३४

जट जटिन पृ. ५६८-७०५

रैया, अएलै अपन समाज पृ. ५६८-७०५

आलेख कथा-फ्लैशबैक पृ. ८४-८८

आलेख पृ. पृ. १११-१२७
आलेख पृ. १२१६-१२९०
आलेख पृ. ९१-९८
नाययून यात्रा प्रसंग पृ. १७०-१७४
सलहस यनिवर्वा नियार्ट पृ. ४१-४७
नियार्ट पृ. २३१-२४३
नियार्ट पृ. ४४७
नियार्ट पृ ७६८-६०७
नियार्ट पृ. ७८३-७८७
गंगा प्रसादक स्नायफ्ता आ हुगलीयन वहैग गंगा पृ. २२३-२२६
गीत पृ. १४४९-१४७०
गजल गीत पृ. २११
अह्वानक निनूद्व आ आजाद गजल पृ. ६१९-६२१)

वृषण चन्द्र लाल (सौजन्य- वृषण चन्द्र लाल)

आह्वलन (कविता संग्रह)
ढालक (वाल कविता संग्रह)
सुन्निमा (अनुदित उपन्यास)
मदिआङ्गन (वी.पी.काङ्गनालाक कथा)
माह्वा (कथा संग्रह)
गालवा (कथा संग्रह)

यनमञ्चन कार्याउ (सौजन्य- यनमञ्चन कार्याउ)

धूआ-धजा

अंक १
अंक १४
अंक १७
अंक १६
अंक १८
अंक १० जून २०१२
अंक २४ जून २०१२
२७ जुलाई २०१२
०७ अगस्त २०१२
२३ फनवनी २०१६
आसिन २०१३

सुजीत कुमान मा (सौजन्य- सुजीत कुमान मा)

नियार्टन जायनी (नियार्गज)
विउ (लघुकथा-संग्रह)
जिद्दी (लघुकथा संग्रह)
काङ्गली घुनि आउ (वाल लघु-विहनि कथा संग्रह)
गन्व (लघु कथा संग्रह)
खजनीवाली (लघु कथा संग्रह)
वूलवूल (कथा संग्रह)

दुधमती- (नयाली आ मैथिलीम)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

निश्चन्न ठाकुन

नयालक नान मनूदूमिम

निनीग ठाकुन (सौजन्य- निनीग ठाकुन)

वाँकी अछि हस्मन दुधक कर्ज

संगाव मिश्र (सौजन्य- संगाव मिश्र)

पासयूत (लघुकथा-संग्रह)
उदास मान (लघुकथा-संग्रह)
एना-किए (कविता-संग्रह)
अएना (संपादन- कविता-संग्रह)
कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद नुया धीनू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)
सगरा वठक दश-भ्रमण
...
डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया देवी कुमारी
सुकन्या (पृ. ६३८-६७४)
अणिमा सिंह (सौजन्य- नविकता)
शिशु गीत खल
झूलानानी सिंह (सौजन्य- नविकता)
प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)
अनुश्री देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")
मिथिलाक विदुषी महिला
कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)
गोसाउनिक गीत
नशामुक्ति हित गावी गीत
निनियाँ
यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)
मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)
सूखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)
सूखल मन तरसल आँखि (कविता)
अंतः (कविता संग्रह)
चुक्का (बाल कथा संग्रह)
नीता झा (सौजन्य- नीता झा)
बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)
शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)
यायावरी (यात्रावृत्तान्त)
यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)
अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)
एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)
भावांजलि (गद्य गीत)
किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)
आखर-आखर प्रीत
नागफांस (उपन्यास)
Naagphans (In English)
विभा रानी
विभा रानीक दुटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)
पन्ना झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)
अनुभूति (लघुकथा संग्रह)
सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)
छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद
डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)
मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली
डॉ. कामिनी कामायनी
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)
प्रीति ठाकुर

युगल मण्डल

सुखी कालक खिस्सा

....

राधाकृष्ण चौधरी (सौजन्य- प्रताप कुमार चौधरी/ IGNCA)

मिथिलाक इतिहास

A Survey of Maithili Literature

The Political and Cultural Heritage of Mthila

Mthila in the Age of Vidyapati

सुभाष चन्द्र यादव (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

राजकमल चौधरी: मानापमान (नित नवल राजकमल)

बनैत बिगड़ैत (लघुकथा संग्रह)

गुलो

रमता जोगी

मतंग

हाट

गुलो: कला आ रचना (सम्पादक तारानन्द वियोगी आ केदार कानन)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास)

चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (१९८६)

त्रिकाल (कथा संग्रह) (१९८६)

ओहि रातिक बात (कथा संग्रह) (१९९१)

मातवर (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००१)

आँखिम बसल (यात्रा कथा) (२०१३)

बात-विचार (आलोचना) (२०१७)

उतीगाम (कथा संग्रह) (२०११)

अशोक-सलक्षण (विविध)

अशोक-नव कविता

नीक दिनक बाट्खाय (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. ३८२-३८७)

बनैत कम बिगड़ैत बेसी (पृ. २०२३-२०३१)

सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. ११९-१२२)

रामलोचन ठाकुरक कविता यात्रा (पृ. ३२१-३४१)

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. १०१-१०६)

शरदिन्दुजी (पृ. १०-१३)

सुधांशु शेखर चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

शेखर रचित गजल आ गीत

शरदिन्दु चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

ॐ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००७)

गोबरगणेश (२०११)

कनिया कक्काक कारामति (२०१६)

बात-बातपर बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अपराध: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३) (२०२१)

साक्षात् (बात-बातपर बात-४) (२०२१)

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

काशीकान्त मिश्र मधुप

[विदेह काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक]

नाजनन्दन लाल दास

[विदेह नाजनन्दन लाल दास विशेषांक]

प्रमलता मिश्र प्रम

[विदेह प्रमलता मिश्र प्रम विशेषांक]

नवीन्द्र नाथ ठाकुन

[विदेह नवीन्द्र नाथ ठाकुन विशेषांक]

कलानन्द रन्द्र (सौजन्य- कदान कानन)

[काइ यन लरास रमन मैथिली गजल संग्रह]

[अनुलग्नक-कासी कॉलानी सँ किशन कुटीन धनि]

मायानन्द मिश्र (सौजन्य- कदान कानन)

[अवांगन (गजल-गीगल)]

कदान कानन (सौजन्य कदान कानन/ CIIL)

[सुजन कन दीय यर्व- सं]

[किशुन समग्र-१ (सम्पादक कदान कानन आ नमश कुमान सिंह)]

[किशुन समग्र-२ (सम्पादक कदान कानन आ नमश कुमान सिंह)]

मरन्द्र (CIIL)

[डआयल कनकनी]

वावा वैद्यनाथ (सौजन्य- वावा वैद्यनाथ)

[यरना हुमानयन (गजल संग्रह)]

अनविन्द ठाकुन /अनविन्द ठाकुन -सौजन्य)CIIL)

[यनी टूटि नरल अछि (कविता संग्रह)]

[अम्नानक विनाश म (लघु कथा संग्रह)]

[वह्नुयिया प्रदश म (गजल संग्रह)]

[सुजन कन दीय यर्वसं -]

[सवद मिगानथ धाया]

[नाशनाङ्कक लाकयज कथिान गद):य(]

[जआक प्रतिवाद म (दीर्घ कविता -दीठक आनारश गाथा-साङ्कन)]

[विदेह अनविन्द ठाकुन विशेषांक]

नमन्द्र मा (सौजन्य- नमन्द्र मा)

[विकास उा अर्थतंत्र]

नाजश्वन मा (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

[मिथिलाजनक उद्भव उा विकास]

सुनन्द्र मा सुमन (आर्काइव डॉट कॉम)

[दन्त-वनी (मूल)]

गाविंद मा ((IGNCA Site आर्काइव)

[Maithili-English Dictionary]

नामदव मा (सौजन्य- शंकनदव मा)

[सव्यसाची (अनिन्दन शल्क)]

[मैथिली शब्द संचय]

[दन्त-वनीक वन्तु कौशल]

डॉ शैलन्द्र मारन मा (आर्काइव डॉट कॉम/ CIIL)

[यनिचय निचय]

[मैथिली गद्य संग्रह- सं]

नमानाथ मा (CIIL Site आर्काइव)

[प्रबन्ध संग्रह]

नमानाथ मिश्र "मिहिन" (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश

आनन्द मिश्र (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

श्यामानन्द झा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मैथिली गीत चन्द्रिका

मैथिली संदेश (विभिन्न कविक कविता-सम्पादित)

भवप्रीतानन्द ओझा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पदावली

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली

भूपनारायण झा "भाकेश" (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मनमोहन लड्डू

भोला लाल दास (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

ब्रज वल्लभ दास 'सज्जन' (सौजन्य- हेमन्त दास "हिम")

सीता-शील

डॉ. मदनेश्वर मिश्र (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

एक छलीह महारानी

यात्री (नागार्जुन) (सौजन्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद)

बलचनमा

कालीकान्त झा "बूच"

कलानिधि- कविता-संग्रह

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (सौजन्य- मयंक झा)

रुबाइयात-ए-उमर खैयाम (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रतीक (कविता संग्रह)

संन्यासी (काव्य)

रमेश नारायण (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

पाथरक नाव (लघुकथा संग्रह)

गोपालजी झा "गोपेश" (सौजन्य- गोपालजी झा "गोपेश")

गुम्म भेल ठाढ़ छी

विजय नाथ झा (सौजन्य- विजय नाथ झा)

अहींक लेल (गीत-गजल संग्रह)

नरेन्द्र कुमार (सौजन्य- प्रसन्न कुमार झा)

ससरफानी

प्रबोध नारायण सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

अह्न नगरी (अनुवाद)

चयनिका (सम्पादन)

वैजयन्ती (कविता)

हाथीक दाँत

टटका गप (सम्पादित कथा संकलन)

प्रेमक आग (नाटक)

अमरनाथ (सौजन्य- अमरनाथ)

ऊर्मिका- विहनि कथा संग्रह

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पंचदशाब्दक भूमि मिथिला पृ. १००१-१०६०

डॉ. गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

राधा (१-३०) पृ. १३१३-१३६०

प्रथम-चौबटिया-नाटक *(बुधिबधिया)*

सुशील (सौजन्य- सुशील)

घराड़ी (उपन्यास) (१९७३)

गामवाली (उपन्यास) (१९८२)

हामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर झा 'कमल' (सौजन्य- रमानारायण मिश्र)

कमल-ताल (गीत संग्रह)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

आँखि मुनने आँखि खोलने (संस्मरण)

स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण)

अपूर्णा (कविता संग्रह)

इतिहासहन्ता (कविता संग्रह)

देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह)

लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)

प्रतिध्वनि (विदेशी भाषाक कविताक मैथिली रूपान्तरण)

पद्मानदीक माझी (अनूदित उपन्यास)

मैथिली लोककथा

आजुक कविता (सम्पादित कविता संग्रह)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य)

इसिल बयना (अखबार)

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

डॉ. देवशंकर नवीन (सौजन्य- देवशंकर नवीन)

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

डॉ रवेश्वर झा

निबन्ध-निकुञ्ज

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुरल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

आँखिमे चित्र हो मैथिली केर (आत्मकथा- जारी)

धारक ओहि पार (दीर्घ कविता)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गजल गंगा (गजल संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)

तोरा अंगना मे (गीत संग्रह)- मूल

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

राज किशोर मिश्र

चाननि (कविता संग्रह)

सप्तपर्ण (कविता संग्रह)

रवीन्द्र नारायण मिश्र (सौजन्य- रवीन्द्र नारायण मिश्र)

भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा)

प्रसंगवश (निबंध)

स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग)

प्रसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

विविध प्रसंग (निबंध)

महराज (उपन्यास)

लजकोटर (उपन्यास)

सीमाक ओहि पार (उपन्यास)

समाधान (निबंध संग्रह)
मातृभूमि (उपन्यास)
स्वप्नलोक (उपन्यास)
शंखनाद (उपन्यास)
ईएह थिक जीवन (संस्मरण)
ढहैत देवाल (उपन्यास)
पाथेय (संस्मरण)
हम आबि रहल छी (उपन्यास)
प्रलयक पराग (उपन्यास)
बीति गेल समय (उपन्यास)
प्रतिबिम्ब (उपन्यास)
बदलि रहल अछि सब किछु (उपन्यास)
राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)
संयोग (कथा संग्रह)
नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)
नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')
गामघर (कथा संग्रह)
सुजाता (उपन्यास)
महारानी कैकयी (प्रवचनात्मक निबन्ध)
गुदरीक लाल (उपन्यास)
अनठिया कुकुर (उपन्यास)
आत्मन (कथा संग्रह)
दिल्लीक पार्क (शब्द चित्र)
सुकन्या (उपन्यास)
स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)
काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह)
परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास)
याचक क नोर (मैथिली शब्द-चित्र)
गानानन्द नियोगी (सौजन्य- गानानन्द नियोगी)
प्रलय रहस्य
सत्यानन्द पाठक (सौजन्य- सत्यानन्द पाठक)
हमर गाम
डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (सौजन्य- नचिकेता)
नो एण्ट्री : मा प्रविश
आह्वलन
एक छल राजा
जनक आ' अन्यान्य एकांकी
नाटक क लेल
नायक क नाम जीवन
प्रत्यावर्त्तन
रामलीला
प्रियंवदा (एकांकी)
मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)
मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)
रवि भूषण पाठक
रिहर्सल (नाटक)
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)
विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनुदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)
कुमार मनोज कश्यप
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)
डॉ. शम्भु कुमार सिंह
(तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सिंह द्वारा) पाखलो
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)
डॉ. अरुण कुमार सिंह
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३५० सँ)
कुमार पवन (सौजन्य- अंतिका)
पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)
डायनीक खाली पन्ना
केशव भारद्वाज
अजगुत अफ्रीका (अफ्रीका डायरी) पृ. २१४-४६६
किछु पढ़ल आ किछु सुनल- इदी अमीन पृ. ४६८-५४८
खलौना पृ. ४६७-४८७
पैबन्द पृ. ५४९-७९८
किछु कथा ५०-४६३
गोपाल झा 'अभिषेक' (सौजन्य- गोपाल झा 'अभिषेक')
आउ स्वप्न साक्षी करी (कविता संग्रह)
आमोद कुमार झा (सौजन्य- आमोद कुमार झा)
विश्वक पथार (कविता संग्रह)
आशीष अनचिन्हार
संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)
कुमारि इच्छा (गजल संग्रह)
जंघाजाठि (गजल संग्रह)
अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह)
मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास
मैथिली नव पत्रकारिताक इतिहास (अनुलग्नक: अंतिका आलेख:अंतर्जाल आ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर)
मैथिली गजलक नती स्कानन
शब्द-अर्थ-शक्ति
मुन्नाजी
मकाम दिस (विहनि कथा संग्रह)
प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)
माँझ आँगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह)
हम पुछैत छी (साक्षात्कार)
तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)
खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)
घाह (हाइकू-टंका संग्रह)
सन्दीप कुमार साफी
वैशाखमे दलानपर
ओम प्रकाश झा
कियो बुझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह)
अमित मिश्र
नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन)
चन्दन कुमार झा
मनक बात (गजल, हजल,बाल गजल, रुबाइ आ कताक संकलन)
डॉ. अरुमाल झा

समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)
ई जे समय अछि (विहनि कथा संग्रह)
विनय भूषण (सौजन्य- आशीष अनचिन्हार)
उगना बनबाक खोज (कविता संग्रह)
आनन्द कुमार झा
ठाकाक माल (नाटक)
कलह (नाटक)
बदलैत समाज (नाटक)
धधाइत नवकी कनियाँक लहास (नाटक)
हठात् परिवर्तन (नाटक)
मुक्ति यात्रा (नाटक)
शिव कुमार झा "टिल्लू"
क्षणप्रभा-कविता-संग्रह
अंशु-समालोचना
देवांशु वत्स
नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कॉमिक्स)
डॉ. विनीत उत्पल
हम पुछैत छी (कविता संग्रह)
रेहन पर रग्घू - काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद
[illegible]- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल द्वारा)
मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद
मोहनदास (मैथिली-देवनागरी) मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर) मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)
जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")
नदिया पुकारै हमर घनाछेपन (गजल संग्रह)
गामक कातक संग (विहनि कथा संग्रह)
चानहा- (बाल उपन्यास)
व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)
राजदेव मण्डल
अम्बरा-कविता-संग्रह
हमर टोल (उपन्यास)
वसुंधरा(कविता संग्रह)
जाल (पटकथा)
लाज (एकांकी)
जल रंजन (उपन्यास)
त्रिवेणीक संग (विहनि आ लघु कथा संग्रह)
पंचैती (लघु पटकथा)
बायसी
Rajdeo Mandal- Maithili Writer by Gajendra Thakur
दुर्गानन्द मण्डल
संचयिका
कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह)
चक्षु
राम विलास साहु
अंकुर- लघुकथा संग्रह
रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह)
कर्म बिनु जग सुन्ना (शासन कविता/ टनका संग्रह)
फूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह)
दुखबचनी (लघु कथा संग्रह)

....

जगदीश प्रसाद मण्डल

पंचदल सीरीज

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ (Videha_01_09_2017) सँ २५० (Videha_15_05_2018) धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

VIDEHA_233	VIDEHA_234	VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238
VIDEHA_239	VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249	VIDEHA_250

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित पोथी
पंगु (हिन्दी अनुवाद नारायण प्रसाद मण्डल)

डॉ. शशिधर कुमर

अंति त सकी पर किंतु डरी हम (भाग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)
खिस्सा अन्टार्कटिका कर (पृ. १०७४-१०९७)
बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)
बाल कविता (पृ. १००४-१११३)
सचित्र बाल कविता (पृ. १४१-८३४)
सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८७०)

....

गजेन्द्र ठाकुर

तेलुगु कथा आ उड़िया, तेलुगु, गुजराती, राजपूरी आ कश्मीरी कविता
तेलुगु कथा आ उड़िया, तेलुगु, गुजराती, राजपूरी आ कश्मीरी कविता (मिथिलाक्षर)
मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)
मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)
मैथिली प्रतियोगिता
प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१
प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक-२)
प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-८) (सजिल्द)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (मिथिलाक्षर)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (कैथी)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (नेवारी)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)
दुखद पञ्जी- The Black Book
दुखद पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)
पर्ता उपर स्मरना क सूत्र (बीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह)
पर्ता उपर स्मरना क सूत्र (मिथिलाक्षर)
पर्ता उपर स्मरना क सूत्र (कैथी)
पर्ता उपर स्मरना क सूत्र (नेवारी)
पर्ता उपर स्मरना क सूत्र (IPA)
The_Science_of_Words
Rajdeo Mandal - Maithili Writer (Now with Supplement I & II)
नित नवल सुभाष चन्द्र यादव
नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)
जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी
गंगा ब्रिज (नाटक)
उल्कामुख (नाटक)
संकर्षण (नाटक)
धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पर छै (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह)
सहस्रजित् (पद्य संग्रह)
सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)
त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध)
सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)
सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)
सहस्रशीर्षा (उपन्यास)
गल्प-गुच्छ (बिहनि आ लघु कथा संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)
बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)
कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक
देवनागरी वर्सन मिथिलाक्षर वर्सन ब्रेल वर्सन
Learn Maithili Sign Language
Learn Mithilakshar Script
Learn Braille through Mithilakshar Script
Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script
Learn Kaithi
Learn Newari
Learn Calligraphic Newari (Ranjana)
Learn Urdu Script
Learn Tibetan Script
Learn Japanese Script for Haiku
Learn Brahmi
Learn Kharoshthi
मिथिला चित्र/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक यावनि गिरहा (कथा) आ मिथिलाक संगीत
जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)
अञ्जनमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)
बाढ़क बढ़ौना (बाल-पद्य संग्रह)
नानाशंसी (गीत-प्रबन्ध)
मवण्ड (नाटक)
बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर
रेड जाण्ड ब्लू (मैथिलीक २०१२ म प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन ड्रा- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)
कमलाक रेशमा
गनहनिस यमीलाक
वसी ब्रुडी कम ब्रेसकूल
बडद कनैछ दाउन न यौ
बाल गजल
फिनिश लाइन
अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर
विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ नवि रूमल याठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)
बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर
मसाइडी कन यनिवर्तनकारी नवका
शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनू	घन सर	थकरा नीक दिन	बलू हम नै ठीक छी ना!	की अहाँ ई चित्र सरकँ देखन छी?
टामू	बडीटा! कनियटा!	भाइ हम सर नहँ छी	रागात्मक नाजकुमारी	रागात्मक नाजकुमारी (बिनु शब्दक)
नूया	कच-कच कचाक	चूनू-मूनूक नहनाइ	नना ज बेलुनसँ उनाइन छल	अद्भुत रिवानाची अंक-शृंखला
हानू	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव रा ज	माट नाजा यागन- दुडुग कुकुग	वचिया ज अयन हँसी नै नाकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सूधि सकैत छी	छाट लाल- टुटुटुट जानी	कनु नीक, राग नीक	ई सरटा विलाडिक दाख अछि!

खाउ आम!	हमर टोलक बाट	जखन हुक्का छूटि गेल	माछी हम आउ टाटा!	अमाबीक झुलुम मशीन सए
टिंग टांग	घाउ-म्याउ-बाह	कुकुड़क एकटा दिन	हमरा नीक लगैए	नीमाक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसियो ने!	लाल बनसाती	स्पेस-प्रेमक नाट्यशाला	आउ पएर गानी	कतऽ अछि हमर अंक ग?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग चित्र-अनुवाद पोथिया बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाल्ली कान पनिवर्णकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गाँ ठीक छी ने!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMb (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सए)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ चिड़ै सएकँ देखने छी?)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गाइड पढ़ुन

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (गिनहुला)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(पाणिनीयम्, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ समय कवि चतुर चतुरानन विद्यापति कालीन कवि छथि। एहि समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू लेखक शब्दावली सभ शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। सभ आ पुरान शब्दावलीक स्थानसँ पाणिनीयम्, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे ध्यान आएत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ छाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुन्दर भावक अभिव्यक्ति भए सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(बोल्डु एडीशन- प्रथम पत्र- लोकिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(बोल्डु एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(बोल्डु एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(बोल्डु एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(बोल्डु एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(बोल्डु एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली नाटक)

(बोल्डु एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(बोल्डु एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(गिनहुला लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-ग

(मैथिली आ दोसर पूर्वनिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-ग])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली

बांग्ला

असमिया

ओड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_Maithili_02- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर

GS (Pre)

Topic 1- गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२५ www.videha.co.in

विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

देवनागरी	**मिथिलाक्षर**
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- संकलन-२	विदेह: सदेह ५ संकलन-२ तिरहुता
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेह:सदेह ११	विदेह: सदेह ११ तिरहुता
विदेह:सदेह १२	विदेह: सदेह १२ तिरहुता
विदेह:सदेह १३	विदेह: सदेह १३ तिरहुता
विदेह:सदेह १४	विदेह: सदेह १४ तिरहुता
विदेह:सदेह १५	विदेह: सदेह १५ तिरहुता
विदेह:सदेह १६	विदेह: सदेह १६ तिरहुता
विदेह:सदेह १७	विदेह: सदेह १७ तिरहुता
विदेह:सदेह १८	विदेह: सदेह १८ तिरहुता
विदेह:सदेह १९	विदेह: सदेह १९ तिरहुता

विदेह:सदेह २०	विदेह: सदेह २० तिरहुता
विदेह:सदेह २१	विदेह: सदेह २१ तिरहुता
विदेह:सदेह २२	विदेह: सदेह २२ तिरहुता
विदेह:सदेह २३	विदेह: सदेह २३ तिरहुता
विदेह:सदेह २४	विदेह: सदेह २४ तिरहुता
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता
विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
विदेह:सदेह २६ (डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अनुपम कुमार सिंह- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३० तिरहुता
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३५० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह ११	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

Videha-Sadeha

भाषापाक -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पुरान अंकक आर्काइव

Videha 1-50

Videha 51-100

Videha 101-149

Videha 150-250

Videha 251-Onwards

Audio Archive Folder

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

Videha Old Issues Folder

Videha Classical Sites Folder

यंजी (११000 मूल मिथिलाज्ञन पा७यप्र ११ टा यी.डी.७रु. स्का्र्लम)

दुषध्र यंजी

मादानद्द मा शाखा यञ्जी

मंतान- मनउ कथय-प्रावीन

प्रावीन यंजी (लमीनट क७ल)

उग्र८ यंजी

यनिवारु वीनयून

दनरुंगा नाज आदश उगड आदि

ह्याटी मा यूम्कक निर्दशिका

यप्र यंजी

मुलग्राम यंजी

मुलग्राम यनगना हिसाव यंजी

मूल यंजी-२

मूल यंजी-३

मूल यंजी-४

मूल यंजी-५

मूल यंजी-६

मूल यंजी-१

....

गजद्र ठाकुर आ आशीष अनविड्डान (सम्यादन)

मैथिलीक प्रागिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन उ प्रस्थान विंदु (गजलक आलावना-समालावना-समीडा)

....

गजद्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमान मा आ यञ्जीकान विद्यानद्द मा (सम्यादन)

जीनाम मैयिंग (४५0 ७.डी.सँ २00९ ७.डी.)--मिथिलाक यञ्जी प्रवन्न

जीनियालाजिकल मैयिंग (४५0 ७.डी.सँ २00९ ७.डी.)--मिथिलाक यञ्जी प्रवन्न -राग-२

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili-English Dictionary Vol.I

Maithili-English Dictionary Vol.II

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

Videha English Maithili Dictionary

English-Maithili Computer Dictionary

....

दिनश कुमान मिश्र (सौजन्य दिनश कुमान मिश्र)

वद्दिनी महानद्दा

वागमनी की सद्गति!

दुइ याटन क वीच मं.. (कासी नदी की कहानी)

न घाट न घन

वगावन यन मजवून मिथिला की कमला नदी

गुगही नदी डौन गकनीकी मा७-हुंक

The Kamla River and People On Collision Course

Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft

Refugees of the Kosi Embankments

....

पत्रिका-जर्नल-स्मारिका

मैथिली कविता-त्रैमासिक (सौजन्य- नचिकेता)
मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)
मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)
कौशिकी (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)
कौशिकी (१९७१-७२)
दलित चेतना (अखबार) (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)
दलित चेतना (अखबार)
Society Today (सौजन्य- सुमित आनन्द)
अंक ११
अंगिका (सौजन्य- गोपीनाथ)
जुलाई-सितम्बर २००८ (हरिमोहन झा विशेषांक) अक्टूबर २०१०सँ मार्च २०११ अक्टूबर २०११ सँ मार्च २०१२
मिथिलांगन (सौजन्य मुकेश दत्त)
अप्रैल-सितम्बर २०२२
मैलोरंग (सौजन्य- प्रकाश झा)
अंक२-३
धुआ-धजा (सौजन्य- धनमण्डल कार्की)
अंक ७ अंक १४ अंक १७ अंक १५ अंक १८ अंक १० जून २०१२ अंक २४ जून २०१२ 23February2016 २७ जुलाई २०१२ ०७ अगस्त २०१२ आसिन २०७३
स्मारिका (सौजन्य- रामस्मास कार्की अमन)
स्मारिका (२०१०)
आँगन (सौजन्य- रामस्मास कार्की अमन)
आँगन अंक-४ (२०१२)
गामघर (सौजन्य- रामस्मास कार्की "अमन")
गामघर-३०-०८-२०१८
गामघर-०४-१०-२०१८
गामघर-१५-०७-२०१९
गामघर-२७-०५-२०१९
आँजुर (सौजन्य- रामस्मास कार्की अमन)
आँजुर (अंक वर्ष ३५, अंक ३)
दुधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)
अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41
घर-बाहर (सौजन्य- चेतना समिति)
अप्रैल-जून २०११
रचना (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)
दिसम्बर "०७ मार्च "०६राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ
पल्लव (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)
पल्लव- १ गजल अंक
पूर्वोत्तर मैथिल (सौजन्य- प्रेमकान्त चौधरी)
अप्रैल-जून 2010 जुलाई-सितम्बर 2010 जनवरी सँ मार्च 2011 अप्रैल-जून २०११ जुलाई-सितम्बर २०११
लालदास रचनांजलि स्मारिका २०२२ (सौजन्य डॉ संजीव शर्मा)

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (डायन सार्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल चरण)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

तिजिटल-याथी

CIIL

अखियासल (नमानन्द मा नमध)

ड्आयल कनकनी- महेन्द्र

प्रवन्ध संग्रह- नमानाथ मा (वी.यी.एस.सी. सिलवस)

सुजन कन दीय यर्व- सं कदान कानन आ अननिन्द्र Oाकुन

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र माहन मा

Archive.Org (निजयदन मा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान नन्नाकन

मिथिला दर्शन

गीनगुंजि

OLE Nepal's e-Pustakalaya

याथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI - English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

याथी डॉट कॉम

I Love Mithila (याथी डाउनलाड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mithila

यान मैथिल चैनल- किनध चौधनी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सरसँ लाकप्रिय यू ट्यूब चैनल

मिथिला चैनल

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दनभंगा यू ट्यूब चैनल

....

JNU
मैथिली
मैथिली लेक्सिकन
....
Videha e-Learning YouTube Channel
....
विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)
....
मैथिलीक वर्तनी
१
मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम
भाषापाक
२
मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, ताबत धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पत्र लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पत्र लेने छथि से एकर एकटा आन शास्त्र-नीतिक दासन-उदाहरणमे करथि|
IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play.

४.३.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

वि दे ह विदेह Videha बिदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

"Videha" Ist Maithili Fortnightly ejournal Archive of Videos 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव मैथिली वीडियोक संकलन (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) वीडियो देखबाक लेल सम्बन्धित लिंककेँ क्लिक करू। For viewing videos click the respective links.
....

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ श्रमदान गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

....

गुवाहाटी विद्यापति पर्व २०१०

पहिल भाग दोसर भाग तेसर भाग चारिम भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ विद्यापति पर्व २०११

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46
....

चौबटिया (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

चौबटिया

सौराठ मिथिला

ललका पाग भाग-१

ललका पाग भाग-२
....

मिनाप-१

बुधियार छौड़ा आ नाउस

मिनाप-२
भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

....
NCERT BHASHA SANGAM
NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)
मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)
https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

ध्यान मैथिल चैनल- किसुन चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सरसँ लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल

मिथिला चैनल

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाल्ली कान यनिवर्गनिकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गँ ठीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ई चिउ सरकँ देखन छी?)

जानकी एफ.एम समाचार

ममता गावय गीत (सौजन्य- श्री केदारनाथ चौधरी)

गीत

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

I Love Mthila

online maithili journal

owner I Love Mthila

....

वृखश चन्द्र लाल, जनकपुरक सौजन्यसँ

झिझिया

ढोल-पिपही

चन्द्रकान्त झा (काश्यप कमल), रुटसिमरि, मधुबनीक सौजन्यसँ

रसनचौकी

....

विद्यापति गीत

पुलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीपा रानी)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

....

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीपा रानी)

बहुत मुश्किल

गजल-२

गजल-३

गजल-४

....

११म सगर राति दीप जरय (०२ अक्टूबर २०१०), ग्राम बनमा , जिला मधुबनी (संयोजक- जगदीश प्रसाद मंडल)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५ भाग-६

82 म सगर राति दीप जरय, स्थान- गजेन्द्र ठाकुर जीक निज आवास, ग्राम- मेंहथ, जिला- मधुबनी। दिनांक- 31 मई 2014 (शनि दिन), समय- संध्या छह बजेसँ (गोष्ठीक नाओं- कथा बौद्ध सिद्ध मेंहथया सगर राति दीप जरय। आयोजनक खर्च- ८२ म आयोजन, संयोजक- गजेन्द्र ठाकुर। विशेषता- बाल साहित्यपर केन्द्रित।

....

मैलारंग-१ (सौजन्य- प्रकाश झा)

नचिकेताक एक छल नाओ - भाग-1

नचिकेताक एक छल नाओ - भाग- 2

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-1

काठक लाक- महेन्द्र मलंगिया भाग-2
मेलानंग-२
कोसी सम्मेलन 12 सितम्बर 2008 भाग-१
कोसी सम्मेलन 12 सितम्बर 2008 भाग-२
....

मिथिलांगन

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

यू ट्यूब लिंक

विदेह मैथिली साहित्य/ नाट्य/ कविता/ पत्रिका उत्सव

विदेह समानान्तर साहित्य अकादमी सम्मान समारोह

जनकपुर- विद्यापति पर्व

जितेन्द्र झा, जनकपुर

नागेन्द्र

सामा चकेबा 1

सामा चकेबा 2

मैथिली कवि सम्मेलन (मिथिला कल्चरल एसोसिएशन, यू.के.)

नियमित्त उ 2009 (लन्दन)

सगर राति दीप जरय, कविलपुर, झन २०१०

भाग-१ भाग-२

कृष्ण कुमार कश्यपसँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लेल साक्षात्कार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७

प्रबोध सम्मान: नागेन्द्र झा

(झालकानकें वीवम ल'जाउ, अदहाक बाद नागमाहन मासँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार छनि।)

साहित्य अकादमी पुरस्कार: मन्त्रेश्वर झा

मिथिलाक खोज

1.गौरीशंकर

भाग-१ भाग-२

2. बाल्मीकि-वसेटी

वर्षकृत्य

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटाट सेन्टर राष्ट्रीय रावा महोत्सव

Samanvay 2-4 November 2012 IHC Indian Languages' Festival. Venue: India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi -- 110 003.

3rd November 2012 Maithili- Love's Own Language/ Brahminism in Maithili/ Pre-Jyotirishwar Non-Brahmin Vidyapati

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

भाग-११ भाग-१२

2nd November 2012 Ugna Re- By Shovna Narayan (Pre-Jyotirishwar Non Brahmin Vidyapati's Life Episode)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८

१७म सगन नागि दीय जन७ म मून्नाजीक यहिल विहनि कथा यासन प्रदर्शनी

मिथिलाक मु७न- (नसनवौकीक स्नानक संग)

हृदयनानायक्ष मा

भाग-१ भाग-२ भाग-३

नंजन चौधनी आ हनी मिश्र (गवला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

ललित नंग आ हनी मिश्र (गवला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३

दीआ रानी

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सुषमा

वटगमनी

नहू कुमान मिश्रक गजल या0

नहू कुमान मिश्र जीक कनिता या0

भाग-१ भाग-२

मैथिली- राजयूनी अकादमी, नई दिल्ली

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

मैथिली- राजयूनी अकादमी, नई दिल्ली समीनान 29 मार्च 2009

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

मैथिली- राजयूनी अकादमी, ब्रानका, नई दिल्ली समीनान

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६

....

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, ताबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पत्र लेल सेहो इग्नू पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पत्र लेल छथि से एकर एकटा आन भाषा-नीतिक शासन-उदाहरणमे करथि।

IGNOU इग्नू BMAF-001

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

४.४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Children Literature विदेह मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सभ पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली (मैथिली संस्कृत शिक्षा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

विदेह मैथिली शिशु उत्सव

कथा बौद्ध सिद्ध मरुथया (बाल साहित्य कल्पित) मंडथम रूल ८२ म सगन नाति दीय जनयम यति कथा सत्क संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मरुथया

नेना भुटकाकेँ नामि सुनबा लेल किछु लोककथा

रूला लाल दास (आकाशवाणी जैठ कोम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

नाक आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

जनक विजय (सम्पूर्ण)

जनक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

दिनामितक दर्शन

नावार (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

मैथिली लोककथा

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुनल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

बाल कविता

मुन्नाजी

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खनलुड़ी (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

देवांशु वत्स

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कॉमिक्स)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

बानरो (बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

वृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- वृषेश चन्द्र लाल)

ढालक (बाल कविता संग्रह)

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

फाल्गुनी घुरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उठ न सखी यन चिउँ ठी हम (भाग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)

खिस्सा अन्ताक्षरिका कन (पृ. १०७४-१०९७)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)

बाल कविता (पृ. १००४-१११३)

सचित्र बाल कविता (पृ. ७४१-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८७१)

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया देवी कुमारी

सुकन्या (पृ. ६३८-६७४)
कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)
रंगा बढ़क ढंग-ढमक
अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)
शिशु गीत खेल
कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)
नशामुक्ति हित गाबी गीत
निनियाँ
मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)
चुक्का (बाल कथा संग्रह)
प्रीति ठाकुर
गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)
विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)
रस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
७ बी सी डी- प्रकृति अध्ययन यात्री (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
सरु खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
बो म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
नढ़ सरु (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०६) छाता आ मेघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(११) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
यात्री १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
बाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
नीतू कुमारी
मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)
नीता झा (सौजन्य- नीता झा)
बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)
किरण चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)
पिसी संग हम
हमर बाल-बाड़ी
आर्या कॉकपिट मे
दीपा करमाकर- सही संतुलन मे
जंगल मे अहाँक स्वागत अछि
फूल छथि आकाश मे
रैया क मुस्कान क चानोलक
बीज संचयक
अर्चलित कनय "दिवानाबी"
शौचालयक खिस्सा
लाल बनसाती
गुल्लीक जादुई पटी
समीनाक विकठ राजन
विवाह मे जाइ छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर गाछ! नै हमर गाछ!

रश्मि प्रिया (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कौआ सकै छी, नदिया कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बच्ची आ बकरी

नीलिमा चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सबसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बूढ़ा नाचल नै हाऽऽ छै

गुलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा डर बाडी!

मधूलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

डांघाऽऽत रीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सब संग खेल-घाँट

पूनम मण्डल

सूर्य कालक खिस्सा

गजेन्द्र ठाकुर
बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर
बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)
Learn Mthilakshar Script
जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)
अञ्जनमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)
बाढ़क बढ़ौना (बाल-पद्य संग्रह)
रऽ जाउब छू *(मैथिलीक २०१२ म प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*
कमलाक दाना
तनहनिम धनीलाक
बसी छुट्टी कम इस्कूल

वउद कनेञ दाउन न यौ
वाल गजल
रिनिश लाञ्ञन
वाल साहित्य (अनूनाद- द्विराषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजब्ब ਹਕਨ
मसाञ्ञी कन यनिर्नानकानी नवका
सनु

घन सर

ञकटा नीक दिन

वलु हम गँ ਹीक छी न!

की अहाँ ञ विउ सरकँ दखन छी?

टाम

वञीटा! कनियटा!

ञगऽ हम सर नहि छी

रानमालक नाजकुमानी

रानमालक नाजकुमानी (विनु शब्दक)

नूया

कव-कव कवाक

वुनु-मुनुक नहनाञ्ञ

ननाञ वेलुनसँ उनाञ्ञन छल

अङ्गन रिवानावी अंक-शृंखला

हानु

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उमव राज

माट नाजा यागन-दुव्वउ कुकुउ

वचिया ञ अयन हँसी नै नाकि सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सुधि सकै छी

छोट लाल-टुहटुह तनी

कनु नीक, रागु नीक

ई सरटा विलातिक दाख अछि!

वारा आम!

हमन टालक बाट

जखन ईक२ स्कूल गेल

माछी हन आउ टाटा!

अमावीक झलुम मशीन सर

टिंग टांग

याउ-श्याऊ-नाह

कुकुरक एकटा दिन

हमना नीक लगैए

नीगाक नन-स्कूलम यहिल दिन

कनी हँसियौ न!

लाल वनसागी

रूग-प्राक नाग्यशाला

आउ यएन गानी

कगऽ अछि ई अंक ग?

विदह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग नीत-अलाउत □तिया कूक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई कन यनिर्वानकानी नवका)
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गँ ठीक छी न!)
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMb (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सरु)
https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ऊ चिड़ै सभकेँ देखने छी?)
गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह: सदेह ९ गिनहुगा

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)
English-Maithili Computer Dictionary
डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)
मैथिलीक रोजन सम्बन्धी शब्दावली
गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)
Maithili-English Dictionary
रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा)
मैथिली शब्द संचय
....
विदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (आयन सार्स)
Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

विज्ञान नम्नाकन

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लग लाउन्ड्री मैथिली

अनियन फाउन्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, गाव धनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पत्रक लेल सेहो इग्नू पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पत्र लेने छथि से एकर एकटा आन भाषा-नीतिंग दासन-उदाहरणमे करथि।

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play.

४.७.विदेह स्त्री कोना

विदेह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

powered by Google

Search Books

Search above & below within more than 350 old issues of Videha eJournal विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम् www.videha.co.in

https://books.google.com/

(पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below.

....

सखुआबाली (नारी विमर्श कथा) स्पेशियलीम स्ल ८३ म सगर राति दीप जरय मे पठित कथा सभक संकलन

सखुआबाली

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

इलारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अनूपी देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हेतु गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सूखल मन नमसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सूखल मन नमसल आँखि (कविता)

अंगना (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा आकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

बिभा रानी

बिभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

पन्ना झा (सौजन्य- नन्दू झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३१० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

नस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

७ बी सी डी- प्रकृति अजुन पाठी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सब खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बा म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नढ सब (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(११) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पाथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किनम चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

पिसी संग हम

हमर बाल-बाड़ी

आर्या कॉकपिट मे

दीया कनमाकन- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश मे

रैया क मुस्कान क चानैलक

बीज संचयक

अर्वाचिन कनय "रिवानाची"

शौचालयक खिस्सा

लाल बनसाती

गुल्लीक जादुई पटी

समीनाक निक० राजन

विवाह मे जाइ छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कौआ सकै छी, नहिया कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बत्ती आ बत्ती

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सबसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बूता नाचल नै होइ छै

गुलिका (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा उ चाही!

मधुलिका मिश्र (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

उंघाइत सीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सब संग हँट-घाँट

पूनम मण्डल

सुतै कालक खिस्सा

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद **नूया धीरू** आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)
हगा बढ़क देश-भ्रमण
डॉ शशिधर कुमर आ **सुप्रिया रवि कुमारी**
एकाङ्की (पृ. ६३८-६७४)
....
लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१. **कामिनी**क पांच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

३. **मुन्नी कामतक** एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

यस्युलटी गीता

एडिटर्स चाॅइस सीरीज-१

मीना झा

एडिटर्स चाॅइस सीरीज-२

जगदीश चन्द्र ठाकुर (३ टा बाल कविता अनुवाद २ **टा कविता रवी चट्टोपाध्यायन**)

एडिटर्स चाॅइस सीरीज-३

....

विद्यापति गीत

गुलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन **दीक्षा रानी**)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन **दीक्षा रानी**)

वरुन मुस्कानिव

गजल-२

गजल-३

गजल-४

ज्ञान मैथिल चैनल- **किसलय चौधरी** आ **संगीता आनन्द**- मैथिलीक सरसँ लोकप्रिय यु ट्युब चैनल

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play.

४.६.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search Books

powered by Google

Search above & below within more than 350 old issues of Videha eJournal विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम् www.videha.co.in

https://books.google.com/

सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and

poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

१

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

विदेह अपन ३६९ म (०१ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक अशोक पर आ ३७० म (१५ मई २०२३) अंकमे मैथिली लेखक नाम रमेश कार्यी 'रमण' पर विशेषांक निकालत। विशेषांक लेल रचनाकार/ कलाकर्मीक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सभ प्रकारक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) आमंत्रित अछि। अहाँ अपन रचना ३६९म अंकक विशेषांक लेल २४ अप्रैल २०२३ धरि आ ३७०म अंकक विशेषांक लेल ८ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

विदेह अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक चरम कालमे एकटा संस्थाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

विदेह अपन ३७१ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) पर निम्न लीखल बिंदुपर मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।
१) एम.एस.यू. केर गठनक प्रामाणिक इतिहास,
२) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव चेतना,
३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,
४) एम.एस.यू. द्वारा कएल विभिन्न आंदोलन आ ओकर लेखा-जोखा एवम् ओकर प्रभाव वा
५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३७१म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ (८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक निकालल अछि।
अही सन्दर्भमे आठो साहित्यकार पर "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत "मोनोग्राफ" आमंत्रित कयल जा रहल अछि।
"विदेह मोनोग्राफ" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:
(१) इच्छुक लेखक ऊपरमे कोनो एक रचनाकार पर अपन मोनोग्राफ लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि। मोनोग्राफ लिखबाक अवधि सामान्यतः एक मास रहत।
(२) विदेह आठो रचनाकारपर आठो लेखकक नाम मोनोग्राफ लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।
"विदेह मोनोग्राफ" लिखबाक नियम:
(१) मोनोग्राफ पूर्ण रूपेँ रचनाकारपर केन्द्रित होअय। साहित्य अकादमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ लिखल मोनोग्राफ/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कय रचनाकारक बहन्ने अपन-आत्म-प्रशंसा लिखैत छथि। "विदेह मोनोग्राफ" फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल सन रहत। फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल एहेन एकमात्र टूर्नामेंट अछि जाहि कोनो "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" सेरीमनी नै होइत छै आ तकर कारण छै जे "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेंटमे नै खेल रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइत छथि आ फोकस खिलाड़ी सँ दूर चलि जाइत अछि। फीफा मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाड़ीपर केन्द्रित रहैत अछि से ओकर टूर्नामेंट "ओपनिंग सेरीमनी" नै वरन् सोझ "ओपनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ ओकर समापन "क्लोजिंग सेरीमनी"सँ नै वरन् "फाइनल मैच आ ट्रॉफी"सँ खतम होइत अछि आ फोकस मात्र आ मात्र खिलाड़ी रहैत छथि। तहिना "विदेह मोनोग्राफ" मात्र आ मात्र ओ "सोत रचनाकार"पर केन्द्रित रहत आ कोनो संस्मरण आदि जोड़ि कऽ फोकस रचनाकारसँ अपनापर केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।
(२) मोनोग्राफ लेल "विदेह पेटार"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कयल जा सकैए।
(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनुदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।
(४) "विदेह मोनोग्राफ"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मोनोग्राफ निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम मोहन मिश्र द्वारा लिखल जायत। मैथिली पुत्र प्रदीप पर "विदेह मोनोग्राफ" लिखताह प्रेमशंकर झा "पवन"।
शेष ५ गोटेपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

घोषणा २: ओना तँ मैथिली पुत्र प्रदीप पर विदेह विशेषांक नै निकालल अछि, मुदा हुनकर अवदान कें देखैत प्रेमशंकर झा "पवन"क हुनका ऊपर "विदेह मोनोग्राफ" लिखबाक विचार आयल तँ ओकरा स्वीकार कयल गेल।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित होइ छै तकर संग विदेह ओहेन लेखक-साहित्यकारपर अपन ध्यान सेहो केन्द्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। ऐ नव विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-
१) हम एकटा कोनो लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी रहत। ऐ पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे हैत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करत।

२) ऐ शृंखलाम सुभाष चंद्र यादवपर केन्द्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव" एवं राजदेव मंडलपर केन्द्रित "Rajdeo Mandal-Maithili Writer" प्रकाशित भेल अछि। दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ केँ १११म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल।

३)आगाँक घोषणा लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखैत रही।

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटक कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हाउसवाइफम लोकप्रियताकेँ मात्र बढ़ल जा सकैत, जेना ई सड़ि जायत, अपमानसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा मूल सवाल अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दु पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़ने हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

ऐ उपन्यासमे राजनीति दुर-दुर धरि नै छै ओतऽ 'राजनीतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधन धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कएलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'रोटी' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक स्वभाविक शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधनक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक निन्दा ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घंटी अछि। ऐ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक साधन पकड़ैत छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तखन प्रति समानान्तर धारा सशक्त अछि। ई अपन वामपंथमे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हकक मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेन्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेन्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली वामपंथक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ बूझब जे तखन प्रतिकार समानान्तर धारा कोना कएलक, ओ तँ कल्पनातीत नै करैत, तँ तखन उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, बेगूसराय सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस वर्खसँ गीड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ऐ तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि।

तीनू पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगम पर कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दूषण पञ्जी- The Black Book

दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, गुरुई नदी और तकनीकी झाड़-फूँक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ चोराक' चोरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नाम उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ओ चान लेखकक निसर्ग कहै छथि। ऐ पऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चान लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई निसर्ग दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इंजीनियरिंगमे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंगमे एम.टेक. १९७०मे कने छथि, आ ओइ निसर्ग लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हानि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, तँ गँ कमलानन्द झा कँ बुझऽ मे आबि जाइ छन्हि जे ई निसर्ग कोना सिविल इंजीनियरक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझला होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर मृत्युसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकत, मुदा मूलधारक पुनस्थान आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नता भऽ गेल से हुन सिद्ध भेल। ओ लेखककँ दस बारह वर्ख पहिने सेहो गंगानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कविताम प्रकाशित भऽ अनायास अपन नवनाम दासनक सामिग्री चानि कऽ लइ छथि, ओहुन सन। आब ओ कमलानन्द झा क आश्रय गेलन्हि मुदा दुर्भाग्य! जेइ हिसाब ब्राह्मणवादकँ आगाँ बढ़बैल कमलानन्द झा वामपंथक साइन पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सजग अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जथावला लोक कम्युनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचबा लेल वामपंथक शरण, ओहुन लोक सभसँ कम्युनिज्मकँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:

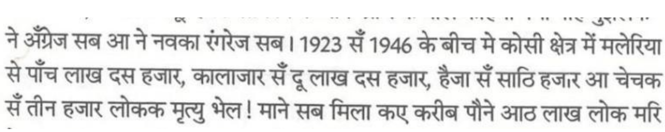
http://videha.co.in/pothi.htm

ऐ पऽ ओकरा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकँ पूछल गेलन्हि जे की ओ ओक्स बॉक्स हेनाम पाइनशील तनसँ दनीसँ आनि नहल छथि? तँ हुनकर उत्तर नहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइनशील तत कोना उत्पाद दनीसँ नै उतानन अछि। से विदेह पटानम हम सभ ओ गनहक निम्न नहिंगा ओकरा आन समृद्ध करैत नरुब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारा पाखनिक सभ माँछ नै सड़ैए, ओतुक्का मलाह छोट-छोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत नहल छथि, निकालैत नहता।

सिण्डीकेटक समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

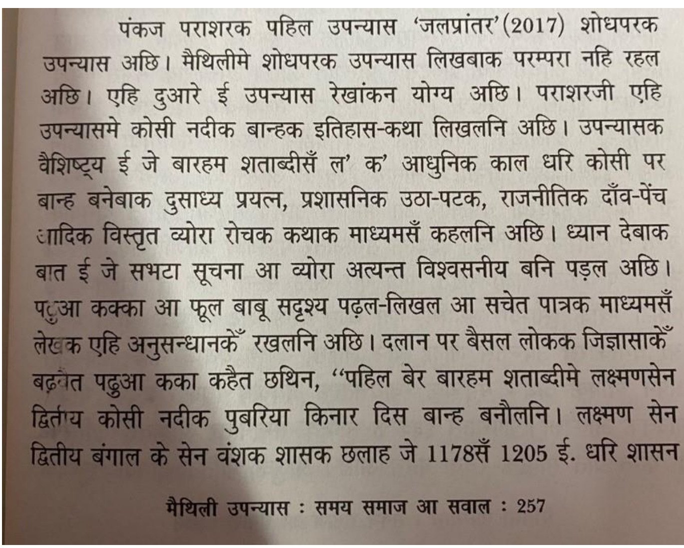
मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजा से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।

चान पंकज झा पराशर (**साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य**) [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०३)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया
से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक
सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'वीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'वीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध कोसी नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पी0 (पाकेट, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):



पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर' (2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चान यंकज मा यनाशन (**साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य**) [जलप्रांतन २०११ (यृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनश कुमान मिश्र (दुःख याटन क वीच मं... २००६): कासी क प्रवाह कि ख्यावहना की एक मलकहिनाजशाह नुगलक की खोज क सन् 1354 मं वंगाल स दिल्ली लौटन क समय मिलनी है। वनाया जाना है कि जव सुल्तान की खोजं कासी क किनान यहुँचीं ना दखा कि नदी क दुसन किनान यन हाजी शम्सुद्दीन इलियास की खोजं मुकावल क लिए नैयान खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थ जिन्होंन हाजीयुन नथा समस्तीयुन शहन वसाय था। हिनाज की खोजं शायद कुनसला क आस-यास किसी जगह यन कासी क किनान साव मं यड गईं। नदी की नक्सान उन्हं आग वढन स नाक नही थी। आखिनकान हैसला हुआ कि नदी क साथ-साथ उन्हन की डान वढा जाय औन जहाँ नदी यान कनन लायक हा जाय वहाँ यानी की थाह ली जाय। सुल्तान की खोजं प्रायः सौ कास ऊयन गईं औन जियानन क यास, जा कि उसी स्थान यन अवस्थित था जहाँ नदी यहाड़ां स मैदानां मं उनननी थी, नदी का यान

किया। नदी की धारा गा यहाँ यगली जनून थी यन प्रवाह ब्लूगना गज था कि याँच-याँच सौ मन क रानी यठन नदी मं गिनकां की गनह वह नह थ्ा। जहाँ नदी का यान कनना मुमकिन लगा। उसक दाना ंजान सुल्गान न हाथियां की कगान खडी कन दी ंजौन नीच वाली कगान मं नस्स लटकाय गय जिसस कि यदि कोई आदमी बहगा हुआ हा गा ब्लूस नस्सां की मदद स उस बचाया जा सक। शम्सुद्दीन न कगी सावा गी न था कि सुल्गान की फौजं कासी का यान कन लंगी ंजौन जब उस का ब्लूस बाग का यगा लगा। कि सुल्गान की फौजां न कासी का यान कनन मं कामयाबी या ली है गा वह गाग निकला।

वान यंकज सा यनाशन (**साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य**) [जलप्रांगन २०११ (यृ. १०१)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनेँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवत: कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंतत: तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनेँ शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनेँ छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र आही लिंकयन आन स्क्रीनशॉट अयडट कएल जायत।)

विदहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ फरवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... निरा नवल दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) यन।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

निरा नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्थानक अहंकार- जे हम ककरा चढ़ा सकै छिऐ आ ककरा उतारि सकै छिऐ- केर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अज्ञानक प्रमाण?

चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा कर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यिक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यिक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे
लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहि 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।"

आ उपन्यास आरम्भ।

गामवालीक मृत्यु आ तखन मसला, गामवालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिण्डीकेटक समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ जनवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... **लिंक नवल सुशील**

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

५

संजु दास जीक चित्रकलापर बहस चलि रहल अछि। किछु लोक एकरा अश्लील मानि रहल छथि तँ किछु लोक एकरा कलाक स्वतंत्र होएबाक पक्षधर मानै छथि। विदेह दुनू पक्षसँ टिप्पणी करैत आलेखक अपील कऽ रहल अछि, आलेख तथ्यपरक होएबाक चाही। व्यक्तिगत लगाव वा दुश्मनी वला आलेख नै हुअए। अपन आलेख editorial.staff.videha@gmail.com पर सद्यः पठाउ।

६

विदेहक "साहित्यिक प्रस्थावान विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक प्रस्थावान विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।
१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमीः-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सम्मागुट आ अकादमी कन काज कनवाक गनीका
(घ) सनकानी सम्माक छद्म विनाश्रम उयजल गाम्मालिक समानांगन सम्माक कार्ययद्धति
(ङ) अकादमी यूनस्कानम याऽ्ऽ रेड्कान: मिथक वा यथार्थ
२. ह्यक्तिगग साहित्य संस्थान आ यूनस्कानक नाजनीति
३. प्रकाशन जगगम यसनल ग्रस्थावान आ लखक
४. मैथिलीक छद्म लखक संगठन आ डाकन यदाधिकानी सवस्क आचनध
५. स्कूल-कॉलजक मैथिली विदागम यसनल साहित्यिक ग्रस्थावानक विविध नूय-
(क) याथक्रम
(ख) अध्ययन-अध्यायन
(ग) नियुक्ति
६. साहित्यिक यत्रकानिता, विद्यू, मंच-माला-माऽ्ऽक आ लाकार्यधक खल-गमाशा
७. लखक सवस्क जम्म-मनध शाड्डी कन चूनाव , वैलंतनवाद आ गकना याठ्ठक नाजनीति
८. दलित एवं लखिका सवस्क संग रद-राव आ डाकन शायधक विविध गनीका
९. काना आन विषय।

१

विदह ब्रॉडकास्ट लिस्ट

विदह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लल अयन whatsapp नम्बन रुमन whatsapp no +919560960721 यन यठाउ, डाकन प्रयाग मात्र विदह सम्बन्धी समाचान दवाक लल कएल जाएत।

-गजन्द्र ठाकुन, सम्यादक विदह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

....

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साऽ्ऽट:- आन लिंकक विषयम सूचना editorial.staff.videha@gmail.com कँ ऽ्ऽी मलसँ यठावी।

http://www.videha.co.in/ ("विदह" प्रथम मैथिली याक्षिक ऽ्ऽी यत्रिका)

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (ऽ्ऽटनन्नटयन मैथिली रासाक प्राचीनतम उयस्थिति/ मैथिलीक यहिल ब्लॉग- मैथिली रासा ब्लॉगक एग्रीगटन, ५ ज़ुलाऽ्ऽ २००४)

http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (ऽ्ऽटनन्नटयन मैथिली रासाक प्राचीनतम उयस्थिति/ मैथिलीक यहिल ब्लॉग- मैथिली रासा ब्लॉगक एग्रीगटन, ५ ज़ुलाऽ्ऽ २००४)

रालसनिक गाछ ज सन २००० सँ याहुसिटीजयन छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html, http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकयन आ अखना ५ ज़ुलाऽ्ऽ २००४ क यास http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html *(किछु दिन लल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकयन, स्राग wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to*

2016-http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA पल्लवमिथिला (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) २०१९, माघ संक्रान्ति- २००३ जनवरी मैथिलीक दोसर इंटरनेट पत्रिका अछि जे ई लिंक www.pallavmithila.mainpage.net पर छल मुदा आब ई उपलब्ध नै अछि। ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल अछि।

....

http://videha-aggregator.blogspot.com/ (मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://www.videha.com/ (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक सबसँ पुरान उपलब्ध उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर ९ जुलाई २००४ www.gajendrathakur.blogspot.com)

http://esamaad.blogspot.com/ (पूनम मंडल आ प्रियंका झाक पहिल मैथिली न्यूज पोर्टल, ६ अगस्त २००४ सँ)

http://prakarantar.blogspot.com/ (प्रकारान्तर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरवरी २००९)

http://vidyapati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००९)

http://www.vidyapati.org/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००९)

http://hellomithila.blogspot.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, नूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मई २००६)

http://pallav.blogsome.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, नूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ११ मई २००६)

http://hellomithilaa.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://www.hellomithila.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://shampadak.wordpress.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरवरी २००८)

http://www.esamaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरवरी २००८)

http://hellomithilaa.wordpress.com/

http://premarshi.wordpress.com/ (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

....

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)

....

https://vigyanprasar.gov.in/vigyan-ratnakar/ (विज्ञान रत्नाकर)

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

....

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पोडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रीजनल न्यूज डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली नेशनल न्यूज टेक्स्ट आउटलाइन-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWTEMkVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

SANSAD TV

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWTAkXiOHp7A

....

http://bramhanews.blogspot.com/ (मैथिली समाचार)

http://www.mithilakhabar.com/ (नेपालक मैथिली ई-पत्रिका)

http://mithilanews.com/

http://www.maithilinews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.hamargam.in/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithiladotcomblogspot.com/ (मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)

https://mppdainik.com/ (मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मैथिली दैनिक)

http://mithilasamad.blogspot.com/ (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

http://janakpurnews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.mithilalok.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithimedia.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://www.mithimedia.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://mithiladharohar.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://simanchal.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://maithilijindabaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

....

https://kirtinath.blogspot.com/ (कीर्तिनाथ झा ब्लॉग)

http://jct27novmaithili.blogspot.com/ (जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" क ब्लॉग)

http://brikhesh.blogspot.com/ (वृषेश चन्द्र लाल)

http://www.chetnasamiti.org/ (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

http://shiv-pustak-bhandar.blogspot.com/ (मैथिली याथी कीनू)

https://mishrarn.blogspot.com/ (रानसँ साँस ध्वनि)

https://rjanakpuri.blogspot.com/ (साहित्ययूनी)

http://bataahmaithil.in/

http://maithilpravahika.org/

http://ganeshbawra.blogspot.com/

http://maithilinews.com/

http://anandjhakavitakahani.blogspot.com/

http://chaaywala.blogspot.com/

http://maithilputr.blogspot.com/

http://maithilputramanu.blogspot.com/

http://mithilanchalpatrika.blogspot.com/

http://mithilakbat.blogspot.com/

http://maithilitimesonline.blogspot.com/

http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/

http://samadiya.blogspot.com/

http://jitumaithili.blogspot.com/

http://pratipadamaithili.blogspot.com/

http://bhatsimar.blogspot.com/

http://maithilirangmanch.blogspot.com/

http://www.mithilavaani.blogspot.com/

http://www.maithilisongsjagat.co.in/

http://mithilablog.com/

http://www.lahakchahak.com/

http://www.jaimithila.com/

http://www.dahejmuktmithila.org/

http://mithilavaani.blogspot.com/

http://www.chamundanagarpachahi.com/

http://kisunsankalplok.wordpress.com/

http://www.kisunsankalplok.co.nr/

http://maithilisongshub.blogspot.com/

http://www.rajnipallavi.com/

https://maithilinewsnetwork.com/

https://mithilamirror.com/

https://www.emithila.in/

http://csts.org.in/ (CSTS)

http://www.samaysaal.com/ (समय साल)

https://www.maithili.org.in/ (नागन बौधनी)

https://doorvaksata.org/ (मिशन दुर्वाक्षत)

http://mithilaksharshikshaabhiyan.in.net/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

http://mithilakshar.in/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

https://missionmithilakshar.blogspot.com/ (सिद्धिरस्तु- मिशन मिथिलाक्षर लिपि)

https://mithilani.in/ (मिथिलानी)

https://www.maithilmanch.in/ (मैथिल मंच)

http://madhubani.co.in/

http://www.premkumarmallik.com

http://apandalan.wordpress.com/

http://www.mithilaworld.tk/

http://www.mithilachowk.com/

http://maithilisongsgeet.blogspot.com/

http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/

http://amitmohanjha83.blogspot.com/

https://maithiliswasthyaparicharcha.blogspot.com/ (मैथिली स्वास्थ्य यनिवर्वी- नमाकन वीधनीक ब्लॉग)

http://maithili-darpan.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilatol.blogspot.com(मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilicinema.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithilifilms.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithili-drama.blogspot.com/ (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- वचन Online ब्लॉग)

http://mjink.co.cc/ (श्री जनकपुर धाम, गनाश्री मॉडल, मिथिला इन्फॉर्मेशन)

http://www.TeraiNepal.co.cc/ (गनाश्री नेपाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/ (मैथिलक आ मिथिलाक लोकप्रिय ब्लॉग)

https://www.mithiladainik.in/ (मिथिला दैनिक)

http://www.mithilaamanch.blogspot.com(मिथिला मंच)

http://maithilisong.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)

http://maithilifoundation.blogspot.com/ (मैथिली फाउन्डेशन)

http://maithilibhasha.blogspot.com/ (काश्यप कमलक ब्लॉग)

http://rkjteoth.blogspot.com/ (रूपेश कुमार झा "त्योंथ"क ब्लॉग)

http://paraati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://singarhaar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://vaachik.wordpress.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilainfo.blogspot.com(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithlasamachaar.blogspot.com (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://pilakhwar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://desilbayna.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilynjha.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://gaam-ghar.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithila-mihir.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://www.maithililekhaksangh.blogspot.com/ (मैथिली लेखक संघक जालस्थल)

http://www.maithili.co.uk/ (मिथिला कल्चरल एसोसिएशन, यू.के.)

http://minapjanakpur.org/ (मिनाप, जनकपुर)

http://www.airdarbhanga.org/ (आकाशवाणी दरभंगाक साइट)

http://mithilangan.org/ (मिथिलांगनक साइट)

http://www.desilbayana.com/ (देसिल बयना, हैदराबाद)

http://www.vmymin/ (विद्यापति मैथिल युवा मंच)

http://www.jaimithila.com/ (मिथिलाक समाचार, संस्कृति, विभूति, गीत-संगीत आ बहुत रास जानकारीक लेल)

http://sobhagyamithilatv.com/ (सौभाग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)

http://kashyap-mithila.blogspot.com/

http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/

http://dularuababumaithilifilmblogspot.com/

http://senuraklaajmaithilifilmblogspot.com/

http://maithlivideosongs.blogspot.com/

http://kalikantjhabuch.org/ (काली कांत झा "बूच")

http://saketanands.blogspot.com/ (साकेतानन्दजीक जालवृत्त)

http://gunjang.blogspot.com/ (गुंजनजीक जालवृत्त)

http://darihare.blogspot.com/ (श्याम दरिहरेक जालवृत्त)

http://deoshankarnavin.blogspot.com/ (देवशंकर नवीनक जालवृत्त)

http://www.udayanarayana.com/ (नचिकेताक साइट)

http://www.indianembassy.org.np/ (भारतीय दूतावास नेपाल)

http://www.purvottarmaithilsamaj.com/ (पूर्वोत्तर मैथिल समाज)

http://www.purvottarmaithil.blogspot.com/ (मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)

http://apanmithladhaam.blogspot.com/

http://maithilikavita.blogspot.com/

http://pankajjha23.blogspot.com/

http://maithili-haiku.blogspot.com/

http://manak-maithili.blogspot.com/

http://mithilauday.org/

http://dsal.uchicago.edu/lsi/ (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718 (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

http://music2.cooltoad.com/music/category.php?id=10576

http://maithiliacademy.org/

https://maithiliacademybihar.org/ (मैथिली अकादमी, पटना)

मैथिली राजधानी अकादमी, दिल्ली

http://artandculture.delhigovt.nic.in/wps/wcm/connect/doit_art/Art+Culture+and+Language/Home/Maithili-Bhojpuri+Academy/

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

http://www.biharlokmanch.org/ (मिथिला-मैथिली याथी [illegible]नलाइन कीनू)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php (Buy Mithila-Maithili books online)

http://mithila-haat.com/ (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

http://www.antikaprakashan.com/ (अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)

https://shashiprakashan.blogspot.com/ (शशि प्रकाशन-- मैथिली प्रकाशक)

https://pallavipublication.blogspot.com/ (पल्लवी प्रकाशन-- मैथिली प्रकाशक)

http://www.navarambh.com/ (नवारम्भ-- मैथिली प्रकाशक)

http://www.gorkhapatra.org.np/

http://www.sajha.org.np/

http://www.kantipuronline.com/

http://mithilahyd.org/

http://www.jyoticonsultant.com/ (मैथिलक नोकरी डॉट कॉम)

http://www.mithilamanthan.com/

http://www.brandbihar.com/

http://www.biharbrains.org/

http://maithilijokes.blogspot.com/

http://www.rdo91fmblogspot.com/

http://www.kfm961.com/ (ब्ल्ला मिथिला कार्यक्रम प्रथक शनिकँ नयाली समयानूसान नाि ९.३० वजसँ ११ वजधनि ञा नाजनीिक निषयनस्फ्यन कह्निा चौवटिया कार्यक्रम प्रथक सामकँ नाि १० सँ ११ वजधनि प्रसानध।)

http://www.radiokantipur.com/ (ब्ल्ला मिथिला कार्यक्रम प्रथक शनिकँ नयाली समयानूसान नाि ९.३० वजसँ ११ वजधनि ञा नाजनीिक निषयनस्फ्यन कह्निा चौवटिया कार्यक्रम प्रथक सामकँ नाि १० सँ ११ वजधनि प्रसानध।)

http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/ (नयाल1 टी.नी.-जम्य टी.नी. मौथिली कार्यक्रम सूवना)

http://janakifmorg.np/ (जानकी ञरू.ञम., मौथिली समावान नतिया)

http://www.mithilaradio.com/ (मौथिली नतिया)

http://www.youtube.com/user/Janakifm(जानकी ञरू.ञम., मौथिली समावान नतिया Youtube channel)

http://www.radiomithila.org/ (मौथिली नतिया)

http://www.appanmithila.org/ (नतिया ञप्यन मिथिला ९४.४ MHZ)

http://www.janakpurtoday.comnp/

http://madanpuraskar.org/

http://www.madheshuk.org/ (ञसाशिञशन ▯रू नयाली मध्सीज ळ्ञ्न यू.क.)

http://www.mithilaart.com/ (श्रीमाि प्रश्ग माक साळ्ट)

http://www.mithilavihar.com/

http://www.sugatisopan.com/

http://www.maithilsamaj.org.in/

http://www.maithilsamaj.com/

http://www.janakpurcity.com/

http://www.janakpur.com.np/

http://home.att.net/~maithils/

http://shyamprakashjha.com/

http://ramanathjha.com/

http://www.ramajha.com/

http://sudhakar.co.in/maithili

http://www.maithils.net/

http://www.getpredictiononline.com/

http://www.bihartimes.com/

http://www.bihar.ws/

http://www.patnadaily.com/

http://www.krraman.blogspot.com/

http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/

http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/

http://www.jankitoday.blogspot.com/

http://opjha.blogspot.com/

http://chitthajagat.in/ (देवनागरी लिपिक ब्लॉगक अग्रीगेटर)

http://mailorang.blogspot.com/ (मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)

http://mailorang.in/ (मैलोरंग)

http://vandanasgeet.blogspot.com/

http://www.darbhangaraj.blogspot.com/

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.ciilcorpora.net/maisam.htm

http://www.ildc.in/Maithili/Mindex.aspx (मैथिली अध्ययन आ शोध)

http://www.mithilaarts.com/

http://www.mithilapainting.org/

http://www.maithili.net/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.mithilaonline.com/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.onlinemithila.in/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.nnl.gov.np/

http://www.nepalacademy.org.np/

http://www.karnagoshthi.org/

http://surmasti.com/

http://www.maithiliworld.com/

http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html

http://www.tribhuvan-university.edu.np/

http://www.swastifoundation.com/ (स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)

http://foundationsaarcwriters.com/

http://www.opmcm.gov.np/

http://www.moe.gov.np/ (नेपाल सरकारक साइट)

http://lnmu.bih.nic.in/

http://gov.bih.nic.in/ (बिहार सरकारक साइट)

http://www.india.gov.in/

http://rajbhasha.nic.in/

http://www.hindinideshalaya.nic.in/

http://themithila.tripod.com/

http://www.mithilaconnect.com/

http://www.esabha.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilvivah.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kanyadan.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilbrahminvivahbandhan.org/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.mithilashaadi.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kalyanifoundation.org/

http://www.madhubani.com/

http://www.janakpur.org/

http://www.darbhanga-friends.com/

http://www.hindisansthan.org/

http://www.biharassociation.net/

http://www.nationallibrary.gov.in/ (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)

http://dpl.gov.in/ (दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)

http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/ (कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)

http://rrrlf.nic.in/ (राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)

http://www.sahitya-akademi.gov.in/(साहित्य अकादमीक साइट)

http://www.nbtindia.org.in/ (नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)

http://www.csuchico.edu/anth/mithila/

http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html

http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html

http://www.mithilalive.com/

http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai

http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai

http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm

http://www.rosettaproject.org/archive/mai

http://www.nepalgov.gov.np/

http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/

http://www.ciil.org/ (राष्ट्रीय भाषा संस्थानक साइट)

http://www.ciillibrary.org/

http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html

http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2012/tagore-literature-awards-bring-together-india-best-literary-talent (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2011/samsung-felicitates-the-winners-of-tagore-literature-awards-2010 (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/Tagore-Awards/index.html (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://jnanpith.net/ (राष्ट्रीय ज्ञानपीठक साइट)

http://bparishad.in/ (राष्ट्रीय भाषा परिषद, कोलकाताक साइट)

http://www.bharatiyabhashaparishad.com/ (राष्ट्रीय भाषा परिषद, कोलकाताक वागर्थ)

http://www.themanbookerprize.com/ (मैन-बूकर पुरस्कारक साइट)

http://www.commonwealthfoundation.com/ (कॉमनवेल्थ फाउन्डेशनक साइट)

http://www.crossword.in/ (वातायन-क्रॉसवर्डक साइट)

http://www.pulitzer.org/ (पुलित्जर पुरस्कारक साइट)

http://nobelprize.org/ (नोबल पुरस्कारक साइट)

http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm(गोवा कोंकणी अकादमीक साइट)

http://www.museindia.com/

http://www.asiawrites.org

http://indianorway.wordpress.com/

http://samanvayindianlanguagesfestival.org/

http://jaipurliteraturefestival.org/

http://dscprize.com/

http://www.hindu.com/lr/2011/04/03/stories/2011040350010100.htm

http://southasianlitfest.com/

http://www.varnamala.org/

http://india.poetryinternationalweb.org/

http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/

http://www.tarainews.com.np/

VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

http://sites.google.com/a/videha.com/videha/

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/
विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ १४९ म अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/
विदेह ई-पत्रिकाक १५०म आ आगाँक अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-iii/

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi

मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio

मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video

मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/

सगर राति दीप जरय

http://sagarraatideepjaray.blogspot.com/
http://sagarraatideepjaray.wordpress.com/

विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/
विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/
विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/
विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/
विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

Maithili Sign Language- पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग

https://maithili-sign-language.blogspot.com/

विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-brahmi.blogspot.com/

विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/

विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-kaithi.blogspot.com/

विदेह नेवारी लिपिमे- मैथिलीक नेवारी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-newari.blogspot.com/

विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग

https://maithili-ipa.blogspot.com/

विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-urdu.blogspot.com/

विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-tibetan.blogspot.com/

विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

विदेह गूगल-ग्रुप

https://groups.google.com/g/videha

गजेन्द्र ठाकुर ब्लॉग

http://gajendrathakur123.blogspot.com

मंगन खबास

http://mangan-khabas.blogspot.com/

Videha Radio विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

http://videha.listen2myradio.com/

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

मैथिली हाइकू

http://maithili-haiku.blogspot.com/

मानक मैथिली

http://manak-maithili.blogspot.com/

बिहनि कथा

http://bihanikatha.blogspot.com/

मैथिली कविता

http://maithili-kavita.blogspot.com/

मैथिली कथा

http://maithili-katha.blogspot.com/

मैथिली समालोचना

http://maithili-samalochna.blogspot.com/

Maithili Literature in English

http://madhubani-art.blogspot.com/

तिरहुता- कैथी स्क्रिप्ट/ मैथिल ब्राह्मणक एकटा आधुनिक इतिहास

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उत्तर-बिहारक मैथिल ब्राह्मण जाति)

https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf (यूनीकोड तिरहुता स्क्रिप्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९- विदेहक सहयोग)

https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट लेल आवेदन ९ मई २०११- विदेहक सहयोग)

http://www.tirhutalipi.4t.com/ (देवनागरी-तिरहुता फॉण्ट- बसन्त आचार्य)

http://www.anujha.co.cc/ (देवनागरी यूनीकोड आधारित तिरहुता फॉण्ट-मिथिला)

"विकीपीडिया"मे मैथिली

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंग्रेजी सँ संस्कृत विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढाऊ।

यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट, "विकीपीडिया"मे मैथिली आ आब मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो। अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"
गूगल ट्रान्सलेट
गूगल ट्रान्सलेटक लिंक
https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate
गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै तेँ लेल अगिला काज अहाँ करैत छी:
https://translate.google.com/about/contribute/
Crowdsource Maithili Community
Please fill the form
Next Step
Download the Crowdsource app from android play store and start contributing
or go to web on the following link for contributing:
https://crowdsource.google.com/about/
Crowdsource by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google's artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝:
𑒫𑒱𑒏𑒲𑒣𑒲𑒛𑒱𑒨𑒰 𑓐𑓑 𑒤𑒩𑒥𑒩𑒲 𑓒𑓐𑓐𑓘 𑒪𑒱𑓀𑒏
https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲)
https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰)
https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒹𑒪)
𑒑𑒴𑒑𑒪 𑒙𑓂𑒩𑒰𑓀𑒮𑒪𑒹𑒙 𑓒𑓓 𑒖𑒴𑒢 𑓒𑓐𑓑𑓙𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/
𑒑𑒴𑒑𑒪 𑒙𑓂𑒩𑒰𑓀𑒮𑒪𑒹𑒬𑒢 𑒙𑒴𑒪𑒮
"𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯" 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒰𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒪𑒑 𑒙𑓂𑒩𑒰𑓀𑒮𑒪𑒹𑒬𑒢 𑒙𑒴𑒪 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨𑒑𑒝 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢 𑒨𑒼𑒑𑒠𑒰𑒢 𑒑𑒴𑒑𑒪 𑒙𑓂𑒩𑒰𑓀𑒮𑒪𑒹𑒙 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒩𑒴.
𑒂 𑒏𑒋𑒪 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒢 𑒥𑒠𑒪𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒪 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒮 (𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹) "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯" 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒧𑒴𑒯 𑒢𑒻 𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑒴। 𑒃 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒴: 𑒑𑒴𑒑𑒪 𑒋𑒏𑒰𑒇𑓀𑒙𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒑 𑒃𑒢 𑒏𑒋𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh (link closed)

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 (𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰) 𑒤𑒾𑒢𑓂𑒙 𑒪𑒹𑒪 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑓓𑓐 𑒮𑒱𑒞𑒧𑓂𑒥𑒩 𑓒𑓐𑓐𑓙 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒮𑓀𑒬𑒼𑒡𑒱𑒞 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑓗 𑒧𑒃 𑓒𑓐𑓑𑓑 𑒏𑒹𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒁𑓀𑒬𑒳𑒧𑒢 𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒹𑒨 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒥𑒹𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒕𑒪। 𑓑𑓑 𑒖𑒴𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒁𑓀𑒬𑒳𑒧𑒢 𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒹𑒨 𑒋𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒳𑒣𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒂𑒥 𑒃 𑒤𑒾𑒢𑓂𑒙 𑒥𑒢𑒱 𑒏𑓄 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱।

𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰, 𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒤𑒾𑒢𑓂𑒙 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 Google's Noto Fonts project/ GitHub

𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰 𑒢𑒼𑒙𑒼 𑒤𑒾𑒢𑓂𑒙	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒍𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒙𑒲𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒍.𑒙𑒲.𑒋𑒤.	𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒙𑒲.𑒙𑒲.𑒋𑒤.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_malar_tirhuta

https://aksharamukha.appspot.com/converter (Script/ Website Convertor)

https://aksharamukha.appspot.com/keyboards [Input (IME]

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts (fonts- opensource)

https://www.cdac.in/ (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

अपन अलेक्सा मैथिली (शीघ्र....)

किछु मैथिली विकिपिडिया पेजक लिंक:

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv
इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

पारिवारिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदेह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदेहक फेसबुक पेज https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदेह सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदेह आर्काइव https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदेह मिथिला नक्शा https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदेह मिथिलाक खोज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुति प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

जनविज्ञान आखर https://mai.wikipedia.org/s/ion

मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz

मैथिली बाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex

मैथिली भक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1

....

किछु मैथिल याथी, ऑडियो-वीडियो, कलाकृति/ यू ट्यूब चैनल डाउनलोड साइट (डायन सासँ)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (नमानन्द मा नमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

डाआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- नमानाथ मा (वी.यी.एस.सी. सिलवस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन कन दीय यर्व- सं कदान कानन आ अननिरुद्ध Oकुन

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलन्द्र मारुन मा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदन मा)

https://archive.org/details/%40vijay_deo_jha?&sort=-publicdate&page=2

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

http://videha.co.in/archive.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm(MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथिला दर्शन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

यात्रीक लिंक

आइ.जी.एन.सी.ए.- ए.एस.आइ. https://ignca.gov.in/divisionss/asi-books/

https://ignca.gov.in/Asi_data/16612.pdf (History of Navya-Nyaya in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/42365.pdf (Studies in Jainism and Buddhism in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/63227.pdf (Mithila in the Age of Vidyapati)
https://ignca.gov.in/Asi_data/64994.pdf (Cultural Heritage of Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/72754.pdf (Mithila under the Karnatas)

ए.एस.आइ.अंग्रेजी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temples_of_mithila_english.pdf

ए.एस.आइ.हिन्दी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temple_of_mithila_hindi.pdf

मैथिली साहित्य संस्थान https://www.maithilisahityasansthan.org/resources

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

https://bloomlibrary.org/language:mai (ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली)

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbI (मैथिली □तिया वृक्ष)

https://www.youtube.com/channel/UCE1HEUJEzc-NUbMsHzklHLw(विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग चीत-अलाउत □तिया वृक्ष आ संगम मैथिली संकाग रात्रा- दूनू मैथिलीम यदिल वन)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाल्ली कान यनिवर्णनकानी नवका)
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गँ ठीक छी न!)
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMb (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)
https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ विउ सरकँ दखन छी?)

यथी डॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (पथी डाउनलोड लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ *(online maithili journal)*

https://maithili.com.np/ *(owner I Love Mithila)*

यान मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq3OLlck2tNw8BI4t8jjzQg (*यान मैथिल चैनल- किनध चौधनी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सरसँ लाकप्रिय यू ट्युब चैनल)*
https://www.youtube.com/MithilaChapter (मिथिला चैप्टर)

https://www.youtube.com/soumyajha (खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल)

जानकी एफ.एम समाचार

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचार)

Videha e-Learning

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMJ2pDWFAkXiOHp7A

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

....

http://www.youtube.com/user/ggajendra71(विदेह)

https://www.youtube.com/gunjanshree

http://www.youtube.com/user/Maithilinews
http://www.youtube.com/user/jitumaithil (जितेन्द्र झा, जनकपुर)
http://www.youtube.com/user/sobhagya8 (सौभाग्य मिथिला)
http://www.youtube.com/user/rajnipallavi (रजनी पल्लवी)
http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha (भास्कर झा)
http://www.youtube.com/user/mahakalijha
http://www.youtube.com/user/karia1885
http://www.youtube.com/user/omuniv
http://www.youtube.com/user/sumankumar137
http://www.youtube.com/user/gyansjha
http://www.youtube.com/user/bclalan
http://www.youtube.com/user/gareri1986
http://www.youtube.com/user/avinashjha84
http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1

http://www.youtube.com/user/mailorang
http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010

http://www.youtube.com/user/nirmaana

http://www.youtube.com/user/Janakifm1

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

http://www.youtube.com/user/gxcng

http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85

http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8

http://youtu.be/sJnxSe-ckmo

http://www.youtube.com/user/jitmohanjha

http://www.youtube.com/user/MiTJnPNN

http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4

http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7

http://www.youtube.com/user/bindassatyandra

http://www.youtube.com/user/rustymind1

http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna

http://www.youtube.com/user/rambabushah

http://www.youtube.com/user/mukeshjha84

http://www.youtube.com/user/Mauahi
www.youtube.com/user/MrBasantjha
http://www.youtube.com/user/themadan
http://www.youtube.com/user/sentukhu

http://www.youtube.com/user/yarowjha

http://www.youtube.com/user/mkoxp
http://www.youtube.com/user/luvvick21

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/MrRamkisor

http://www.youtube.com/user/pratyushsangita/
http://www.youtube.com/user/hellomithilaa

http://www.youtube.com/user/mariyoshj

http://www.youtube.com/user/dearshantanu/

www.youtube.com/user/RajuPrasadRajbanshi

www.youtube.com/user/premarshi
http://www.youtube.com/user/Dhipre (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

http://www.youtube.com/user/TheShubhaprabhat

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/mithilaconnect

http://www.youtube.com/user/NAYAKSAURABH80

http://www.youtube.com/user/Rabindra888

http://www.youtube.com/user/uday88mandal

http://www.youtube.com/user/nimesdeath

http://www.youtube.com/user/pawanks6102
http://www.youtube.com/user/sahayogee
http://www.youtube.com/user/sunilkumarpawan

http://www.youtube.com/user/videhuk

http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

http://blackbuddhas.com/

http://youtu.be/CPwpkn5YI1I

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓔.𑓑.𑒥𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒄-𑒪𑒩𑓂𑒢𑒱𑒓𑓂𑒑

[संघ लाक सवा आयाग/ विहान लाक सवा आयागक यनीञा लल मैथिली (अनिवार्य आ उैह्निक) आ आन उैह्निक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रजी माध्यम) हनु सामिग्री] [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नट-मैथिली लल सहा]

....

मैथिलीक वर्नानी

१

मैथिलीक वर्नानी- विदह मैथिली मानक राषा आ मैथिली राषा सम्यादन याथक्रम

राषायाक

२

मैथिलीक वर्नानीम यर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नयत्र दखला उपन एकन वर्नानी इग्नू BMAF001 सँ प्रनित बुझाइत अछि, स एकन एकना एक उखआहाम उनटा-यूनटा दिऐ, तखन धनि यर्याप्त अछि। यू.यी.एस.सी. क मैथिली (कम्यलसनी) यत्रन लल सहा इहो यर्याप्त अछि, स ज विद्यार्थी मैथिली (कम्यलसनी) यत्रन लन छथि स एकन एकटा आन राष्ट्र-नीतिंग दासन-उखआहाम कनथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

Maithili (Compulsory & Optional)

UPSC Maithili Optional Syllabus

BPSC Maithili Optional Syllabus

मैथिली प्रश्नयत्र- यू.यी.एस.सी. (उैह्निक)

मैथिली प्रश्नयत्र- यू.यी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नयत्र- वी.यी.एस.सी.(उैह्निक)

....

यू. यी. एस. सी. (मख्य) ऐच्छिक: मैथिली साहित्य विषयक टस्ट सीनीज

यू.यी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी यनीञा सम्यन्न रऽ गल अछि। ज यनीञार्थी एहि यनीञाम उत्तीर्ण कनताह आ जँ मख्य हुनकन ऐच्छिक विषय मैथिली साहित्य हताइ तँ ञा एहि टस्ट-सीनीजम सम्मिलित रऽ सकैत छथि। टस्ट सीनीजक प्रानम्भ प्रिलिम्सक निजल्टक तत्काल वाद हायत। टस्ट-सीनीजक उत्तन विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com यन यठा सकैत छथि, जँ मलसँ यठवाम

अभ्यर्थी व्हाट्सएप सँ वा हमर व्हाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे वा अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जकाँ ई सेहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- गजेन्द्र ठाकुर

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज/ प्रश्न-पत्र- १ आ २

Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर

....

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (पिनहुता)
मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)
मैथिली प्रतियोगिता
[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ परसमय कवि चतुर चतुर्भुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एहि समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू लेखक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे ध्यान आओत, संगहि शब्दकोष पढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुन्दर भावक अभिव्यक्ति भऽ सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लौकिक गाथामे समाज आ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(मिथिलाक्षर लिपिक उद्भव आ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पूर्वीय भाषाक बीचक सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ उड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-'ए', क्रम-५])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ राजस्थानी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली

बांग्ला

असमिया

उड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01

NTA_UGC_NET_Maithili_02

GS (Pre)

Topic 1

....
यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

General Studies

NCERT-Environment Class XI-XII

NCERT PDF I-XII

Sansad TV

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

………………

Other Optionals

IGNOU eGyankosh

………………

यटान (निसार्स सन्न)

………………

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमानाथ मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक राजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय- डॉ श्रीरामदत्त झा (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

दृष्ट-वरीक वस्तु कौशल- डॉ. श्रीरामदत्तझा

परिचय निचय- डॉ शैलेन्द्र मोहन झा

English Maithili Computer Dictionary (Complete)- Gajendra Thakur

Maithili English Dictionary- गोविंद झा

अणिमा सिंह -शिशु गीत खेल

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा 'रमण')- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

मैथिली सुबोध व्याकरण- रासा लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी-A Survey of Maithili Literature

नाधाकृष्ण वौधनी- मिथिलाक ऌतिहास

नाजश्वन मा- मिथिलाऊनक उद्दव ऊ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काऌव) (यू.यी.ऍस.सी. सिलवस)

दन्त-वनी (मूल)- श्री सुनन्द्र मा सुमन (यू.यी.ऍस.सी. सिलवस)

प्रवन्ध संग्रह- नमानाथ मा (वी.यी.ऍस.सी. सिलवस) CIIL Site

सुराष चन्द्र यादव-नाजकमल वौधनी: मानाग्राह

शिव कुमान मा 'टिल्लू' अंशु-समालावना

ऊॅ ववश्वन मा- निवन्ध-निकुञ्ज

ऊॅ. दवशंकन नवीन- आधुनिक साहित्यक यनिदृश्य

प्रमशंकन सिंह- मैथिली राषा साहित्य:वीसम शताब्दी (आलावना)

ऊॅ. नमानन्द मा 'नमण'

हिआऊल

अखियासल CIIL Site

दुर्गानन्द मण्डल-चक्र

हुन ऍहि मनलश्चु हाऌल सरकँ सरा यढ़:-

नामलावन ठाकुन- मैथिली लाककथा

कुमान यवन (सानान अँगिका)

यढ़0 (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

ऊायनीक खाली यन्ना

कदानन्ननाथ वौधनी

अवाना नहिरान	चमलीनानी	माहुन	कनान	अयना	हीना

ऊॅ. नमण मा

हिन्न-अहिन्न	मैथिली काव्यम अलङ्कान	अलङ्कान-राष्कन	मैथिली काव्यम ग्राणिष	अहिनावण-वव	यानिजात-मञ्जनी

यागन्द्र याठक 'वियागी'

विज्ञानक बतकही	विज्ञानक बतकही भाग-२	अकटा मिसिया (कथा संग्रह)
ननक विजय (सम्पूर्ण)	ननक विजय (संशोधित)	किछु गीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)
हमन गाम	दिनामितक दशम	नाबाट (अनुदित साइंस-फिक्शन नाटक)

अनुदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ नवि दूबेध याठकक आन भाषासँ अनुदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- चित्रकथा- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाज्जी कान यनिवर्निकानी नवका

शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपन:-

सुनु	घन सर?	एकटा नीक दिन	बलू हम नै ठीक छी ना!	की अहाँ ओ बिलाड़ सगरो देखने छी?
टाम्ब	बछीटा! कनियटा!	आइ हम सब नहि छी	रानगांल्लक नाजकुमारी	रानगांल्लक नाजकुमारी (चित्र पुस्तक)
नुया	कच-कच कचाक	मुन्नु-मुन्नुक नइनाइ	नना ज बेलुनसँ उनाइत छल	अद्भुत फिवानाची अंक-शृंखला
हानु	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उपहार ज	माट नाजा याल्न-दुइ कुक्कु	बचिया ज अयन हँसी नै नाकि सकौ छलि
अंग्रेजी	हम सुधि सकैं छी	छोट लाल-टुक्टुक उानी	कनु नीक, रागु नीक	ई सरटा चिलाउक दाख अछि!
बारा आम!	हमन टालक वाट	जखन ओकर स्कूल गेल	माछी रून आउ टाटा!	अमाचीक ढलुम मशीन सर?
टिंग टांग	याउ-श्याउ-वाह	कुकुरक एकटा दिन	हमना नीक लगैछ	नीनाक नव-स्कूलम यहिल दिन
कनी हँसियौ ना!	लाल बनसागी	रूप-प्रकाक नाट्यशाला	आउ यधन गानी	कत्s अछि ई अंक ग?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग गीत-अलाउत छविया बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wef6zr5CoF (मसाज्जी कान यनिवर्निकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (बलू हम नै ठीक छी ना!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b215wesxCp (घन सर?)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ बिलाड़ सगरो देखने छी?)

....

किछु मैथिली पोथी उाउनलाउ साइट (उायन सारि)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली (मैथिली संकल भाषा सहित- मैथिलीम यहिल वन)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal
https://youtu.be/TebuC-lrSs8
https://ncert.nic.in/bs-2021.php
Sahitya Akademi

प्रकाशन

तिजिटल-याथी

CIIL

अखियासल (नमानन्द मा नमण)

डाआयल कनकनी- मरुन्न

प्रबन्ध संग्रह- नमानाथ मा (बी.पी.एस.सी. सिलबस)

सृजन कन दीय पर्व- सं कदान कानन आ अनिरुद्ध ठाकुन

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मारुन मा

Archive.Org (विजयदन मा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान नत्नाकन

मिथिला दर्शन

पीनगुक्ति

OLE Nepal's e-Pustakalaya

याथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mthila

Studies in Jainism and Buddism in Mthila

Mthila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mthila

Mthila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI - English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन स्डाउकुशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली ▯तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

याथी डॉट कॉम

I Love Mthila (याथी डाउनलाड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mthila

ध्यान मैथिल चैनल- किशन चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल

मिथिला वैश्न

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल
जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

Maithili eBooks/ eJournals/ Videos can be downloaded from **Maithili eBOOKS/ eJournals/ Videos**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

४.८.मिथिला नग्न

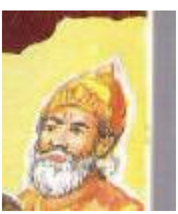
४.९.मिथिलाक खाज

४.८.मिथिला रत्न

वि दे ह विदेह Videha

বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला रत्नक एकटा छोट संग्रह। ई संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण। सारणी। पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू VIDEHA_346, VIDEHA_347, VIDEHA_365 आ मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पावनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत।



वैदिक जनक



वाल्मीकि



सीतापति राम

'वैदेह राजा' ऋग्वैदिक कालक
नमी साप्यक नामसँ छलाह, यज्ञ
करैत सदेह स्वर्ग
गेलाह, ऋग्वेदमे वर्णन अछि।
ओ इन्द्रक संग चलन्हि असुर
नमुचीक विनाश आ बादमे इन्द्र
हुनका बचओलन्हि। शतपथ
ब्राह्मणक विदेघमाथव आ
पुराणक निमि दुनू गोटेक
पुरोहित गौतम छथि से दुनू
एके छथि आ एतएसँ विदेह
राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरोहित
गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक
प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर
पुनःस्थापना भेल महाजनक-२
क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा।
निमि गौतमक आश्रमक
लग **जयन्त** आ मिथि -जिनका
मिथिला नामसँ सेहो जान कएल
जाइत छन्हि, **मिथिला** नगरक
निर्माण कएलन्हि। निमीक

जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग। �सीरध्वज जनक� सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ परम्परा देखबामे अबैत अछि। �कृति जनक� सीरध्वजक बादक 18म पुरुष भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवल्क्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए

गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।



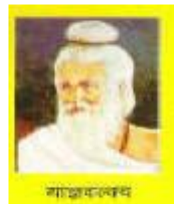
लव कुश



विदेघ माथव

शतपथ ब्राह्मणक विदेघ माथवक विदेह आगमन, आगिक सदानीरासँ आगाँ नहि बढ़बाक चर्चा।

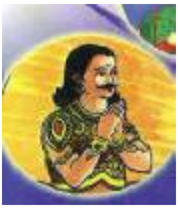
शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गोतम छथि से दुनू एक छथि आ एतएसँ विदेह नाग्यक प्रारम्भ।



वाजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक राजा कृति जनकक दरबारमे छलाह। हुनकर माताक वा पिताक नाम सम्भवतः वाजसनी छलन्हि। ओना हुनकर पिता देवरातकेँ मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य १. शुक्ल यजुर्वेद, २. शतपथ ब्राह्मण, ३.बृहदारण्यक

उपनिषद आ ४.याज्ञवल्क्य स्मृतिक द्रष्टा/लेखक छथि।



अंगराज कर्ण



वैशेषिक दर्शन कणाद

वैशेषिक दर्शन कणाद



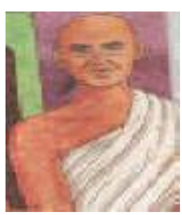
महावीर जैन 599-527

महावीर विदेहमे छह टा वर्षावास बितेलन्हि।



गौतम बुद्ध BC 563-483

ओना ओ महावीर विदेहमे छह टा वर्षावास बितेलन्हि मुदा बुद्ध



चाणक्य BC 350-283

धर्म आ विधिक उत्तम कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे



चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293

ओकाटा नै मूदा मिथिलाम वौद्ध धर्मक प्रचार यठागि वढला। वुद्ध वैशाली नगरीम आम्रपालीक उद्यानम लिच्छवीगणकँ सम्बोध देन छलाह।	वस्तु समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी होयवाक प्रमाण अछि।	चाणक्यक शिष्य
	अर्थशास्त्रम(१.६ विनयाधिकारिक प्रथमाधिकरणे षष्ठोऽध्यायः इन्द्रियजय अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक यानक सह्य वर्ण अछि।	
	तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा। दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यामभिमन्यमानः सबन्धुराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।	



आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२१) (३४/०६) महियापि: मंगरौनी माण्डर सँ यीताम्ब न सुत दामू सँ माण्ड्र सँ नीजी त्रिनयनभट्ट: ए सुत ***आर्यभट्ट:*** ए सुत उदयभट्ट: ए सुत विजयभट्ट ए सुत सुलोचनभट्ट (सुनयनभट्ट) ए सुत भट्ट ए सुत धर्मजटीमिश्र ए सुत धाराजटी मिश्र ए सुतावबन्धजटी मिश्र ए सुत



सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-सिद्धिनाथ मठ्ठ पढम पढिअउ, मठ्ठ पिवन्तौं विसरउ जमठ्ठउ। मिथिलामे अद्यावधि सिद्धिनाथ जकर पूर्वमे सिद्धिनाथ, गणेशजीक अंकुश आँजी, लिखल जाइत अछि। मिथिलामे ई धारणा जे माँछ पिलासँ स्मरण शक्ति तीक्ष्ण होइत अछि; ई सरहपादक मिथिलावासी होएबाक प्रमाण अछि।



आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ

त्रिपुनजटी मिश्र ७ सुत

विघ्नजटी मिश्र ७ सुत

अजयसिंह: ७ सुत

विजयसिंह: ७ सुत ७ सुत

आदित्यनाह: ७ सुत

महादेवनाह: ७ सुत दुर्योधन

सिंह: ७ सुत साठन

जयसिंहकीर्त्तिस्फुरत महात्म

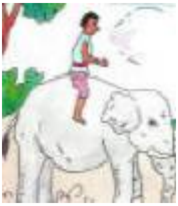
विद्या यागयोग

महामहोपाध्याय: ननसिंह:।।



म.म. गोनू झा 1050-1150

कनमह सानकनियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय



कृष्णानाम आ हाथी सुवनन

मिथिलाक यादव (गुआर) जाति लोकहस्ता कृष्णानाम अपन हाथी सुवननयन सवान।



संशोधन ब्राह्मण

धूर्त्तराज गोनू पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सानकनियाम कनमरु-नसम २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) *आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक मातृ-कायस्थम ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक विषञ्जान विष्णु-कायस्थम १४म पीढ़ी चलि रहल अछि)* लगभग १०७० ई.म सिद्ध होइत अछि। कारण जँ हम एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा करी सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग

१३७० ई. अवधि अछि

जे इतिहाससम्मत अछि।



छेछन महराज

मिथिलाक डोम जातिक लोकदेवता



दीना- भदरी

मिथिलाक मूसहर जातिक लोकदेवता



पाणि पँजियार



राजा सलहेस

मिथिलाक दुधवंशी (दुसाध) जातिक लोकदेवता



दुलरा दयाल

गोनू झाक गाम भरौराक राजकुमार, "बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल" लोककथाक



कालिदास

मलाह कथानायक। एकौठाम ओकरा दिनकर गहवर छन्हि।



बोधि कायस्थ

विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाम मृत्युकालम गंगा नदीक आयब आ बोधि-कायस्थकेँ अपनाम सम्बादक खिसा वर्णित अछि जे बादम विद्यापतिकेँ लऽ कऽ सेहो प्रचलित भेल।



राधाकृष्ण आ करताराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरानक प्रारम्भिक गवैया



महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. म स्थापना। 1147 ई. म मृत्यु।



मल्लदेव



महाराज हरिसिंहदेव



मंत्री गणेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन पीढ़ीपुरुष मानैत छथि।	मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त पहिल हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरिसिंहदेवक प्रतापसँ- आ ई हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना कएने रहथि- नन्देन्द शुन्यं शशि शाक वर्ष (१०१९	मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरिसिंहदेवक मंत्री। *सुगतिसोपानमे* मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन।

शाके)... मिथिलाक पञ्जिकार लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोड़ बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ताहि बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १७०० शाके माने १७७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय*नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।



मीनां साहेव

मिथिलाक मूस्लिम लाकनिक वीच प्रसिद्ध लाकगाथाक नायक।



अमन वावा

मिथिलाक मलाह जातिक लाकदेवता।



ानीवन वावा

मिथिलाक धावि जातिक ाकदेवता।



लालवन वावा

मिथिलाक चर्मकान जातिक लाकदेवता।



वंठा चमान



कानिख यजियान







लानिक

नाय नव्रयाल

अयाची मिश्र

म्बद्दम शताब्दीक रुवनाथ मिश्र

ाउ येघ नैयायिक छलाह आ

ादिया ककनासँ काना वस्तुक

ावना नहि कऽलहि, नाहि लल

ार हूनका अयाची मिश्र कहऽ

ागलहि।



शंकन मिश्र

"वालाऽहं जगदानन्द न म वाला

सनस्वती। अपूर्णे पंचम वर्षे

वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" क

वका। पञ्चदम शताब्दीम रुवनाथ

मिश्रक घनम मधुवनी जिलाक

सनिसव ग्रामम शंकन मिश्रक

जन्म रुल। शंकन मिश्र महानाज



यज्ञधन मिश्र

विद्यापतिक समकालीन जयदव

मिश्र, ज अपन अकाद्य तर्कक

कानण यज्ञधन मिश्रक नामसँ

जानल गेलाह।



मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (श्रागिनी श्रन पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदह चित्रकला सम्मानसँ पुनस्कृत यनकलाल मण्डल द्वाना)

रैनव सिंहक कनिष्ठ पुत्र नारा

पुनुथान्पमदवक आश्रित छलाह।

ओकर वर्धन नसार्थव ग्रंथम

स्टैग अछि। शंकर मिश्र

कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ

न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार

नहथि। शंकर मिश्र

ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर

प्रहसन २.कृष्ण विनाद नाटक

३.मनाहवयनाहव

नाटक४.नसार्थवग.दुर्गा-

टीका६.वादिविनाद१.वैशेषिक

सूत्र यन उपस्कार८.कुसुमांजलि

यन आमाद९.खण्डनखण्ड-खाद्य

टीका १०.छन्दागाह्निकाद्धार

११.श्राद्ध प्रदीप १२.प्रायश्चित

प्रदीय।

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग

१२७५-१३५०)सँ पूर्व

(कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थम

हिनक चर्च अछि), मैथिलीक

आदि कवि। संस्कृत आ

अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरसँ

हिन्नि। सम्भवतः विद्यी गामक

वाचन कास्यक श्री महेश

ठक्कुरक पुत्र। समानान्तर

यनम्पनाक विद्यापि नामम

विद्यापति पदावलीक

(ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-

अभिनय होइत

*अछि।*ज्योतिरीश्वर पूर्व

विद्यापति:- कर्णाटक

अभिनव गुप्त (दशम

शताब्दीक अन्त आ एगारहम

शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ

�ध्वीश्वर प्रत्याभिज्ञा-

विमर्षिणी� म विद्यापतिक

उल्लेख करैत छथि। श्रीधर

दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत कएने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

�जाल न मालति कर परगास

गाव न गावि मधुकर विलास।� आ

�मृदुला मुकुल कराय मकरन्द�

ज्योतिरीश्वर (१२१७-१३७०) **षष्ठः कल्लोल**- ॥अथ विद्यानन्द वर्णना॥ **अष्टमः**

कल्लोलः- ॥𑒁𑒟 𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢𑒰॥

𑒧 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒹𑒐।



𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒬𑒱𑒫 𑒮𑒱𑓀𑒯

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒩𑒹𑒬 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒨𑒠𑒰𑒞𑒰 𑒍𑒃𑒢𑒫𑒰𑒩 𑒫𑓀𑒬𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒬𑒱𑒫 𑒮𑒱𑓀𑒯।



𑒅𑒑𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫

𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒑𑒢𑒰 𑒔𑒰𑒏𑒩 𑒥𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।



𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 1350-1435 (𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒫𑒱 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒩𑒲𑒬𑓂𑒫𑒩-𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢, 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒂 𑒁𑒫𑒯𑒙𑓂𑒚𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒐𑒢)

𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 1350-1435

𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑓁 1350-1435 𑒥𑒱𑒮𑒃𑒫𑒰𑒩 𑒥𑒱𑒮𑓂𑒤𑒲-𑒏𑒰𑒬𑓂𑒨𑒣 (𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒬𑒱𑒫𑒮𑒱𑓀𑒯𑒏

देवनागरी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।

(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल , कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।)



𑒬𑓀𑒏𑒩𑒠𑒹𑒫 1449-1569

𑒣𑒰𑒩𑒱𑒖𑒰𑒞𑒯𑒩𑒝।

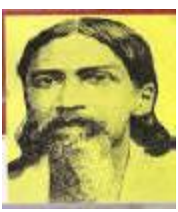


𑒖𑒑𑒖𑓂𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑓂𑒪 𑓑𑓖𑓑𑓓-𑓓𑓑

𑒯𑒩𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒢𑒰𑒙𑒏, 𑒏𑒳𑒘𑓂𑒖 𑒫𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒰𑒙𑒏।



𑒮𑒳𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒔𑒙𑒩𑓂𑒖𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 1890-1977



𑒁𑒩𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒒𑒼𑒭 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 1872-1950

𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠



𑒛𑒼. 𑒮𑒩 𑒂𑒬𑒳𑒞𑒼𑒭 𑒧𑒳𑒐𑒩𑓂𑒖𑒲 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 1864-1924



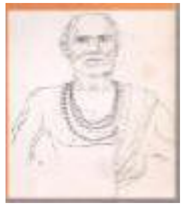
𑒮𑒩 𑒖𑒲. 𑒋. 𑒑𑓂𑒩𑒱𑒨𑒩𑓂𑒮𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 1851-1941



कवि चन्दा झा 1831-1907

मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रियर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता कयलन्हि।

कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ



महाकवि लालदास 1856-1921

हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि। हिनक अनेक रचना उपलब्ध होइत अछि, यथा�रमेश्वर चरित रामायण,� स्त्री शिक्षा,� �सावित्री-सत्यवान,� �चण्डी चरित,� �विनयावली,� �दुर्गा सप्तशती,� गन्धाक मिथिला माहात्म्य� आदि। मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा फारसीक ज्ञाता छलाह। कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कयल। रमेश्वर चरित रामायण हिनक सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि।



म. म. परमेश्वर झा 1856-1924

जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम (दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा निधन 1924 ई. मे। संस्कृत व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह तथा �वैयाकरण केशरी� क उपाधिसँ विभूषित छलाह। मैथिली साहित्यमे अपन कृति �मिथिलातत्व विमर्श� तथा �सीमन्तिनी आख्यायिका�क कारणे महत्वपूर्ण स्थान रखैत छथि। ई महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारमे राज-

विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।	नाम-कथाक उल्लेख सीताक महिमाक महत्व दए मिथिला तथा मैथिलीक प्रति हुनी अपन श्रद्धा तथा स्वकिवँ व्यक्त कएल अछि ।	पंडितक पदपर अनेका वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित छलाह ।
 **अवध बिहारी प्रसाद शाही** 1859-1929	 **सर्वेन्द्र स्वतंत्र वत्स झा** 1860-1921 मधुबनी जिलांतर्गत लवाणी(नवानी) ग्रामम हिनकन जन्म स्लहि। हिनक कृति सभ अछि। 1. वृन्दावन-माधव चम्पू काव्य, 2.न्यायवार्त्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढार्थ तत्त्वलोक(श्री मद्भगवद्गीता व्याख्यारूप मधुसूदनी टीका पर) 4.व्याप्तिपंचक टीका 5.अवच्छेदकत्व निरुक्ति विवरण 6.सम्प्रदान	 **म. म. शशिनाथ झा** 1860-1930

टिप्पणी 7.सत्प्रतिपक्ष

टिप्पणी 8.व्याप्त्यनुगम विवेचन 9.सिद्धान्त लक्षण विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ तत्त्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पणी 12.खण्डन-खण्ड खाद्य टिप्पणी 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पणी 14.कुसुमाञ्जलि प्रकाश टिप्पणी।



मुंशी रघुनन्दन दास 1860-1945

ग्राम-सखवाड़, जिला-मधुबनी। "मिथिला नाटक" आ "दूतांगद व्यायोग"क लेखक।



मधुसूदन ओझा 1866-1939



म.म. मुरलीधर झा १८६८-१९२९

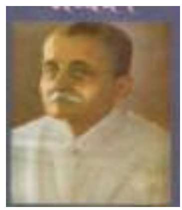
जन्म- ग्राम- रुनाम (जिला मधुबनी), अपन मातृक श्यामसीधाम बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे ई "मिथिलामोद" नामक मासिक मैथिली पत्रिकाक

प्रकाशन शुरू कएलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद), मैथिली व्याकरण, "अर्जुन तपस्या" (उपन्यास) प्रकाशित।



मुकुन्द झा "बक्शी" 1869-1936

जन्म हरिपुर बक्शी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हिनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि। हिनक लिखल संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछि। मैथिलीमे हिनक महत्वपूर्ण कृति अछि �मिथिला भाषामय इतिहास�। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक स्फुट



डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे। ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभिन्न दुरूह ग्रंथक अंग्रेजीमे अनुवाद कए पाश्चात्य



जनार्दन झा जनसीदन 1872-1951

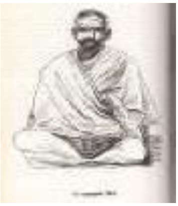
निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल। मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिल हिनक प्रकाशित भेल। एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि।

संस्थानक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि। ई गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमे 1917 सँ 1923 धरि प्रिंसिपल छलाह तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह। मैथिलीमे हिनक सम्पादित चन्दा झाक �महेशवाणी संग्रह� तथा �गङ्गानाथ-विश्वनाथ पदावली� प्रकाशित अछि। मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित हिनक �वेदान्त दीपक� (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि। एहिसँ भिन्न हिनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि।







रासबिहारी लाल दास 1872-1940 "मिथिला दर्पण" क लेखक।	रामचन्द्र मिश्र "चन्द्र" 1873-1937 मैथिल प्रभा	महावैयाकरणबाबा यं यं दीनबन्धु झा 1878-1955
		
रघुनाथ मिश्र 1879-1933 मैथिली शब्दकोष "मिथिला शब्द प्रकाश"क लेखक।	कीर्त्यानन्द सिंह	टंकनाथ चौधरी 1884-1928
		

हरिनन्दन झा 1886-1970

कपिलेश्वर मिश्र 1887-1987

गाम सरसपुर, थाना- उजियारपुर, जिला समस्तीपुर। "सीतायन" पुस्तक संतानसँ प्रकाशित।

बालकृष्ण मिश्र 1888-1948



बलदेव मिश्र 1890-1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक बनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं निधन सहरसा, 1975मे भेलन्हि। प्रारम्भमे पं. छेदीलाल चौधरीसँ ज्योतिष पढि ई काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीक शिष्य भेलाह। बहुत वर्ष धरि



आचार्य रामलोचन शरण 1889-1971

सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाञ्चलमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ कएलन्हि। प्रकाशन संस्था "पुस्तक



सीताराम झा 1891-1975

जन्म चौगामा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई.मे भेलन्हि। संस्कृत ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक �अम्ब चरित� (महाकाव्य), �सूक्ति

सनस्वती स्वन (वानाणसी) म हस्तलिखित विरागम कार्य कएल । यश्चात् यटनाक काशीप्रसाद जयसवाल निसर्च संस्थानम अनेक प्राचीन गिव्रती हस्तलिपिकँ दवनानीम लियन्तनित कएल। �मिथिलामाद� प्रकाशन ओवं म.म. मुनलीधन साक प्रासाहनसँ श्रीगिश्रीजी १९१० ई.सँ�माद�म लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित नचना अछि��नामायण शिआ�, �वद्या सा�, �संस्कृति�, �नाना शिआ�, �गद्य-सद्य विवक�, �समाज� आदि । यश्चितजी याचन् धनि यटना नहलाह वनावनि �मिहिन�म लिखैत नहलाह ।

स्थान", लहनियासनाय, यटनाक संस्थायक।

ुधा,� लाक लऊध,� �यद्धआचनित,� �यूर्नायन यनहान,� उननटा वसात,� �अलंकान दर्यध�, �स्कुम्य र्धन�, �काव्य षट-नस�, �मैथिली काव्यायनन�, आदि न्छ उयलब्ध अछि । हिनक ीताक मैथिली अनूनाद सहा उयलब्ध अछि । मिथिला मादक सम्यादन १९२० ई.सँ १९२१ ई. धनि ई कएल ।



गानावनग्न मा 1892-1928



वद्रीनाथ मा 1893-1973

जन्म मधुवनी जिलाक सनिसव ग्रामम १८९३ ई. म स्लहि गथा १९१४ ई. म ई काशी लाए कओलिह्र । वहुग दिन धनि ई मुजफ्फरपुरक धर्म समाज संस्कृग कॉलजम साहित्यक अध्यापक छलाह । मैथिलीक विख्याग कवि लाकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मारुनजी आदि हिनक शिष्य छथिह्र । संस्कृग साहित्यम हिनक अनक नचना अछि । जाहिम नाधा यनिणय� (महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि । मैथिलीम



ीननाथ नाय 1893-
964

हिनक �एकावली यनिश्चय� (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलक। काव्य अलंकारक दृष्टान्त एकवाक हेतु �एकावली यनिश्चय� पर्याप्त अछि ।



उमेश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुवनी जिलाक गजहरा ग्रामम 1895 ई. म हल छलहि । ई एकहत्तरि वर्षक आयुम १९६७ ई. म प्रयागम स्वर्गवासी हलाह । ई अयन स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ



वावू धनुषधारी दास 1895-1965

मैथिलीम विहानी कविक अनुवाद प्रकाशित।



अमननाथ झा 1897-1955

निसव यारीटाल ग्रामम १८९७ ई. म हल । हिनक निधन यटनाम जखन ई विहान लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष छलाह, १९५५ म हलहि । ई इलाहावाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि

भाक सान्निध्य विद्यार्जन कएला १९२३ सँ १९७९ धरि मिश्रजी इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक प्राध्यापक छलाह। दरभंगा�मिथिला शोध संस्थान�क निदेशक पदपर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६७ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह। म. म. मुरलीधर भासँ प्रभावित भए �मिथिलामोद�मे ल्ली लिखब प्रारम्भ कएलन्हि तथा अपन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकेँ समृद्ध कएलन्हि। मैथिलीमे हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि��कमला� (शेक्सपीयरक �टेम्पेस्ट�क भावानुवाद), �नलोपाख्यान�, �मैथिली-संस्कृति� तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक

कुलपति नहि पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलपतिक पदकेँ सुशोभित कएलन्हि। ल्ली अंगरेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, तहिना संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बङ्ला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह। मैथिलीमे हिनक रचना सम्पादित �हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली� तथा �गोविन्ददासक पुष्पानरञ्जन� महत्त्वपूर्ण अछि एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि।

सम्यादन, निश्चायणिक कीर्गिलगा, कीर्गियगाका, गोनउ विजय आदिक अनुवाद-सम्यादन सेहो कएला।



रालालाल दास 1897-1977

ह्निक जन्म दनरंगा जिलाक कसनौन म रलह्नि। साह्निय सर्जनाक अगिनिक्त अयन संगठन क्षमगा गथा मैथिली साह्नियक सर्वांगमूखी निकासक हेगु सगग गयन नहबाक कानणेँ रला वावू मैथिली संसानक एक स्मभक नूयम नहलाह। ह्निक



कुमान गंगानन्द सिंह 1898-1971

जन्म�वनैली नाजयनिनानम 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगन यूर्णिआ 17-1-1970। मूगयूर्न शिक्षामंत्री, विहान एवं कुलयगि, कामश्वन सिंह दनरंगा संस्कृग निश्वनिद्यालय। नचना�अगिलही (अयूर्ण उयन्यास) गथा अनक कथा एवं एकांकी। यूगक अनूनुय सामाजिक कुनीगि आदिकेँ आधान



व्रजमोहन ठाकुन 1899-1977

निधन 1977 ई. मे भेल । मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे ओ अपन जीवन समर्पित कएने छलाह। पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ स्थान देआ गेलि हेतु ओ बीड़ा उठओलन्हि । विद्यालय स्तरक अनेक पोथीक निर्माण कएल । मैथिली साहित्य परिषदक ओ संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह । 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह । हिनक मन्त्रित्वकालमे �भारती� नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल । एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कृष्णकान्त कुमरजीक संग संयुक्त सम्पादनमे �मिथिला� नामक पत्र चलाओल । ओ नवीन एवं प्रगतिशील विचारक

बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा साहित्यक रचना ।

लाक छलाह । ननव लखककँ प्रात्साहित कनव, लैलीम एकनूयता आनव, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य संतानक युर्ष्टि कनव हिनक कर्त्तव्य वनि गेल छल । हिनक लिखल �मैथिली व्याकनध� तथा हिनकहि द्वाना सम्यादित �गद्यकुसुमांजलि वहुत दिन धनि विद्यालयम यढाउल जाइत नहल । हिनक लिखल अनक निवन्ध समालावना, कविता, संस्मनध, जीवनी-साहित्य मैथिलीक यत्र-यत्रिकाम छितिआएल अछि ।

		
गुनजश्नन प्रसाद 1902-	जयनानायक्ष मा 'निनीग' 1902-1991	नन्ध्व नाथ दास निद्यालंकान १९०४-१९९३
दनरंगा जिलाक वनौली गाम, निनास नायसाल्व याखनि लह्नियासनाया सनस्नी स्कूल लह्नियासनायम १९३०-१९६४ ई. धनि अध्यायना मैथिलीम "वाल नामायक्ष� प्रकाशिना		
		

सुधाकर झा "शास्त्री" 1904-1974	दामोदर लाल दास विशारद 1904-1981	बबुआजी झा 'अज्ञात' 1904-1996 २००१- बबुआजी झा �अज्ञात� (प्रतिज्ञा पाण्डव, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।
 श्रीवल्लभ झा व्हाटी 1905-1940	 रमानाथ झा 1906-1971 जन्म दरभंगा जिलाक उजान (धर्मपुर) ग्राममे 1906 ई. मे एवं हिनक निधन दरभंगामे १९७१ ई. मे भेलन्हि। 1930 ई. मे अङ्गरेजीमे एम. ए. कएलाक बाद ई काफी वर्ष	 काशीकान्त मिश्र "मधुप" 1906-1987 १९७०- काशीकान्त मिश्र �मधुप� (राधा विरह, महाकाव्य) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रसिद्ध कवि

धनि मधेपुर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद दरभङ्गा-राज-लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्ष रूपमे 1936 सँ अन्तिम समय धरि रहलाह । 1952 सँ 62 चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्रा. भा अङ्गरेजीक प्राध्यापक रूपेँ काजka पश्चात् ओही कॉलेजमे मैथिली विभागाध्यक्ष बनाओल गेलाह । 1965 मे रमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह जाहि पद पर ओ जीवनक अन्त समय तक रहलाह ।

हिनक रचनाक उद्देश्य बहुत व्यापक छल । हिनक अनुसंधानात्मक निबंधक दू गोट संग्रह �निबन्धमाला� तथा �प्रबंध संग्रह� प्रकाशित अछि ।

ओ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता �संकल्प� कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । �घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य ओ शिल्प-संवेदना�दुहू स्तर पर जनम लोकप्रियता भेटलनि।

संकलित सम्पादित पुस्तक

सभमे �मैथिली पद्य-संग्रह�,

�मैथिली गद्य-संग्रह�,

�प्राचीन गीत�, �कथा

काव्य�, �नवीन गीत�,

�कविता कुसुम�, �कथा

संग्रह� आदि अछि

। �कथासरित्सागर�क आधार

पर प्राञ्जल गद्य शैलीमे

लिखल �उदयन-

कथा� तथा �वनवृत्ति-कथा� बड़

ख्याति पओलक ।

व्याकरणक �मिथिला भाषा

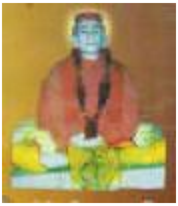
प्रकाश�,

�अलङ्कारप्रवेश� आदि अनेक

ग्रन्थ प्रकाशित अछि । �मैथिली

साहित्य पत्र� त्रैमासिक पत्रिकाक

संपादक।



लक्ष्मीनाथ गोसाञि

1793-1872



मेँही दास

धरहरा कोठी_बनमनखी_असली नाम_रामानुग्रहलाल दास_आश्रम_मायागल्ला, कुप्पाघाट, भागलपुर



बूबन भगत, संत 1928-1991



हरिनाम दास

मिथिलाक प्रसिद्ध भागवत वाचक।



स्नेहलता 1909-1993

गाम- उजान, समस्तीपुर। पूर्ण नाम- कपिलदेव ठाकुर "स्नेहलता"। रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक संत। हिनकर रचित वैदेही



स्वतंत्रता सेनानी स्व. रामफल मण्डल

विवाह संकीर्तन, विनय
पदावली, शिवनाथी, चागवनी, मूला-
संकीर्तन, सीतावतानन्द प्रबन्धकाव्य
आ सहस्रनाम- दोहावली-कवित्त
आदि मिथिलाक महिला वर्ग आ
संकीर्तनकार लोकनिक कंठस्थ
पनिह्याय अछि आ लोकमंगलक
अनुष्ठानमे व्यापक नूयँ व्यवहार
अछि। हिनक "वैदेही
विवाह" मिथिलाक कीर्तनिया नाट्य
परम्पराकेँ लोकवृत्तिक अनुकूल
वर्णन अछि।



सुहृद झा "शास्त्री"
1930-1998



काशीनाथ झा "किरण"
1906-1988



यामानन्द झा 1906-
1949

जनकयून, नेयाल, यूनानस्थाक जलक दूर्लभ स्थाट। नेयाल यज्ञा प्रतिष्ठानक मानद सदस्यता- स्व. सूदन मा शास्त्री।

जन्म स्थान-धर्मयून,लाहना गात, दरभंगा विहान। मैथिली भाषा आंदोलनम महत्वयूर्ण भूमिका। �यनाशन� महाकाव्य लेल साहित्य अकादमी आ �कथा किनध� लेल वैदेही यूनस्कानसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: चंद्रग्रहण (उयन्यास), नीन-प्रसून (वालकथा), जय जन्मभूमि (एकांकी), निजता निष्ठायति (नाटक), कथा-किनध (कथा-संग्रह), किनध-कविनावली, कतक दिनक वाद (कविता-संग्रह), यनाशन (महाकाव्य) आ किनध-निवंधावली (निवंध-संग्रह) आदि। १९८९- काशीनाथ मा �किनध� (यनाशन, महाकाव्य)यन मैथिली म

	साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।	
 नमाकांत झा, नयाल 1907-1971	 ईशनाथ झा 1907-1965 वहुमुखी प्रतिराक कवि । प्राचीन आ नवीन पद्धतिक काव्य-नवनाक विलक्षण संयोग हिनकन कवितामे देखैत अछि । दलित वर्ग, शोषणक समस्या, स्वदेश प्रेमक यथार्थवादी नवनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्पनाक अनेक विशिष्ट कविता मैथिलीमे लिखलनि ।	 गुवनश्वन सिंह 'गुवन' 1907-1944 मयन खाढीक वहुमुखी तिराक कवि। प्राचीन आ वीन नीतिक कविताक नवना चुन संख्यामे कएलनि �गुवन रागनी� कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली उज आ नव चेतनाक शंख फूकलनि।



हरिमोहन झा 1908-1984

हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे �कन्यादान� (उपन्यास), १९४३ मे "द्विरागमन�(उपन्यास), १९४७ मे �प्रणम्य देवता� (कथा-संग्रह), १९४९ मे �रंगशाला�(कथा-संग्रह), १९६० मे �चर्चरी�(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे �खट्टर ककाक तरंग� (व्यंग्य) अछि। मृत्योपरांत १९८७मे (जीवन यात्रा, आत्मकथा)पर मैथिलीक



कालीकान्त झा 1909-

मूल गाम

ठेंगा (हरिपुर), मधुबनी। हुनि मातृक वनदेवड़ा,पो. उजलाहा, थाना- मदनपुर, जिला-पूर्णियामे बसि गेलाह। सौघरा (मधुबनी), मदनपुर आ काशीमे पाणिनी व्याकरणक अध्ययन। "हनूमान चरित"क लेखक।



चंद्रनाथ झा 1909-1984

जन्म १९०९ ई मे दरभंगा जिलाक धर्मपुर ग्राममे भेलन्हि मृत्यु ४-७-�८४,चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापक छलाह। अवकाश ग्रहण क काव्य साधनामे लागल रहलाह। महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सब विधामे ई सिद्ध हस्त छलाह। हिनक �जीवक दंव� महाकाव्य अठनजीक �बौद्ध दर्श� (अभिमाउन छन्द) मे लिखल अछि।

साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

मैथिलीमे �सौनेट� एवं ब्लैंक वर्स�क ओ प्रथम प्रयोक्ता थिकाह। संस्कृत परम्परामे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे रहल। हिनक �कीचक वध� आ �कृष्ण चरित� महाकाव्य��मङ्गल-पत्रशिका� एवं �नमस्या� मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ। एकर आगिनक मूलक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प शैलिक प्रचुरता अपने अछि। एक दिश यदि प्राचीन ढंगक ओ श्लिष्ट रचनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर दिस �सौनेट� (चतुर्दशपदी) �बैलेड� आदि लिखबामे पूर्ण सफलता

		प्राप्त कएलन्हि । �कृष्ण चरित� महाकाव्य पर हिनका 1979 ई. क साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि । 1980 ई. म हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि ।
 जीवनाथ झा 1910-1977	 सुरेन्द्र झा 'सुमन' 1910-2002 जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: प्रतिपदा, अर्चना,साओन-भादव,अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा आदि तीससँ अधिक मौलिक कविता-पुस्तक;पुरुष-	 पं. रामचन्द्र झा 191 0- गाम तरौनी। काशी मिथिला ग्रन्थमालाक सम्पादक।

परीक्षा, अनुगीतांजलि, मृत्यु शृंगार तथा वर्धमानक, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन; �मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव� नामक समीक्षा-ग्रंथ। �पयस्विनी� लेल १९७१ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा �उदना� पर १९७८ मे मैथिली अकादमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त । मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र �स्वदेश�क लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक। १९९७- सुरेन्द्र झा �सुमन� (रवीन्द्र नाटकावली- रवीन्द्रनाथ टैगोर, बांग्ला)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। २००० ई.- पं.सुरेन्द्र झा �सुमन�, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार।



'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998

जन्म अपन मामागाम सतलखाम रहलहि, ओ हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि, जिला-दरभंगा। मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र। हिन्दीमे नागार्जुन नामसँ प्रख्यात। प्रकाशित कृति: चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता-संग्रह); पारो, बलचनमा, नवतुरिया (मैथिली उपन्यास); युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई



आरसीप्रसाद सिंह 1911-1996

जन्म: ग्राम-एरौत, जिला-समस्तीपुर। प्रकाशित कृति: माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविता-संग्रह), मेघदूत (अनुवाद), आरसी, नन्ददास, संजीवनी (हिन्दी काव्य संग्रह)। �सूर्यमुखी� लेल १९८४ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।



गुरु जयदेव मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगानाथ झा

आँखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाँहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या ! (हिन्दी कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक, अभिनन्दन, उग्रतारा, इमरतिया (हिन्दी उपन्यास); आसमान में चन्दा तैरे (कहानी संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निबन्ध-संग्रह); गीत (गोविन्द; मेघदूत; विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियाँ

(अनुवाद)। �पत्रहीन नग्न गाछ� लेल १९६८ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त। यायावरी जीवन। मैथिली प्रतिनिधिक नुयम नुस ग्रमघ। नागार्जुन (**स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र �यात्री�**), हिन्दी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.मे **साहित्य अकादमीक फेलो** (सोना दशक सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार)।



यशोधर झा

मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली

पाथीयन 1966 मे पहिल साहित्य



वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'

1912-1987



हीम झा 1912-

पुर्णिया जिलाक मदनपुर

ामक। जन्म ७ नवम्बर १९१२

अकादमी पुरस्कार मैथिली लेल प्राप्त।	१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक �विधु� (सीतायन, महाकाव्य) लेल मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कार।	ई.। वर्तीनक श्री श्यामानन्द सिंहक अश्वत्थामा �नारायण संकीर्तन महामण्डली�क प्रायना।
 नाथानाथ दास १९१२-	 उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980 जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक बलनिया ग्राममे भेलन्हि। मृत्यु २४-७-१९८०। संस्कृत शिक्षा साहित्याचार्य धरि। बरौदा नागरक विद्वत्-परिषद्सँ �साहित्य-रत्न�क उपाधिसँ विभूषित भेलाह। दैनिक आर्यावर्तमे आदिअहिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कार्य कयलनि १९७१ मे	 जयनाथ मिश्र 1913-1985

सेवा निवृत्त भेलाह। मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह।

विजयानन्द, कुंजनंदन, सुदर्शन, पुष्पनील, शास्त्री, वामन आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि। मोहन जीक �बाजि उठल मुरली�मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विभिन्न विधानधाराक ओ विभिन्न अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि। एहि पुस्तकपर मोहन�जीकेँ १९९८ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक �फूलडाली� नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल।



श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"



पञ्जीकार मोदानन्द झा 1914-1998

लब्ध प्रतिष्ठ पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द

झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया।

पिता-स्व. श्री रिखिया झा।

गुरु- पञ्जीकार रिखिया झा। पूर्णिया जिलाक बनैली लगक शिवनगर गामक। जन्म २२ सितम्बर १९१४ ई.। सौराठमे अपन मौसा स्व. लुटनझा सँ पंजीशास्त्रक अध्ययन। १९४६-१९७१ ई. धरि दरभंगामे रहि आचार्य रमानाथ झाकेँ पाँजि पढ़ौलनि। शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा। महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर



ानन्द झा 1914-

988

महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा- 1937 ई. आदिम मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।



टोक्यो हासेगावा, निदेशक मिथिला म्यूजियम, निगाटा



माँगनि खवास 1908-1943 संगीतज्ञ

पचगछियामे जन्म आ अल्प वयसमे मृत्यु। पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक शिष्य।



रामाश्रय झा 'रामरंग' अभिनव भातखण्डे 1928-2009

जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसार भाद्र कृष्णपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत हरिना नामक ग्राममे भेलन्हि। अभिनव गीतांजलि, हिनकर उच्चकोटिक शास्त्र रचना

अछि। मिथिलावासी श्री नामनंग नाग गीनगुक्रिष, नाग वैदही रैनव, आऽ नाग निद्यायगि कल्याध कन नवना सद्दा कउन ठथि आऽ मैथिली रागाम ह्निकन खयाल �नंजयगि ऊगि नाग�� कन अनुनुय अछि।



नामवगुन मल्लिक ध्रु्यद संगीग 1905-1990



अररयनानायध मल्लिक



कुमान गानानद्ध सिंह, संगीगज्ञ







𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒨𑒥𑒯𑒰𑒠𑒳𑒩 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒮𑒱𑓀𑒯

𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲, 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞𑒖𑓂𑒘

𑒯𑒵𑒠𑒨𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒗𑒰



𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒦𑒰𑒮𑓂𑒏𑒩 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑓑𑓙𑓑𑓖-𑓑𑓙𑓙𑓔



𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒹𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰, 𑒞𑒥𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠𑒢



𑒢𑒰𑒑𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒞𑒥𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠𑒏



𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 1916-1998

𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰। 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒏। 𑓑𑓙𑓔𑓓 𑒄. 𑒧



𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝 (𑒪𑒐𑒢) 𑒗𑒰 1916 -2000

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒁𑒩𑒱𑒭𑓂𑒨𑒰𑒢𑒲॥

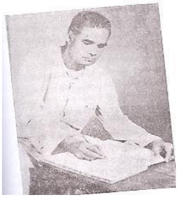


𑒳𑒠𑓂𑒥𑒠𑒢 𑒗𑒰 '𑒅𑒞𑓂𑒣𑒪' 1916-

जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। नवम कक्षाम स्वनाम्न आन्दोलनम वामि कए शिक्षाक इतिश्री। कलकत्ताम स्थानीय मैथिल संघम प्रवेश। कलकत्ताम मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घोष लेन, कलकत्ता-१००००६ सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनम सक्रिय। �कुहेस� आ �चाणक्य� दुटा नाटक। १९११-१९ धरि �मिथिला दर्शन� आ �मैथिली दर्शन� मैथिली मासिकक सम्पादन।

गाङा जिलाक अलखदन्त-हनयूनक निवासी। जन्म १६ अक्तूबर १९१६ ई.।







रामचरित्र पाण्डेय "अंशु" १९१७-२०१०



लक्ष्मीनाथ झा मिथिला चित्र कला 1917-1990



उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 1917-2002

न्म स्थान-हनियून

कशीटाल, मधुबनी, बिहार।

१९६९- उपेन्द्रनाथ झा �व्यास�

दु पत्र, उपन्यास) लेल साहित्य

अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

साहित्य अकादमीक अनुवाद

पुरस्कार प्राप्त। प्रकाशित कृति:

मान, दु पत्र

उपन्यास), बिडंबना, रजना

रजल (कथा-संग्रह), पतन

संन्यासी, प्रतीक

काव्य), महाप्रयाण (पहिल दु

पर्व) आदि।



मनमोहन झा 1918 -2009	व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' 1918-1986	पं. सहदेव झा १९१९-
जन्म सनिसवम, अगुरकप, वीनरथा, मिथिलाक निशायुनमा। २००९- स्व.मनमोहन झा (गंगापुत्र, कथासंग्रह)पर मृत्योपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार।	जन्म स्थान-बहेड़ा, दरभंगा बिहार। १९७३- व्रजकिशोर वर्मा �मणिपद्म� (नैका बनिजारा, उपन्यास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। उपन्यासकार, कथाकार आ कवि। प्रकाशित कृति: कालागर्ल, कनकी, अर्द्धनारीश्वर, लोरिक विजय, नैका-बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, राय रनपाल, आदिम गुलाम आदि उपन्यास आ कंठहार (नाटक) आदि।	"मिथिला की धरोहर" पोथी प्रकाशित।
 बुद्धिधारी सिंह रमाकर 1919-1991	 आद्याचरण झा 1920-	 चन्द्रभानु सिंह 1922-

जन्म मधुबनीमे 1919 ई. मे भेल। अपन पिता स्व. उमधानी सिंहसँ चित्र विषयक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि। ई रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह। जतएसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि। बाल्या-वस्थहिसँ ई कविकार्यमे लागल रहलाह अछि। संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषामे हिनक रचना प्रकाशित अछि।

यथा�मैथिलीमे �प्रयास� (कथा-संग्रह), �मधुमती�, �अमनवायु� (कविता-संग्रह), �शरशय्या� (खंड-काव्य) �स्मृति

२००४- चन्द्रभानु सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।

साहस्री� (महाकाव्य) आदि ।



सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990

जन्म दरभंगाक मिश्रटोलामे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि। किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल। किछु दिन �वैदेही�क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई.



गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान- इसहपुर, सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार। सिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, तथा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादमी पुरस्कार, साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, ग्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधामे अठतीस टा पोथी प्रकाशित। प्रकाशन: सामाक



योगानन्द झा 1923-1986

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे 1923 ई. मे भेलन्हि। मृत्यु 1986 मे भेलनि। अंग्रेजीमे एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह। बिहार प्रशासनिक सेवामे 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल। तत्पश्चात् मैथिली अकादमीक

सँ 1982 ई. धरि पटनाम �मिथिला मिहिर�� क सहल सम्पादन कएल। हिनक दु गोट नाट्यकृति-�रहाइत चाहक जिनगी�, लटाइत आँचर�, तथा �पहिल साँझ� हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुरूपक परिचायक अछि। छद्मनामसँ हिनक दु गोट उपन्यास मिहिर� म प्रकाशित हल अछि। हिनक उपन्यास ई चारहा संसार� ज मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित हल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल।

पोथी,नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि। १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुस्तक लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। १९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास- कुमार प्रधान, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी हला पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लेल)

निदेशक �84 धरि। योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यम अयन उपन्यास �हलमानुस� एवं �परिक्षा�क हेतु ख्यात छथि। हिनक नाटक �मूनिक मनिप्रम� एवं कथा संग्रह �उठैत वंशी� पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि। एकर अतिरिक्त ई महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद एवं �आमक जलखनी� नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि।



रामकृष्ण झा 'किसुन' 1923-1970

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक । प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)।



उमानाथ झा 1923-2009

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 मङरौनी, मधुबनी । पूर्व अंग्रेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा । रचना:-रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, बुढ़ धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)। १९८१- उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



जटाशंकर दास 1923-2006



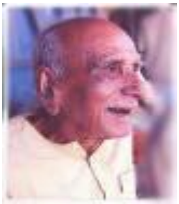
प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं भाषाशास्त्रीक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक ई अनन्य सेवक छथि। कलकत्ता सँ मिथिला दर्शन�, मैथिली कविता�, मैथिली संगम� आदि पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन थोड़ेमे सम्भव नहि। अनेक बङ्गला कृतिक ई अनुवाद सेहो कएल अछि। हिन्दीमे



मदनमोहन मिश्र 1924-2004

"एक छलीह महारानी" प्रकाशित।



अमोघ नारायण झा "अमोघ" 1924-

सद्य छिनक �कविता संग्रह� प्रकाशित अछि। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष। २००२- डॉ. प्रबोध नारायण सिंह (पोथीक नाम- कुर्रतुल ऐन हैदर, उर्दू) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।		
 मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनमोहन मिश्र 1924-2004, ललित ना	 मणिनाथ मिश्र मतंग 1924 -	 आनन्द मिश्र 1924-2007

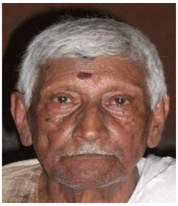
नायक मिश्र, दवना थ नाय



डॉ. जयमन्त मिश्र १९२७-२०१०

जन्म १७-१०-१९२७ मृत्यु ०१-०९-२०१०, गाम-ढंगा-हरिपुर-मजरही।

१९९७- जयमन्त मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार- मैथिली।



चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925-

जन्म: खोजपुर, मधुबनी। वरिष्ठ कवि, कथाकार-उपन्यासकार। हास्य-व्यंग्यक कविता बहुत। मैथिलीक लेल समर्पित व्यक्तित्व। हिनक दर्जनसँ बेसी कथा आ विदागरी, वीनकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित। १९८३- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरियासरायसँ शिक्षक



मुक्तिनाथ झा (1926-2009)

नियम अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (पनशुनामक वीठल बनायल कथा- राजशेखर बसु, बांग्ला) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। चन्द्रनाथ मिश्र अमर २०१० म मैथिली साहित्य लेल **साहित्य अकादमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार)।



शुभंकर झा 1926-



दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 1928-1962



अनंग विहारी लाल दास "इन्दु" 1928-2010

२००१- अनन्द विहारी लाल दास �इन्दु� (युद्ध आ योद्धा-अगम सिंह गिरि, नेपाली)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



कृष्णकान्त मिश्र १९२८-२०००



जगदानन्द झा 1928-



दुर्गानाथ झा "श्रीश"

हिनकर जन्म मधुबनी जिलाक नेहरा गाममे १९२९ ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड. कएलाक बाद किछु दिन स्कूलमे अध्यापन, हिन मिल्लत कॉलेज, लहेरियासरायमे मैथिली आ हिन्दी विभागक अध्यक्ष।

थिली रामायण पहिल

ी.एच.डी.। "शीश" जीक

थिलीमे प्रकाशित रचना अछि-

मैथिली साहित्यक इतिहास",

गुजन रागनी" (सम्पादन),

महामात्य ओ मनु" (कविता),

नाट्य कथा सार"(सम्पादन),

पुरुषार्थ"(पद्य नाटक) आ

नेक कविता, एकांकी आ

आलोचनात्मक निबन्ध।



राजकमल चौधरी 1929-1967

महिषी, सहरसा।

रचना:- आदि

कथा, आन्दोलन, पाथर



विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005

"राम सुयश सागर" (मैथिली

रामायण) १९८० ई. मे प्रकाशित।

२५ जनवरी २००५ कँ मृत्यु।



जयधारी सिंह 1929-2007

समीक्षक, कवि । प्रकाशन:

बौद्धगानमे तांत्रिक

सिद्धांत, समीक्षा शास्त्र आदि

स्कूल (उपन्यास), स्वप्नगंधा (क विता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरंगी (बङला उपन्यासक हिन्दी अनुवाद) अत्यन्त प्रसिद्ध।		। रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमे मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष ।
 शैलेन्द्र मोहन झा 1929-1994 १९९२- शैलेन्द्र मोहन झा (शरतचन्द्र व्यक्ति आ कलाकार-सुबोधचन्द्र सेन, अंग्रेजी)लेल साहित्य	 विजयनाथ ठाकुर 1929-2008	 रमणचन्द्र वर्मा 1930-

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



(गोयालजी झा '(गो यश' 1931-2008

जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि। हिनकर निबन्ध�सान दात्मक विधी�, �गुम भेल ठाढ़ डी�, �अलवम� �भाव कहू मन करैन लगैछ�, "मखानक पात" प्रकाशित भेल आछिम सानदात्मक विधी वेश लोकप्रिय भेल। २००६ ई.-



विवेकानन्द ठाकुर 1931-

२००७- विवेकानन्द ठाकुर (चानन घन गछिया, पद्य)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



ानाकांत मिश्र 1931-

श्री गोपालजी झा

गोपेश, मेंहथ, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।



ललित 1932-1983

जन्म स्थान बसैठ चानपुरा मधुबनी, बिहार। प्रसिद्ध कथाकार ओ उपन्यासकार। प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि, (कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।



मूनानि मधुसूदन ठाकुर 1932-

ताराशंकर वंद्योपाध्यायक बंगला उपन्यास "आरोग्य निकेतन"क मैथिली अनुवाद लेल साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार 1999 मे भेटल छन्हि।



विद्यानारायण ठाकुर 1933-







धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान

काह्लख, मधुवनी, बिहार ।

प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार आ कवि । प्रकाशित कृति : दु टा कथा संग्रह आ एक टा उपन्यास ।

राजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान

कुमनवाजितपुर, वैशाली, बिहार ।

प्रख्यात कथाकार आ संपादक । आइ काल्हि परसु (कथा-संग्रह) लेल १९९६ म साहित्य अकादमीसँ सम्मानित ।

प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, झूठ साँच, एकटा तेसर, अनुलग्नक, आइ काल्हि परसु (कथा संग्रह), गलतीनामा, स्नहि विद्यापति, टीप्पणीयादि (आलोचना)। �आरम्भ� पत्रिकाक संपादन। प्रबोध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।

डॉ. धीरेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान

ारुना, मधुवनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार,उपन्यासकार आ कवि

प्रकाशित कृति: कुहेस आ कनध, पघाइत घुनक ागि, शान्तुआ आ मनु अपन ठिन (कथासंग्रह) ढेंगनम ाँगल कात, काल्हि आ आइ कविता संग्रह) सहित कैक ाघाम विरचित पोथी।







रमण नारायण १९३४- २०११

बाबू श्री सत्यनारायण सिंह आ राघवाचार्य

मायानन्द मिश्र 1934-

नाम- रमण नारायण

दास, जन्म १७ मार्च १९३४

कँ मधुबनीक बहुरा गाममे।

पिता-श्री हरिवल्लभ लाल

दास। शिक्षा

मधेपुर, मधुबनी आ

पटनामे। १९६१ ई.सँ

१९९४ ई. धरि

ए.एन. कॉलेज, पटनामे हिन्दी

विभागमे अध्यापन। पाथरक

नाव (मैथिली कथा

संग्रह, १९७२) प्रकाशित।

मृत्यु १२ जनवरी २०११ कँ

पटनामे।

हिनक जन्म ११ अगस्त १९३४

ई. कँ सुपौल जिलाक बनैनियाँ

गाममे भेलनि। राष्ट्र लाटा, आगि

नाम आ� पाथर आठान बन्ध-

बन्धु- हिनकर कथा संग्रह सभ

छन्हि। बिहाडि पात पाथर, मंत्र-

पुत्र, खाता आ� बिऔ

आ� सूर्यास्त हिनकर उपन्यास

सभ अछि॥ दिशांतर हिनकर

कविता संग्रह अछि। एकर

अतिरिक्त साँझ की नैया माटी

क लाग, प्रथमं शैल पुत्री

च,मंत्रपुत्र, पुनाहिता आ� स्त्री-ध

हिनकर हिन्दीक कृति

अछि। १९८८- मायानन्द

मिश्र (मंत्रपुत्र, उपन्यास)पर

मैथिलीक साहित्य अकादमी

पुरस्कारसँ सम्मानित।

प्रबोध सम्मान 2007सँ

सम्मानित।



तारानन्द तरुण १९३७-२०११



सोमदेव 1934-

उपन्यासकार ओ कवि। साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति (गीति नाट्य) सोम सतसइ (दोहा)। २००२- सोमदेव (सहस्रमुखी चौक पर, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। २००१ ई. - श्री सोमदेव, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार, प्रबोध साहित्य सम्मान २०११।



राजनन्दन लाल दास 1934-

"कर्णामृत"क सम्पादन। "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशित।



नमानन्द नेणु 1934-2011

जन्म स्थान

उसमाम0, दनभंगा, विहान ।

वनिष्ठ कवि, कथाकान ओ

उयन्यासकान। साहित्य अकादमी

युनस्कानसँ सम्मानित। प्रकाशित

कृति: कवाट, ग्रिकाध, अंगहीन

आकाश (कथा-संग्रह), दुधफूल

(उयन्यास), अंगत:, ओकन नाम

(कविता-संग्रह)।

२000- नमानन्द नेणु (कागक

नास वाग, यद्य)लेल साहित्य

अकादमी युनस्कान। विदेह

सम्यादकक समानान्तन साहित्य



कालीकांत झा "वूच" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक

उदयनाचार्यक कर्मभूमि

समस्तीयून जिलाक कनियन

ग्रामम 1934 ई. म भेलनि ।

यिता स्व. यंडित नाजकिशोन झा

गामक मध्य विद्यालयक प्रथम

प्रधानाध्यायक छलाह । माता

स्व. कला देवी गृहिणी छलीह ।

अंतन्स्नातक समस्तीयून

कॉलेज, समस्तीयूनसँ कयलाक

यश्चात् विहान सनकानक प्रखंड

कर्मचानीक नूयम सेवा प्रानंभ

कयलनि । वालहिं कालसँ

कविता लेखनम विशेष नूचि छल



...याम चन्द्र 1934-

...उयन्यास "नूया दीदी" प्रकाशित।

...ाम मलंगिया, जिला- मधुवनी।

अकादमी रहला युनस्थान २०११ (समग्र यागदान लल)	। मैथिली यत्रिका - मिथिला मिहिन, माटि - यानि, रोखा गथा मैथिली अकादमी यटना द्वाना प्रकाशित यत्रिकाम समय - समय यन हिनक नचना प्रकाशित होइत नहलनि । जीवनक विविध विधाकँ अयन कविता एवं गीत प्रस्तुत कयलनि । साहित्य अकादमी दिल्ली द्वाना प्रकाशित मैथिली कथाक विकास (संयादक डॉ वासुकीनाथ झा) म हास्य कथा कानक सूची म डॉ विद्यायति झा हिनक नचना ��धर्म शास्त्राचार्यक उल्लेख कयलनि । मैथिली अकादमी यटना एवं मिथिला मिहिन द्वाना प्रशंसा यत्र रोजल जाइत छल । शृंगाननस एवं हास्य नसक संग-संग विवान मूलक कविताक नचना सहो कयलनि । डॉ दुर्गानाथ		

मा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक नुपम हिनक उल्लेख कएल गेल अछि। **प्रकाशित कृति (मृत्यपरांत)** : कलानिधि- कविता-संग्रह।



उनीलाल शर्मा "प्राप्रिय" १९३७-

"मिथिला की याहित्य यनम्यना" यायी प्रकाशित।



नामरुद्र, धनुषा, नेपाल १९३७-२०२०

साहित्य तथा अन्यान्य उत्रक कर्ताक सरल व्यक्तित्व अपन प्रतापसँ आ पथ-प्रदर्शक मानैत छथि। मैथिली साहित्य-उत्रम हिनक यनिवयक माद गतावे करब पर्याप्त हएत ज मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार डा. धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ



केदाननाथ चौधरी (१९३६-)

मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गावय गीत' कर निर्माता मेसँ एकटा निर्माता छथि केदाननाथ चौधरी आ दासन मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश गसन सहनिर्माता रलखिन उदयराज

कथाकार मानैत छथि । हिनक कथामे प्रतीकात्मकताक अद्भुत प्रयोगशिल्प नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त वैशिष्ट्यसभ विद्यमान रहैत अछि । कथाकारक अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार आ कवि सेहो छथि । नयालम मैथिलीक पहिल मानाङ्गामा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका जाइत छनि । सामाजिक कुनीतिसभकेँ कुशलतासँ विश्लेषण करबाक, विकसनीय बनएबाक आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप छोड़बामे नामरूप सिद्धहस्त छथि । धनुषा जिलाक कुर्था गाममे जनमल नामरूपक पूर्ण नाम नामरूप कर्ण छनि । अंग्रेजी विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक नामरूप व्याकरण, पाठ्यपुस्तक आ सहायक पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर सक्रिय छथि।

संह। माता-स्व. कुसुमवती देवी, पिता- स्व. किशोरी चौधरी, जन्म: ०३/०१/१९३६

ग्रा.+पत्रा. नहरा (दरभंगा), अन्य पारिवारिक सदस्य-पत्नी- श्रीमती कुमुद चौधरी, संतान- प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा- १९५८ ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९५९ ई.मे लॉ। १९६९ ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९७१ ई.मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम.बी.ए., १९७८ मे भारत आगमन। १९८१-८६ क बीच तेहरान आ यैंकफर्टमे। रहन

म्ब्ली, यु(ध ह्स्र्ग

नेटायनमंटक वाद २००० सँ

ाह्नियासनाय, दनरंगाम

नेवास। ६ टा उयन्यास-

ब्रमलीनानी २००४, कनान

२००६, माह्रन २००८,

अवाना नह्गिन २०१२, ह्रीना

२०१३, अयना २०१८.

सम्मान- १) निदरु साह्नित्य

सम्मान, वर्ख-२०१३ (मानखंत

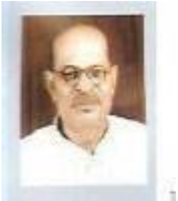
मैथिली मंच, नाँची द्वाना), २)

ववाध साह्नित्य सम्मान, वर्ख-

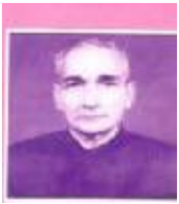
२०१६ आ ३) कदान सम्मान,

वर्ख-२०१६,'अवाना नह्गिन'

लल।







जीवकांत 1936-

नाम- जीवकान्त झा,पिता- गुणानन्द झा, माता-मन्दाकिनी देवी, जन्म-२७.०१.१९३६ अड़ुआर, जिला-सुपौल। नौकरी-विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९६१-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डडार एवं उ.वि.पाखनाम १९८१-९८)। पहिल रचना- झझाटिया आ टिटही (कविता, जनवरी १९६७ मिथिला मिहिर)। पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)। नूतन पोथी- खिखिरक बीअरि (२००१ बाल पद्य कथा), अठन्नी

देवकांत झा 1936-

डॉ अमरेश पाठक 1936-

हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामानि ग्राममे १९३६ मे भेलन्हि। १९६१ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल। १९६१ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रहबाक बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह। पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागाध्यक्ष रहथि। मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन� शोध प्रबन्धपर हिनका बिहार विश्व-विद्यालय

खसलछु नवम (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजनि प्रम प्रकासिया (जीवन-वृक्षक अंश)। यूनस्कान-साहित्य अकादमी 1998 गकें अछि चित्त, पद्य , किनध सम्मान (१९९८), वैदही सम्मान (१९८७)। प्रकाशित पाथी-

कविता संग्रह:नाबु ह पृथ्वी (७१), धान नहि हाऊछ मूक (९१), नकेंत अछि चित्त (९३), खाँत (१९९६), पानिम जागल अछि वस्ती (९८), रूनगी नीलाकाशम (२०००), गाछ मूल-मूल (२००४), छाह साहाउान (२००६), खिखिनि क वीअनि (२००१)

द्वारा ति. लिट उपाधि भेटलन्हि। हुनी शोध प्रबन्ध पुस्तकाकार नुँ सेहो प्रकाशित भेल अछि बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति ग्रन्थावलीक सम्पादक मण्डलक सदस्य। हिनक अन्य प्रकाशित रचना अछि �निबन्ध संकलन�। एकरा छाति विरिन्न पत्र-पत्रिकाम हिनक कतेको निबन्ध प्रकाशित छन्हि। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक हुनका एक सम्पादक छथि। हुनी अधिकतर उद्ध स्तरीय आलोचनात्मक निबन्ध लिखैत छथि। २०००- डॉ. अमरेश पाठक, (गमस- रीक्ष्म सारुनी, दिल्ली)लल साहित्य

कथा-संग्रह: एकसरि ठाढ़ि कदम गाछ तर (१२), सूर्य गलि नहल अछि (१७), वस्तु (८३), कतेक मील (९८)

उपन्यास: दू कुहेसक बाट (६८), पनिपत (११), नहि, कतहु नहि (१६), पीयर गुलाब छल (११), अगिनवान (८१)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (नक्षत्र अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

प्रबोध सम्मान 2010 सँ सम्मानित।

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



वलनाम 1936-2008

जन्म स्थान यचही, मधूवनी, विहान। निशिष्ट कथाकान। प्रकाशित कृति : दकचल दवाल (कथा-संग्रह)।



मैथिलीयूत्र प्रदीय 1936-

ग्राम- कथवान, दनरंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य नत्न, नवीन शास्त्री, यंचाग्नि साधक। हिनकन नचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमन" आ "सरक सुधि अहाँ लए छी हे अम्ब, हमना किए विसनै छी यै" मिथिलाम लजंत रए गेल अछि।



नामदन मा 1936-

कथाकान, समीक्षक, अनूनादक, ग्रंथ सम्यादक। साहित्य अकादमीक मूल एवं अनूनाद यूनस्कान प्राप्त कार्मा ल. ना. मिथिला निश्वनिद्यालय दनरंगाक मैथिली निरागक यूर्व प्राचार्य। प्रकाशन: यसिमेंग याथन, (अनू.) आदि। १९९१- नामदन मा (यसिमेंग याथन, एकांकी)लल साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानित।१९९४- नामदन मा (सगाॐ- नाजिह्न सिंह वदी, उर्दू) लल साहित्य

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936-

जन्म पूर्णिआ जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि। नव अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि। कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रोताकेँ आह्लादित करैत छथि। हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी



विनोद बिहारी वर्मा 1937-2003

मैथिल कर्ण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बानिहार आ पल्लवी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)



नीरेन्द्र मल्लिक 1937-

जन्म-

3 जनवरी 1937 ई. परसौनी, मधुबनीमे कवि, सम्पादक, समीक्षक।

आखर, अग्निपत्रक सम्पादन। अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।

काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक�एक नाटि� एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छन्हि ।



कीर्त्तिनारायण मिश्र 1937-

जन्म ११ जुलाई १९३१ ई. केँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसराय भेलन्हि। हिनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त,महानगर (दीर्घ कविता), हम घरन नहि लिखब, ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप (एहि पाथेयक साहित्य



गौरीकान्त चौधरीकान्त 1937-2001



युगल किशोर मिश्र १९३८-२००१

मैथिली शब्दकोष।

अकादमी 1997 यूनस्कान),

आदमीकँ आहेग (कविता

संग्रह)। संम्पनक्ष-अयन

अकांगम, स्मृति यात्रा, यत्रक

दर्यक्षमा। सम्पादन- आखन

मासिक यत्रिका, आधूनिक

मैथिली साहित्य,

'63, नाजकमल जीवन आ

साहित्य, '68, कथा-

संकलन- काल कां0नी।

आलावना- अर्थांगन-2004



प्रफूल्ल कूमान सिंह 'मौन' 1938-

ग्राम+यास्ट- हसनयून, जिला-

समस्तीयून। मैथिलीम



महेश्चननाथ मल्लिक 1938 -



यनशुनाम मा १९३८-

ग्राम- मंहथ (मधूवनी), कृति-

ा०००मक्षस ाह यीस ०००न

१.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ ई.), २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा। १९७२ ई.), ३.�मैथिली� त्रैमासिकक सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नवारोप (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द्र चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशम (महुआन, २००५ ई.)। २००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह �मौन� (प्रेमचन्द्र की कहानी- प्रेमचन्द्र, हिन्दी) लेल साहित्य

इंग्लिश ड्रामा,क्रिश्चियन थाउटि

ड्रामा।

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



कुलानन्द मिश्र 1940-2000

जन्म एकटी काठी, सीतामढ़ी, बिहार। सुविख्यात कवि,, संपादक, समालोचक। प्रकाशित कृति- तावत आब, रातक प्रतीक्षामे (कविता संग्रह), रातुक रास्ता सर्वेक्षण, यात्रा, राजकमल चौधरी की श्रेष्ठ कहानियाँ (अनुवाद)।



विलट पासवान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुबनी जिलाक ककरौड़ा ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि।



फजलुर रहमान हाशमी 1940-2011

जन्म-पटना जिलाक बनाह गाममे। वृत्ति अध्यापक। हिन्दी कविता संग्रह "रश्मि राशि" आ मैथिली कविता संग्रह "निर्मोही" प्रकाशित। १९९६मे अबुलकलाम आजाद- अब्दुलकवी दसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनुवादयन साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



गुणनाथ झा

गुणनाथ झा "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकाक संचालन- सम्पादन करै छथि। मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन। हुनकर नाटक सभ अछि:

मधुयामिनी: एकाङ्क नाट्य शैलीमे दूटा पात्र, पुरुष संयुक्त परिवारक पढ़ल लिखल आ स्त्री गमार विचारी।

पाथेय: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित, मुदा पूर्णाङ्कक सभ विशेषता एहिमे छैक। मुख्य अस्मिता मिथिलाक



प्रभास कुमार चौधरी 1941-1998

ग्राम- पिंडारूछ, जिला- दरभंगा। । प्रख्यात कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रभासक प्रकाशित कृति : कथा- प्रभास, प्रभासक कथा, नव घर उठय पुरान घर खसय, हिंडोल (कथासंग्रह), अस्थिपंजर, युगपुरुष, हम ना लेब दहेज, ललना रे, राजा पोखरिमे कतेक मछरी (उपन्यास) । विभिन्न महत्वपूर्ण पत्रिकाक सम्पादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' केर प्रारम्भ। १९९० - प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासक कथा, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।



साकेतानन्द 1940-

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: मैथिली कथा साहित्यमे 1962 स� सक्रिय । गोटेक चालिस_पचास टा कथा, रिपोर्ताज. संस्मरण, यात्रा_विवरण मैथिलीमे प्रकाशित अधिकांश पत्र_पत्रिकामे छपल । पहिल मैथिली कथा �ग्लेसियर� 1962मे �मिथिलामिहिर�मे प्रकाशित । हिन्दियोमे दू दर्जन कथा आदि प्रकाशित

अधागनिसँ दुखी रऽ
गामकँ कर्मस्थली वनवैत
छथि, स्नजन विनाथ करैत
छथि।

लाल-वृमक्षन: एकाङ्क नाट्य
शैलीम नविता। दाही नौदीसँ
ममानल निम्न आ मध्य-निम्न
वर्ग स्नांग्राक यहिनहिया
आ वादा जीविकायार्जन लल
प्रवास कनवा लल अहिशक्ष
छथि।

सातम चनित्र: एकाङ्क नाट्य
शैलीम नविता। मैथिली
नंगमंवयन महिला
अहिनत्रीक अराव, सातम
चनित्रक प्रीजाम पूर्नायास
खातम रऽ जाइत अछि।

शेष नाइः आधुनिक
सामाजिक यूर्णाङ्क नाटक।

। सन ११म छयल यहिल
कथा_संग्रह �गधनायक� क
जाही वर्ष �साहित्य
अकादमी यूनस्कान। येह
वाद्व� स� अवैवला
नियमिक नखांकित
कनैत, यर्यावनध क कथा वस्
वना क� नाजकमल प्रकाशन
स� प्रकाशित एवं अयांत
चर्चित उपन्यास (�जीकुमंडी
हिन्नान�)
�सर्वस्वांत�। आकाशवाणीक
नाष्ट्रीय कार्यक्रमम प्रसानित
दु टा उल्लखनीय वृन्द नुयक_
�महानद्या अल्यानध्� यन
आधानित �जंगल वालत
हे� एवं मानखंत क ग्रामीध
जनक ज्ञलंत जाइनक समस्या
यन आधानित
वृन्दनुयक � नैना

पिता-माताक मृत्युक बाद अग्रजक अनुजक प्रति पितृवत व्यवहार।

आशक लोक: पूर्णाङ्क नाटक। विषय निम्नमध्यवर्गीय बेरोजगारी आ विवाहक दायित्वक बात।

जय मैथिली: पूर्णाङ्क नाटक। मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक समस्या एकर कथावस्तु अछि।

महाकवि विद्यापति: विद्यापतिक नव विश्लेषण।

जागरण� चर्चित एवं प्रसिद्ध ।



गंगेश गुंजन 1942-



प्रेमशंकर सिंह 1942-



जन्म स्थान- पिलखवाड़, मधुबनी। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोट (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)। १९९४- गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा)पुरस्कृत

ग्राम+पोस्ट- जगियाना, थाना- जाल, जिला- दरभंगा। मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, चेतना प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यालोचन, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रबन्धिका, कर्णगोष्ठी, कलकत्ता २००७, ८.शोधक, चेतना प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.पुरुषार्थक प्रतिमान, चेतना प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८। २००९ डॉ.-श्री प्रेमशंकर

मार्कण्डेय प्रवासी 1942-2010

जन्म ग्राम: गनुआन, जिला: समस्तीपुर। प्रकाशित कृति: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); ज्ञानदर्थ (कविता संग्रह), अजन चेतना (काव्य संग्रह)। अरिधान, हम कालिदास (उपन्यास)। �अगस्त्यायिनी� लेल १९८१मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।

लल सहित्य अकादमी युनस्कानसँ सम्मानित ।

सिंह, जागियाना, दनरंगा यात्री-चेतना युनस्कान।



देवेन्द्र झा १९४३-

गाम- चानयुना (मधुबनी), कृति- निद्यायणिक शृंगानिक यदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकन झा "शास्त्री", अनूरुव, वदलि जाइछ घन टा।



डॉ. भीमनाथ झा 1945-

जन्म:काठलेख, मधुबनी, बिहान । प्रखन कवि, समालोचक, प्राध्यायक । �विविधा�निवन्ध युस्तक लल सन् १९९२म सहित्य अकादमी युनस्कानसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: प्रिधाना, वीणा, की रूनेँ की नहि, नाम गँ थिक डाक्ह (कविता संकलन), यनिवायिका, सीतानाम झा, कवि चूडामणिक काव्य साधना, विविधा (निवंध, आलोचना),टाटन चौकसँ आदि ।



महेन्द्र मलंगिया 1946-

गाम- मलंगिया, जिला- मधुबनी । मैथिलीक सुप्रतिष्ठित नाटककान, रंग निर्देशक एवं मैलानंगक संस्थायक अध्यक्ष । लोक साहित्य यन गंभीन शोध आलेख । मैथिलीम 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । सीनियन

		हुलाशिय (रगना सनकान), ईंटननशनल थिएटन ईंस्टिच्यूट (नयाल), प्रवाध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित। संप्रति ग्रागिनीश्वन लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्धनग्नाकन यन शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलंगियाक जन्म २० जनवरी १९४६ म मधुबनी जिलाक मलंगिया गामम हलहि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नयाली राषाक जानकान आ थियटन शिक्षा, पटकथा लखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि। २००२ ई.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया;यात्री-

रचना पुरस्कृत। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।



डॉ राम दयाल झा राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक श्री राजू राषा �राकेश�क व्यक्तित्व एना ने मिझराएल छैक जे कोनहुँ हिनका भिन्न नहि कएल जा सकैत अछि । श्री विशेषता: नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा लेखनक विषय मूलत: मैथिलीए



उपेन्द्र दोषी 1943-2001

जन्म स्थान नामपुर- कोनिगामा, दरभंगा । कवि- कथाकार, गीत-गजलकार । प्रकाशित कृति: यंत्रणाक उत्सव (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। उड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत। २००३- उपेन्द्र दोषी (कथा कहिनी- मनोज दास, उड़िया) लेल साहित्य



उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। गाम- रहिका, मधुबनी । जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी । प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला यन, अहुना स्थिति, रति दह (गोना, अहि जनपदमे, दाहा गीत सय दु, कहलनि यती, सहनशील, अपन, प्रश्न वाचक (कविता-संग्रह), धूनी (सहयोगी कविता

संस्कृति रहैत छनि। उनका मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे सेहो कई अनेक रचना कएने छथि। नेपालक राजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य �नाकश� दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इन्डियाना युनिवर्सिटीसँ पोस्ट डाक्टरल रिसर्च कएने छथि।

डा. �नाकश�क जन्म २१ जुलाई १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियाम भेल छनि।

नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ करीब दू दर्जन पोथी प्रकाशित, दर्जनोंनि देशक भ्रमण सेहो कएने छथि।

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गाछक बसंत (नाटक)। �माटि पानि�क बन्ध सम्पादक। २००१ ई.-श्री उदय चन्द्र झा �विनोद�, रहिका, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।

सदस्यता- श्री नाम दयाल नाकश (1999)।



नवनी नमध लाल, जनकयून 1943-



मंग्रश्नन मा 1944-

जन्म ६ जननवी १९४४ ॐी.ग्राम-लालगंज, जिला-मधूवनीमा। प्रकाशित कृति: खाधि, अम्निनदान गाम, वदसल नागिक ॐजाग (कनिता संग्रह); ओक वट दु (कथा संग्रह), उामा लख गाम वगाद (ललित निवन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनूनाद �कूंतली� नामसँ प्रकाशित। दि फूल यैनाताॐज (अंग्रेजीम ललित



नम्रश्नन मिश्र 1945-

अनूनादक, निवंधकान ।

प्रकाशन: गमिल साहित्यक इतिहास,स्नस्रुति (दूनु अनूनाद)।

निबन्ध)। २००८ ई.-श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज,मधुबनी यात्री-चेतना पुरस्कार। २००८- मंत्रेश्वर झा (कतेक डारि पर, आत्मकथा) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।



जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह आ तरेगन- बाल-प्रेरक लघुकथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी-



राज



महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1858 -1898

नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)। मैथिली उपन्यास 'पंगु' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २०२१



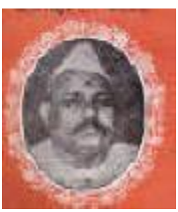
महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह 1860-1929



महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907-1962



सर हरगोविन्द मिश्र, अलीगढ़ आ कामेश्वर सिंह



विनोदानन्द झा 1895-1971



ललित नारायण मिश्र 1922-1975



डॉ. रामबरन यादव, नेपाल राष्ट्रपति





सूर्यन्द्र नारायण मण्डल



स्वर्गीय विन्ध्येश्वरी प्रसाद मंडल, राज्यपाल 1919-1982

कर्पूरी ठाकुर 1921-1988







रामविलास पासवान १९४६-

जन्म ५ जुलाई १९४६, ग्राम- शहरबन्नी, जिला खगड़िया। स्थानीय राजनीतिज्ञ।

राम लखन राम "रमण"

भोगेन्द्र झा

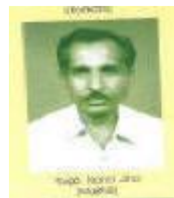


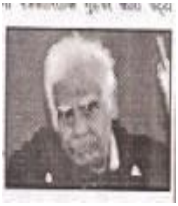




रघुनन्दन मिश्र

रमाकांत मिश्र

		रमानाथ मिश्र "मिहिर" "मैथिली मूल्यांकन एवम् लोक कि प्रकाश" प्रकाशित।
		
गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार 1929-2008	मोहन भारद्वाज 1943- ग्राम- नवानी, जिला- मधुबनी । मैथिलीक प्रखर समालोचक। २००१ स्व.-श्री आनन्द मोहन झा, भारद्वाज, नवानी, मधुबनी; यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2008 सँ सम्मानित।	योगानन्द झा 1955- २००१- डॉ. योगानन्द झा (विद्यानक ाककथा- पी.सी.राय ौधरी, अं(ग्रेजी)लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद ुरस्कार। **प्रकाशित ृति:** लोकजीवन ओ लोक ाहित्य (निबन्ध) 986, पनिभीगा (कथाकल्यांश) 987, रूकीन मोहन

		ानायणि (अनुवाद) 2000, आलेख ञ्चयन (निबन्ध) 2002, विहानक ाककथा (अनुवाद) 2003, स्नेहलता (विनिबन्ध) 2006, मैथिली पत्रकारिताक सौ र्ष (निबन्ध) 2006, गरुवनगीत (निबन्ध) 2007, लोक-साहित्य ओ शब्द सम्पदा (निबन्ध) 2007, मैथिलीक पारम्परिक ातीय व्यवसायक ब्दावली (शोध-ग्रन्थ) 2009
	 दीनानाथ झा, पत्रकार	

दीनानन्द झा "शास्त्री" ,पत्रकार		...नन्द झा, अर्थशास्त्र- पत्रकार विकास ओ अर्थतंत्र" प्रकाशित।
 प्रेमशंकर झा, पत्रकार	 शरदिन्दु चौधरी, पत्रकार	 राजेश्वर झा (१९२३-१९७७) जन्म- सहरसा जिलाक बसुआर गाम (आब सुपौल जिला)। कृति- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, अवहट्ठ: उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, विद्यापतिक संगीतमय वर्णित नायक-

<table>
<tr><td></td><td></td><td>नायिका भेद एवं नाग-नागिनी वर्गीकरण।

महाकवि विद्यापति
नाटक, शास्त्रार्थ
नाटक, कन्दर्पीघाट
नाटक, एकादशी, विद्याधर-कथा, उर्वशी, धर्मध्वज- कथा, म नका।</td></tr>
<tr><td>

एस. एन. सत्यार्थी

मिथिलाक कला आ शिल्पकलायन लखन।</td><td>

राधाकृष्ण चौधरी, इतिहासकार 1921-1985

मिथिलाक इतिहास, A Survey of Maithili Literature, THE POLITICAL AND</td><td>

प्रो. रामशरण शर्मा १९२०-२०११</td></tr>
</table>

CULTURALHERITAGE OF

MITHILA प्रकाशित।



विजयकान्त मिश्र इतिहासकार 1927 -1994

डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२७ मंगरौनी ग्राम - जे तन्त्र न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ स्नातकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कार्यक



द्विजेन्द्र नारायण झा, इतिहासकार



सुरेश्वर झा, राजनीति विज्ञान

२००१- सुरेश्वर झा (अन्तरिक्ष विस्फोट- जयन्त विष्णु नार्लीकर, मराठी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

बनल रहथि बिहार सरकार
आ पटना विश्वविद्यालयसँ
सम्बद्ध रहलाह
आ 1957 ई. सँ स्थानीय
पुरातत्व विभागमे काज
कएलन्हि आ ओकर
शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली,
हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपु
त्र, ककियन, सोनपुर, चिरान्द
, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली,
आ हम्पी खुदाइमे विशिष्ट
भूमिका रहल
छलन्हि। हिनकर लिखल-
सम्पादित पोथी सभ अछि:
1.वैशाली,1950 2.कुम्हरार
उत्खनन: 1950-1957
3.पुरातत्व की दृष्टिमे
वैशाली 4.नागेश रत्नाज
पानिराषद्युत्खनन 5.मिथिला
आर्ट एण्ड
आर्किटेक्चर (सम्पादित)

6.कम्प्यूटर इन्टरनेट □रु मिथिला 7.शृंगार भजनावली- एक अध्ययन 8.उग्र यूनाग्नविज्ञान- 9.यूनाग्न शब्दावली।



भागीरथ लाल दास

भारतक कएक देशमे राजदूत रहल छथि आ जी.ए.टी.टी. मे भारतक प्रतिनिधि सेहो छलाह।



लक्ष्मीकान्त झा रिजर्व बैंक गवर्नर 1913-1988



एन. एन. झा दिल्ली मेट







कामेश्वनाथ झा "अ् मल" 1938-

जन्म- 4 जनवरी 1938, ग्राम कोइलख (मधुबनी)। ग्रिसंस (कथासंग्रह) प्रकाशित।

राधानारायण झा 1941-

रमाकांत राय "रमा" 1947

जन्म- राधा पूर्णिमा सम्वत् 2003, प्रथम रचना- नाटक, वाल मासिक प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय संगम 1964ई., प्रकाशित कृति (क) गीनटा वावाजी- नूसीसँ मैथिलीम मैथिलीम टालस्टायक कथाक अनुवाद- 1967ई.म, (ख) फूलयात, कविता संग्रह 1978, (ग) रंगक (गाला 2004 ई.म), (घ) कटैत आँखि : हँसैत आँखि , कथा संग्रह-2005, शीघ्र प्रकाश्य- कृष्णकान्त मिश्र (विनिवन्ध) साहित्य अकादमी नई दिल्ली। प्राय: ३० सँ रचना (कथा-निवन्ध कविता)

थिली हिन्दीक पत्र-

त्रिका, आकाशवाणी एवं

ूरदर्शनसँ प्रकाशित/ प्रसारित।

ाहित्य अकादमी द्वारा

ायोजित कवि सम्मेलनक

ायोजनक क्रमम चलक चयटम

तिदहिना पएन ढावा

निगमा विकलांग। सवा निवृ

ध्यापक (उच्च विद्यालय)

म्पर्क- श्री

मानिवास, मानानाय टाल या.

नरुन (समस्तीपुर)।



प्रारुसन मरुझ 19
47-



मरुझ 1944-2009



सुराषचन्द्र यादव 1
948-

जन्म: रुलाही, सुपौल, बिहार। प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक। वृत्ति: भू.ना. विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसामे मैथिली विभागाध्यक्ष। प्रकाशित कृति साहित्य अकादमीसँ प्राकाशित मोनोग्राफ (शैलेन्द्र मोहन झा। सहयोगी संकलन-संकल्प। �राजकमल जयन्ती प्रसंगक संपादन।

जन्म मधुबनी जिलाक जमसम गाममे। प्रसिद्ध मैथिली गीतकार आ गायक।

जन्म ०१ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलहा-मनाही, सुपौल। घनदखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाडि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९१, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा

उपनिषद्, पटना, २००१, नाग कमल चौधरी का सरून (हिन्दी जीवनी) सानांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, बनैत-बिगड़ैत (कथा-संग्रह) २००९। मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजीमे अनेक अनुवाद प्रकाशित।



सुभद्र झा 1909-2000

"फॉर्मेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज"क लेखक।

१९०९- सुभद्र झा (नागिक पत्रक



रामावतार यादव, मैथिली भाषिकी, नेपाल 1942-

देश-विदेशक भाषाविज्ञान जर्नलमे प्रकाशित आलेखक द्वारा मैथिलीक विशिष्टताकेँ उजागर कनिहार। *मैथिली*



योगेन्द्र प्रसाद यादव, भाषिकी, सिरहा, नेपाल 1946-

1998 ई. मे जर्मनीसँ प्रकाशित *[illegible] मैथिली*

उम्पन, निवन्ध)यन मैथिलीक साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानित।



ब्रनिआस्त्र1984 ई. म जर्मनीसँ आ मैथिलीक सन्दर्भ व्याकनध1996 ई. म वर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 ई..म लंदनसँ प्रकाशित रानीय आर्यरासायूस्क म संकलित हिनकन मैथिली राषा संवंधी आलख विशेष उल्लखनीय। नयाल नाजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ यासाढ क्षाम् प्रज्ञा-यूनस्कानसँ सम्मानित।



सिंटैक्स आ टॉयिक्स ऑन नयालीज लिंग्विस्टिक्स, नोटिंस ऑन मैथिली लंगुअज- लिटनचन अण्ड कल्चन आ लक्ष्मीप्रासी ऑन नयाल (सम्यादित) प्रकाशित। नयाल नाजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानम राषा-विरागक प्रारू नहि कााक मरत्वपूर्ण कार्यक सम्यादन। नयाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्या श्री यागन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नयाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्या श्री यागन्द्र प्रसाद यादव।



नमानन्द झा 'नमध' 1949-

जन्म:

02 जनवरी 1949, शिक्षा-एम.ए., पीएच.डी., आजीविका-राजकीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। **प्रकाशन:** 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली गद्य कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बसातल,2003, 6. रञ्जनल, 2005., 7. निर्माण कोना हुनु कनं? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आनन्दिक कथा,

नामलावन ठाकुन 1949-

श्री नामलवन ठाकुन, जन्म १८ मार्च १९४९ ग्रा.पलिमारुन, मधुबनीमा। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। राखाड़ी आन्दोलनम सक्रिय राभीदारी। **प्रकाशित कृति**- ग्रनिवासरूका, माटियानिक गीत, दशक नाम छल सान विदेया, अपूर्ना (कविता संग्रह), वमाल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनूदित कविता), *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*(अनूदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धरोहर रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आँखि मूनने: आँखि खोलने (निबन्ध)। अनुवाद लेल **राबा-रानी सम्मान** 2003-04 (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) आ

गंगा प्रसाद मंडल "अकेला", नेपाल 1944-

यं सूदन झा शास्त्री नाट्रिय प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लोक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिनीषक फूल (अनुवाद) प्रकाशित।

1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द
नवनावली, 1981,
10. जनार्दन झा जनसीदन
कृत निर्दयीसासु (1914) आ
पुनर्विवाह (1926), 1984,
11. जगन्नाथझाकृत
श्रीजगन्नाथपुरी
यात्रा (1910), 1994,
12. गजनाथ झाकृत
सुनराजविजय
नाटक (1919), 1994,
13. रासविहारीलाल दासकृत
सुमति (1918), 1996,
14. जीवछ मिश्रकृत
रामेश्वर (1916), 1996,
15. रुद्रघाँट (रुद्रवाणी),
1998, 16. नुवय गाँ सत्य न
गाँ झूसि, 1998,
17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला
दर्पण (1925), 2003,
18. यदुवर

सकैं छी, किन्तु किछु आउ शक्ति
वन्द्योपाध्यायक बांग्ला कविता-संग्रहक
मैथिली अनुवाद लेल पुरस्कार। विदेह
सम्पादकक समानान्तर साहित्य
अकादमी पुरस्कार २०१२ अनुवाद
पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर-
(पद्मानदीक माझी, बांग्लासँ मैथिली
अनुवाद, बांग्ला-उपन्यास - मानिक
वंद्योपाध्याय)

नवनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति निबन्ध, 2005, 20. मैथिली उपन्यासम चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लेल **राजा-रानी सम्मान 2004-05** (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) द्वारा विगहा आ0 कथा- रवीन माहन्त सनायणिक उडिया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त।







महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल	यनमश्नन कायति, धनुषा, नेपाल	जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल
		
सुरेश झा, नेपाल 1920-1995	नारिहरी नमश झा 1950-	डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952- कवीन (मैथिली) यन थोधा
		
विनोद बिहारी लाल 1953- जन्म स्थान यवदी, मधुवनी, बिहार	अनिरुद्ध ठाकुर 1954- यनी टुटि नहल अछि (कविता संग्रह), अज्ञानक विनाश (कथा	राम दनिहन 1954- जन्म स्थान वनहा, वनीयडी मधुवनी, बिहार। कवि, कथाकार प्रकाशित कृति : सनिसाम ...

।चर्चित कथाकार। सयसँ ऊपर कथा प्रकाशित।	संग्रह), वड़नुखिया प्रदेश म (गजल संग्रह)।	कथा संग्रह) अनूदित कृति : गीतिप्रिया (धर्मवीर भारती)
 **दिनेश कुमार झा** मैथिलीक इतिहासपर लेखन।	 **अशोक कुमार ठाकुर** जन्म 2 जनवरी 1944 ई.। गाम बड़गाँव (पंडौल)। नागमंडल (नाटक-अनुवाद), निशांत, वसुधाक संसार (उपन्यास)	 **प्राणनारायण झा, नेपाल**
 **शीतल झा, नेपाल**	 **उग्रनारायण मिश्र "कनक "**	 **डॉ. शम्भुनाथ चौधरी** 1920-2008



चन्द्रकांत झा



पंचानन मिश्र



प्राफुसन गुनमौना

ागिनीश्ननयन लखन।



महेन्द्र नारायण सिंह "मगन"



सूर्यकांत झा, जनकपुर



रमण झा (1957-)

चना: पञ्चाध्याय (कथा-संग्रह)- 995, काव्य-वाटिका (कविता-ंग्रह)- 1999, अलंकार-ास्कर (पूर्व-खण्ड) - 002, अलंकार-ास्कर (अलंकार शास्त्र)- 003, भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)-

2008, संग

सम्पादन: मैथिली (मिथिला

विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक

शोध-पत्रिका) -

1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला

विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक

शोध-पत्रिका)- 2007,2008



विजयनाथ झा

"अहींक लेल" (गीत-गजल संग्रह प्रकाशित)।



योगानन्द हीरा



बाबा वैद्यनाथ

गुनगुना रहल हूँ (गजल संग्रह)







जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५० -

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950,शंभुआन, मधुबनी । सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. गाना अतनाम -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओहि पार-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।

नित्यानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५ कें कोथिनियाँ, मंमानपुर मधुबनीमे जन्म। यनाती जकाँ, विछओल काला यिनीत जकाँ, दनुरुक रूल जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारणे बेस चर्चित रहल । वितृष्णापूर्ण यनिस्थितिक यास्तु जिम्मवार समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक ।

हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कान्हलखम। अरिविंद्रबक अध्ययन छात्र मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। "एना त� नहि रह" (कविता संग्रह)। २००८ ई. - श्री हरेकृष्ण झाकेँ कविता संग्रह �एना त नहि रह�लल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



उदय नारायण सिंह नचिकेता 1951-

जन्म-१९५१

ई. कलकत्तामे। पहिल काव्य संग्रह �कवयो वदन्ति�। १९७१ �अमृतस्य पुत्राः� (कविता संकलन) आऽ �नायकक नाम जीवन� (नाटक)| १९७४ मे �एक छल राजा�/ �नाटकक लेल� (नाटक)। १९७६-७७ �प्रत्यावर्त्तन�/ �रामलीला�(नाटक)। १९७८मे जनक आऽ अन्य एकांकी।



आशीष अनचिन्हार

मूल

लेखन: कुमारि इच्छा (गजल संग्रह), डंघा जाठी (गजल संग्रह), अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह), मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली नव प्रकाशिकाक इतिहास, मैथिली गजलक नवी नकानन, शब्द-अर्थ-शक्ति।

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन): मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)



कुमार मनन 1958

ग्राम मुरैठा। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ व्यंग्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। मैथिलीमे १९९० ई सँ निरन्तर लेखन। २००८ ई. सँ दस सालक मौन रंगक बाद पुनः रचनाक दासन यालीक आनन्द।

१९८१ �अनुस्वार� (कविता-संकलन)। १९८८ �प्रियंवदा� (नाटिका)। १९९१- �रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य� (अनुवाद)। १९९७ �अनुकृति�- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ �अश्रु ओ परिहास�। २००२ �खाम खयाली�। २००६मे �मध्यमपुरुष एकवचन� (कविता संग्रह। २००८ ई. मे नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" सम्पूर्ण रूपेँ "विदेह" ई- पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भऽ एकटा कीर्तिमान बनलक। २००९

स्व.-श्री उदय नारायण सिंह �नचिकेता�क नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।		
 कीर्तिनाथ झा 1955- कुनल: मैथिली रानानुवाद	 महेन्द्र हजारी	 स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी, दरभंगा।
 स्व. महेन्द्र नारायण झा, बलौंजा, मधुबनी	 स्व.राजकुमार मल्लिक, साहराय (पाखनिटोला), मधुबनी	 लक्ष्मीपति सिंह



फूलचन्द्र मिश्र रमण



किशोरनाथ झा

गाम- लिहा, पो. सनिसरवाही, मधुबनी। "लोकवेद" पोथी प्रकाशित।



सूर्यनारायण झा "सरस"

पोथी "मैथिली श्री सीतारामचरितमानस" प्रकाशित।



कलानन्द भट्ट

काश यन लहास रूमन मैथिली गजल संग्रह



दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी। मैथिली रंगमंचक मिथि- यात्रिक, कोलकाता।



डॉ. सुधाकर चौधरी १९४६-

जन्म १७ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित पोथी: काजर, तीन रंग सतरह चित्र (कथा

संग्रह), यंत्री जी ठम्पा (प्रहसन), निम्नी सुराग (नाटक)।



स्व. चुनचुन मिश्र, न हिका, मधुबनी।

मिथिला राज्य आन्दोलन कर्मी।



सत्यनारायण लाल कर्ण

मिथिला चित्रकला



ले. कर्नल मायानाथ झा 1945-

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.। ग्राम- रुनाम (मधुबनी)। जकर नारि चतुर होइ (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ वाल साहित्य पुरस्कार- ल.क. मायानाथ झा

(जकान नारी बाबुर हाऊस, कथा संग्रह)



श्याम किशोर सिंह



सचिन्द्रनाथ झा

मिथिला लोक चित्रकला



कालीनाथ ठाकुर

ग्राम सर्वसीमा



राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राध्यापक विमल शिक्षाक हकम



नरेश कुमार विकल 1950-

जन्म २१ जुलाई १९५० रगनानपुर दसुआ (समस्तीपुर)। काव्य- अनियन, मद्धुआ मदन रस टपकय, विन वाणी दीय जनय। कथा-



जनक किशोर लाल दास

विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। कम्मे लिखिकऽ यथेष्ट यश अर्जनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.व. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाल छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक

संग्रह- हरि गेल दर्दक ईरान। उपन्यास- टहकैत टीस। नाटक- चाखगर खोंच।

साहित्यिक शुन्यक नूतन स्थापित भऽ गेल छथि।



कृष्णचन्द्र झा "मयंक"



लक्ष्मण झा "सागर"

1953-

"उठनि बैसू कौआ" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित।



रघुवीर मोची



शारदानन्द दास "परिमल"



शशिबोध मिश्र "शशि"

1946-



सुरेन्द्रनाथ

		
अमरनाथ १९७७ ई. मे "उर्मिका" लघुकथा संग्रह प्रकाशित। हास्य कथाकार।	बच्चा ठाकुर	बुद्धिनाथ मिश्र
		
राजाराम सिंह राठौर, धनुषा	वैद्यनाथ विमल 1955-	डॉ वासुकीनाथ झा 1940-
		

जितेन्द्र मिश्र "जीवन"	वीरेन्द्र नारायण झा	वीरेन्द्र झा 1956- गोनू झा पर लेखन।
		
बैकुण्ठ झा 1954- पिता- स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म- २४-०१-१९५४ (ग्राम- रूपनाउ, जिला- दरभंगा), शिक्षा- स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीतक रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक "हास्यशिरोमणि गोनू झा	बैकुण्ठ झा	नित्यानन्द झा 'पञ्जीकार' 1957- जन्म- 09.04.1957, पण्डुआ, गौल, ककरौड़(मधुबनी), नशाउप(पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ सम्प्रति पूर्णिया। पिता स्व. श्री पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पितामह- स्व. श्री रिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष

तथा अन्य कहानी" क लेखन। एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १७ उपन्यास तथा कथाक लेखन।

धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन, 22 वर्षक वयससँ पत्री-प्रबंधक संबद्धेन आ संपादनमे संलग्न। कृति- पत्री शाखा पुस्तक लिपिनमे आ संबद्धेन।



महेन्द्र नारायण कर्ण



डॉ. विश्वेश्वर मिश्र



अर्जुन नारायण चौधरी



नरेन्द्र

गजलकार।



महेन्द्र मिश्र, नेपाल



कमल कांत झा 1943-



महाप्रकाश 1946-

जन्म: बनगांव, सहरसा, बिहार। वरिष्ठ कवि ओ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता संग्रह, संग समय के (कविता संग्रह)। कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २०१० ई.- श्री महाप्रकाश (कविता संग्रह �संग समय के�)।



छत्रानन्द सिंह झा 1946-



अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947-

मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक अग्रिम पंक्तिक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। हास्यव्यंग्य लेखन हिनक विशेषता थिकनि। धनुषा जिलाक दुहबी गामक नवनिहाल श्री चौधरीक जन्म

६ अक्टूबर १९४१कऽ भेल छनि। हिनक अंग्रेजीक ओडियान नामसँ एक कविता-संग्रह प्रकाशित छनि।



विद्यानाथ झा 'विदित'



सियाराम झा "सरस" 1948-

जन्म स्थान मंगरथ, मधुबनी बिहार। प्रसिद्ध गीतकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ कयलनि। प्रकाशित कृति आँजुर भरि सिंगरहार, शोणिताएल उगैत सूर्यक धमक (कथा संग्रह)।



अग्निपुष्प 1948-

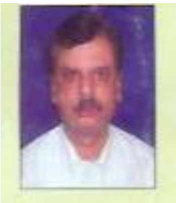
जन्म: गनौली, दरभंगा। मूलनाम महेन्द्र झा। मैथिलीमे [illegible] कविता संग्रह प्रकाशित। मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित। वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। [illegible]जा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन। वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।



मधूकांग मा 1949-



दीनू राऽ



सयानन्द या0क



यागीनाज



कुञाल 1951-



नाम रनास कायाठ अमन, धनूषा, नया ल 1951-

जन्म-वघवौना, जिला धनूषा (नयाल)। वन्नका0नी: ञौ नाऽ्ग धुँआ (कविना संग्रह), नहि, आव नहि (दीर्घ कविना), गाना संगे जञ्चौ न कुजवा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी

पटना, १९८४), मामक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), नारी बन्धकी (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्तः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सरक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्स), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री

नाम स्मारक कार्यति 'अमन' (2010)।



धीरेन्द्रनाथ मिश्र



शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951-

लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा. रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी भाषामे प्रकाशित अछि। स्वान्त-सुखाय ओ कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि। हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सामान्यतः रोचक अछि।



ब्रह्मदेव लाल दास

दखलायल जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर अध्ययनक परिणाम थिक। सामाजिक तथा साहित्यिक संघ-संस्थासभ सभ सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक दनतीहा गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कऽ भेल छनि ।





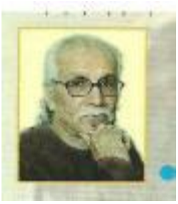


चन्द्रभूषण खान

गाम- पड़ीटाल, जिला मधुबनी। लघुकथा लल वर्णित प्रशंसित।

दयाकान्त झा

राजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल







पद्मश्री श्री गजेन्द्र नारायण सिंह	हरिकान्त झा	इन्द्रनारायण झा
		
प्रवासी साहित्यालंकार	सीताराम सिंह	कुलानन्द मिश्र
		
शैलेन्द्र कुमार झा 1952-	शिवशंकर श्रीनिवास 1953-	अशोक 1953-
जन्म स्थान हरिपुर, बकशी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आगाह अवगाह, दशम खुट्टी (कथा	जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ आलोचक। गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि। प्रकाशित कृति :	जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, कवि ओ सम्पादक। प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह (कविता संग्रह) प्रकाश

संग्रह), ॠकानामिक हिस्ट्री ▯रु मिथिला (अंग्रेजी) ।

त्रिकाध, अदरुन, गाछ-याग, गामक लाक (कथा संग्रह)।

सरुयागी कथा संग्रह), उदि ागिक रान (कथा-संग्रह), मागलन (कथा संग्रह)।



निरुपि आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगन, मधुवनी, विहार। चर्चित कवि, कथाकान, संपादक । प्रकाशित कृति टूटा उपन्यास टूटा समीक्षा, गीन टा कथ संग्रह, टूटा गीत-गजल संग्रह आ चानिटा कथा-संग्रह प्रकाशित। २००६- निरुपि आनन्द (का0, कथा)मैथिली



कदान कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, विहान। चर्चित कवि, कथाकान आ संपादक। प्रकाशित कृति : आकान लैग शब्द (कविता संग्रह), अनूदित कृति नाजा नाम मारुन नाय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, रानगी मंडन (पत्रिका)।



डॉ. शशिनाथ झा 1954-

गाम-दीय, जिला- मधुवनी। मैथिली, बांग्ला, नवानी आ दवनागनी पांडुलिपिक विशेषज्ञ। साहित्य अकादमीक रासा सम्मान 2007 क्लासिकल आ मध्यकालीन साहित्य लल।

लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।		
 **धनुर्धर झा** गाम- विशौल। "वाक्यार्थविमर्श" लेल श्रीवाणीभूषणालंकरण पुरस्कार 2010 प्राप्त।	 **शिवकान्त पाठक**	 **डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी", वैज्ञानिक** "विज्ञानक बतकही" प्रकाशित।
 **राजनन्द झा** २००६- राजनन्द झा (कालवेला- समरेश मजूमदार, बांग्ला)लेल साहित्य	 **आद्यानाथ झा "नवीन"**	 **अमलदास 1956-**

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।		
		
चंद्रनाथ मिश्र	दिगम्बर ठाकुर	गणेश झा 1950-
		
कन्हैयानारायण लाल कर्ण	शैलेन्द्र आनन्द 1955-	कमलाकांत झा अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना
		

ललन प्रसाद ठाकुर

1951-1995

जन्म ७ फरवरी १९७१ मुंगेर मे श्रीमती सुशीला देवी आ श्री दीनानंद ठाकुरक द्वितीय बालक। हिनक ग्राम- सतौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टील मे चाकरी। प्रकाश झाक फिल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भूमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हिनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छथि :बटुका बाबू,मिस्टर नीलो काका, लंगिया मिनवाउजी,बकलल आदि बा अंग।

डॉ. कमलानन्द झा

लोकनाथ मिश्र



डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी 1966-

जन्म: 5 मार्च 1966 ई. गनपतगंज, सुपौल। मैथिलीक प्राध्यापक। राज्यमंत्रीक पदक आ बिहार आ झारखण्ड सरकार द्वारा पुरस्कृत। झारखण्डक मैथिली आन्दोलनक अग्रणी।



अशोक अविचल

जन्म- ३ जनवरी १९६१, गाम- नडुआ संग्राम, जिला मधुबनी। मैथिली प्राध्यापक। रचना: एक बनू नेक बनू (लघु नाटक), मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमरा दशक भागम (मैथिलीक प्रथम असंगत नाटक), सम्पादन: झारखण्डक स्वर, कपाट (नौ अंक), झारखण्ड वाणी (हिन्दी साप्ताहिक), सम्मान: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सम्मान (२०००), परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति सम्मान (२००८)



डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-तरंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।



डॉ. उमाकान्त

मैथिली व्यंग्य-आलेखक पोथी "अयन बान" प्रकाशित।



सुशील 1942-

अस्मिता (लघुकथा संग्रह), रामनी (नाटक) प्रकाशित।



श्रीदत्त

मूल नाम- नागेश्वर झा। कथा-संग्रह "हिलकान", नाटक "लाल्हकळना", गीत-प्रबन्ध "पूलामा" प्रकाशित।



सुकान्त सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक गौंनी गाममे 1950 ई. मे भेलन्हि । बी. ए. पास कए ई पटनाक दैनिक �जनशक्ति�क सहायक



डॉ. दनकांत मिश्र 1952-

पिता कविचूड़ामणि पं. काशीकांत मिश्र "मधुप", "वनीयून अनुमण्डलम मैथिली" पोथी प्रकाशित।



डॉ. नित्यानन्द लाल दास

पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ

सम्पादक छलाह। हुनि नव

रानग

टाइम्स, यटनामा वाल्यनस्थासँ

अयन योगृक (यिग यात्रीजी)

गुद्य कविगा कनवाक गथा कथा

लिखवाम सहा यश अर्जन

कअलहि अछि। वर्द्धमान

नाजनीगि सामाजिक विषयसँ

सम्बद्ध व्यंथात्मक, सनल राषाम

लिखल नव कविगा हिनक

विशेषगा छहि। गामघनक

यनिवश गदनुकूल शब्द ओवं विम्ब

नवनाम क्रमहि सिद्ध छथि।

अंग्रेजी विराग्गाध्यक्ष यदसँ

१९९८ म अवकाशयाप्त।

डॉ. सुनह्य झा "सुमन"क

संयाजकत्वक

कार्यकालम "मैथिली

यनामर्शदागृ समिगि" (साहित्य

अकादमी, दिल्ली)क सदस्य।

मैथिली यत्रिका सर जना

वट्रक, प्रयाग; मिथिला

मिहिन, यटना; स्वदश, दनभंगा

; यहुँव, यटना आ यनी

यलान, अनगियाम नवना

प्रकाशिग। १९६१ ई. सँ

नाष्ट्रीय स्वयंसवक संघ म

सक्रिय। प्रांगीय प्रगिनिधि

२००४ धनि जिला

सनसंघवालक।

ज.यी.आह्वालनम लाकगंत्र

सनानी। डॉ. ओ.यी.ज. अब्दुल

कलामक अंग्रेजी

याथी "इग्नाइटड

माइण्ड्स"क मैथिलीमे "प्रज्वलित प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०- डॉ. नित्यानन्द लाल दास- (इग्नाइटेड माइण्ड्स- डॉ.ए.पी.जे. कलाम, अंग्रेजी) लेल।



राजनाथ मिश्र 1950-

"[illegible] मिथिला" प्रकाशित।



पशुपतिनाथ झा, महोत्तरी, नेपाल 1954-

हिनक लेखन चिन्तनात्मक होइत अछि आ सम्बद्ध विषयमे नीकजकाँ जानकारी दैत अछि। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक लेख-रचना बराबरि



अनिलचन्द्र ठाकुर 1954-2009

जन्म 13 सितम्बर 1954 ई.केँ कटिहार जिलाक समेली गाममे भेलन्हि। 1982 ई.मे हिन्दी साहित्यमे स्नातकोत्तर

दखवाम अवेौ नईछ । ना.ना.व. कौष्यस, ञनकयुनधामम मेँथिली विषयक प्राध्यापनम संलग्न श्री मा मेँथिलीसम्बंधी सछ्ठनात्मक गतिविधिसँ सदा ज्ञ७ल छथि । मेँथिली रामाक लायाम्मुख अवस्थाम नहल अयन लियि गिनह्णाम विशेषस्णा नखनिहान श्री मा ओकन संनञध-सम्बर्द्धनक दिशाम सदा क्रियाशील छथि । प्रध्यायक मा मेँथिली महाकाव्यम नस निनुयध विषययन विद्यावानिधि कओन छथि आ शिञा गथा कानून विषयम सदा स्नातक छथि । मधाफनी जिलाक ओकनहिया नहुनिहान श्री माक जन्म ४ दिसम्बन १९७४ कs हलछनि । वर्त्तम मिथिला नत्नसँ सम्मानित।

कलाक वाद नवम्बन '93 सँ नवम्बन '94 धनि "सुवरु" हस्त लिखित यत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कओलहि आ काशी ञत्रीय ग्रामीध वैंकम अधिकानी नहथि। मेँथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेञीम समानन्युँ लखन। मृत्युक युर्व ब्रन ग्रुमनसँ वीमान चलि नहल छलाह। **प्रकाशित कृति**: आव मानि जाउ(मेँथिली उयन्यास)- यहिल रानगी-मंउन यत्रिकाम प्रकाशित हल, हुन मेँलानंग द्वाना युस्तकाकान प्रकाशित हला ; कव(अंगिकाक यहिल खण्ड काव्य,1975); ओक ञौन नाम (हिन्दी नाटक,1981); ओक घन सञक यन (हिन्दी उयन्यास,

1982); द पयञ्च (अंग्रेजी उपन्यास, 1990); अन्त कहाँ सुख पावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आब मानि जाउ (मैथिली उपन्यास) - एहि उपन्यासमे एक एहन युवतीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि जे अपन लगनसँ जीवन बदलैत अछि। असंख्य गामक स्त्री कथा कुलीनताक अधःपतनक कथा, सम्मानविहीनताक उद्घाटन आ स्वनिर्णयक पीढ़ीकेँ बबण्डाक चोनी छी।



वृषेश चन्द्र लाल



नारायणजी 1956-



जन्म 29 मार्च 1955 ई. कँ रलछि। पिता: स्व. उदितनारायण लाल,माता: श्रीमती तुलसवती दवा। हिनकर छथिहानक नाम विश्वेश्वर छथि। मूलत: राजनीतिककर्मी । नेपालम लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे ११ बेर गिरफ्तार । लगभग ८ वर्ष जेल । सम्प्रति तनाई�मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्�ीय उपाध्यक्ष । मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित । आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पी. कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली नुवादक तथा नेपालीमे संघीय शासनतिन नामक पुस्तक प्रकाशित । डा विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक

जन्म: घाघरडीहा (मधुबनी)। मैथिली भाषा-साहित्यमे एम. ए., पी-एच. डी. कामेश्वर सिंह संस्कृत विद्यालय, घाघरडीहामे अध्यापन । प्रकाशित कृति: �घनि घुनि नहल छी� (काव्य-संग्रह)।

डॉ. श्री श्रीशंकर झा

1952-

सक्रिय याद्धा छथि। नयाली नाजनीतियन वनावनि लिखैत नहैत छथि।



जगदीयनानायध "दीयक"



नाजदेव मंडल

शिजा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,यता- ग्राम- मूसहनियाँ, नतनसाना (निर्मली, मधूबनी)। **प्रकाशित कृति**- अम्बना-कविता-संग्रह, हमन टाल (उपन्यास), वसुंधना(कविता संग्रह), जाल (यटकथा), लाज (एकांकी), जल रंजन (उपन्यास), त्रिवधीक नंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह), यंचैती (लघु यटकथा), नायसी।



शिनप्रसाद यादन



द्दीनन्द्र कुमान झा 1958-

जन्म 30 अगस्त 1958,गाम-काञ्ञलख (मधुवनी), पिता श्री कामन्द्र नाथ झा। द्वांसदर्शन (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।



मानशंकन मनुज 1958-

जन्म गङ्गनिया (मानयौन, मधुवनी)म, 1978सँ 1992 धरि नौसनाम विरिन्न जनजायन कार्यक्रम, रुन यात्री नलमा सम्मत्र (कथा संग्रह) प्रकाशित।



नवानाथ झा



महेन्द्र नानायण ना म 1958-



गानानन्द नियागी 1966-

मदिवी, सहनसाम जन्म। यदिल याथी अयन युवक साक्ष (गजल संग्रह) १९९१ म प्रकाशित। अन्य



रालवन्द्र झा

ए.टी.जी., वी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटन कलाम डिप्लामा। मैथिलीक

	पूष्क रुष्कऊय, प्रलय रहस्य(कविता-संग्रह), अगिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर संकलन-सम्पादन। साहित्य अकादमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार २०१०-तारानन्द वियोगीकेँ पोथी "ई भेल नै की भेल" लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार २०१० ई.- डॉ. तारानन्द वियोगी।	अणिनिक हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजरातीम निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरम निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक �सीता� क निर्देशन। �वासुदेव संगति� आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ निम्न टी.वी. मीडियाम रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य। लेखन- वीछल बनायल मराठी एकांकी(अनूदित), सिंहावलोकन (मराठी साहित्यक १७०

वर्ष), आकाश (डी.टी.वी.क

धारावाहिकक ३०

एपीसोड), जीवन सन्ध्या(

मराठी

साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), ध

नाजी नाना चौधरी

(मराठी), स्वयम्वर

(मराठी), हिन नहीं करी

नहीं(हिन्दी), आहट

(हिन्दी), यात्रा (मराठी

सीरियल), मयूरपंख (मराठी

बाल-धारावाहिक), रुक्मअन

ऽऽन २०० ए.डी.)

(डी.डी.)। २००९ म-

गोलवल्क मा (वीठल वनायल

मराठी एकाँकी- सम्पादक

सुधा जोशी आ रत्नाकर

मतकरी, मराठी)लेल साहित्य

अकादमी मैथिली अनुवाद

पुरस्कार।



मनमोहन झा



कुमार शैलेन्द्र



मेश 1961-

न्म स्थान

हथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित

थाकार आ कवि। प्रकाशित

ृति: समांग, समानांतर, दखल

कथा संग्रह), नागफनी (गजल

ंग्रह), संगोर, समवेत स्वरक

आगु, काठी धानक सपना, पाथर

न दूबि (काव्य

ंग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक

निबंध)।







मघन प्रसाद 1961-

प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कडौली मल्लिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार आ रंगकर्मी। प्रकाशित कृति: गुमकी आ बिहाड़ि, विसूवियस (उपन्यास), औतीह कमला जयतीह कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सरोकार (कथा संग्रह)। २००७- प्रदीप बिहारी (सरोकार, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।

वद्दमोहन झा यती



डॉ. सुरेन्द्र लाल, नेपाल



नाशन जनकपुरी, नेपाल



डॉ. अरविन्द अक्कू 1957-



फूलचन्द्र झा "प्रवीण" 1961-

ग्राम तुमौल दरभंगा, आयल नवल प्रभात, बाँसक गाछक छाहरि, हमरा मोनक खंजन चिड़ैया, वसन्तक बजनिआँ (कविता संग्रह), फूल हाल्हूँ रविसुत (कथा संग्रह)।



देवशंकर नवीन 1962-

ऊ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पतुरिया (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।



कुमार मनीष अरविन्द 1964-



बदरी नारायण वर्मा



राजेन्द्र किशोर, नेपाल



श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आ बहुतरास रचना प्रकाशित।

सम्प्रति- कान्तिपुर प्रकाशन अन्तर्गत कार्यरत।



हिमांशु चौधरी, नेपाल

पिता : स्वर्गीय रामशरण चौधरी, माता: श्रीमती चन्द्रावती चौधरी, जन्म: वि स २०२०/६/७ लहान, सिरहा, शिक्षा: स्नातकोत्तर(नेपाली), पेशा: पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति), कृति : की हमर साँच ? (मैथिली कविता संग्रह), विगत दु दशकसँ नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील



सत्यनारायण महतो



पुरनशरण यादव

आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।



नागेन्द्र झा, धनुषा



अशोक कुमार मेहता



धर्मेन्द्र विह्वल, सिरहा, नेपाल 1967-

नक्षा नकैत जिनगी, एक सृष्टि एक कविता, एक समयक बात, धुआइल आकृति सन (मैथिली कविता संग्रह), नेपालका उत्कृष्ट नाटकसभ, गोनुझाका कथासभ (मैथिलीसँ नेपाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 आ बाल-साहित्य संदर्भक तीनटा पोथीक सह-लेखक। पत्रकारिताक मूल

		सिद्धांत (मैथिली, प्रसम), दलित रिपोर्टिंग मैनुअल (नेपाली, प्रसम)।
 धीरेन्द्र कुमार झा	 निमिष झा, नेपाल	 (गौरीनाथ (अनल कान्त) "अन्तिका"क सम्पादन।
 आनन्द कुमार झा 1977- जन्म स्थान: मंरुथ, मंझानपुर; पिता	 नन्दनीपुत्र रघुनाथ, नाटककार	 वेद्धश

स्व. अरविन्द झा, माता श्रीमती शुभकाली देवी, प्रकाशन- "धधाइत नवकी कनियाँक लहास", "हठात् परिवर्तन", "बदलैत समाज", "टाकाक माल", "कलह" (पाँचू मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)		
 राम सेवक सिंह	 शहीद दुर्गानन्द झा, नेपाल	 उदयनाथ झा "अशोक"



कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।



कपिलेश्वर साहु



डॉ. शम्भु कुमार सिंह

जन्म:

18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्ण पदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] ?मैथिली

		नाटकक सामाजिक विवर्धन� विषय यन यी-एच.डी. वर्ष 2008, मिलका माँ. रा.विश्वविद्यालय, रागलय्‌न, विद्यान सँ मैथिलीक कणक प्रतिष्ठित यत्र-यत्रिका सरम कविता, कथा, निवंध आदि समय-समय यन प्रकाशित। वर्तमानम शैक्षिक सलाहकान (मैथिली) नाष्ट्रीय अनुवाद मिशन, कहीय रानतीय राषा संस्थान, मैसून-6 म कार्यनत।
		
कृष्णचन्द्र यादव, नयाल	शिवकान्त ठाकुन	शाराकान्त मा



उमाकान्त झा आ प्रियंका, मैथिली रंगमंच



श्यामानन्द ठाकुर



हरिकांत लाल दास, नेपाल



शशिनाथ ठाकुर, नेपाल



दुर्गानन्द मंडल

संचयिका, कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह), चन्द्र प्रकाशित।



शिव कुमार झा 1973-

शिव कुमार झा ��टिल्लू��,पिताक नामः स्व. काली कान्त झा ��बुच��, माताक नामः स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथिः 11-12-1973,शिक्षाः

स्नाणक (प्रणिष्ठा),जन्म स्थानः
मातृक- मालीयून मा७गन, जि.
- वगुसनाय, मूलग्रामः ग्राम-
यग्रालय - कनियन, जिला -
समस्तीयून, यिन: 848101,संप्र
णिः
प्रवंधक, संग्रहडा,ज. एम. ए.
स्टार्स लि.,मन गाउ, विस्तृयून
जमशेदयून - 831
001, अन्य गणिविधिः
वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धनि
विद्यायणि यनिषद समस्तीयूनक
सांस्कृणिक ,गणिविधि एवं
मैथिलीक प्रचान-प्रसान हतु
डॉ. ननश कुमान विकल आ
श्री उदय नानायण चौधनी
(नाष्ट्रयणि युनस्कान प्राप्त
शिक्षक) क नतृत्व संलग्न।
प्रकाशिण कृणि: उत्प्रेरा-

		कविता-संग्रह, अंशु- समालोचना।
 **नाम विलास साहु** मनक मोल, अंकुर- लघुकथा संग्रह, न थक वक्का उलटि चलै वाट (क विता/ टनका संग्रह), कर्म वि नु जग सुन्ना (शासन कविता/ ट नका संग्रह), सुलक खिचडी (विहनि/ लघु कथा संग्रह), दुख वचनी (लघु कथा संग्रह) प्रका शित।	 **महाकान्त ठाकुर**	 **वचश्वन झा, निर्मली** निवन्ध-निकुञ्ज" प्रकाशित।



धीरेन्द्र कुमार, निर्मली



चन्द्रशेखर कामति 1959-

मैथिली कवि। शिक्षा- एम.ए. (राजनीतिशास्त्र), पिता- स्व. योगेन्द्र कामति , ग्राम-पोस्ट- करियन, भाया- ढ़ुलमास नगर, थाना- रोसड़ा, जिला- समस्तीपुर, बिहार। सेवानिवृत्त सहकारिता प्रसार पदाधिकारी (बीसीओ)।



न्द्र विलास राय

रदुनिया", "छठिक डाला", "हमर चारूधाम" प्रकाशित।



विनय भूषण



सुधाकर झा, महाफनी , नेपाल



सदरे आलम "गौहर"

उजना यननाक खाज (कनिगा संग्रह)	सएसँ वेसी सएक नाटकम मंचन।	गाम-पुनसौलिया, थाया-जयनगन, जिला मधूवनी।
 **डॉ. गुनन किशोन मिश्र "गुननश"** मैथिली कथा। संग्रह- शोवनछपा।	 **दिनकन कूमान** "यूर्वोत्तन मैथिल"क सम्यादन।	 **डॉ. निनय निश्वबन्धु**
 **नामदन प्रसाद मण्डल झानूदान** मैथिलीक रिखानी ठाकूनक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक	 **उमेश यासनान** "नर्णिग नस" प्रकाशिग।	 **ओम प्रकाश झा** घाघनडीहा (मधूवनी)।

रचित जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल �झारुदार�।

"रचना बिनु जगत सूना छै" आ "गीताञ्जलि भाग १" प्रकाशित।

"किया बुझि नै सकल रचना" (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह) प्रकाशित।



जगदानन्द झा मनु

नदिया गुमैत रचन घनाढीयन (गजल संग्रह), गाछन कागद नं ग (विहनि कथा संग्रह), बान रा- (बाल उपन्यास), बथा- (कविता-गीत संग्रह)।



अम्बलाल शास्त्री



डॉ अमाल राय



नन्द कुमार मिश्र नन्द



डॉ. नन्द कुमार मिश्र



शिव कुमार प्रसाद



दिलीप कुमार झा



डॉ ताराकान्त झा



अमरकान्त, नेपाल



मुरलीधर झा

कविलपुर, दरभंगा। बाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।



कमलधर दास

"मैथिल कर्ण कायस्थक (गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध" पोथी प्रकाशित।



श्रीकान्त मण्डल, मैथिली रंगमंच



बचन ठाकुर

गाम: चनौरागंज, मधुबनी।

प्रकाशित कृति: बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक), बाप भेल पित्ती आ अधिकार (नाटक), विश्वासघात (नाटक), ऊँच-नीच (नाटक), रॉट (नाटक); एक दर्जनसँ बेसी नाटक प्रकाशनक प्रतीक्षामे।



गंगा झा

मैथिली रंगमंच कोकिल मंच, कोलकाता। कोलकाता आ गाम पहआनितीह टालम मैथिली रंगमंच निर्देशन।



नवीनानारायण मिश्र 1955-

पिता-श्री गोविन्द मिश्र, माता- श्रीमति अन्नूला देवी।

गाम- कुशमौल, पो.नागदह-बलाइन, थाना-अन्धराठाढ़ी, जिला-मधुबनी।

मैथिली रंगमंचसँ सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।







कमलेश कुमार दास, रंगमंच कलाकार



अशोक दत्त, जनकपुर

किशोर केशव, मैथिली रंगमंच



मदन ठाकुर

वरिष्ठ रंगकर्मी, जनकपुरक वरिष्ठ संस्था मिथिला नाट्यकला परिषदक संस्थापक। तीन दशकसँ बेसी समयसँ रंगक्षेत्रमे सक्रिय। करीब ३०�४० टा मंचीय नाटकक संग प्रस्तुति, २०�२५ टा सत्रक नाटकक स्थानसँ बेसी प्रदर्शनमे अभिनय।२० टा टेली-सीरियल आ आधा दर्जन मैथिली फीचर फिल्ममे अभिनय। पुरस्कार: सम्मान

कुमार गगन, मैथिली रंगमंच



अक्षय कुमार यादव, मैथिली रंगमंच

अन्तर्राष्ट्रिय महासम्मेलन

सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा २०४९

वि.स., राष्ट्रीय प्रतिभा

पुरस्कार (नेपाल

सरकार) २०६३ वि.स.।







आशुतोष यादव अ रिङ्कु

कृष्ण कुमार कश्यप 1949-

जन्म १७ सितम्बर १९४९ ई.।

पिता- कवि-उपन्यासकार

स्व. लक्ष्मीनारायण लाल "साँवलिया"।

जनवरी १९६७ ई. मे नवा स्कूल

खोलल "नालन्दा स्कूल", १९८१

ई. मे "कला आधारित जीवन आ

शिक्षण पद्धति"क प्रवर्तन आ ओकर

कार्यान्वयन कयल पिता कश्यप आ

अभिभावकक सहयोगसँ "स्थानीय विकास

ललित कुमार

संस्था"क स्थायना। नवना: शशिवालाक संग "मघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-राग, मिथिला चित्र-शिक्षा, राग-१, मिथिला चित्र-कान, राग-३।



वटाव्ही मा, मिथिला चित्रकला



प्रवीण कुमान ठाकुन

जन्म तिथि -31 दिसम्बन 1977; जन्म स्थान -

कहौली , सकनी , मधुवनी ; शिक्षा- सूर्य नानायण हाई

स्कूल - ननयणिनगन , वी . एस . सी - ममा निअल कॉलज - दनभंगा , डिप्लामा इन

स्टेशन डिजाइन (नेशनल इंस्टिच्यूट ऑफ स्टेशन डिजाइन - नयी दिल्ली)

, चित्रकला �आडान स्टेशन



लाला यंडित, मिथिला मूर्तिकला

युर्वानुमानम विभेष याथ्रना, निवास स्थान- दिल्ली , ॐतिया; यिता- श्री सत्य नानायध़

Oाक्रुन , सकनी - कझेली� ; माता- श्रीम ती मालती Oाक्रुन , सकनी - कझेली ।

वर्तमानम अयन अस्मायटि विजनस अस्कुट) �क नामसँ शुनुआत , युर्वम प्रातस्त उत्तलाय्मंट आडान मर्वंटक नूयम कार्यनत।



नाजस्त्र यंतिन, मिथिला मुर्गिकला



गिनीश चस्त्र लाल



नवस्तु कुमान मा, यत्रकान







चन्द्र किशोर लाल, पत्रकार, नेपाल

उपेन्द्र भगत नागवंशी, नेपाल

सफल नाटक।

रमेश रंजन, परवाहा, नेपाल 1966-

परवाहा, नेपालमे जन्म। नेपालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम। जनपक्षधर कथा-दृष्टि आ मारुक शिल्प। थोड़ लिखलनि, मुदा बड़-बड़ चर्चित भेलाह।







विनीत ठाकुर

"बाँकी अछि हम्मर दुखक कर्ज" प्रकाशित।

सुजीत कुमार झा, नेपाल

जिद्दी (लघुकथा संग्रह), चिउ (लघुकथा-संग्रह), रिपोर्टर डायरी (रिपोर्ताज), गप्प (लघु कथा संग्रह), खजरीवाली (लघु कथा संग्रह), कोइली घुरि आउ (बाल लघु-

सरोज खिलाड़ी

नेपालक पहिल मैथिली रतिया नाटक संचालक

निहनि कथा संग्रह), दुभमगी-

(सम्पादन- नयाली आ मैथिलीम)।



दनांशु नम

जन्म- तुलायट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनम एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न यत्र-यत्रिकाम कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजनाग नाग्र शाला याथ-युस्तक मंडल द्वारा बाल कजाक लल विज्ञान कथा �ंग� प्रकाशित (2004 ई.), नाणा: मैथिलीक



संताष मिश्र, नयाल

यासयुत (लघुकथा-संग्रह), उदास मान (लघुकथा-संग्रह), एना-किए (कविता-संग्रह), अएना (संपादन- कविता-संग्रह)।



सुनील कुमान मल्लिक, गायक, जनकयुन, नयाल 1968-

मैथिलीक गायक-सङ्गीतकानक नूयम प्रसिद्ध छथि। मैथिली राषाक गीतसभम मौलिक तथा सार्थक सङ्गीतक सृजनम हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि। सुनीलक गायन तथा सङ्गीतम कैसट एलवमसभ सेहो बाहन एल अछि। लखनदिस हिनक सक्रियता यनिमाणात्मक नूयम कम

पहिल-चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) प्रकाशित।

नहितहुँ गुणात्मक दृष्टिएँ हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि । पेशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।



धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सिरहा, नेपाल 1967-

वि.सं.२०२४ साल भादव १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि। कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता जाही नुआ-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अवाज गामक बच्चा-बच्चा



रवीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम:स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम:स्वर्गीया दयाकाशी देवी, पैतृक ग्राम:अड़ेर डीह, मातृक:सिंघिआ घाट। वृत्ति:योजना आयोगक उप सचिव, दिल्लीमे स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट। आब सेवा निवृत्त। शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा; दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक। प्रकाशित कृति : मैथिली:-



कुमार रास्कन

विशेष अछि। �पल्लव� मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ �समाज� मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।	१. �रानसँ साँझ धरि� (आत्म कथा), २. �प्रसंगवश� (निबंध), ३. �स्वर्ग एहि अछि� (यात्रा प्रसंग), ४. �रुसाद� (कथा संग्रह) ५. `नमस्कार� (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.मरुनाज (मैथिली उपन्यास) ,८.लजकाटन (मैथिली उपन्यास) ,९.सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास) १०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि (उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास)।	
 अमरेन्द्र यादव, नेपाल	 रघुनाथ मुखिया	 प्रदीप पुष्प



संदीप कुमार साफी

"बैशाखम दलानपर" प्रकाशित।



उमेश मंडल

निश्तुकी- कविता संग्रह, मिथिलाक संस्कार गीत, विध-

व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन),

"मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो, मिथिलाक जीव-

जन्तु स्लाइड शो, मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो", सगर राति दीप जरय- इतिहास, दुःख-पानि रूनाक-

रूनाक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-

(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल), हिन्दुस्तानी मूसलमान औन हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल।



वद्धमणि



स्व. रमाकान्त झा, गायक



मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक



कुंज बिहारी, मैथिली गायक



रामबाबू झा, गायक



बि.पि.उदासी



जितेन्द्र सहयोगी



उदितनारायण फिल्म गायक



प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक



कीर्ति आजाद क्रिकेट



श्रीराम झा शारंग



अभिषेक झा गोल्फ



अशोक कुमार 1981-

साधारण कास्तकारक परिवारमे समस्तीपुर जिलाक माखियारपुर सखवानी गाममे जनमल अशोक कुमार कहियो स्कूल नहि गेलाह। दिनमे पचास टाका कमनिहार दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लबक ओहि कैडीकेँ 1994 ई. मे स्थानिक मिस्त्रीसँ लगा कए गोल्फ कोर्ससँ बाहर कए देल गेल। बादमे कैडी दस सालक भीतर देशक नम्बर एक गोल्फर बनि गेल।



नाजेश नंजन, मैथिली रूतना ग्राजक



संजय मा

सुल्तानगंज, रागलयुन।

माटानालाक सी.ब्बी.डा.।



विश्वश्लन याठक



विनाद मिश्र

डॉ. विनाद मिश्र समप्रति आब्बी आब्बी टी नुतकी, उन्दनाखंतम अंग्रेजी यढवैत छथि आ हिनक नवनाb अंग्रेजी आ हिंदी म प्रकाशित रूल छथि। अहि वर्ष हिनक कविता



नाजकमल मा, अंग्रेजी लखक, यत्रकान

हिनकन अंग्रेजी उयन्यास "द ब्लू वतसप्रत" , "ब्बेरू यु आन अरूनत □रू हाब्बेश्न" आ "रूायनयुरू" प्रकाशित छथि। "द ब्लू वतसप्रत" (१९९९)यन हूनका "कॉमनवल्थ नाब्बेटर्स ग्राब्बेज"



मानस विहानी वर्मा, वैज्ञानिक

संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित भेल छलि। एकर अतिरिक्त ओ अंग्रेजीमे आलोचनाक ग्रन्थ आ० टा पाथी संपादित कने छथि। हिनक पाथी Communication Skills for Engineers and Scientists बहुता इंजीनियनिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि।

रहान वरु रुर्सु वुक- युनिभिया" रएल छलि। नाजकमल मा श्री मृनीश्वन मा आ श्रीमती नंजना माक पुत्र छथि, "आइ.आइ.टी.खड़गपुन"सँ बी.टक.छथि, आ आइ काल्हि दिल्लीमे नहै छथि, जाओ ओ "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एडिटन छथि।



रुदीश्वन नाथ 'नधु' मिथिला नत्न 1921 -1977



नामधानी सिंह 'दिनकन' मिथिला नत्न 1908-1974



नामवृक्ष वनीपुनी 1 899-1967



डॉ. हरिवंश तरुण

1927-2009

जन्म 21 जून 1927 ई.। ग्राम- चकसलेम, पो.- पटोरी, जिला- समस्तीपुर। तीन दर्जन सँ बेसी हिन्दी पोथी जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित अछि।



हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ" 1934-



स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'

हिन्दीक साहित्यकार।



रामेश्वर प्रेम

हिन्दीक नाटककार।



डॉ. नवल किशोर दास "नवल"



शारदानन्द झा 1955-



नामाङ्का शशिधन



गणेश वंचल १९३०-२०११



ॉ. अमरेन्द्र



गोपलाल मनीषी



कुन्दन अमिताभ



ंशु अगेही

न्म ८ जनवरी

१९४१, प्रकाशित कृति:आसना

ीह (कथा-

ाव्य) १९९८, साँझा (कथा

संग्रह)१९९९, गमनी

निआ (कथा

ाव्य)२००३, वज्जिका छंद

रास २००१



याझान नामानगान अनूप १९२३-१९९९



मजरूत ठ्ठमाम १९३०-२०१२



अनूप्र प्रकाश १९४८-२०१२



अंशुमन याण्डय

गिनहुआ युनीकातक

आवदनकर्ता।



दिनश कुमान मिश्र

मिथिलाक वाढिक अक्यटा।

मिथिलाक माटा-माटी सए

धानयन किताव प्रकाशित। उपन

विहान की व्यथा

कथा (१९९०), कासी- उग्र कौद

स सजा-७-मौग

गक (१९९२) वंदिनी महानंदा



ओमप्रकाश रानी १९६८-

कासी नदीक लाक सांस्कृतिक अ

ध्ययन - नदियाँ गाती हैं, विहान

क यानम्यनिक नाट्य आ मैथिली

क लाक नाट्य प्रकाशित

(१९९४), बाया यठ बबूल

का- बाढ नियंत्रण का

नरुय (२०००), बगालग यन

मजबून मिथिला की कमला नदी

(२००४), गुग्ही नदी डौन

गकनीकी मा७- रूक (२००ग),

, दूश्शी याटन क बीच मं- कासी

नदी की कहानी (२००६) गथा

बागमती की सङ्गति (२०१०)।







वैदही सीता

याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी

याज्ञवल्क्यक दु टा पत्नी

छलथिन्ह पहिल कात्यायनी आ

दोसर मैत्रेयी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी

छलीह। कात्यायनीसँ हुनका

तीनटा पुत्र

गार्गीदाऽऽ

मिथिलाक जनक (धावि) जाति

ाकदवना

छलहि- चन्द्रकान्ता, मदालसा आ विजया।



विहुला

चम्पानगरक विहुला।



गांगो देवी

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता। गांगोदेवीक देवता अखनो मिथिलाक मलाह लोकनिमे प्रचलित अछि।



शमा, कुसुमा, रुल्ला



मानंगक मणीसायन



विन्ध्यवासिनी देवी मैथिली लोकगीत 1920-2006



कामेश्वरी देवी 1922-

मधुबनी जिलाक ननौरी गामक। जन्म १९२२ ई. मे अयन

मातृक नाम रहलनि। पति यं

मदनमोहन झा। बनौलीवासी

प्रसिद्ध तान्त्रिक पण्डित कमल मिश्र

हिनक पिता छलथिन। "मिथिला

संस्कार गीत" पोथी।



कुसुमलता कर्ण



अणिमा सिंह 1924-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका। प्रकाशन: मैथिली लोकगीत, नसबन्धन (अनु.), शिशु खेल गीत आदि। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज, कलकत्तामे पूर्व प्राध्यापिका।



लिली रे 1933-

जन्म: २६ जनवरी, १९३३, पिता: भीमनाथ मिश्र, पति: डॉ. एच. एन. रे, दु गोगंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार। मरीचिका उपन्यासपर साहित्य अकादमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार। मैथिलीमे लगभग दु सय कथा आ

पाँच टा उपन्यास प्रकाशित ।
विपुल बाल साहित्यक सृजन।
अनेक राजकीय सम्मान
कथाक अनुवाद-प्रकाशित।
पहिल प्रबोध
सम्मान 2004 सँ सम्मानित।



चित्रलेखा देवी 1935-



माहिनी झा 1937-



डॉ. सावित्री झा



कविता देवी 1942-



प्रमिला झा



शान्ति सुमन 1942-

		जन्म 15 सितम्बर 1942, कासि मयून, सहनसा, विहान, प्रकाशि त कृति, �उा प्रतीज्ञा, यनठाऌ्ी टूटती, सुलगत यसीन, यसीन क निश्च, मौसम हुआ कवीन, समय चालती नहीं दता, तय नह कवनान, रीतन-रीतन आग, मघ ऌ्छ्नील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल मुक्त हिनन। सम्मान: साहित्य सवा सम्मान, कवि नत्न सम्मान, महादवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।



प्रभावती झा 1945-1999



स्व. इलारानी सिंह 1945-1993

इलारानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : प्रो. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान एवं लोक साहित्य। प्रकाशित कृति : सलोमा (आस्कर वाइल्डक ऊंच नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विद्रोही (1972), स्वगता: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।



उषाकिरण खान 1945-

जन्म:२४ अक्टूबर १९४७,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात। मैथिली तथा हिन्दी दुनू भाषाक चर्चित लेखिका।प्रकाशित कृति:अनुत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंजिल, भामती (उपन्यास)। २०१०-श्रीमति उषाकिरण खान (भामती, उपन्यास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार-मैथिली।



नीरजा रेणु 1945 -

जन्म: ११ अक्टूबर १९४५,नाम: कामाख्या देवी,उपनाम:नीरजा रेणु,जन्म स्थान:नवटोल,सरिसवपाही। शिक्षा: बी.ए. (आनर्स) एम.ए., पी-एच.डी.,गृहिणी। प्रकाशित रचना : ऋतम्भरा (कविता सं.सं., १९८०) लेखन एवं पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव। मैथिली कथा धारा साहित्य अकादमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पहिल टा



नीता ठाकुर 1954-

जन्म- रतनीपुर, पण्डौल (मधुबनी)। पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर। प्रकाशित कृति: मैथिली नाटकाख्यक परम्परा, इतिहास-दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), रानी (उपन्यास)



ज्ञानसुधा मिश्र

ारतक उच्चतम न्यायालयक ानिम महिला न्यायाधीश आ हिल मैथिलानी।

प्रतिनिधि कथाक सम्पादन । सृजन धान पियासल कथा संग्रह, आगत क्षण ल कविता संग्रह, मृगतृष्णा कथा संग्रह, प्रतिध्वनि हिन्दी कथा संग्रह, १९६० सँ आकाशवाणि सँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध, आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित । मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो। २००३- नीरजा रेणु (मृगतृष्णा, कथा)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।







जस्टिस मृदुला मिश्र

वीणा कर्ण 1946-

जन्म 3 नवम्बर 1946, ग्राम- पटोरी, पो.पं. बगछिया, जिला- सहरसा। सदस्य, मैथिली साहित्य अकादमी परामर्शदातृ समिति 1987-1993, सदस्य, भाषा परामर्शदातृ समिति (मैथिली), भारतीय ज्ञानपीठ। अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय। **प्रकाशित कृति**- अर्गला, भावनाक अस्थिपंजर (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, पुष्पमन समर्पण, अनुबन्ध (हिन्दी काव्य संग्रह)। प्रकाश्य: सप्तपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।

शेफालिका वर्मा 1943-

जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा: एम., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त । नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि:करुण रससँ भरल अधिकांश रचना। प्रकाशित रचना:झहरैत नोर, विझैत ठोर; विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-

प्रगीत) , किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथात्मक साहित्य अकादमी पुरस्कार)। अर्थयुग (लघुकथा संग्रह) आखर-आखर प्रीत, नागफांस (उपन्यास)। २००४ ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना; यात्री-चेतना पुरस्कार।



नीता झा 1953-

जन्म : २१-०१-१९५३, व्यवसाय: प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा तथा आधुनिकताक संत्रास सँ उत्पन्न विसंगतिक



आशा मिश्र 1950-

जन्म:६-१-१९५० ई.,प्रकाशित कथा म मैथिलीक संग हिन्दी म सेहो । सरसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह ।



डॉ. सुनीति झा

प्रधान प्रकाशित कृति :

हनिष्ठ, कथा संग्रह

१९८४, कथानवनीत

१९९०,सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा। बिलाइ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)।



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' 1948-

जन्मस्थान:नेहरा,माता:श्रीमती वृद्धा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा:एम.ए., बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री दू सयसँ बेसी नाटकमे रोल कएलनि। रंगिमा (नाट्यमंच) क रूपपूर्व



डॉ. इन्दिरा झा 1957



मेनका मल्लिक 1966-

उत्प्रेक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे कुशल। �अनियन� आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।		
 शारदा सिन्हा मैथिली लोकगीत 1953 -	 ललिता देवी	 शकुन्तला चौधरी
 गोदावरी दत्त, मिथिला चित्रकला	 उषा वर्मा 1948-	 कमला चौधरी 1953-

		कृति- मैथिलीक वस्त्र-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाट बिलायल पानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषा**क मैथिली अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका **स्वाती**क सम्पादन (१९८४-८७)।
 सीता देवी, मिथिला चित्रकला	 सरस्वती चौधरी, जनकपुर	 डॉ. अनुपमा चौधरी



निरा नानी 1959-

मैथिली क 3 साहित्य अकादमी युनस्कान विजगा लखकक 4 गोट किगाव "कन्यादान" (हनिमाहन मा), "नाजा याखन मं किगनी मछलियां" (प्रगास कुमान चाऊधनी), "विल टलन की डायनी" व "यटाउय" (लिली न) हिन्दीम अनुदिग छथि। 2 गोट लाककथाक युस्कक "मिथिला की लाक कथाऐं" व "गानू मा क किस्स"। मैथिली कथा संग्रह "खाहसँ निकसैग"।



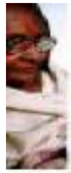
श्यामला वल्लभ 1963-

जन्मगिथि: १७ दिसम्बन, १९६३,जन्मस्थान : मनूआना, सिंधिया खुर्द, समस्तीयून,यिगा : श्री मार्कण्डय प्रवासी,मागा: श्रीमगी सुशीला मा,अध्यायन।सुयनिचिग कवयिगी, कथाकान। प्रकाशिग कृगि: वानसाङ्जी (कविगा संग्रह), सिगिनकाना (कथासंग्रह)।



सुस्मिगा याठक 196
2-

जन्म: सुयौल, विहान। यनिचिगि कविगा संग्रह प्रकाशिग। कथावाचक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन। नाजनीगि शास्त्रम एम.ए.। संगीग, यैंटिंगम नुचि। मैथिलीक याथी यत्रिका यन अनक नखाचित्र प्रकाशिग। समकालीन जीवन, समय, आ गकन स्यंदनक कवयित्री। अनक राधाम नवनाक अनूवाद प्रकाशिग।

 उर्मिला देवी, मिथिला चित्रकला	 यमुना देवी, मिथिला चित्रकला	 यशोदा देवी, मिथिला चित्रकला
 नीमा झा, सम्पादक मिथिला दर्पण	 पन्ना झा अनुभूति (लघुकथा संग्रह)।	 सुधा कर्ण
 नूतन दास	 नाधिका झा, अंग्रेजी लेखिका	 स्वयंप्रभा झा 1970-

सम्पादिका, मिथिलांगन	हुनकर अंग्रेजी उपन्यास "स्मल" आ "लैंगुर्स □न दयन हॉर्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द ओलीरुस् ओफ द मान्ति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मल" लेल हुनका "क्रस्व प्रिक्स गुओनलन" पुनस्कार स्टल छहि आ ई याथी सालह रावाम अनूदित स्ल अछि। नाधिका "ओमहर्स कॉलेज"सँ "ओन्थ्रोपालाजी" पढ़न छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ नाजनीति विस्तानम मास्टर्स डिग्री लेन छथि। उ "हिन्दुस्तान टाइम्स" आ "बिजनस वर्ल्ड"म काज कन छथि आ संगम "नाजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली" म सह, जाउ उ आतंकवादसँ पीड़ित वच्चा सर लेल सम्पर्क कार्यक्रामक प्रानम्भ कन नहथि। आइ कालि उ अपन पति आ वच्चा संग टाग्राम नहै छथि।		



नुया धीनु 1973-

नुया धीनु- जन्मस्थान- मयनाकतनी, सप्तनी, श्रीमती यूनम झा आ श्री अनुपकुमान झाक यूत्री। स्थायी यता- अञ्चल- सगनमाथा, जिल्ला- सिनहा। प्रथम प्रकाशित नचना-काञ्जली कानय, माटिसँ सिनेह (कविता), रुगता वढ़क दश-प्रमध (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीनेन्द्र प्रमर्षिसँग मैथिलीम सह-अनुवाद, सङ्गीतसम्बन्धी कृति- नाष्ट्रियगान, तान, नत्तक नत्तन, चाना, प्रियतम हमन कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम रत्न



नंजना झा, विद्यापति संगीत गायिका



नश्मि दत्त, गायिका, जनकपुन

ानघूस्कीम, सूनऊिा मागृन्न ीामाला, सूखक सनस। सम्यादन-यल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक यत्रिका, सम्यादन- सहयाग,हमन मैथिली याथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ा आ कक्षा 9-10 क ऊैक्षिक मैथिली निषय याथ्यूस्तकक राषा सम्यादन)।		
 कामिनी कामायनी	 मून्नी मा यूना नचनाकान	 कामिनी 1978- यू ना कनियित्री
		

नूस्माना सिद्दीकी	कल्पना मिश्र, मैथिली नंगमंच	ज्योति मा, मैथिली नंगमंच
		
किनध मा, मैथिली नंगमंच	प्रियंका मा, मैथिली नंगमंच	मृदु कर्ण, मैथिली नंगमंच
		
ज्योति वत्स, नंगमंच	नहा वर्मा, नंगमंच	सविता
		

अनुप्रिया

मृदुला प्रधान

अनूपा मिश्र, महिला वॉक्सिंग



राखी दास, मिथिला चित्रकला



वनारसी यतिन, मिथिला चित्रकला, धनूषा, नेपाल



दनकला देवी कर्ण, मिथिला चित्रकला, नेपाल



मदनकला कर्ण, मिथिला चित्रकला, नेपाल



महासुन्दरी देवी, मिथिला चित्रकला



निर्मला झा, मिथिला चित्रकला, नेपाल



𑒤𑒴𑒪𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒳, 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰, 𑒧𑒯𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩𑒲, 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪



𑒩𑒖𑒢𑒲 𑒣𑒪𑓂𑒪𑒫𑒲



𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒓𑓂𑒑𑒝



𑒢𑒱𑒯𑒳𑒬𑓂𑒢𑒲 𑒠𑒰𑒮



𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒮𑒹𑒢



𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒗𑒰



𑒢𑒰𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩, 𑒏𑒫𑒱𑒨𑒱𑒞𑓂𑒩𑒲 𑓑𑓙𑓗𑓓-𑓑𑓙𑓙𑓖



𑒧𑒾𑒮𑒧𑒲 𑒥𑒢𑒩𑓂𑒖𑒲, 𑒏𑒫𑒱𑒨𑒱𑒞𑓂𑒩𑒲



𑒬𑒻𑒪 𑒗𑒰

कोइलख, मधुबनी। जन्मस्थान सिलाठी, नेपाल।



शान्ति देवी



शशिबाला

पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कर्ण (विसहथ)। शिक्षा कत्थक आ कृष्ण कुमार कत्थकक सहयोगसँ "रानी विकास संस्था"क स्थापना। रचना: कृष्ण कुमार कत्थकक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-राग, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-कला, भाग-३।



मुन्नी कामत

सुखल मन गनसल आँखि (कविता संग्रह)।



प्रज्ञा झा

मिथिला लोक कला



अंशुमाला

मैथिली लोकगीत।



श्वेता झा चौधरी, चित्रकार

ग्राम सरिसब-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स। कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीबीशन आ वर्कशॉप)। कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि

वसना, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉस्टल बुलनाबे मे वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित ग्राहक: कॉनफ्लुएन्ट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, होटल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ डान्स-गान।



श्वेता झा

मिथिला चित्रकला, सम्प्रति

सिंगापुरमे निवास।



नानी झा



ानी कर्ण

मिथिला चित्रकला



निक्की प्रियदर्शिनी



प्रज्ञा झा



डॉ. नलिनी चौधरी



नीलम चौधरी, कथक नृत्यांगना



[illegible]ना मल्लिक



गुंजन कर्ण

यिता स्व. शिवनन्हन मल्लिक, गाम- महिसानि, दनरंगा। यति श्री कमलश कुमान, रनह्ली, दनरंगा।

नाँटी मधुवनी, सम्प्रति यू.क.म नहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk यन हुनकन कलाकृति दखि सकै छी।







पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।

प्रियंका झा

पूनम मंडलक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।

ज्योति नानायध







डॉ. ललिता झा १९७१

जन्म

शनिवार, दरभंगामे। "मैथिली क रोजन सम्बन्धी शब्दावली" प्रकाशित"।

आभा कुमारी १९६७-

"मैथिली मुक्तक काव्यमे नारी" प्रकाशित।

मीना झा

वस्तु कौसलक समन्वायन विरुद्ध म मीना झा कान एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक य रिल कथा छल ज वस्तु कौसल य न लिखल गेल। द्वितीय सस्रा गा धनि एहि विषययन कथा नहि लिखल गेल छल।







अनुपमा प्रियदर्शिनी

पति डॉ. नयन कर्ण, गाम- उजान (बड़कागाम), पो. लोहना चौक, जिला दरभंगा। सम्प्रति लुधियाना (संयुक्त राज्य अमेरिका), शिक्षा- एम.एस.सी. (जंतु

आराधना मल्लिक

मैथिली रंगमंच।

शिखा

मैथिली रंगमंच।

विज्ञान), ल.ना. मिथिला वि.वि., दरभंगा; बी.एस.सी. बी.आर. अम्बेडकर वि.वि. मुजफ्फरपुरसँ, हॉबी, मिथिला चित्रकला, कम्प्यूटराइज्ड चित्रकला, ललित कला। उपलब्धि: अखिल भारतीय कला आ दस्तकारी प्रतियोगिताक पुरस्कार 1995 मे; संस्कार भारती भाव नृत्य प्रतियोगिता 1989 मे सहभागी।



प्रीति ठाकुर

ग्राम- जगली, भाया रानीगंज, पूर्णियाँ। मैथिली बाल साहित्यमे "गानू झा आ आन



अनुपमा झा

ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल, पटना।



विनीता मल्लिक

चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा २००९" आ "मिथिलाक लोकदेवता २०१०", विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य) २०१४ प्रकाशित।



भारती मिश्र



अनामिका राज



आभा झा



प्रियंवदा रानी झा



डॉ अपर्णा



शान्ति लक्ष्मी चौधरी

ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा म

कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री

रामानन्द झाक ज्येष्ठ

सुपुत्री, आउर ग्राम महिषी

पुनर्वास आनायष्टी), जिला

सहरसा निवासी आ दिल्ली स्कूल

रु इकानामिक्स सँ डाक्टल

अन्वेषक आ समाजशास्त्री श्री

अजय कुमार चौधरीक

अर्धांगिनी छथि। प्राणीशास्त्र सँ

ातकोत्तर तहिना शिक्षाशास्त्रक

ातक शिक्षार्थी आ एकटा

समाजशास्त्री सँ सान्निध्यक चलित

ग्राम जीवनक सामाजिक विषय-

वस्तु आ खास कऽ महिलाजन्य

सामाजिक समस्या आ प्रघटनाम

हिनक विशेष अभिरुचि

रानिक।



अनुपम नैना



डॉ चित्रलेखा



डॉ कल्पना मधिकान्त मिश्र

…ता डॉ शिव कुमार झा, गाम …टी, सासुर- गजहारा। …डिकल शिक्षा ज. ज. …हॉस्पीटल/ आन हॉस्पीटलसँ …सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। …सँ १९८०-८२ म …प्रकाशित होइवला मैथिली …पत्रिका "निदेश"क पति डॉ …मधिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली …फिल्म- आउ पिया हमर …नगरी) संग सम्पादन।

४.९.मिथिलाक खाज

वि दे ह विदेह Videha

विदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्तमान राज्य आ नेपालक प्रसन्न माटिक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रांकित अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। ई संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित छायाकार आ

संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगण। सारणी। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू, दर्शनीय मिथिला, Brochure 1, Brochure 2, Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक), IGNCA ASI (Cultural Heritage of Mithila-search keyword Mithila), Temple Survey Project ASI-English आ Hindi. पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल।



भुवनेश्वरी रगवनीयून (Madhubani, Bihar) बौद्ध तारा सँ समानता नोटिस कुण्डल देखू



सूर्य रगवनीयून (Madhubani Bihar)



विष्णु रगवनीयून (Madhubani, Bihar)







दुर्गा, पाखनिसँ स्टल, डाकि वहनी मन्दिन (वजानसँ दक्षिण)म स्थापित	रुनद्धान मन्दिन घनश्यामपुन (दनरंगा)- चानि रs गेल	(गोनीशंकन, जमथनि, ह्ँ0l वाली, मधुवनी
		
(गोनीशंकन, जमथनि, ह्ँ0l वाली, मधुवनी	(गोनीशंकन, जमथनि, ह्ँ0l वाली, मधुवनी	(गोनीशंकन, जमथनि, ह्ँ0l वाली, मधुवनी
		
(गोनीशंकन, जमथनि, ह्ँ0l वाली, मधुवनी	(गोनीशंकन, जमथनि, ह्ँ0l वाली, मधुवनी	वाऽऽसी-वसेटी, अननिया मिथिलाउन ताम्रलख



वा॰॰सी- वसैटी, अनिया मिथिलाऊन गाम्रलख



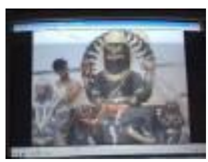
वा॰॰सी- वसैटी, अनिया मिथिलाऊन गाम्रलख



वा॰॰सी- वसैटी, अनिया मिथिलाऊन गाम्रलख



धनरुना, वनमनखी, युर्णियाँ, ननसिंरु अनगान



धनरुना, वनमनखी, युर्णियाँ, ननसिंरु अनगान



यूनधदनी, यूर्णियाँ







विदेश्वर स्थान अभिलेख, मधुबनी	अन्धराठाढ़ी अभिलेख, मधुबनी	बुद्ध अस्थिधातु, सिसवा बसंतपुर, बगहा
		
12 शताब्दी, कोइलख, मधुबनी	अग्नि विदेश्वर स्थान, मधुबनी बुद्ध, मुंगेर	अहिल्या स्थान
		
अन्धराठाढ़ी, मधुबनी	अशोक स्तंभ, वसाढ़, वैशाली	बुद्ध
		

अवलोकितेश्वर तारा, भागलपुर	बसाढ़, वैशाली	बुद्ध भूमिस्पर्श
		
बुद्ध, ताम्र	बुद्ध मस्तक, सुल्तानगंज	वैशाली मूर्ति
		
चामुण्डा नाग-नागिनी, मुंगेर	मुकुटधारी बुद्ध, अंगी चक, भागलपुर	नाचैत गणेश, 10म शताब्दी, दरभंगा
		

दरभंगा म्यूजियम	दरभंगा म्यूजियम	दुर्गा, कार्त्तिकेय
 10म शताब्दी, रीठ रंग नानयून, अन्ध्रा ठाढ़ी	 गणेश बुद्ध	 गौतम बुद्ध, वैशाली
 हरिहर बुद्ध	 चितौड़ खजुराहो महिला, राजमहल	 लौरिया नन्दनगढ़, अशोक स्तंभ
		

लोमश सुदामा गुफा

मुंगेर

नागराज तीर्थंकर



कुमारिल भट्ट स्कूलाह, नालन्दा



विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर



जैन बुद्ध



यक्षिणी



रामायण



रामपुरवा वृषभ



रामपुरवा



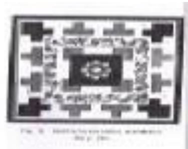
बुद्धक अवशेष



संकिसा



सप्तमातृका



सर्वा रुद्र मण्डल



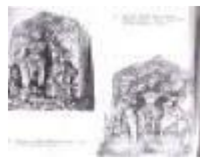
सूर्य



सूर्य



सूर्यक संगी



सूर्य, मधुवनी आ रा गलपुर



मूर्त्ति



मूर्त्ति



मूर्त्ति, वैशाली



उमा माहेश्वर, कल्याण सुन्दर



वैशाली वृषभ शीर्ष



वैशाली, शालभंजिका भागलपुर



विष्णु बुद्ध



आँखियुक्त महिला



अहिल्या



अष्टयोगिनी मन्दिर, सहरसा



वनगंगा



दनरंगा

 दरभंगा नगर, 1934	 दरभंगा मेडिकल कॉलेज	 दुल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर
 गण्डीश्वर	 गंगासागर पोखरि, मधुबनी	 हनुमान मन्दिर, मधुबनी
 हरिहरस्थान	 मधुबनी हॉस्पीटल	 जनकपुर जानकी मन्दिर

 जानकी मन्दिर	 जानकी मन्दिर, सीतामढ़ी	 जानकी मन्दिर, सीतामढ़ी
 जिला स्वास्थ्य कार्यालय राजविराज, नेपाल	 कलनेश्वर बाबा	 कपिलेश्वर
 कोषलेखाकार्यालय, राजविराज, नेपाल	 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।	 लक्ष्मीश्वर पैलेस, 1934



माध्यमिक विद्यालय , जनकपुर



महेन्द्र चौक, जनकपुर



जनकपुर मंदिर



मिथिला,
1988 भूकम्प



रंगलाबाबा धर्मशाला,
जनकपुर, नेपाल



मंदिर अहल्या



मधुबनी बस स्टैंड



राज हाउस [illegible]फिस,
1934



राज हॉस्पीटल, दरभंगा, 1934



𑒮𑒾𑒩𑒰𑒚 𑒮𑒦𑒰



𑒬𑒱𑒫 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩, 1934



𑒬𑒱𑒫𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧𑒰, 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲



𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒰 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩



𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱, 𑒥𑒱𑒮𑓂𑒤𑒲



𑒅𑒑𑓂𑒩𑒞𑒰𑒩𑒰, 𑒞𑒰𑒩𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢, 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲, 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰



𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒮𑓂𑒧𑒰𑒩𑒏, 𑒥𑒱𑒮𑓂𑒤𑒲



𑒥𑒱𑒮𑓂𑒤𑒲, 𑒅𑒑𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫



𑒥𑒱𑒮𑓂𑒤𑒲, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲



अहल्या मन्दिर, अहियारी



अशोक स्तंभ, वैशाली



स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली



बलिराजगढ़ किला पूर्वी गेट



बलिराजगढ़ किला मीनार



चण्डी स्थान, विराटपुर, सहरसा



गाँधी पोखरि, ढाका, मोतिहारी



गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहारी



गिरिजा स्थान, मधुबनी



हरिहर मन्दिर, सोनपुर



जैन मन्दिर, भागलपुर



जैन मन्दिर, वैशाली



कमलादित्य स्थान



कपिलेश्वर शिव मन्दिर



लौरिया नन्दनगढ़



मदनेश्वर शिव मन्दिर



मन्दार पर्वत, बाँका



मोतिहारी सत्याग्रह स्मारक



यनमश्वनी मह्दिन, 0ाढी, मधूवनी



नामजानकी मह्दिन, सीनामढी



सयाग्रह स्मानक, सीनामढी



शांि स्तूय, वैशाली



उच्चै0 रगनवी



उच्चै0 मह्दिन



सिंघश्वन स्थान, मधयूना



सूर्यधाम, यनसा



उग्रतारा मह्दिन, महिषी, सहनसा



वैशाली स्तूप



विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर



विनायक मन्दिर, मधेपुरा



वृषभ शीर्ष, रामपुरवा



सिंह शीर्ष, रामपुरवा



शरभ, नेपाल



याँखियुक्त देवी, वैशाली



बाबा वटेश्वर, दरभंगा, बनगाँव



वट वृक्ष, बनगाँव

 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳, 𑒯𑒩𑒫𑒰, 𑒥𑒢𑒑𑒰𑒿𑒫	 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒮𑓂𑒟𑒪, 𑒞𑒰𑒩𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲	 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒮𑓂𑒟𑒪, 𑒞𑒰𑒩𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲
 𑒞𑒰𑒩𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲	 𑒧𑒰𑒞𑒰 𑒞𑒰𑒩𑒰, 𑒞𑒰𑒩𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲	 𑒅𑒑𑓂𑒩𑒞𑒰𑒩𑒰 (𑒐𑒰𑒠𑒢 𑒫𑒰𑒕𑓂𑒕𑒲 𑒞𑒰𑒩𑒰) 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱, 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲
	 𑒂𑒫𑒩𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒏𑒰𑒪𑒲 𑒅𑒠𑓂𑒥𑒾0	

वशिष्ठ मुनि, गानास्थान महिषी		वौद्धदनी गाना नानी स मस्कीयून
		
रुगनरी दकुली	रुगनरी गिनिजा स्लूह्न	रुगनरी मृधमुर्गि गब्र वानि
		
रुगनरी नानी समस्कीयून	गुननश्ननी कार्थ	दनीकाली कार्थ
		

गंगामूर्ति नगनडीह दरभंगा।	गोसाउनि मन्दिर कोर्थ	हेरुक देवी हावीडीह
		
काली उजान	महिषासुरमर्दिनी बहेडी दरभंगा।	महिषासुरमर्दिनी हावीडीह
		
महिषासुरमर्दिनी नाहन-भगवतीपुर	उमा महेशमर्दिनी मिर्जापुर दरभंगा।	यमुना सैनन वलिया मधुबनी
		

रैनव, रैनव-वलिया	नटनाज, गानालाही	शिव- यार्वती मन्दिर, कपिल श्वनस्थान
		
शिव- यार्वती मन्दिर, कपिलश्व नस्थान	शिव मन्दिर, सिंगिया, विस्थी	उमामाहेश्वन, महादव म0
		
उमामाहेश्वन, गिनद्दृग	विष्णु, रुनानीयून	विष्णु, रै0 रुगवानयु न



विष्णु, जयनगर



विष्णु, लदहा



विष्णु, साहा-पनबी, हावीडीह



शेषशायी विष्णु, सबास, मुजफ्फरपुर



वराह मूर्ति, तिलकेश्वर स्थान



मिथिलाक्षर अभिलेख, विष्णु वृद्ध मूर्ति



भगवती उग्र0, वनीय ड्डी



भगवती बागेश्वरी, रं तानीसम



चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर



अष्टभुज गणेश, हावी डीह



अष्टभुज गणेश, कार्थ



गंगा, आन्ध्रा-ओढ़ी



महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा



महिषमर्दिनी मन्दिर, मिजोयुन, दनरंगा



नटराज



रामनन्दिर, अहिल्यास्थान





नूपनगर शिव मन्दिर

	सहनी, वैशाली, विष्णु तिलक-यज्ञोपवीतधारी	
 सूर्य, दकुली	 सूर्य मूर्ति, तिलाही	 सूर्य मूर्ति, विष्णु, वनगाम
 उमामाहेश्वर	 यमुना, अन्धरा-ठाढ़ी	 सिमरौनागढ़ मूर्ति
		

आदि काली, चैनपुर सहरसा चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगम आदिकालीन रुद्र काली-मन्दिर सहित एहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।	थाथागढक स्वामी माधवानन्द कौलाचार्य काली मन्दिर थाथा गढ लग। पूना न गढ। एकर पूरब ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उच्चैठ भगवती छथि।	थाथागढक दसमुखी काली थाथा गढ लग। पूना न गढ। एकर पूरब ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे उच्चैठ भगवती छथि।
 कोइलख (मधुबनी) देवीक मन्दिर	 अकौन, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवती पीठ	 अकौन, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवती पीठ



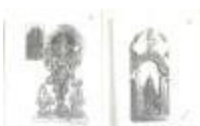
१.अष्टभुज गणेश, कार्थ २.शिव मन्दिर, सिंघिया, विष्णी



१. बौद्ध देवी तारा, नानी, समस्तीपुर २.उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा



१.भगवती, नानी २. भगवती, दकुली



१. भगवती गिरिजा, फुलहर २.काली, उच्चैठ



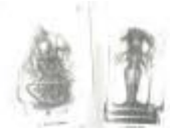
१. भैरव, भैरव बलिया २. उमामाहेश्वर, महादेवमठ



१. देवीकाली, कार्थ २. गुसाउनि स्थल मन्दिर, कार्थ

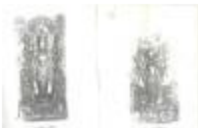
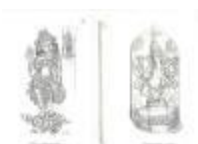






१. गणेश, लक्ष्मीनियास नाय २.उमामाहेश्वर ३. नटराज, ४. विष्णु, गिलक, जनउ धानी, स हान, वैशाली	१. गंगा मूर्ति, नगनती ह, दनरंगा २. एगन ती मृत्मूर्ति, गन्ननानि	१. हेरुक दनी, हावी तीह २.गुननश्ननी, का र्थ
		
१. कथिग काली, उत्रै0, २.अष्टभुज गणेश, का र्थ	१. महिषासुर मर्दिनी, हावीतीह, २.उमा, म्लेच्छमर्दिनी, मिर्जापुर, दनरंगा	१.महिषासुरमर्दिनी, एगनीपुर, नाहन, महिषासुर मर्दिनी, व हनी, दनरंगा
		
१. म्लेच्छमर्दिनी एगनी, मिर्जापुर, दनरंगा २.	१. म्लेच्छमर्दिनी एगनी, मिर्जापुर, दनरंगा	

नाम मन्दिर, अहिल्या स्थान	२.सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा	१. नटराज, गानालाही २. उमामाहेश्वर
		
१_व्यवसायी, सवास, मुजफ्फरपुर, २_नटराज_गानालाही ३_ भगवती ४_ उमा माहेश्वरी	१- शिव पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वर स्थान २. सूर्य मूर्ति तिलाही	१_ सूर्यमूर्ति, विष्णु व नुआन २. गंगा, आन्ध्रा 0ाढी
		
१_डॉ0 भगवती, वनीयही २_महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा ३_ चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपु	१. वराहमूर्ति, गिलकश्वरस्थान, २.विष्णु, रवानीपुर	१. विष्णु, जयनगर २.विष्णु, डी0 रुगवानपुर

न ४._भगवती तारकेश्वरी, भगवतीस्थान		
 १_विष्णु, लदहा, २.सूर्य, दकुली	 १_विष्णु_सरहा यनठी, स्थापित-हारीतीह २.वृद्ध-विष्णु मूर्ति अभिलेख	 १_विष्णु, सहान, २_वराह ३_गणेश ४. शिव मन्दिर_नुयनगर
 १_यमुना, आन्ध्रा ठाढी, २.अष्टभुज गणेश, हावीडीह	 १_यमुना, भैरव बलिया, २_शेषसायी, सरास, मुजफ्फरपुर, ३_नटराज_गनालादी	 कथित, काली, उच्चैठ, बनीपट्टी

	𑓔_ 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑓕_ 𑒅𑒧𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲	
 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 (𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒅𑒑𑓂𑒩)	 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫𑒞𑓁 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨	 𑒫𑒹𑒝𑒳(𑒑𑒼𑒣𑒰𑒪, 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰
 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳, 𑒖𑒰𑒪, 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰।	 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳	 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳, 𑒂𑒬𑒼𑒪, 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒐𑒼𑒖

𑒄 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒢𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩-𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒦 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒂 𑒑𑒰𑒃𑒛 𑒮𑒦𑒏 𑒁𑒏𑒟𑒢𑒲𑒨 𑒨𑒼𑒑𑒠𑒰𑒢 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 । 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒿 𑒯𑒼𑒙𑒪𑒏 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒛𑓂𑒩𑒰𑒃𑒫𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒃𑒛 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒦𑒹𑒪𑒰। -𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

"𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒨𑒠𑒨𑒬𑓂𑒔 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒹 𑒢𑒱𑒨𑒞𑒰 𑒃𑒞𑒱 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒑𑒩𑒲" - 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒰ऽ 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒟𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱- 𑒨𑒰𑒖𑓂𑒘𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝।

𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒂 𑒑𑒜𑓃

𑒥𑒪𑒱𑒩𑒰𑒖𑒣𑒳𑒩 𑒏𑒱𑒪𑒰- 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒥𑒩𑒯𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛𑒮𑒿 𑓗 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒣𑒴𑒥 𑒥𑒪𑒱𑒩𑒰𑒖𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒩 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒏𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒬𑒹𑒭 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒔𑒰𑒩𑒱

किलोमीटर नमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देवालसँ ई घेरल अछि।

असुरगढ़ किला- मिथिलाक [illegible] किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर [illegible]। थानक कारण महादेव मठ लग ७० एकड़मे पसरल अछि।

जयनगर किला- मिथिलाक [illegible] किला अछि नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

नरहनगढ़- बनियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १७ टा ऊँच

ठीह अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

देकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवेक कर कातम दू टा किलाक अवशेष अछि। चारू दिस खधाइ अछि।

करनागढ़- मुजफ्फरपुरमे करना गाममे विशाल गढ़ अछि, देकुली गढ़ जकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

नौलागढ़-बगुसरायसँ २७ किलोमीटर उत्तर ३७० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

जयमंगलगढ़- बगुसरायमे बनियारपुर थानाक काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच ठीह अछि।

एतऽ ई गढ़ अछि। नाउकाठी (मसौल) गाम लग ई गढ़ अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दूधपुरा बजार लग दहाड़ गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो कएलन्हि।

अलौलीगढ़- खगड़ियासँ १७ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

कीचकगढ़- पूर्णिया जिलामे टंगनघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि।

बनगढ़- टेढ़गाछ थानामे कनल धानक कातम

𑒃 𑒑𑒜𑓃 𑒁𑒕𑒱।

𑒥𑒩𑒱𑒖𑒢𑒑𑒜𑓃- 𑒥𑒯𑒰𑒠𑒳𑒩𑒑𑓀𑒖𑒮𑒿 𑒕𑒯 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒯𑒮𑒢𑒫𑒲 𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒃 𑒑𑒜𑓃 𑒁𑒕𑒱।

𑒢𑒩𑒯𑒲- 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒩𑒾𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛𑒮𑒿 𑓑𑓓 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒱𑒧𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒜𑓃 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒪𑒼𑒩𑒱𑒏𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒫𑒵𑒖𑓂𑒖𑒱

𑒏𑒳𑒝𑓂𑒛𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧- 𑒯𑒰𑒖𑒲𑒣𑒳𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒞𑓂𑒞𑒲𑒮 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩-𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒧𑒹 𑒥𑒮𑒰𑒜𑓃-𑒫𑒻𑒬𑒰𑒪𑒲 𑒂 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒮𑒰𑒏𑒳𑒝𑓂𑒛 𑒪𑒑 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒜𑓃-𑒙𑒲𑒪𑒰𑒮𑒿 𑓒 𑒏𑒱.𑒧𑒲. 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩-𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒳𑒝𑓂𑒛𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 , 𑒖𑒞𑓄 𑒖𑒻𑒢𑒏 𑓒𑓔𑒧 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑓀𑒏𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒲𑒩𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒋𑒞𑓄 𑒫𑒵𑒖𑓂𑒖𑒱𑒏 𑒕𑒰𑒅𑒩, 𑒁𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒏𑒩𑒝𑒲 (𑒩𑒰𑒖𑒰

𑒁𑒡𑒱𑒏𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱), 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒮𑓂𑒞𑒧𑓂𑒦 𑒂 𑒮𑓀𑒮𑒠-𑒦𑒫𑒢 (𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪𑒏 𑒑𑒜𑓃) 𑒁𑒕𑒱।

𑒣𑒖𑒥𑒰𑒑𑒜𑓃 𑒥𑒢𑒯𑒩𑒲 𑒙𑒼𑒪- 𑒦𑓄 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒪, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒂𑒥 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒞𑒰 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒩𑒐𑒥𑒰𑒩𑒲 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒑 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑓀𑒑𑒪𑒑𑒜𑓃- 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞𑒲𑒣𑒳𑒩 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒮𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒥𑓂𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒡𑒣𑒳𑒩𑒰 𑒥𑒖𑒰𑒩 𑒪𑒑 𑒠𑒍𑒜𑓃 𑒑𑒰𑒧 𑒪𑒑। 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏 𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒦𑓄 𑒦𑒹𑒪, 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒧𑓀𑒑𑒪𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯𑒣𑒩 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒦𑓄 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒧𑒴𑒮𑒯𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒛𑒲𑒯- 𑒁𑓀𑒡𑒩𑒰 𑒚𑒰𑒜𑓃𑒲𑒮𑒿 𑓓 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒱𑒧 𑒣𑒮𑓂𑒙𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒪𑒑 𑒋𑒏𑒙𑒰

ऊँच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्ति, पाइ, वर्तनक टुकड़ी आ पजवाक अवशेष एतऽ अछि।

अकौन- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौन गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतऽ बौद्धकालक मूर्ति अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

विक्रमशिला- भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़य वला लेल

सङ्घ स्थान एतऽ निर्मित अछि।

चम्पानगर- भागलपुरक पश्चिमम, आब नगरसँ सटि गेल अछि। एहो जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतऽ महावीर तीनटा वर्षावास कर रहथि। दू टा जैन मन्दिर एतऽ अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि। महावीर विदेहम छह टा वर्षावास बितौलन्हि। वर्षा ऋतुम चारि मास एक ठाम निवासकेँ वर्षावास कहल जाइत छल। बुद्ध एकोटा वर्षावास विदेहम नै बितौलन्हि, मुदा वैशाली नगरीम आम्रपालीक उद्यानम लिच्छवीगणकेँ सङ्घ देन छला। आम्रपालीसँ भिक्षा ग्रहण कऽ बुद्ध गेला वेधूमती करय चारि मासक वर्षावास।

अभिलेख

𑒑𑒾𑒩𑒲-𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢, 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒖𑒧𑒟𑒩𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒂 𑒯𑒻𑓀𑒚𑒲 𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒄 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒂 𑒬𑒓𑓂𑒏𑒩𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒂 𑒅𑒣𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒣𑒰𑒪𑒫𑓀𑒬𑒲𑒨 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐। 𑒥𑒱𑒠𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒮𑒿 𑓒-𑓓 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧𑒹 𑒄 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱।

𑒦𑒲𑒚-𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐- 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒢𑒰𑒢𑓂𑒨𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒪𑓂𑒪𑒠𑒹𑒫𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡𑒱𑒞 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒋𑒞𑓄 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒡𑒹𑒣𑒳𑒩 𑒟𑒰𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒄 𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒦𑒑𑒲𑒩𑒟𑒣𑒳𑒩- 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒾𑒪 𑒪𑒑 𑒦𑒑𑒲𑒩𑒟𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒹𑒐 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒍𑒃𑒢𑒫𑒰𑒩 𑒫𑓀𑒬𑒏 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒠𑒴𑒢𑒳 𑒬𑒰𑒮𑒏 𑒩𑒰𑒧𑒦𑒠𑓂𑒩𑒠𑒹𑒫 𑒂 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒮𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒧𑒹 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

मंदार पर्वत- बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्ति अछि, एक मूर्ति लाल पाथरक अछि त' दोसर काँसाक जकर सामाँ दूटा पदचिह्न अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतै भेल छलन्हि।

विदेश्वर- मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कयलन्हि। ७०० युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतऽ अछि।

बसैटी (बाड़ी-बसैटी), अररिया अभिलेख - पूर्णियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ड़ी

अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इन्द्रावतीक शासनकालक वर्णन करैत अछि। रानी इन्द्रावती (११९४-१९०२) क शासनकालक समय पुल-पोखरि-नहर आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कर रहथि।

जयनगर किला- मिथिलाक शासन किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंवार गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर कर वर्णन अछि।

विष्णु

हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्ति ओतऽ

𑒁𑒕𑒱।

𑒣𑒱𑒣𑒩𑒰𑒯𑒲- 𑒪𑒾𑒏𑒯𑒰 𑒟𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒣𑒱𑒣𑒩𑒰𑒯𑒲 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒯𑒰𑒟 𑒦𑒑𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢- 𑒣𑒱𑒣𑒩𑒰𑒯𑒲𑒮𑒿 𑓑𑓐 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒔𑒞𑒳𑒩𑓂𑒦𑒳𑒖 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱।

𑒏𑒧𑒪𑒰𑒠𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢- 𑒁𑓀𑒡𑒩𑒰 𑒚𑒰𑒜𑓃𑒲 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒏𑒧𑒪𑒰𑒠𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒰𑒙 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒢𑒰𑒢𑓂𑒨𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒡𑒩 𑒠𑒰𑒮 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪।

𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒣𑒳𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒏 𑒩𑒐𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒫𑒵𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒱, 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒰𑒩𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒧𑒹 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒙𑒱𑒯𑒰𑒢𑒲- 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩

𑒖𑒢𑒏𑒣𑒳𑒩- 𑒫𑒵𑒯𑒠𑓂 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝𑒧 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨𑒧 𑒖𑒢𑒏𑒣𑒳𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒞𑓂𑒩𑒯𑒧 𑒬𑒞𑒰𑒥𑓂𑒠𑒲𑒧 𑒮𑓀𑒞 𑒮𑒳𑒩 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒨𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒮𑒩𑒨𑒳 𑒡𑒰𑒩𑒧 𑒩𑒰𑒧 𑒂 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒏 𑒠𑒳 𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒍 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩, 𑒖𑒢𑒏𑒣𑒳𑒩𑒧 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒠𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒙𑒲𑒏𑒧𑒑𑒜𑓃𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑓑𑓙𑓑𑓑 𑒄. 𑒧 𑒦𑒹𑒪। 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒴𑒏𑒰𑒞 𑒨𑒧𑒴𑒢𑒲, 𑒑𑒹𑒩𑒴𑒐𑒰 𑒂 𑒠𑒴𑒡𑒧𑒞𑒲 𑒡𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒰𑒧 𑒢𑒫𑒧𑒲 (𑒔𑒻𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒳𑒏𑓂𑒪 𑒢𑒫𑒧𑒲),𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲 𑒢𑒫𑒧𑒲 (𑒫𑒻𑒬𑒰𑒐 𑒬𑒳𑒏𑓂𑒪 𑒢𑒫𑒧𑒲) 𑒂 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒣𑓀𑒔𑒧𑒲 (𑒁𑒑𑒯𑒢 𑒬𑒳𑒏𑓂𑒪 𑒣𑓀𑒔𑒧𑒲) 𑒣𑒩 𑒞𑒑𑓄 𑒧𑒪𑒰 𑒪𑒑𑒻𑒞।

𑒁𑓀𑒡𑒩𑒰-𑒚𑒰𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒫𑒰𑒔𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒰𑒪𑒨-

(गौ७ गामक यञिक्षीक श्न्य मुर्न्धि ७ग़s नाखल अछि।

(गौगम गीर्थ- कमगौल स्टेशनसँ ६ किलामीटन यश्चिम व्रह्मयून गाम लग ७कटा (गौगम कूण्ड यूष्कनधी अछि।

मूं(गनक यूव 'सीगा-कूण्ड'गर्म कूण्ड अछि, सीगा जी ७न्दि यृथ्वीम समाहिग श्ल छली। Oढा जलक कूण्ड 'नामकूण्ड', लक्ष्मध कूण्ड, श्नग कूण्ड, ञा शत्रूघ्न कूण्ड सहा अछि, श्यैयानीम वउ मिलान। स मिलान वावू गढ नानिकलम सहा छै, वसी यढल लिखल गामम स ञाव कहाँ?

हलानन्दि- जनकयूनसँ ३ग किलामीटन दञिध यश्चिमम सीगामढी नगनम हलनश्चन शिन मह्नि

आ जानकी मन्दिर अछि। एतसँ ३८ किलोमीटर पर पुण्डरीक आश्रम सीताकुण्ड अछि। हलावर्धमे जनक द्वारा हर चलबा काल सीता भेटलि छली। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) एतऽ मेला लगैत।

फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल जतऽ सीता फूल लोढ़ै छली।

धनुषा- जनकपुरसँ १४ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल शिव धनुष अछि। एतसँ पूब बाणगंगा बाण बहैत जे लक्ष्मण द्वारा बाणसँ उत्पादित भेल छल।

सुग्गा- जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्रामम शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला ऐल छला- ओ ठाम हुनका ऐश्वर्यक व्यवस्था देल छल।

सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ७ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

कपिलेश्वर- कपिल मुनि द्वारा स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिमम अछि।

कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूर्व, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूर्व आ सहरसासँ २७ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतऽ चिड़ै-अभयारण्य सेहो अछि जतऽ उजर आ कारी

𑒑𑒹𑒥𑒩, 𑒪𑒰𑒪𑒮𑒩, 𑒠𑒱𑒒𑒾𑒕, 𑒧𑒻𑒪, 𑒢𑒏𑒙𑒰, 𑒑𑒹𑒩𑒲, 𑒑𑒑𑒢, 𑒮𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲, 𑒁𑒡𑒰𑒢𑒲, 𑒯𑒩𑒱𑒁𑒪, 𑒔𑒰𑒯𑒰, 𑒏𑒩𑒢, 𑒢𑒑𑒫𑒰 𑒔𑒱𑒛𑒻 𑒮𑒦 𑒢𑒫𑒧𑓂𑒥𑒩𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒔 𑒡𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒧 𑒁𑒥𑒻𑒞।

𑒮𑒱𑒧𑒩𑒠𑒯- 𑒟𑒪𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒙𑒹𑒬𑒢 𑒪𑒑 𑒬𑒱𑒫𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒮𑒰𑒍𑒪 𑒬𑒱𑒫𑒮𑒱𑓀𑒯𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒪𑒑 𑒄 𑒬𑒱𑒫𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱।

𑒮𑒼𑒧𑒢𑒰𑒟- 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒾𑒩𑒰𑒚 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒰𑒑𑒰𑒕𑒲 𑒪𑒑 𑒮𑒼𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒕𑒟𑒱।

𑒧𑒠𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩- 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒁𑓀𑒡𑒩𑒰 𑒚𑒰𑒜𑒲𑒮𑒿 𑓔 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒣𑒴𑒥 𑒧𑒠𑒢𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒬𑒱𑒫 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱।

𑒥𑒰𑒝𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩- 𑒧𑓀𑒮𑒰𑒩𑒣𑒴𑒩𑒧 𑒯𑒩𑒞𑒲 𑒑𑒰𑒧 𑒪𑒑 𑒥𑒰𑒝𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒥𑒰𑒝𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒬𑒱𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱।

शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

उग्रनाथ- मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पियेलखिन्ह। विद्यापतिक ह0 कएलापर ऐ स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

उच्चै0 छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चै0मे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छला। भगवतीक मौलिक मूर्ति मस्तक विहीन अछि।

उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे

मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओइ स्थानपर ई मन्दिर अछि।

पनसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व पनसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्ति भेटल अछि।

चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगम आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो ऐ गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत

अछि।

धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खाम्ह जकाँ पैघ पाया अछि जइमे ज किछु फेकबै तँ बड़ी काल धरि गों-गोँ अवाज होइत रहत। ई स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कारणसँ बस विकसित भऽ गेल अछि। एतऽ नरसिंह पाया फाड़ि अवतरित भेल छला।

बिस्फी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिस्फी गाम अछि। झातिनीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि।

मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३.रहेश्वरी (दाखन, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५.भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६.चामुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८.योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल), ९.कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०.राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११.छिन्नमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२.वनदुर्गा (खननख, मधुबनी), १३.सिद्धेश्वरी देवी (सरिसब, मधुबनी), १४.देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५.कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लस, दरभंगा), १६.उग्रतारा (महिषी, सहरसा), १७.कात्यायनी देवी

(बदलाघाट, सहरसा), १८.पूरन देवी(पूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दरभंगा), २०.ॐमंगलास्थान(मुंगेर), ५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओकर मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी, २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग, ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर, ५.जालेश्वर- शिवलिंग, ६.मनाई- माण्डव ऋषि, ७. ध्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर, ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, ९.पर्वत- पाँच टा पर्वत, १०.धनुषा- शिव धनुषक टुकड़ी, ११.सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड, १२.हनुषाहा- विमलागंगा, १३. करुणा- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, १४. विसौल- विश्वामित्र मन्दिर आ १५.जनकपुर।

दरभंगा कैथोलिक चर्च- १८९१म स्थापित ई चर्च १८९७ कर भूकम्पम क्षतिग्रस्त भऽ गेल। एकरा होली रोजरी चर्च सेहो कहल जाइए। संट फ्रांसिस □सिसी चर्च मुजफ्फरपुरम अछि।

सिख सलामी मजार- गंगासागर पोखरि दरभंगाक महारपर ई मजार अछि। मकदूम बाबाक मजार: ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि। दरभंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा भव्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

अनुलग्नक ४.१०. : ४.१०.१. मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक नूतन साहित्य चोरिक खुलासा-विदेह अंक ३६२-३६३-३६४ आ ओइपर पाठकीय टिप्पणी)/ **४.१०.२:** प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक पुरान साहित्यिक चोरिक खुलासापर पाठकीय टिप्पणी आ किछु प्रमाण

খন্নলগ্নক ৪.১০. : ৪.১০.১. মৈথিনীমে চ্ছদ্ম সমীক্ষা খা কমনানন্দ ঝা (প্রসংগ- চোৰ নেখক পংকজ ঝা পৰাশৰক নূতন সাহিত্য চোৰিক খুনাসা-ৰিদেহ খংক ৩৬২-৩৬৩-৩৬৪ খা ওগপৰ পাঠকীয টিপ্পণী)/ ৪.১০.২: প্রসংগ- চোৰ নেখক পংকজ ঝা পৰাশৰক পুৰান সাহিত্যিক চোৰিক খুনাসাপৰ পাঠকীয টিপ্পণী খা কিছু প্রমাণ

શ્રનુϴગ્નક·૪.૧૦.·:·૪.૧૦.૧.·મૈથિϴીમે·છદ્મ·સમીક્ષા·શ્રા·કમϴાનન્દ·દ્દા·(પ્રસંગ-
·યો1·ϴેપ્યક·પંકળ·દ્દા·પ1ાશ્ન1ક·નૂતન·સાહિત્ય઼·યો1િક·પ્યુϴાસા-વ઼િદેહ·શ્રંક·૩૬૨-૩૬૩-
૩૬૪·શ્રા·શ્રોઇપ1·પાઠકીય઼·ટિપ્પણી)/·૪.૧૦.૨:·પ્રસંગ-
·યો1·ϴેપ્યક·પંકળ·દ્દા·પ1ાશ્ન1ક·પુ1ાન·સાહિત્ય઼િક·યો1િક·પ્યુϴાસાપ1·પાઠકીય઼·ટિપ્પણી·શ્રા·કિછુ·પ્રમાણ

ənulagnəkə 4.10. : 4.10.1. məɪt̪ʰɪliːmeː ʧʰəd̪mə s̪əmiːkʂɑː ɑː kəməlɑːn̪ən̪d̪ə ʤʰɑː (prəs̪ə̃gə- ʧoːrə leːkʰəkə pə̃kəʤə ʤʰɑː pərɑːʃərəkə n̪uːt̪ən̪ə s̪ɑːɦɪt̪jə ʧoːrɪkə kʰulɑːs̪ɑː-ʋɪd̪eːɦə ə̃kə 362-363-364 ɑː oːɪpərə pɑːʈʰəkiːjə ʈɪppəɳiː)/ 4.10.2: prəs̪ə̃gə- ʧoːrə leːkʰəkə pə̃kəʤə ʤʰɑː pərɑːʃərəkə purɑːn̪ə s̪ɑːɦɪt̪jɪkə ʧoːrɪkə kʰulɑːs̪ɑːpərə pɑːʈʰəkiːjə ʈɪppəɳiː ɑː kɪʧʰu prəmɑːɳə

ञ्नुलग्नक ४.१०. : ४.१०.१. मॆथलिीम छद्म समीक्षा ञ्ा कमलानन्द झा (प्नसंग- वान लखक पंकञ झा पनाशनक नूगन साहगि्य वानकि ख्लासा-वदिह ञ्ंक ३६२-३६३-३६४ ञ्ा ओइपन पाठकीय टपि्पधी)/ ४.१०.२: प्नसंग- वान लखक पंकञ झा पनाशनक प्नान साहगि्यकि वानकि ख्लासापन पाठकीय टपि्पधी ञ्ा कछ्ि प्नमाध

⠁⠝⠥⠇⠛⠈⠝⠅ ४⠲१०⠲ : ४⠲१०⠲१⠲ ⠍⠌⠹⠊⠇⠔⠍⠑ ⠡⠙⠈⠍ ⠎⠍⠔⠟⠜ ⠜ ⠅⠍⠇⠜⠝⠝⠈⠙
⠴⠜ (⠏⠈⠗⠎⠰⠛- ⠉⠕⠗ ⠇⠑⠨⠅ ⠏⠰⠅⠚ ⠴⠜ ⠏⠗⠜⠩⠗⠅ ⠝⠳⠞⠝ ⠎⠜⠓⠊⠞⠈⠽ ⠉⠕⠗⠊⠅
⠨⠥⠇⠜⠎⠜-⠧⠊⠙⠑⠓ ⠁⠰⠅ ३६२-३६३-३६४ ⠜ ⠕⠊⠏⠗ ⠏⠜⠺⠅⠔⠽ ⠾⠊⠏⠈⠏⠼⠔)/ ४⠲१०⠲२:
⠏⠈⠗⠎⠰⠛- ⠉⠕⠗ ⠇⠑⠨⠅ ⠏⠰⠅⠚ ⠴⠜ ⠏⠗⠜⠩⠗⠅ ⠏⠥⠗⠜⠝ ⠎⠜⠓⠊⠞⠈⠽⠊⠅ ⠉⠕⠗⠊⠅
⠨⠥⠇⠜⠎⠜⠏⠗ ⠏⠜⠺⠅⠔⠽ ⠾⠊⠏⠈⠏⠼⠔ ⠜ ⠅⠊⠡⠥ ⠏⠈⠗⠍⠜⠼

अनुलग्नक ४.१०. : ४.१०.१. मैथिलीमे छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- बाल लेखक पंकज झा पत्रकारक नूतन साहित्य चोरिक खुलासा-विदेह अंक ३६२-३६३-३६४ आ अध्ययन पाठकीय टिप्पणी)/ ४.१०.२: प्रसंग- बाल लेखक पंकज झा पत्रकारक पुरान साहित्यिक चोरिक खुलासापर पाठकीय टिप्पणी आ किछु प्रमाण

अनुलग्नक ४.१०.१.विदेह: **प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका** ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). http://videha.co.in/ **अंक ३६२-३६३-३६४ क नियारि आ सम्पादकीय आ अध्ययन पाठक लोकनिक टिप्पणी**

मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा प्रसङ्ग

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिलेक्टेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सेट जायत, आमजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ओमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा मूल समस्या अछि, एकटा गैर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दु पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनु पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहियो हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण एखन बेसी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

एहि उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै। एतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्न नै छै। राजनैतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधन धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'घाट' ई २०२२मे आयल ओ सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे ओ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, ई राजनीतिपर अछि मुदा एतहु सुभाषजीक रंगता शैलीकेँ राजनैतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साधनक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'गाछ नवल सुभाष चन्द्र यादव' ई उपलब्ध अछि ओ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। एहि हिसाब ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा नामपंथक साधन बनल छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ओही अपन वायातारास गढ़ल सन्दर्भसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ओही असाइनमेण्ट हुनका मित्रसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, ओही सभ किनदानीक एनजीओ भेटल छन्हि। हुनका सन लोक लेल मैथिली बायातराक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि? कारण ओ

छन्हि समीक्षक छथि। ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गम्भीरतापूर्वक उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।" तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरा चढ़ा सकै छिऐ आ ककरा उतारि सकै छिऐ- कर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण? चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा कन स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे। अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे। प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर। पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि- "विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।" आ उपन्यास आरम्भ। *गामवालीक मृत्यु आ रखनी समस्या, गामवालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?*

कमलानन्द झा कन मस्तिष्क आ दृष्टि खोलि करबा लेल दू टा पोथी हम निकालने छी, ओ पोथी: पहिल अछि सुशीलक गामवाली (उपन्यास) (१९८२) आ दोसर अछि हमर दुखक पोथी- The Black Book, दुनू उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। सुशीलपर जखन हमर समीक्षा शुरू हएत तँ कमलानन्द झा लेल राखल एकटा शिक्षा

ओतऽ हम देब।

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच में' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, गंडक नदी और तकनीकी साँठ-गाँठ, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नाम उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ओ चोर लेखकक निबंध कहै छथि! ओतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई निबंध दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इंजीनियरिंगमे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंगमे एम.टेक. १९७०मे केने छथि, आ ओइ निबंध लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा केँ बूझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई निबंध कोनो सिविल इंजीनियरक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बूझल होइतन्हि। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आगाँ संलग्न अछि।

(http://videha.co.in/investigation.htm लिंकपर आन स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जायत।)

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ स्थानक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर मृत्युसँ मिथिलावासी कहियो उबरत नै भऽ सकत, मुदा मूलस्थानक पुनर्स्थान आ याद्दि लोलुप लोकसँ कृतघ्न होएत से हम सिद्ध भेल। ओ लेखककेँ दस बारह वर्ख पहिने सहरसा गोनानन्द वियोगी उद्धानक भेल छलखिन्ह जे लिखने नहिथिन्ह जे ओ कविताम प्रकाशित भऽ अनायास अपन नवनाम शासनक सामिग्री चानि कऽ लेल्ह छथि, जेहन सन। आब ओ कमलानन्द झा क आश्रय गेलहि मुदा दुर्भाग्य! जेह्ह हिसाब ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक साधन पकड़ने छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सकत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जथावला लोक कम्युनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचबालेल वामपंथक शरण, जेहन लोक सभसँ कम्युनिस्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:

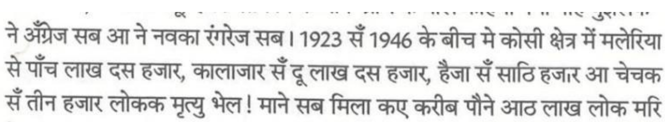
http://videha.co.in/pothi.htm

जेऽ ओकरा पय मान याति दी जे जखन बिल (गेझकेँ पुछल गेलहि

ज की उा ञक्ष बाँध भारतमे याञ्ञनशीक तनसँ दनीसँ आनि नरुल छथि? गँ हुनकर उ्दन नरहि ज माञ्ञक्रासाँङ याञ्ञनशीक तन काना उयाद दनीसँ नै उानन अछि। स निदरु यटानम हम सर ओ तनरुक निष्क नरिता ञकना आन समृद्ध कनौत नरुव, कानध समानान्दन धानाम सञल माँछ ङ्गान याखनिक सर माँछ नै सञेञ, ञनुक्का मलारु गोट-गोट कऽ सञल माँछ निकालैत नरुल छथि, निकालैत नरुत।

ओ छथि समीक्षक कमलानन्द झा पर हमर नजरि नरुत।
सिङ्गीकरत समीक्षायन अन्तिम प्रहान।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5,10,000, कालाजार से 2,10,000, हैजे से 60,000 तथा चेचक से 3,000 मौतें (कुल 7,83,000) हुईं।
श्री पंकज झा पराशर (साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०३)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था। और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'वीर' की उपाधि पाई। और नदी का तटबन्ध 'वीर बांध'

कहलाया। इस गढ़ के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा। क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर मिलता था। से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इस किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई गढ़ रहा होगा। जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस गढ़ का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छत्र समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चार उपन्यासकारक पी0 (ओकर, देखू छत्र समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चार पंकज झा प्रकाशन (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २११-२१८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

डॉ. पंकज झा पराशर (साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

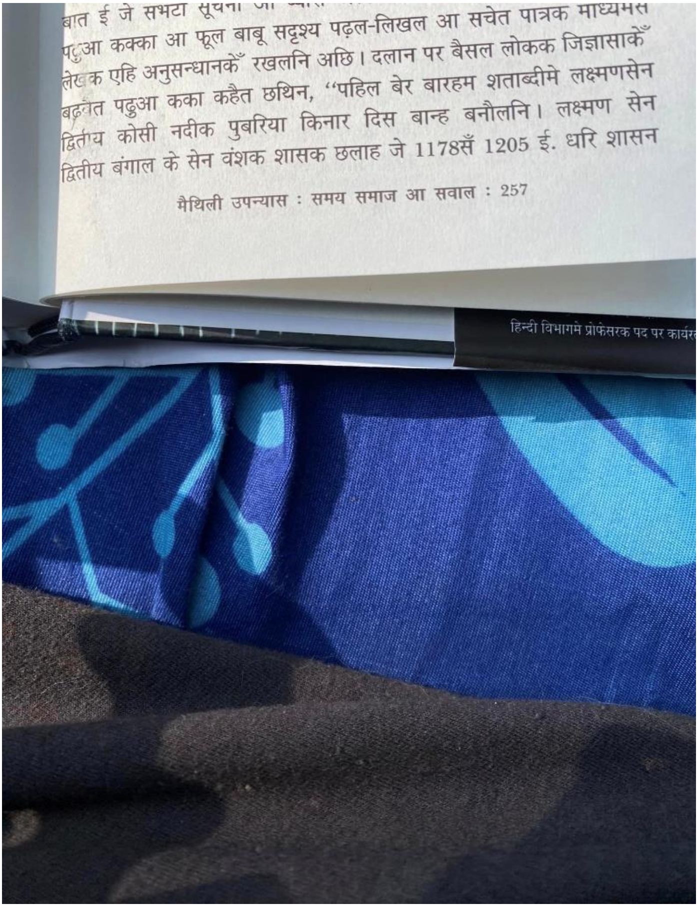
जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुई पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह की प्राचीनता की एक मिसाल फिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे साथ में पड़ गईं। नदी की रफ्तार देखकर आगे बढ़ने से नाक नदी

थी। आखिनकान फैसला हुआ कि नदी क साथ-साथ उपन की ओन वढा जाय औन जहाँ नदी यान कनन लायक हो जाय वहाँ यानी की थाह ली जाय। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कास ऊपन गई औन जियानन क यास, जो कि उसी स्थान यन अवस्थित था जहाँ नदी यहाड़ों स मैदानों में उतनती थी, नदी को यान किया। नदी की धाना तो यहाँ यतली जरूर थी यन प्रवाह इतना तज था कि याँच-याँच सौ मन क यत्थन यठन नदी में तिनकों की तनह वह नह थे। जहाँ नदी का यान कनना मुमकिन लगा उसक दोनों ओन सुल्तान न हाथियों की कतान खड़ी कन दी औन नीच वाली कतान में नस्स लटकाय गय जिसस कि यदि कोई आदमी वहता हुआ हो तो इस नस्सों की मदद स उस वचाया जा सक। शम्सुद्दीन न कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी का यान कन लेंगी औन जव उस को इस वात का यता लगा कि सुल्तान की फौजों न कोसी को यान कनन में कामयावी या ली है तो वह भाग निकला।

वान पंकज झा यनाशन (साहित्य अकादमी मैथिली यनामर्शदात्री समिति क सदस्य) [जलप्रांतन २०११ (पृ. १०७)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहिं पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'



बात ई जे सभटा सूचना आ ...
पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ
लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ
बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, ''पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन
द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन
द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. Gulo is available on Videha Archive with the permission of Subhash Chandra Yadav at this

link http://videha.co.in/pothi.htm.

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link http://videha.co.in/pothi.htm, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link http://videha.co.in/pothi.htm. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic. Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to sacrifice social

justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing ("*Through my whims and fancies I can place some literature on top and can downgrade some to the bottom*") or is this the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link http://videha.co.in/pothi.htm. In the first line of this novel, even before the novel begins,

Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in the Hindi

department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M. Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could be done by a civil engineer only. The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and the people of Mithila will remain indebted to him for this. This thief writer Pankaj Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from people who became communists to escape the land ceiling.

All books by Dinesh Kumar Mishra are now available

in the Videha Archive with his permission:

http://videha.co.in/pothi.htm

Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (http://www.videha.co.in/archive.htm), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel streams. The fishermen here have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox in the Kosi region (783,000 total deaths). **Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi,**

Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 103)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the Dhaus river. Dr W.W. Hunter (1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly

stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: **(Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):**

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कैँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कैँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनैँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कैँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कैँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas

were waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was navigable. The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मददि सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(More screenshots will be updated at this link http://www.videha.co.in/investigation.htm soon .)

याOकीय टिप्पणी

....

उयन्यासकान क छथि, यंकज यनाशन (जल प्रांगन उयन्यास)

दूखद

RabindraChaudhary

....

बड दुर्भाग्यपूर्ण, आपत्तिजनक आ आपराधिक कृत्य..

KumarManojKashyap

...

एहीसन यदि बहुत विभिन्न छी।

R N Mishra

....

दुर्भाग्यपूर्ण

Kalpna JhaPatna

...

आहिरबा..! हुन एी क छथि?

पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

हे भगवान..! एी ठीक बात छैथ।

Umesh Mandal

...

Gaurinath:

नीक। एहन बात कए देखार करब जरूरी

पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

ओकर त लेखकीय जीवन बानी पर टिकल छै आ तकरा प्रश्रय

देब'बाला सेहो मैथिली मे कम नहि।

....

एहन बात लोक सभ मैथिली आन मिथिला क अहित करय मे

सदैव आगू रहैत छथि

JhaPrasanna

....

एकरा बारे म लs जवाब चाही

योगेन्द्र पाठक वियोगी

+91 98310 37532

....

SubhashChandraYadav: I condemn it. The thief must be exposed.

....

अति दुखद, निन्दनीय

ManojPathak

....

सादर आग्रह।

काट कर सकैत छथि। परंतु श्रोत क चर्चा करनाइ आवश्यक छल। न त साहित्यिक चोरी मानल जायत।

RamanandMandal

....

धन्यवाद।

VidehaKeshavBhardwajDelhi

....

Nabo Narayan Mishra

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति

....

Mukund Mayank

Oh

....

प्रदीप पुष्प

बहुत खराब बात।

....

Abhilash Thakur ·

घृणित कार्य! लज्जा जाग

....

Ajit Kumar Jha

पता नहि लाजो नहि लगैत छन्हि एहन प्रवृत्ति वाला महानुभाव सब कें। एहन लोग सब कें लेल सदा अलग सँ पुरस्कारक घोषणा होयबाक चाही। परिहास करबाक लेल अपन कें साधुवाद ।

....

Ramesh Kumar Sharma

पुरस्कार पाबै क जल्दबाजी हौ

....

Kunal

उपन्यास आ तकर लेखकक नाम घोषित करू

....

Ashish Anchinhar

Kunal जी, जँ कोनो सामान्य पाठक ई प्रश्न पूछने रहितथि तखन हमरा नीक लागैत।

प्रबुद्ध पाठक आ लेखक वर्गसँ ई प्रश्न एबाक मतलब छै जे स्थिति गंभीर भऽ गेल छै। ओना जखन पूछिये देलहुँ अछि तखन एकर उत्तर अछि- पोथी, जलप्रांतर, पंकज पराशर। एहि पोथीक गदगदी आलोचक, कमलानंद झा।

....

Kunal

Ashish Anchinhar धन्यवाद ।

ओना सार्वभौम जकाँ छथि जे बस गंभीर आनाय लगाउल जाथि छथि मुदा नाम नहि लेल जाथि छथि। ओना हमना हाथियाक्रासी क चलन लगलथि। थी अनसाहांग छी ।.........

आब नाम ल गेल छथि। ग हमना लगलथि जे पंकज पनासन (उपन्यासकार) आ कमलानंद झा (आलोचक) क बाजक चाही ।

....

Lakshman Jha Sagar

एहन चानक सामाजिक बहिष्कार हवाक चाही। आगि पानि ढाथि0 दवाक चाही। मूँह म कारी चून लयि क गदहा पर सगआम घूमवाक चाही। एहन कुदशा कय दवाक चाही जे हुन क्षा एहन घृणित काज नै करय।

....

Chitragupta Chitragupta

अत्यन्त दुखद

....

जगदानन्द झा 'मनु' ·

मिथिला मैथिलीम साहित्यक चानी जगजाहिर अछि। मुदा आब साहित्य अकादमी आ डाकन लकक द्वारा.... बहुत निंदनीय काज, एहन एहन लाककँ अनथ्य दखान करवा चाही

....

श्रीधनम

थी पंकज पनासन, हम ग' पढवाक आवश्यकता नहि बूझलहुं।

प्रतिरोधक नाम पर मात्र शून्य छनि हिनका लग।

....

आशीष अनचिन्हार

निम्न नवल दिनेश कुमार मिश्र पढ़लहुँ आ ओहि संदर्भमे हम अपन कहब जे गंगानंद वियोगी वा कमलानंद झा सन प्रबुद्ध लोक आगुओ पंकज पराशर एवं ओहन साहित्यिक चोरक संरक्षण अविरत करताह। कारण दुनू जे दुनू प्रबुद्ध लोक सभ सदा ओही मानसिकताक छथि।

....

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अनुलग्नक ४.१०.२: प्रसंग- चान लखक यंकज सा यनाशनक यून्ान साहित्यिक चानिक खुलासायन या0कीय टिप्पणी अा किछु प्रमाण

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). http://videha.co.in/ अंक २६-३० क निर्णय पर टिप्पणी (प्रसंग- ज्ञान लेखक पंकज झा प्रकाशनक पत्रिका साहित्य ज्ञान)

....

kellner@ucla.edu"

Dear Gajendra, thanks for the detective work. was there a response? best regards,

Douglas Kellner, Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education, University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax

310 206 6293, Phone 310 825 0977 http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

....

dear Gajendraji, apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.**- Rajiv K Verma**

....

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country. Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar's duplicay. Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey

. Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more. - **VIJAY DEO JHA**

....

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi. **-shridharam**

....

अहां कं सुचनार्थ य(0न छी (किछ घृधिग काज यंकज यनागनक) ज यंकज यहिनहा ॢ सव काज कनैग नहय छलैग। - **aavinash**

....

Dear Gajendra g, You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha. Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head. jai Maithili jai Mithila- **Sunil Mallick**, President, MINAP, Janakpur

....

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.- **shyamanand choudhary**

....

Namaskar. Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.- **Dr. Ramanand Jha' Raman'**

....

प्रिय गजेन्द्र जी , चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं | यद्यपि हमहु चेतना क स्थायी सदस्य | ओ हो. मुदा निंदास्पद घटना सँ ओही थिक सँ दुखी कयलक | कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यानकनक हमर अपन संग्रही स्मरण, ओहि दुर्घटनाक बाद सँ आब चिंता म ध' देलकय| देखी, हम अपन निर्मित देलहुँ| बहुत दु:खद दृश्य | सृजन निरुद्ध साहित्यिक सन्दर्भ म ओही घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुनुय प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत- सस्नेह,- **गंगेश गुंजन.**

....

PRIYA MAITHILJAN, APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA.

ESWAR KE SAKCHI MANI - DIL PAR HATH RAKHI AA KULDEVI KE ASMARAN K-K YAD KARU KI SACHHAI KE KATEK KARIB CHHI.NIK BATAK LEL MANCH KE UPYOG KARI TA UTTAM. DHANYABAD.SAPREM- **PK CHOUDHARY**

....

Gajendra babu, pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.- **subhash Chandra Yadav**

....

प्रिय Oाकूनजी! (माननीय संयादक), "निदह ॐी-यत्रिका" [मौथिली], ७खन धनिक उयलब्ध साझक आधान यन हम अयनहिक संग जा७व यसिन्न कनवा - **शंगु कूमान सिंह**

....

Dear Gajendraji,

I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.

हां अयन मल मं लिखन छी ज निदह आर्काइन स संबंधित लखक'क सवटा नचना हटा लल जायत। अदि स आर्काइन सं छी प्रसंग सहा, ओकन साक्ष सहा मटा जायत। हमन मत छी जा साक्षव नहवाक चाही निक आ अधलाह दून् तनहक काज'क। अहां अय्यसन कामंट आ निंश्चय सहा आर्काइन म जा क संबंधित नचना क यास्था-सिद्धायन क नूय म हनिश्चा'क या0क'क लल सूनजित नाखि सकैत छियह्नि। छी दाहनवाक वहत औचित्यक नहि ज निदह निक लागि नहल अछि आ अहांक यनिश्रम ओकदम दखा नहल अछि। छीति,सदन। - **Sadan Jha**

....

Thank you.- **Nishikant Thakur**

....

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole. I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean. Thanx for enlightening me on the subject. Regards- **Bhalchandra Jha**.

....

यंकज यनाशनकन ७रुन कार्य यन स्मनध अवेग अछि कनीव वीस-यचीस साल यहिलुक घटना, जहिया आकाशनाणी दनरंगासँ म,म,डॉ, सन गंगानाथ माक ७कमात्र मैथिलीक कानूणिक यदकँ ७क (गाट कनि ह्वाना अयन कहि प्रसानित क७ दल (गल छल, ज वादम (सजग (श्राणा ह्वाना सूचना दलाक वाद) आजन्म वैन क७ दल (गलाह। कहवाक गाग्यर्य ज जँ हम मैथिल दनरेगा- मधूवनीम गंगानाथ वावूक यदकँ अयन कहि सकैग छी गँ ज्ञी कान व७का गया निश्चय ७हन नचनाकानकन सङ्ग क७गन ठग उ0।७व आनश्यक ।- **ajit mishra**

....

Dear Gajendrajee, We should take strong step to prevent such intellectual cheats. My support is always with you.- **K N Jha**

....

This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,- **Prof. Udaya Narayana Singh**

....

प्रियनन ठाकुन जी, मैथिल साहित्यकान आव साञ्वन क्राञ्म सहा क नहल छथि, ञ्ची जानि अयान प्रसन्नगा हल | यंकज यनाशन क नकानाभक वृत्रिक यूर्ण उययाग कनवाक लल हम नावल प्राञ्ज सा सम्मानिग कनाय चाहैग छी |- **वृत्रिनाथ मिश्र**

....

Sampadak Mahoday, Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi, Sadar- **SHIV KUMAR JHA**

....

गजह्र हाञ्ची, नमस्कान ! मैथिली म ओहि गनहक काज लगागान ह' नहल अछि । किछ्र व्यक्ति ओहि धंधा म अग्रसन छथि । मैथिलीक सम्यादक लाकनिक अननिस्हगाक हायदा काका अंग्रेजी यठनिहान गथाकथिग साहित्यकान लाकनि उठा नहल छथि । यंकज जीक यहल म छयल लख क हम सहा यठ्न र्ही आ किछ्रओ दिनक वाद हम नट यन मूल लखकक आलख क सहा यठलह्र । हमना ग' आश्चर्य लागल छल ज यंकज जी आलखक कम स कम शीर्षक ग' वदलि लैगथि मुदा हुनका ओाक स्हान नहिगनि गखन की छल । ओाव नहि , हिनक वह्गा नास कनिगा अंग्रेजी साहित्य स' हन-हन कयल गेल अछि । खैन ! ज कनथि ... । मुदा ओहि वन कहावगा ठीक हावाक चाही " सौ सानान क ग' ओक लाहान क " । प्रकाशन म ज ही किया व्यक्ति गलगी क' नहल छथि हुनका गंहीन क्रिमिनल

वूसवाक चाही । धन्यवाद एहि लेल अहाँ के जे एतेक जानदान पत्रिका स' एहि ग्रन्थ के उपलब्ध ।- अहाँक- प्रकाश चन्द्र (प्रकाश झा, मैलानंग)

....

pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal. - **kamini**

....

Gajendr jee, maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai. हमन मनगव एगव, जे एक वन अहां दखान क दलहुं, आव छाति दल जाउ. द्वितीया म एहिना ए नहल छै. वन वन आ खनाव राषा म लिखल मान क दूखी कनैत अछि. हन लागैत अछि जे अहि म समय कियैक नष्ट कनी? हिन्दुस्तान म जाति आ सहा मैथिली स जाति नयि जाएत. हम एकना नयि मानैत छलहुं मुदा आव 30 वनख स मैथिली म लिखनाक वाद आव दखल जे एक उान 1 मैथिली साहित्य म लिली जी, उषा जी आ शेफालिका जी क वाद यदि किउा नाम लैत अछि त हमन. 2 एखना काना यत्रिका वै छै त हमना लल नवनाक आग्रह हाइएत छै. 3 एखना हम उागव सक्रिय छी आ निनंतन लिखि नहल छी. 4 दूखद जे हमना वाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन क हम अयन गुनिया वूसैत छी) क वाद एहन काना सभक कान, महिला लखन नयि आएलए. 5 हमी स्थिति नहलाक

बाधा, आब जरुन हम दखे छी, त यावे छी ज हमना यन, हमन नचना यात्रा अथन हमन नचना यन किछु नयि लिखल गेलए, बाह ऊा मारुन रानह्नाज नहथु अथना आन किऊा. जरुन हमन दशक कन चर्च हाऽऽत छै, गीन चानिटा नाम यन सनिस्मान चर्चा हाऽऽत छै, जाहि म हमन नाम नयि नहेत छै. हमन नाम मात्र सङ्करे लल जाति दल जाऽऽत छै. 6 एाक दिन म मात्र नमध जी हमना यन एक गोट लख लिखलहि. हम ऊाकना यून: टाऽऽय कनबा क अहां लग यOायब. 7 जाति यानि धर्म आ ह्नब यन कहिया ध्यान नयि दलाक कानणे त कही हमन ऽऽी स्थिति नयि छै, आब हमना ऽऽी साचबा म आवि नहल अछि. 8 हमन भिऊक, ज स्नयं हिन्दी क ख्यातिलब्ध कथाकान छथि, हमना वृषन नहलाह ज हम मैथिली म लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गेन मैथिल (जाति विशेष) स नयि छी, गें हमन लखन क कहिया मैथिल सरु नयि नाटिस कनताह, कहिया किछु नयि कनता.. अयन राषाक प्रति प्रम क आगनह कानणे हम हुनकन बात नयि माललियै, लिखैत गेलहुँ, मुदा आब लागि नहलअए ज हुनकन कहबी सही छलहि की? 9 एखना की हाल छै मैथिली म, दखिया. ऊाकना विनुद्ध किछु कनियु. मैथिली म ज घेघ घेघ संस्था चाऽऽ, चनाना समिति सनक, सरु वन विद्यायति यर्व मनवैत छथि. लाखा खर्च कनै छथि, मुदा नीक लखक कन याथी सरु वन 5-7 टा निकालैथु, स नयि हावैत छहि. 10 हमना रुटल जानकानी क माताविक विद्यायति हॉल किनाया यन चढ़ छै. तकना म काना आयत्ति नयि, यदा ऊाकना स किछु आय हावै. मुदा ऊाकना मैथिलीक काज अथना नाटक आदि लल मांगल जाएत, त; नयि रुटै छै. यदि ऊाकन शुल्क चुका दी, तरुन त

किताबक रूप मे किछु ल' सकैत छै. एकरा सभ क उजागर करी. 11 व्यक्ति स संस्था पैघ होइत छै. जेना संस्था सभ छै, एकरा पर लिखी, साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग सहित. 12 लिखी जक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मनीचिका' केर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल स हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादेमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य'' मे हम पिछला 25 साल स अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा स अनुवादक नमूना माँगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे सज्जन धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नहि बूझल त कोना मैथिल साहित्यकार स पूछि सकैत छलाह. ओहो तहिना रहलै, जेना एक बेर एक गोट चैनल मृत्युंजय मुखर्जी स हुनकर वायाडाटा मंगने छल आ एखनि पटल समाचारक अनुसार आ. जानकी वल्लभ शास्त्री स हुनकर वायाडाटा पद्मश्री लेल माँगल गेलैय. 13 अपन विनम्रता दर्शबैत हम लिखी जीक दु तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियहि. गेया ओहो पर कोना विचार नहि. लिखला क बाद हमरा कहल गेल जे हम लिखी जी स साहित्य अकादेमी क अनुवादक अधिकार दियाब मे मदति करी. आर भाषा, अहाँ क अनुवाद स मतलब अछि न, आ जहन हम अनुवाद क; क देब' लेल तैयार छी तहन अकादेमी क किअएक अधिकार चाही? ओहो लेल जे अकादेमी अपन पसीनक आदमी क अनुवाद लेल द; सकय. एखनि धरि ओकरा पर निपटारा नहि भेलैय. अकादेमी स हुन कोना पत्र नहि आएल

अछि. अनुवाद गैयान नाखल छै. लिली जी आव वहुत वूझर्ग र; (गेल छथि. हुनक मात्र ऽऽयेह ऽऽच्छा छै (आ वहुत स्वाभाविक) ज हुनकन याथी सर हुनका सामा म प्रकाशित र; जाउ. 14 लिली जी क याथी दिल्ली म आनवाक श्रेय हमन अछि, ऽऽी मनिगहूं उाकना नकाॅति कनाउ मैथिल समीऊक आनश्यक नयि वूसेत छथि. उकना यन लतू. 15 मैथिली क रानतीय स्नानयी0 स यूस्तक प्रकाशन लल हमही आगां उलहूं आ प्ररास जी आ लिली जी क याथी वहान रलै.रानतीय स्नानयी0 स मैथिली यूस्तक प्रकाशन क श्रेय हमन छहि, ऽऽीहा मनेत उाकना नकाॅति कनाउ मैथिल समीऊक आनश्यक नयि वूसेत छथि. उकना यन लतू. गजन्द्र जी, मैथिलीक ऽऽी सर मानसिकता यन आश्चलन कनी जाहि स नवनाकान आ वनिष्ठ नवनाकान सर क अयमानित नयि हाव' यतै. अहां चाही त' उकना विरुद्ध यन द' सकै छी. हम दासन वात सहा लिखि क य0ायव. मूदा हम हन करुव, ज हम व्यक्ति क नयि संस्था आ व्यक्ति क मानसिकता क दाष दवहि. लाक यढथू आ यूवाथू ऽऽी स्वनामधन्य सर स ज जकना स अहां क (गालौंसी अछि, तकना यन अहां लिखव आ जकना स नयि अछि, ज मौन राख लिखि नहलउ काना विनिआद म यतल वगैन, हुनका लल ऽऽी व्यनहान?
-निरा नानी.

....

Shri gajendraji, good work. Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat. chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak

prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi. Saadhuvaad.- **manoj pathak.**

....

We should be greatful to Pankaj Parashar that he did not lay claim on the magnum opus of Kavi Vidyapati. I know him very well and his group as well. They have no love for Maithili in fact they are the moles planted by vested Hindi writers to damage maithili. Parashar and likes are the distructive lots and they are the culprits for agonising senior writers of Maithili those who dedicated their life for Maithili language and literature. I have no sympathy for him. I cant say, even, God bless them. - **Chitra Mishra**

....

गगनानन्द वियोगी: (मिथिला सृजन: जून-जुलाई २०१०, वर्ष-१, अंक-२): हुनक (पंकज पराशरक) अनेक रचना पढ़ने छलौं जकर जन्म दोसरक काव्य रचना पढ़लाक अनन्तर भेलनि अछि। कविता आ परिपूर्णता हुनक थिकनि मुदा किछु गोटेकेँ ई कहबाक अवसर भेटि गेलनि जे ई पंकज चोर-कवि थिकाह। हम देखैत छी जे चोर समीक्षक भने ई होथु, चोर-कवि ई कदापि नहि छथि। मुदा एना किएक भेल? एहि दुआरे भेल जे आनक रचना पढ़ि कऽ अपन अनुभूतिमे उतारैत काल ई आनक आरोहावरोहसँ एना आक्रान्त

छलाह जे एकर छाय कविताक दृश्यम देखार यठि (गेल। ॐ् नस्फूएः सिद्धाक कमी थिक, जकरा श्चा नवनाकार नविए-नविए सिद्ध कऽ सकैए अछि।

....

(गोनीनाथ (अनलकान्द)- सम्यादकीय अंगिका अक्तुवन-दिसंवन, 2009- जनवनी-मार्च, 2010- यंकज यनाशन प्रसंगम- हँ, दंद-हंद कनैवला किछु लाक सव ०।म यहुँचि जाऽ् छै आ एहन लाक ओहुँ अयन धूर्णा आ चानि कला देखवै छथि। मुदा एकरा असलियए उजागन कनव असंभ्व नऽ्् नहल। "विदेह"क गजड्ड ०।कुन ओहन ओक "यूना" (यंकज मा उर्फ यंकज यनाशन) क असली चेहना हाल म देखालनि।

....

ॐ् यंकज मा यनाशन यहिनहियसँ ओहि सत्म संलग्न अछि, हम्कृष्ण माक कविताकँ हिस्रीम, विना अनूमणिक, छयवै छथि; ॐ् गय आन यूष्ठ हाऽ्ए अछि कारण विद्यानन्द मा जीक कविता सहा ॐ् यंकज मा यनाशन ओकटा हिस्री यत्रिकाम विना अनूमणिक छयवउालक (ॐ् सूचना हम्कृष्ण मा जी द्वाना प्राप्त हल, जे विदेहम छयलाक वाद यंकज मा यनाशन हुनका हान कऽ कय टॉर्चन कलकाहि जखन उा वीमान नहथि। हम्कृष्ण मा जी हान द्वाना सहा सूचिए कलहि, हम कहलियहि जे की ॐ् सूचना विदेहसँ हटा दी? एँ **हम्कृष्ण मा** जी कहलहि, नहऽ दियौ, सत्य जे छै, स ॐ्ओह छिउ- सम्यादक)।

ॐ यंकज मा यनाशन कृतक वन, कलक मूदा ओ वन गँ डा अयन नाम दासनाक नचना छयवा ललक, अनूनादक नुयम नै। -सम्यादक)

नमश्क आलेख-वहस-यंकज यनाशनक साहित्यिक चानि मैथिली साहित्यक कानी अध्याय थिक- यन किछु याठकक विचान:

SHIV KUMAR JHA TILLOO JAMSHEDPUR said...

Ramesh jee ken dhanyavad,satya gapp bajwak saahas "MITHILA" me aabi rahal achhi neek laagal,chhadma lokpriyatak khatir lok kichu ka sakait achhi..Pankaj Parasharak..aab charch karab seho nahi sohay laagi rahal..jatek ninda kayal jay kum parat.Muda RAMESH BABU HU APNE SABH NINDA KARAY CHHEE AA KICHU LOK KAHAIT CHHATHI PANKAJ JEE JUG-JUG JIWATHU,ONA HAMHU HUNAK DIRGHA JEEVANAK KAAMNA KARAIT CHHEE,PARANCH SABHAK JE JUG-JUG JIWAK KAAMNA KAYAL JAY MATRA PANKAJ PARASHARAK LEL NAHI.."SARBE BHAWANTU SUKHINAH", RAMESH BABU APAN LEKHANI KEN GATI NIRANTAR RAKHAL JAY...

Rama Jha said...

ehi vyakti pankaj parasharak ekta ehane ghrinit message ekta mahila je hamar mitra chathi, ke bhetal chhai, etek ghrinit je etay nai likhi sakai chhi, apan rachna ke dosar bhasha me mool kahi prakashit kaenai chori te nai bhelai, muda okara svayam dvara anoodit kahi prakashit karebak chahe, mool maithili se dosar bhasha (hindi aadi me), va dosar bhasha (hindi aadi se) maithili me.

आशीष अनचिन्हार said...

जहाँ धनि यनाशन- घटना अछि डाहि जाक खिश्वाशं कओल जाओ ताक कमा मुदा नमश शाऽ निशानानीक कान शाषा म समीजा कओल जाओ हिंदीं म की मैथिली म । हमना हिसाव ओकें नचना क दु- तीन शाषा म मूल कहि प्रकाशित कनव सहा चानि श्ला ओहू यन ध्यान दल जाओ।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

नमश

वहस-यंकज यनाशनक साहित्यिक चानि मैथिली साहित्यक कानी अध्याय थिक

निदह-सदह २ (२००९-१०) सँ यंकज यनाशनक साहित्यिक चानि आ साऽवन अयनाधक यायक घैलक महा-निश्चट श्ल अछि। ऽी

एहि श्रेष्ठ पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छनि। हुनकर अपनाध एकठामक रचना करब जाहि प्रशंसा कयल जाय, कम होयत। "विदेह"क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अहू पाल-खाल लेल कएक युग धरि विलम्बित रहत कए निबद्ध रहत, से "समय केँ अकानैत" कहब कठिन अछि।

साहित्यमे चौर्यकलाक उदाहरण एहिनहुँ अबैत रहल अछि गोटपगना। मुदा एक बेरक चोरि एकठा गेलाक बाद प्रायः चोरिक आरोपी साहित्यकार मौन-व्रत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठण्ढा रहल अछि।

मुदा ताहि परम्पराक नियनीत अहूँ बेरक चोर 'सिद्ध चोर' निकलल अछि आ विगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि- सेहो कोटिक। आ तेहन महाचोरकेँ मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कए पुरस्कृत कएल अछि आ समीक्षाक चासनीमे चभायल कविता सभकेँ बानि देल गेल अछि।

विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुनस्सन अरियाग टा नहि लगौलक, अपितु एहन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कए अपन "वालुनस" सहो प्रदर्शित कएलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः "उपन उहिल" होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन ननीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओही सीढ़ीकेँ निचाँ खसा दैत अछि। हुनका डाकना

अपन ब्लॉग-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै। ई नाम बदलि-बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पाठकार्ति लिखबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ई हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बरीक संग अपन नाम जोड़ि विवादक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहन प्रवृत्ति कएटा आउर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक घोघ-घोघ नामक माला जपि कऽ म०म० होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तुरकेँ हिन्दीक घोघ-घोघ नामक बैशाखीक एतेक जरूरति किएक होइत छनि?

“विदेहक” “इरब्बायनीक विवरण” पढ़ि कऽ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। पहिल-८६ आ आखर-२३ मे जे पोल खुजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बाद मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेबाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। “मैथिल ब्राह्मण समाज”, रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा “विनोद” आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन अछि जे पुरस्कृत करबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हेतै। “विदेह” द्वारा रहस्योद्घाटन कएलाक बादहु एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करबाक वा आन कोनो कार्रवाई करबाक बेगरता नहि बूझा रहल छै आ सभ गुम्मी लधने अछि। एहन “जड़-संस्था” सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा

अपकार? ई कोना मानल जाए जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ ऐ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। “विलम्बित कइक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनना विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता केँ विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल आँखिगर बार एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहु सन कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक बानिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः मि. हाइतक कार बेकार? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। एकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किएक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पालिटिक्स की थिक- टेकनिकल पालिटिक्स थिक, सेहो किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानक यात्रा कयल जा सकैत अछि। “टेक्नो-पालिटिक्सक” बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह “महेश” पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयाक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि। प्रो. अनूप कमलक “नय इलाक मे” संधमानी कऽ कऽ “समय केँ अकानल” जा सकैत अछि। आर तँ आर, ऐ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ “विलम्बित कइक युग...” पोथीक समीक्षा लिखवा कऽ

“मिथिला दर्शन” (त) सन पत्रिकामे छपला कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल ओजान थिक “टक्का पालिटिक्स”!

ई मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ अंक-२३ आ पहिल-४६ कालकातामे नहि भेटल हेतन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक “वहुरागा मं सूर्योदय” आ ओही शीर्षकक नारायणजीक कविता (वहुरागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समूहसँ असंख्य प्रश्न पुछऽवला कविताक भावार्थ किएक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा गेलनि? ओकरा “प्रायोजित समीक्षा” किएक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समूह विषयक कवितासँ बेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? ओहो सभ कविताक कवियोँ “छाया”क शंका नहि भेलनि समीक्षककेँ? “सपनाक सभटा मर्मान्तक पुकार”क नोटिस लबऽवला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असत्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक “पोजीशन होल्ड” भऽ जाएत से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियेँ रहलनि, उदय चन्द्र झा “विनोद” केँ सेहो नहि रहलनि। ई अभिज्ञान तँ पंकज पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारा “पराशर” मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जेकर कमल अछि सेहो अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भऽ कऽ तीन बेर चोरि कराइ “पराशर” महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ

सद्दा कनवैत द्दानि। आखिन जीवकान्तजी साद्दित्यिक चानिक नाटिस किछ न ललनि, जखनकि द्दूनका विचारेँ "मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता यौविकऽ विषवमन कनैत अछि"(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशनक चानिवला कविता-पाठीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घान प्रशंसक छथि। तखन अहू समीक्षा-आलेखम अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ "विष-वमन" काना न लगैक? द्दूनका सन "पढाकू" समीक्षक-पाठककेँ "कॉम्प पार्जीशन"म अनतिद्दान "डक्मयर्ट आ हैविचूडटेड" साद्दित्य-चानसँ प्रशंसा आ पूनस्कान द्दूनू पावि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्दशा? अंततः विदेह-सदेह टा किएक निष्ठा कलक ओद्दि घटनाक? आन काना पत्रिका किएक नद्दि कलक? डॉ. नमानन्द झा "नमण" द्दूनननटपन निष्ठा कनैत छथि तँ घन-बाद्दन पत्रिकाम किएक नद्दि जकन ओ सम्पादक छथि? चाना समिति, पटना सम्मानित कनैत अछि ओद्दन-ओद्दन साद्दित्यकानकेँ तखन अपन पत्रिकाम काना निष्ठा कनत, जखनकि पूनस्कान आपसा नद्दि लैत अछि, जानकानी द्दैलाक वा साकांक्ष साद्दित्यकानक अनुनोध प्राप्त द्दैलाक बाद? नचिकेताजी नटपन निष्ठा कनताद्द आ "विदेह"म छपत तँ "मिथिला दर्शन"म किएक नद्दि निष्ठा वा सूचना छपल? कानण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशनक काव्य-पाठीपन छपत, तखन ओद्दी पाठीक चानि कयल कविताक निष्ठा काना छपत? चानू टाग साद्दित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उडि नद्दल अछि- पितामद्द

ओ आचार्यगणक समक्ष ओ (अनजानमे सही) हुनका लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना ओ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा रहल? एहन नामी पुरस्कारक संचालन ओ चयनकर्ता महानथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता किएक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय करब उचित, जखन कि ई बानि गसन बनक बानि थिक ओ से छपि-कऽ [illegible] भेल अछि। एकरा बादो ओ नवीन साहित्यकारगण द्वारा काव्य-बानि, आलेख-बानिकेँ प्रश्रय देल जायब किएक नहि मानल जाय, जखनकि आनन्द, मैथिल-जन, पहिल ओ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक बानिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहन सम्माननायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चिह्न लागल होइक? की पाठीक आकर्षक गद्य देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु "ठीक छै राउ"?

अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केलनरक "टेक्नोपॉलिटिक्स" तँ छपि गेल "पहिल"मे बाना कऽ। आब जीवकान्तजी, ज्ञान रंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पुछथु जे नाम चामस्कीवला रचना कोना गेल, की भेल, कोन नामे छपल? पंकज पराशरक नामे

कि यदीय विद्यानीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद नूयम)। ओी निसर्व एखन नहि एल गँ एनिश्चम यून: एकटा साहित्यिक चानिक याल खुजा? अंगा: एकटा माँछकेँ कएटा याखनिकेँ प्रदुषित कनए दल जाय आ स कए वन? उदय-कान्त वनि कऽ गानि यठनाक आदति गँ यूनान छनि डॉ. महावान कें। ककना "सनीसृय" कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ काना यनिवानम घाँसिया कऽ निष नमन कऽ सकैत छथि। ब्रायसक सए गुणसँ यनियूर्ण डॉ. यॉल वावाकेँ चानिक एनिश्चनाणी कनवाक वएका गुण छनि गँ हिनका नामी फूटवॉल टीम ह्वाना यासल जाइत अछि, जाहिसँ "विश्व-कय"केँ यौनान अइ "अमाघ अस्त्रक" उययाग अयना हिसावेँ कयल जा सकय।

सहनसा-कथागोष्ठीम यठित हिनकन यहिल कथाक शीर्षक छल- हम यागल नहि छी। ओी उद्घाषणा कनवाक की वगनना नहैक- स आइ लाककेँ वूषा नहल छैक। अविनाश आ यंकज यनाशनक मामाजी गहिया हिनकन कथाकेँ "टियग्रीक"क्रमम मैथिली-कथाक "टर्निंग य्वाइन्ट" मानन छलाह। आइ ओ "टर्निंग य्वाइन्ट" ठीक एक हिसावेँ "टर्निंग य्वाइन्ट" प्रमाणित एल, कानण कथाक ओहि शीर्षकम सँ "नहि" हटि गेल अछि, हिनकन गवाना चानिसाँ हिनकन यहिल चानि (अनुष कमलक कविता- नए इलाक मे) क निष्ठा प्रस्थानम "मामाजी" आ डॉ. महेन्द्रकेँ छाति, सहनसाक शेष सए साहित्यकान हस्ताउन कऽ "आनन्द"केँ यठौत छलाह। आइ ओ हस्ताउन नहि कविदान सए कन्छी काटि कऽ नाम-दहिन गाक-माँक कनवाक लल वाध्य छथि। द्वैध-चनित्र आ दाहना मानदण्डक

यनिधाम सेँह ह्वाञ्ञग अछि। अनिनाश गखन गँ दखान रेऽ जाञ्ञग छथि जखन डा निदह-सदह-२ म लिखेग छथि ज "ञकना सार्नजनिक नहि कनवे"। नूका कऽ सूवना दनाक कान वगनगा? यंकज यनाशनसँ सम्बन्ध खनाव हनाक उन ना काना "टन्नायालिटिक्स"(?) कन चिन्धा?

निदह-सदह-२ क या0कक संदश गँ कञटा साहित्यकानकँ दखान कऽ देग अछि। जगय नाजीन कूमान नर्मा, श्रीधनम, सूनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधनी, गंगेश गुंजन, यी.क.चौधनी, सूरोष चन्द्र यादन, शम्भू कूमान सिंह, निजयदन मा, रालचन्द्र मा, अजिग मिश्र, क.ञन.मा, प्रा.नचिकगा, वृद्धिनाथ मिश्र, शिन कूमान मा, प्रकाश चन्द्र मा, कामिनी, मनाज या0क आदि अयन मूखन राषाम प्रखनगायूर्नक निन्दनीय घटनाक निन्दा कलनि अछि, गाहि अनिनाश, डॉ. नमानन्द मा "नमध", निराानानीक माँयल-गायल शब्द आश्चर्य-रानक उद्धक कनेग अछि। मूदा संगाषक वाग ञ्ञी अछि ज या0कक "प्रवल रान-रंगिमा" साहित्यकानाक "मंहायल आनाज"क काना चिन्धा नहि कनेग अछि। निराानानी गँ कमाल कऽ दलनि। ञहि 0ाम मैथिली राषा-साहित्यक ञक सय समस्या गननाक उचिग स्थान नहि छल। ञ्ञी डाना0 काल खाना0 आ महादनक निनाह कालक लगनी रेऽ गेल। काना चान वन-वन अयन कू-कृत्यक यनिचय दऽ नहल अछि आ हूनका समय नष्ट कनव वूमा नहल छनि आ चानकँ दखान कलासँ दुःख रेऽ नहल छनि? डा अयन प्रगिक्रियाम कगक आत्म श्लाघा आ हीन-रानना व्यक्त कलनि अछि स अयन यत्र अयन 0ढा रेऽ कऽ यढि कऽ वूमि सकेग छथि। दिल्लीयाम ञहिना रेऽ नहल अछि, गँ मैथिलीम माह कऽ दल जाय? आव दिल्लीसँ यूछि-यूछि कऽ

मैथिलीमे कोना काज होयत? निरालाजी अपना वक्तव्यमे अपना मिलन करा कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पढ़ल आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकार होइत की उपेक्षणीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एक रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विरोध एना रहलै जे ब्राह्मण-समीक्षक, आलोचकक दृष्टिकोणसँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेसीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) कएलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणेँ ओ बेनाथक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ नहि जायत? निराजीकेँ बूझल नहि छनि जे हुनका लोकनिक बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन वत्स झा, नम्रता झा, माला झा आदि अपन शब्दक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका त कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने “इजोतियाक अछैत मोन”। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेल छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रतिष्ठा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक बड़ संस्था अथवा समीक्षक सम्मान प्रदान करबामे हुनका कोना अयोग्य नहि, मुदा अर्थाभाव तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान निराजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे “बड़”लोक छै तँ “छोट” लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करबाक

बतबा छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेबाक हेतुसँ बँचबाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादमी प्रतिनिधि, दिवालियापन कर शिकार ज्ञानीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारसभ की की अन्हर नहि जायत? विभारानीक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित कएने अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना कएने अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठाबए बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कार्यहीनतासँ कोनो लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक शृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब काज। साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेबाको चाही आ तकरा देखार करबाक "चालूपना" हेबाक चाही। "चाही"बला पक्ष साहित्यमे वर्जित होइत अछि। एहन-एहन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक "बुद्धी" एहन घटनाकेँ प्रश्रय देने अछि आ जबर्दस्त उदाहरणकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम सेहो कएने अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझेतैक? विभारानी अपन सेहो समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक बचावमे अपन स्वर होइत छै। सेहो संगठित रूपे चोरिक भर्त्सना होएबाक चाही।

राजकमल चौधरी आ आन लेखकक रचनाक चोरि पंकज पराशर प्रसंग

पंकज पराशर उर्फ अमृत कमल उर्फ डगलस कोलनर उर्फ

उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

ParasharsIntellectualTheft

याOकक सूचनाक वाद ई-मेल यगा चलल अछि (आ उाकन सत्रायन कओल गेल) जे ओहि लखकक ई-मेल ओहि गनहक यहिल कृत्य नहि अछि। ई-मेल लखक यहिन सहा Douglas Kellner क Technopolitics क यंकिशः अनुवाद मूल लखकक नुयम नामसँ स्कानगंजनक हिन्दी यत्रिका "यहल"म (धाखासँ छयवउालक। गकन यगा चललाक वाद "यहल"म ओहि लखकक नचनाक प्रकाशन वन्द हs गेल। ओहि सम्बन्धम निस्कृग आलख निदहक अगला अंकक सम्यादकीयम दल जाओग।

२.ओहि सए घटनाक वाद यंकज यनाशनकँ निदहसँ वेन कओल जा नहल अछि। निदह आर्काइवनसँ "निलम्बिग कइक यूगम निवन्ध" याथीकँ हटाउाल जा नहल अछि आ ओकटा ईनक्लायनी क्लाना ओहि याथीक (उगलस कलनन वला घटनाक्रमक वाद) जाँच किछु चूनल लखक-याOक क्लाना कओल जओवा धनि नहग। प्रकाशककँ सहा उचिग यूलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअओ गँ) लल ओहि समस्क घटनाक्रमक सूचना दs दल गेल अछि।

३.याOक उगलस कलननसँ ई-मल kellner@gseis.ucla.edu यन "यहल" यत्रिका वा गकन सम्यादक श्री स्कानगंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा

info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणसँ nishikant@jagran.com, response@jagran.com, mailbox@jagran.com, delhi@nda.jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। उपरोक्त कतरनक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए पाबि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहिल पत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com पर सेहो पहिल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रावधान भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि होअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

अन्तर्जालपर ब्लैकमेलिंग विरुद्ध गूगल, विद्वज्जन आ ब्लागवालीकेँ सूचित करू, साइबर क्राइम आ ब्लैकमेलिंग रोकबा लेल सेहो ठोस प्रावधान छै, विशेष जानकारी ggajendra@gmail.com पर सम्पर्क करू। अहाँसँ पत्रकार, न्यूजपेपर, पत्रिका आ दिल्लीक गणमान्य लेखकगण/ प्रोफेसर/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल ggajendra@gmail.com पर सूचित करू।

Reply 01/26/2010 at 01:56 PM

2

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

you may also brought this episode before sanjay@jagran.com

Thanks readers.

Reply 01/26/2010 at 12:25 AM

3

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com

Reply 01/25/2010 at 09:48 PM

4

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 and has been

forwarded for taking Police action immediately.

Reply 01/25/2010 at 09:45 PM

5

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

Professor Kellner has thanked me for this detective work, but it all your efforts dear reader.

Reply 01/25/2010 at 08:21 PM

6

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

pahal=- 86, aarambh -23 aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.

Reply 01/25/2010 at 08:16 PM

7

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed253a/newDK /intell.htm ehi link par douglas kellner ke lekhak

anuvad pahal-86 ke page 125-131 par achhi-soochnak lel dhanyad pathakgan.

Reply 01/24/2010 at 08:16 PM

8

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake Me" hoinh aa Aarambh (ank 23, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March 2000) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.

Reply 01/24/2010 at 08:02 PM

9

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.

Reply 01/23/2010 at 11:40 PM

10

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

विदेहक पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ डाकर सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि तरहक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो Douglas Kellner क Technopolitics क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक रूपमे नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबओलक, प्रदीप बिहारीक बेटा प्रधन बिहारीसँ अनुवाद करबओलक आ कहलकै जे अनुवाद छपबा देब मुदा अपना नामसँ छपबा लेलक, प्रधनकेँ कहलकै जे अनुवाद निरस्त भऽ गेल आ हुर हरा गेल। ओकर पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगिला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२.एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि आ एकटा इन्क्वायरी द्वारा एहि पोथीक (डगलस केलनर बला घटनाक्रमक बाद) जाँच किछु चुनल लेखक-पाठक द्वारा कएल जएबा धरि रहत। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि।

३.पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल kellner@gseis.ucla.edu पर "पहल" पत्रिका वा ओकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा

info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणक nishikant@jagran.com, response@jagran.com, mailbox@jagran.com, delhi@nda.jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। उपरोक्त कलंकक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए पाबि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहिल पत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com पर सेहो पहिल पत्रिकाक पूरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रावधान भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सूधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्य सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि होअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमरा ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

Reply 01/22/2010 at 12:03 PM

11

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and

addresses pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.

Reply 01/21/2010 at 10:00 PM

12

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

the htpps host matches reliance communications and the corresponding email gamghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com

Reply 01/21/2010 at 08:50 PM

13

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, Process to file complaint against Cyber Crime Act is being initiated and the organisation being taken into confidence.

Reply 01/21/2010 at 06:13 PM

14

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address 220.227.163.105 , 164.100.8.3 aa 220.227.174.243 aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.

Reply 01/18/2010 at 11:19 PM

15

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi

Reply 01/18/2010 at 09:27 PM

16

सुबोधकांत said...

अविनाशकेँ सेहो 220.227.174.243 आइ.एस.पी.सँ एहि प्रकारक ई-पत्र आयल रहै मुदा ओ मामिला खतम कऽ देने रहथिन। ओ टिप्पणी सभ एतेक घृणित छैक जे एतए देल जा रहल अछि।

पंकज पराशर उर्फ.....डगलस केलनर उर्फ अरुण कमल उर्फ...

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकेँ पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलाक ओ एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सत्य कथा। दरभंगामे रहैत रही, छात्र हम आ हमर एकटा पितियौत भाइ सातम ०।८ रही। साँझमे सरवरजीक घरक बाड़ीमे खूब लताम फड़ल छलन्हि। हमर पितियौत भाइ हुनका इशारा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बेचारे दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि सरदार हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बच्चा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बच्चाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरवर जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बच्चा हुनका पैया कहि सम्बोधित कएलकन्हि आ पाँचटा लताम मँगलकन्हि- से कोना नहि दितियैक- सरवरजीक कहब छलन्हि। आब पंकज पराशर प्रसंगमे की कहल से देखी। प्रदीप बिहारीजीक बड़ा प्रशंसककेँ पंकज पराशर नाम चॉम्स्की आ डगलस केलनरक रचना दैत छथिन्ह आ तकर अनुवाद करबा लेल कहै छथिन्ह। बेचारा जान लगा कऽ अनुवाद कऽ दैत छन्हि, ई सोचि जे जिनका ओ चच्चा कहै छथि- जे क्रान्तिकारी विचारक छथि (मार्क्सवादी!!!) से कोना नीक पत्रिकामे ई अनुवाद छपबा देथिन्ह। मुदा छह मासक बाद चच्चाजी कहै

छथिन्ह जे नाम चोमस्की वला रचना देना गेल आ डगलस केलनर वला रचनाक अनुवाद नहिं नीक रहए से निर्णय भऽ गेल। मुदा क्रान्तिकारी कवि (चोमस्की सन विद्वान नीचाँम अछि) हुनक रचना पहिल पत्रिकाम पठा ई छथि- पहिल-८६ म डगलस केलनर वला रचना छपिया छन्हि (आ से अनुवादक नूपम नहि बनन् मूल लेखकक नूपम) आ ओ बेन सन्ह कऽ देल जाऽ छथि। हमर सनन जी एकटा बड़ा ज्ञाना ऐसा कहलायन पाँचटा लगाम डाकना दऽ ई छथिन्ह मुदा हमर पनाशनजी रागिजाक पाँचटा लगाम निर्लज्जतासँ छीनि लेल छथि।

आ हम हुनकर खिजवीन पखन करै छी जखन ओ विदहम आऽतरिटी वदलि हमना गानि पठेल छथि- हुनकर नियल आऽतरीटी नाढर करै छी। हुन सरसँ गय करै छी आ याठकक सहयोगसँ आनन्द, पहिल क पूनान अंक रटि जाऽत अछि जाए हिनकर कृकृत्य छन्हि।।

Douglas Kellner

Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education

University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax 310 206 6293

Phone 310 825 0977, http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life. ....

𑒁𑒩𑒳𑒝 𑒏𑒧𑒪

Arun lives in Patna where he teaches English at the Science College of Patna University.

𑒢𑒫 [illegible] 𑒧𑓀

जहाँ आज बन रहे नए नए मकान

मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़

खोजता हूँ ढहा हुआ घर

और जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ

मुड़ना था मुझे

फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का

घर था इकमंजिला

चल देता हूँ

या दो घर आगे ठकमकाता

आज कुछ घट रहा है

यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं

एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया

जैसे वसंत का गया पतझड़ का लौटा हूँ

जैसे बैसाख का गया भादों का लौटा हूँ

ऊौन युछ्रा -

श्चा यही हे वा घन?

आ चला यानी ढहा आ नहा अकास

शायद युकान ल काऽऽी यहचाना ऊयन स दख कन

मैथिली रााषा-साहित्य क याठक आ लखक वंधु कँ की ओहि प्रश्न सवहक उत्तन अवश्य जानवाक चाही। यंकज मा यनाशन उर्फ यंकज यनाशन उर्फ अनुध्र कमल उर्फ उगलस कलनन उर्फ उदयकान्द उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... नामक ओहि व्यक्तिक वड्ना नास कञ्चा विद्या —ऊना ओम.ओ.म प्रथम श्रेणीम सर्वोच्च स्थान?? यग्रकानिाक कार्स?? ऽऽी सर नटवनलालक गर्जयन!! ज.ओन.यु.क लठकीसँ हिन्दी अनुवाद कनाओव ज ओहिसँ नाकनी रटि जओौक आ हन गकना अयना नामसँ छयवा लव, प्रश्नसँ उगलस कलननक आ नाम चाम्ह्वीक अनुवाद कनवाओव आ अयना नामसँ छयवा लव, अनुध्र कमल, श्रीकान्द वर्मा, ऽऽलानानी सिंह, गजेन्द्र ठाकुन आदिक नचना चानि कनव। ऽऽी सर लखक सरसँ दुनकन यनिवानजनसँ कहै छथि

ई अनुवाद लेल कथा-कविता दिअ आ एहन तकरा बाला कऽ अपना नामसँ छपबा लेत अछि। हिन्दीमे सेहो एलाक बाद मैथिलीक सत्ता! गौरीनाथकेँ पहिने गारि पढ़ै छथि आ एहन लिखित माफी माँगै अछि। पंकज झा पराशर उर्फ पंकज पराशर क ई हाल छै ई रमेश कुमार सिंहकेँ डाकरायन कविता लिखै पड़ै छथि ..तकरासँ की बाहर छी ई अविद्या पैसि गेल? अविनाश केँ गारि , श्रीधरम आ अनलकान्त केँ गारि , रामदेव झा केँ गारि , राजमोहन झा आ राजनन्दन लाल दास केँ गारि , सुभाषचन्द्र यादव-केदार कानन-तारानन्द झा तरुण- प्रदीप बिहारी- रमेश सनकेँ गारि- मैथिली सर्जनाम रामदेव झाकेँ गारि पढ़ैत सहरसा चिट्ठी आ सहरसा सनक साहित्यकारकेँ गारि पढ़ैत रामदेव झाकेँ चिट्ठी, ई दुनू चिट्ठी संगे छपल!! बाबक सीता जाएबाक एहिसँ नीक उदाहरण एखन भाषिला।

पंकज झा पराशर उर्फ पंकज पराशर उर्फ अनुभ कमल उर्फ उगलस कलनन उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....क पथार्थी। # आखिरी सफर पर निकलने तक / # पूरबाग्रामकी आत्माएँ / # बड़ बाजार # मरघट जल / # रात्रि से रात्रि तक # साला सब हँसकर निकल जाता है अपुन को अकेला चीखता छोड़कर / # दृष्टि विद्ध / उर्फ श्वान तुम संसार हे रुँकर द मख मार उर्फ कुछ कुछ चाहिए ...की सौरक क लिए उर्फ गायवरा उर्फ कामल चायक उर्फ अपर कारी मूँह उर्फ मोहल्ला लाञ्छन उर्फ परारकार उर्फ उदय प्रकाश उर्फ पहल उर्फ रवि दूबे उर्फ निराला उर्फ

नवीनतम रूप।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... हिनकर नियत आ ऑथोरिटी हम नाटक करै छी आ ई आब अशिक्षक छथि अपन शेष जीवन मिश्रन दास्त नहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

एहि ब्लैकमेलरक डॉ. शकील आ मिश्रन दास्त बला चरित्र मैथिल सर्जनाक विनाशक मैथिल-जन पत्रिकाक एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पासेँ नहल।

आनन्दम सहा ई एकटा चिट्ठी मैथिलीक सम्पादकक निर्णय देलन्हि जे छथि गेल आ डाकन घृणित हाथाक कारण हाउ साहेब नाजमाहन माकँ माफी माँगए पड़लन्हि आ हुन ई मिश्रन दास्त सहा डाहि सम्पादकसँ लिखित माफी मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुरेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिश्रन दास्तक ब्लैकमेलिंग आ एक्सपोजक डरसँ अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैला भरि गेलाक बाद ई आब अशिक्षक छथि अपन शेष जीवन मिश्रन दास्त नहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

जे.एन.यू.क छात्र-छात्रा सभसँ पाइकाउँ पर सार्टिन लऽ डाहियन अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घूमैत अपस्याँत कथित गोष्ठी

मतलिग्र(!!!)। यहिल कथा गोष्ठीम जखन ॐ्ी सहनसाम सरसँ यूछन हिनै छथि जे साहित्यकान वनवासँ की-की सर हाउदा छै गखन ॐ्ी उकटा याॐ आ यूनस्थानक लल अयर्याँग मैथिल यूना-यीठीक प्रगिनिधित्व कनै छथि, जे नाजमाहन मा जीक शब्दम मैथिलीसँ प्रम नहि कनैग अछि। ॐ्ी मिसन हाॐत सहा डाहि सम्यादकसँ लिखिगम माही मँगलहि आ जखन डा माह कs दलखिह गखन हन हूनका गानि यठव शुन् कs दलहि। हमनासँ लिखिग मल-माही अस्वीकान हलाक वाद मिसन हाॐतक माथ नावव स्वागनिक। जे सनकानी नाकनी वा ॐ्क्रम-टेक, कस्मम ॐ्ी व्लेकमलन नहिग उ गँ दश जनून वचि दैगउ।

यंकज यनाशन डरे अनूय कमल डरे डगलस कलनन डरे डदयकान्त डरे ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 डरे नाजकमल चौधनी.....डरे...

कागक डरे उहि लखकक वनग नहि जानि... नाजकमल चौधनीक अप्रकाशिग यत्र (आव निदह मैथिली यत्र २००९-१० म प्रकाशिग यृ.३९-४०) "वही-खागा"क उहि धूर्गा, चानि कला आ दंद-फंद कनैनला यंकज यनाशन..डरे..डरे.. [(गोनीनाथ (अनलकान्त)क उहि चान लखकक लल प्रयुक्त शब्द- सम्यादकीय अंगिका अक्तुवन-दिसंवन, 2009- जनवनी-मार्च, 2010- यंकज यनाशन प्रसंगम-] ह्वाना "हिसाव" नामसँ छयवाडाल गल- दखु

नाजकमल चौधनी

बही-खाता

एहि खातामे हम घसैत छी

संसारक सभटा हिसाब

...

...

हमर सभटा अपराध, ज्ञान...सँ लीपल पाएल

अछि एकर सभटा पाता

ई हमर लालबही थिक जीवन-खाता

जीवन-खाता

पंकज पराशर उर्फ अनूप कमल उर्फ जगलर कलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ राजकमल चौधरी.....उर्फ...

ह्नाना एकरा अपना नामसँ एहि गनहुँ चलाओल गेल

हिसाब

हिसाब करिते रही ठान पर

उगाहल रहल नहैत अछि

किताब

ओ रहनि जिनगी लगबैत छथि

नाड़ी-नाड़ी क हिसाब-

दुनिया-जहान सँ एनाक बनल

अंगाइ बनि कऽ नहि जाइत छथि

हिसाबक किताब।

२००६

ओहि लेखकक खोंमा कऽ अयशब्दक प्रयोग बन्न नहि रहल अछि आ ओही नाम बदलि-बदलि ओखना ओहि सभ कार्यम लिख अछि, आब ओही अयन धंधा-चाकरी सेहो बदलि लेन अछि। स्पष्ट अछि जे ओकना निन्द्ध कठोर उग उठाउल जएबाक आवश्यकता अछि। उयनका समस्त जानकारी अहाँ गुगल, विह्ना जगतकँ दी स आग्रह आ एकना नीचाँ ओही-यग्रयन सेहो अग्रसानित कनी सेहो अनुनाथ।

vc.appointments@amu.ac.in,
bisaria.ajay@gmail.com, vedprakas_s@yahoo.co.in,
tasneem.Suhail@gmail.com,
rajivshukla_hindi@yahoo.co.in,
merajhindi@gmail.com, ashutosh_1966@yahoo.co.in,
ashiqbalaut@yahoo.in, abdulalim_dr@rediffmail.com,
zubairifarah@gmail.com, RameshHindi@gmail.com

यंकज यनाशन उर्दे अनूष्ठ कमल उर्दे उगलस कालनन उर्दे उदयकान्द उर्दे ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्दे.....

DO YOU KNOW "Fake Sahityakar" PANKAJ KUMAR JHA ALIAS PANKAJ PARASHAR.DO YOU KNOW WHAT THIS FAKE GOLD MEDALIST DID AT VASANT MAHILA COLLEGE, KADAMBINI, DAINIK BHASKAR AND DAINIK JAGRAN ? DO YOU KNOW WHAT HE DID WITH HIS FAMILY, FRINDS AND COLLEAGUES. READ the following to believe it. this mentally corrupt should be treated in the same manner...

pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com besides other fake emails used by Pankaj Parashar on ISP ***220.227.174.243" See his level.***

अहां कें सूचनार्थ य(0न छी ज यंकज यहिनहा ॐ सब काज कनेग नहय छलेओ। - **aavinash**

ओहि चान लखक यंकज यनाशनक दिमागी हालगिक असली नुय

७गs सहा स्टग जग७ ऊा नाम वदलि-वदलि अयन यूनना मालिकक कम्प्यूटनसँ घृणित यास्ट कनै छल (सारान-अविनाश)।

Search Comments *220.227.174.243*

- **All**
- Pending (0)
- Approved
- Spam (0)

Search Comments: 220.227.174.243 Search Comments

Apply

Filter

	Author	Comment	In Response To
☐	**ranvijay** ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:07pm ऊँ व मादनवाद, नंठी की ऊौलाद जिसका gauravshaali ऌगिहास हागा नही (श्रष्ठ की वाग कनगा न मादनवाद....गू साल आदिनासी मादनवाद क्या वाग कनगा (श्रष्ठ की, साल vanmaanush अयनी शकल दखि हे किगनी कुनुय लगगी हे गन सूअन साथी अविनाश की गनह, मादनवाद....bhaunkna वंद कन....	In Response To
☐	**ranvijay** ranvijay@rediff.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/09/02 at 5:11pm अव मादनवाद jagdeeshsvar चगुर्वदी, उर्फ नंठी की ऊौलाद, मादवाद किस naali मं यैदा हूआ था सिनाय आलावना ऊौन वकवादी क गुम कुछ आगा हे मक लौंठ.....कुछ काम कन जिसस सवका स्ला हा मादनवाद या गा नया नया कंयूटन वलाना सीखा हे या अयन वलाकानी दास्त avinaash क साथ milkar चूदाऌी का	जनसभा क वान मं अर्थसयां स वचा 22#

	Author	Comment	In Response To
		धंधा चला नहा है इसीलिए इतना नों नहा है माक लौंडे...	
☐	**वाचक सच** binmst@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/31 at 3:42pm जा आदमी इन मर्ज की दवा जाति का ही समझता हा, जातिवाद क धंध में ही गल-गल तक डूबा हा उसका क्या शष कुछ बचा नह गया है क्या? ऐस नंग सियानां का कम स कम प्रसाद जैसी औन आलाक पामन जैस सम्मानित औन विद्वान यकान की आलाचना कनन का काई नैतिक अधिकान नहीं है। नहन्ना औन जहनबुमी हाया स इस कथित लखक की मंशा समझी जा सकती है।	आलाक पामन जी, कहां स आती है यह हाया? 8#
☐	**वाचक सच** binmst@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/29 at 4:59pm प्रसाद जी की आलाचना स या आलाक पामन की आलाचना स कुछ हासिल नहीं हानवाला है. इसस हिंदी समाज का क्या हला हा नहा है? इस पनह आनाप-शनाप स पाठकां का क्या लना-दना है? वहस का एक मुकाम पन पहुंचाकन, अगली याप्रा पन निकल जाना चाहिए.	कौन है य मवालियां की हाया वालन वाला आलाक पामन? 21#
☐	**Pankaj Parashar** pkjpp@yahoo.co.in 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/28 at 6:21pm मृत्युंजय, कल लिखी मनी प्रतिक्रिया की अंतिम पंक्तियां हैं- हां, एक पकनीकी चाप यह हा सकती है कि इन लागां का सामान्य कोट स बहाल किया गया हा। मैंन यह अनिच्छा जाहिन की, कि हा सकता है उनकी नियुक्ति सामान्य श्रेणी में हुई हा, जिसकी काई सूचना मुझ नहीं है. इसमें न ता किसी कथित ब्राह्मण शब्द का जिक्र कहीं है औन न मन चान या अनवान में वह बातें हैं, जा व्याख्या की पालिसिक्स क पहन आप कह नह हैं। मनवाही व्याख्या औन अनचाही सलाह स बचना चाहिए. इस संदर्भ में अनायास मनमानी व्याख्या का विनाश कनती सूसन सौंटग की 1966 में प्रकाशित पुस्तक Against Interpretation and Other Essays. की याद आ गई। खुदा खैन कन.	ज्ञानपु का सच : हाता है शवा-नाज तमाशा मन आगे 16#

	Author	Comment	In Response To
☐	Pankaj Parashar pkjpp@yahoo.co.in 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/27 at 6:34pm वाकी संटर्स ऊौन स्कूल की सूचनाऊां स रिलनक में अयउट नहीं हूं, क्योंकि कैंयस गउ हूउ महीनां गुजन जाग हैं। यन राननीय राषा कंद्र स ग नाकिरु हूं. सूची में दिखाया गया है कि अनुसूचिग जागि स उक री उसाशिउट प्रारुसन नहीं हैं, जवकि यी-उच.डी में मन शाथ निर्दशक नरु डॉ.गोविंद प्रसाद अनुसूचिग जागि स हैं ऊौन व वाकायदा नीउन हैं। दूसनी ऊान सूची में दिखाया गया है कि उक री डावीसी असिस्टंट प्रारुसन नहीं हैं, जवकि नूसी कंद्र में रुमान उक साथी हैं। मना ख्याल है कि ऊैस नाम ऊौन री कड़ी हैं जा सूची की त्रुटियां का सारु-सारु उजागन कनग हैं। हां, उक गकनीकी वाग यरु हा सकगी है कि ऊून लागां का सामान्य कारट स वहाल किया गया हा।	ऊउनयू का सच : रुागा है शवा-नाज गमाशा मन आगे 16#
☐	Rafugar jinita@yahoo.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/25 at 5:35pm यान मामला व्यक्तिगग रुागा जा नरुा है . वरुस कहाँ स कहाँ जा नही है? ब्राह्मणां, रुजामां, ठाकुनां....यानी जागिवाद ही सग्य है...मरुज यही ग रानग का सग्य नहीं है.	प्रराष जी की मगि ऋष्ट रुा गयी है, आय सव नरुम कनं 53#
☐	michal chandan chandan25s@gmail.com 220.227.174.243	Submitted on 2009/08/20 at 4:18pm राऊी लाग, आय सव मान या ना मान यनन्तु ऊूस सग्य का आय अव स्वीकान कन की प्रराग जाशी नाम क नरु महान यत्रकान-संयादक-चिंगक अव यूनी गनरु स सठिया गउ हैं। यूर्वाग्रह स ग्रसिग रुाकन आजकल उनका उज़ल-रिज़ल लिखना, करी किसी अखवान ऊौन उनक मालिकां का टानगेट कन आलाचना कनना, करी मानखंउ क उक अखवान क वान में कसीद लिखना ऊौन अव अयन मनूवादी रुंदु वरुन का सवक सामन यश कन चर्चा में वन नरुना ऊूनक सठियान की निशानी नहीं है ग क्या है।	प्रराषजी क निचान माननगानिनाधी हैं 30#

[▾] Apply

मैथिल आन मिथिला ब्लॉग मॉडनेटन- ज़यनका सूचनाक अगिनिक्त

चानिक नवका ज हम एकटा ब्लॉगम...म पढ़लौं पहिने बाद ओ धूर्त लेखक एतेक कय ओकरा बदलुना कविताक शब्द द देलक, सम्पादक हमर प्रमाण के ओना देलक आ अपन जातिवादी होएबाक हुनि प्रमाण देलक आ आब वर्षीन वर्ष के एकटा कविता जातिवादी लोकनि द्वारा चोरा कय अपना नाम करबाक सूचना आयल अछि, ओ अपन गलति स्वीकारल ना हुन अपन नवका एतेक करल देखा चाही हम हाजिर होयब अहुंक समक्ष शीघ्र... जातिवादी साथ के मानय टा यदि मिथिलाक विकास लल. जावर्षीन वर्ष के कविता जातिवादी लोकनि द्वारा चोरा कय अपना नाम करबाक सूचना आयल छल आ हम कहने नही ज ओ अपन गलति स्वीकारल ना हुन अपन नवका एतेक करल देखा चाही हम हाजिर हेल छी अहुंक समक्ष, चान महाराजक टटका नवनायन चान महाराजक मौसना राङ्क कमेंट आयल अछि जाहि स ङ्गी सिद्ध हेल ज ओ ङ्गशाना बूझि गेल ज ओकरा चानि यकता गेलैक। एकरा कहेन छै
चान-चान मौसना राङ्ग। - मैथिल आर मिथिला ब्लॉग सँ पंकज पराशनकँ निकालल जा रहल अछि। - मैथिल आर मिथिला ब्लॉग मॉडरेटर

Recently Some Maithil Brahmin Samaj Organisation has started selling prizes in the name of Yatri (Vaidyanath Mishra, Nagarjun) and Kiran (Kanchinath Jha) . There has been trend recently to grant these prizes to those intellectual thiefs who are basically opposed to the ideology's of Kiran and Yatri (Nagarjun). The caste based organisations are killing the spirit of Yatriji and Kiranji, recently the fraud

Pankaj Jha alias Pankaj Kumar Jha alias Pankaj Parashar alias Dr. Pankaj Parashar) was stage managed to get this casteist award, The lecturer of Hindi at Aligarh Muslim University, just appointed as adhoc staff, will teach now how to lift verbatim articles of Noam Chomsky and Douglas Kellner and poems of Illarani Singh, Rajkamal Chaudhary, Gajendra Thakur and Arun Kamal to his students. His Samay ke akanait (समय कें अकानैत) is lifted from Magadh of Srikant Verma (श्रीकान्त वर्मा- मगध) and his Vilambit Kaik Yug me Nibaddha (विलम्बित कइक युग मे निबद्ध) is collection of pirated poems of Illarani Singh, Rajkamal Choudhary, Gajendra Thakur, Srikant Verma and others.ई संग्रह इल्लारानी सिंह, श्रीकान्त वर्मा, गजेन्द्र ठाकुर, राजकमल चौधरी आदि कविक पंकज पराशर द्वारा चोराओल रचनाक कारणे चर्च मे रहल गेल। "रचना"पत्रिकाक कथित अतिथि सम्पादकक रूपमे पंकज पराशर द्वारा कवि-कहानीकार सभसँ रचना सेहो मँगबाओल गेल आ ओकरा अपना नामसँ छपबाओल गेल। ई छद्म साहित्यकार पराशर (ठग (!!)पंकज कुमार झा उर्फ पंकज पराशर बहुतो लेखकक अप्रकाशित रचना अनुवाद करबा लेल सेहो लेलक आ अपना नामेँ छपबा लेलक। पाठकक आग्रहपर आर्काइवमे ई तथ्य राखल जा रहल अछि।— **सम्पादक, विदेह**

ओपन सोर्स editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

Read the original Article by Douglas Kellner and then blatant copying in hindi version in his own name by Pankaj Parashar published in Pahal-86

After that read blatant intellectual theft/ copying of Maithili Poem by Pankaj Parashar Published in Aarambh-23 (March 2000) and then Shri Arun Kamal's original Hindi Poem "Naye Ilake Me" Ist published by Vani Prakashan in 1996.

Thanks Readers for coming out with so much information.

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

By

Douglas Kellner

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life.

I, however, want to make another distinction between functional intellectuals who serve to reproduce and legitimate the values of existing societies contrasted to critical-oppositional intellectuals who oppose the existing order. Sometimes oppositional intellectuals voice their criticisms in the name of existing values which they claim are being violated (i.e. truth, rights, rule by law, justice, etc.) and sometimes in the name of values or ideas which are said to be higher potentialities of the existing order (i.e. participatory democracy, socialism, genuine equality for women and blacks, ecological restoration, etc.). Functional intellectuals were earlier the classical ideologues, whereas today they tend to be functionaries of parties or interest groups, or mere technicians who devise more efficient means to obtain certain ends, or who apply their skills to increase technical knowledge in various specialized domains (medicine, physics, history, etc.) without questioning the ends, goals, or values that they are serving, or the social utility or disutility of their activities.

Functional intellectuals are thus servants of existing societies who are specialists in legitimation and technical knowledge, while oppositional intellectuals are critics who struggle to create a better society. Critical intellectuals were traditionally those who utilized their skills of speaking and writing to denounce injustices and abuses of power, and to fight for truth, justice, progress, and other universal values. In the words of Jean-Paul Sartre (1974: 285), "the duty of the intellectual is to denounce injustice wherever it occurs." For Sartre, the domain of the critical intellectual is to write and speak within the public sphere, denouncing oppression and fighting for human freedom and emancipation. On this model, a critical intellectual's task is to bear witness, to analyze, to expose, and to criticize a wide range of social evils. The sphere and arena of the critical/oppositional intellectual is the word, and his or her function is to describe and denounce injustice wherever it may occur.

The modern critical intellectual's field of action was what Habermas (1989) called the public sphere of democratic debate, political dialogue, and the writing and discussion of newspapers, journals, pamphlets, and books. Of course, not all intellectuals were critical or by any means progressive. With the rise of modern societies, there was a division between physical and mental labor, and intellectuals became those who specialized in mental labor, producing and distributing ideas and culture, with some opposing and some legitimating the established forms of society.

Thus, intellectuals were split into those critical and oppositional individuals who opposed injustice and oppression, as contrasted to functional intellectuals who produced technical knowledge that served the existing society and those producers of ideology who legitimated the forms of class, race, and gender domination and inequality in modern societies. In the following reflections, I want to discuss some challenges from postmodern theory to the classical conceptions of the critical-oppositional intellectual and some of the ways that new technologies and new public spheres offer new possibilities for democratic discussion and intervention, which call for a redefinition of the critical intellectual. Consequently, I will discuss some changes in the concept of the public sphere and how new technologies and new spheres of public debate and conflict suggest some new possibilities for redefining intellectuals in the present era.

The Public Sphere and the Intellectual

Democracy involves a separation of powers and popular participation in governmental affairs. During the era of the Enlightenment and 18th century democratic revolutions, public spheres emerged where individuals could discuss and debate issues of common concern (see Habermas 1989). The public was also a site where criticism of the state and existing society could circulate. The institutions and spaces of the 18th century democratic public sphere included newspapers, journals,

and a press independent from state ownership and control, coffee houses where individuals read newspapers and engaged in political discussion, literary salons where ideas and criticism were produced, and public assemblies which were the sites of public oratory and debate.

Bourgeois societies split, of course, across class lines and different class factions produced different political parties, organizations, and ideologies with each party attracting specialists in words and writing known as intellectuals. Oppressed groups also developed their own insurgent intellectuals, ranging from representatives of working class organizations, to women like Mary Wollstonecraft fighting for women's rights, to leaders of oppressed groups of color, ethnicity, sexual preference, and so on. Insurgent intellectuals attacked oppression and promoted action that would address the causes of oppression, linking thought to action, theory to practice. Thus, during the 19th century, the working class developed its own oppositional public spheres in union halls, party cells and meeting places, saloons, and institutions of working class culture. With the rise of Social Democracy and other working class movements in Europe and the United States, an alternative press, radical cultural organizations, and the spaces of the strike, sit-in, and political insurrection emerged as sites of an oppositional public sphere.

Intellectuals in modern societies were thus conflicted beings with contradictory social functions. The classical critical intellectual -- represented by figures like the French Enlightenment ideologues, Thomas Paine, Mary Wollstonecraft, and later figures like Heine, Marx, Hugo, Dreyfus, Du Bois, Sartre, and Marcuse -- was to speak out against injustice and oppression and to fight for justice, equality, and the other values of the Enlightenment. Indeed, the Enlightenment itself represents one of the most successful discourses of the critical individual, a discourse and movement which assigns intellectuals key social functions. And yet conservative intellectuals attacked the Enlightenment and its prodigy the French Revolution and produced discourses that legitimated every conceivable form of oppression from class to race, gender, and ethnic domination.

Against the EN and Sartre's model of the committed intellectual who is engaged for freedom (engagé), Michel Foucault complained that Sartre represented an ideal of the universal intellectual who fought for universal values such as truth and freedom, and assumed the task of speaking for humanity (1977). Against such an exalted and in his view exaggerated conception, Foucault militated for a conception of the specific intellectual who intervened on the side of the oppressed in specific issues, not claiming to speak for the oppressed, but to intervene as an intellectual in specific issues and debates.

Foucault's conception of the specific intellectual has been accompanied within a new postmodern politics with a turn toward new social movements as the domain of contemporary politics (Laclau and Mouffe 1985), replacing the state and the national realm of party politics. For a postmodern politics, power is diffuse and local and not merely to be found in macroinstitutions like the workplace, the state, or patriarchy. Macropolitics that goes after big institutions like the state or capital is to be replaced by micropolitics, with specific intellectuals intervening in spheres like the university, the prison, the hospital, or for the rights of specific oppressed groups like sexual or ethnic minorities. Global and national politics and theories are rejected in favor of more local micro politics, and the discourse and function of the intellectuals is seen as more specific, provisional, and modest than in modern theory and politics, subordinate to local struggles rather than more ambitious projects of emancipation and social transformation.

In my view, such a binary distinction between macro and micro theory and politics is problematical, as are absolutist commitments to either modern or postmodern theory tout court (Best and Kellner 1991 and 1997). Using the example of the events of 1989 that saw the collapse of communism, for instance, it is clear that the popular offensives against oppressive communist power combined micro and macropolitics, moving from local and specific struggles rooted in union halls, universities, churches, and small groups to mass demonstrations forcing democratic reforms and even classical mass insurrection aiming at an overthrow of the existing order, as in Romania. In these struggles, intellectuals played a variety of roles and deployed a diversity of discourses, ranging from the local and specific to the national and general.

Thus, whereas I would argue that postmodern theory contains important criticism of some of the illusions and ideologies of the traditional modern intellectual, it goes too far in rejecting the classical role of the critical intellectual. Moreover, I shall suggest that some of the modern conception of the critical and oppositional intellectual remains useful. I would, in fact, reject the particular/universal intellectual dichotomy in favor of developing a normative concept of the critical public intellectual. The public intellectual -- on this conception -- intervenes in the public sphere, fights against lies, oppression, and injustice and fights for rights, freedom, and democracy à la Sartre's committed intellectual. But a democratic public intellectual on my conception does not speak for others, does not abrogate or monopolize the function of speaking the truth, but simply participates in discussion and debate, defending specific ideas, values, or norms or principle that may be particular or universal. But if universal, like human rights, they are contextual, provisional, normative and general and not valid for all time. Indeed, rights are products of social struggles and are thus social constructs and not innate or natural

entities -- as the classical natural rights theorists would have it. But rights can be generalized, extended, and can take universal forms -- as with, for instance, a UN charter of human rights that holds that certain rights are valid for all individuals -- at least in this world at this point in time.

Consequently, one does not need all of the baggage of the universal intellectual to maintain a conception of a public or democratic intellectual in the present era. Intellectuals may well seek to occupy a higher ground than particularistic interests, a common ground seeking public interests and goods. But intellectuals should not abrogate the right to speak for all and should be aware that they are speaking from a determinate position with its own biases and limitations. Moreover, intellectuals should learn to get out of their particular frame of reference for more general ones, as well as to be able to take the position of the other, to empathize with more marginal and oppressed groups, to learn from them, and to support their struggles. To perpetually criticize oneself, to develop the capacity for self-reflection and critique -- as well as self-expression -- is thus part of the duty of the democratic intellectual.

New Technologies, New Public Spheres, and New Intellectuals

In the following discussion, I will argue that although the public intellectual should assume new functions and activities today, the critical capacities and vision of the classical critical intellectual are still relevant, thus I suggest building on models of the past, rather than simply throwing them over, as in some types of postmodern theory. I want to suggest that rethinking the intellectual and the public sphere today requires rethinking the relationship between intellectuals and technology.

In a certain sense, there was no important connection between the classical intellectual and technology. To be sure, intellectuals -- especially scientific scholars like Leonardo de Vinci, Galileo, or Darwin -- deployed technologies and entire groups like the British Royal Society were concerned with technologies and were indeed often inventors themselves. Some intellectuals used printing presses and were themselves printers and many, though not all, of the major intellectuals of the 20th century probably used a typewriter, though I personally know of no major studies of the relationship between the typewriter and intellectuals. Yet a classical intellectual did not have to intrinsically deploy any specific technology and there was thus no intimate connection between intellectuals and technology.

I now want to argue that in the contemporary high-tech societies there is emerging a significant expansion and redefinition of the public sphere and that these developments, connected primarily with media and computer technologies, require a reformulation and expansion of the concept of critical or committed intellectual,

as well as a redefinition of the public intellectual. Earlier in the century, John Dewey envisaged developing a newspaper that would convey "thought news," bringing all the latest ideas in science, technology, and the intellectual world to a general public, which would also promote democracy (see the discussion of this project in Czitrom 1982: 104ff). In addition, Bertolt Brecht and Walter Benjamin (1969) saw the revolutionary potential of new technologies like film and radio and urged radical intellectuals to seize these new forces of production, to "refunction" them, and to turn them into instruments to democratize and revolutionize society. Sartre too worked on radio and television series and insisted that "committed writers must get into these relay station arts of the movies and radio" (1974: 177; for discussion of his Les temps modernes radio series, see 177-180).

Previously, radio, television, and the other electronic media of communication tended to be closed to critical and oppositional voices both in systems controlled by the state and in private corporations. Public access and low power television, and community and guerilla radio, however, open these technologies to intervention and use by critical intellectuals. For some years now, I have been urging progressives to make use of new communications broadcast media (Kellner 1979; 1985; 1990; 1992) and have in fact been involved in a public access television program in Austin, Texas since 1978 which has produced over 600 programs and won the George Stoney Award for public affairs television. My argument was that radio, television, and other electronic modes of communication were creating new public spheres of debate, discussion, and information and that intellectuals who wanted to engage the public, to be where the people were at, and who thus wanted to intervene in the public affairs of their society should make use of these new media technologies and institutions, and develop new communication politics and new media projects.

In fact, one can argue that the victory of Reagan and the Right in the United States in 1980 was related to the Right's effective mobilization of conservative intellectuals and their use of television, radio, fax and computer communication, direct mailings, telephones, and other sophisticated political uses of new technologies, as well as more traditional print media. Furthermore, one could argue that Clinton's victory over Bush in 1992, and the surprising success of the Perot campaign, were related to effective uses of communication technologies. And more recently in the U.S., the Republican and rightwing success in the 1994 elections can be related to their use of talk radio, computer bulletin boards, and other technologies. Indeed, Newt Grinrich, William Bennett, and other conservatives have made very effective use of public access television, radio, computer networks, book promotion tours with high media exposure, and other technologies to promote their ideas. Yet it is generally acknowledged that the Clinton administration deployed much more effective communications politics in the 1996 election than the Dole

campaign. Effective CU politics are thus now essential to political success in national and local conflicts and often which side has the most effective politics of CU wins the struggle in question.

Consequently, I would argue that effective use of technology is essential in contemporary politics and that intellectuals who wish to intervene in the new public spheres need to deploy new communications media to participate in democratic debate and to shape the future of contemporary societies and culture. My argument is that first broadcast media like radio and television, and now computers have produced new public spheres and spaces for information, debate, and participation that contain both the potential to invigorate democracy and to increase the dissemination of critical and progressive ideas -- as well as new possibilities for manipulation, social control, and the promotion of conservative positions. But participation in these new public spheres -- computer bulletin boards and discussion groups, talk radio and television, and the emerging sphere of what I call cyberspace democracy require critical intellectuals to gain new technical skills and to master new technologies.

I am thus suggesting that intellectuals in the present moment must master new technologies and that there is thus a more intimate relationship between intellectuals and technology than in previous social configurations. To be an intellectual today involves use of the most advanced forces of production to develop and circulate ideas, to do research and involve oneself in political debate and discussion, and to intervene in the new public spheres produced by broadcasting and computing technologies. New public intellectuals should attempt to develop strategies that will use these technologies to attack domination and to promote education, democracy, and political struggle -- or whatever goals are normatively posited as desirable to attain. There is thus an intrinsic connection in this argument between the fate of intellectuals and the forces of production which, as always, can be used for conservative or progressive ends.

Toward a Radical Democratic Techno-Politics

A revitalization of democracy in capitalist societies will therefore require a democratic media politics. Such a politics could involve a two-fold strategy of, first, attempting to democratize existing media to make them more responsive to the "public interest, convenience, and necessity." In the United States, the media watchdog group FAIR (Fairness and Accuracy in Media) has developed this alternative, criticizing mainstream media for failing to assume their democratic and journalistic responsibilities and calling for an expansion of voices and ideas within the media system. Another strategy involves the development of oppositional media, alternatives to the mainstream, developed outside of the established media

system. On my view, both strategies are necessary for the development of a democratic media politics and it is a mistake to pursue one at the neglect of the other.

Developing a radical democratic media politics thus involves continued relentless criticism of the existing media system, attempts to democratize and reform it, and the production of alternative progressive media. On my account, democratizing our media system will require expansion of the alternative press, a revitalization of public television, an increased role for public access television, the eventual development of a public satellite system, democratized computer networks, and oppositional cultural politics within every sphere of culture, ranging from music to visual to print culture.

Community and Low-Power Radio

Community radio has long provided an alternative set of voices to the highly commercialized mainstream radio. Citizen-band (CB) and short-wave radio allows individuals to directly communicate with each other. Many countries have also experimented with low-power community radio, which enables groups to actually bring individuals out of their homes to public places to engage in discussion or communal activity. Low-power radio enables individuals to directly communicate with their neighbors through call-in telephone connections, or through discussions in nearby studios, and thus provide democratic and participatory institutions (see Box 3).

Low-power radio, however, is subject to quick suppression by the state, as happened in Japan which had an extensive low-power radio culture in play that was shut-down almost overnight when the state outlawed low-power broadcasting. In the U.S., there have been some low-power radio experiments, but the government too has cracked down on these local attempts to democratize radio. A democratic media politics should thus struggle for low-power radio and to increase the possibilities of direct communication through radio technology.

Ironically, despite the higher costs of television technology, there are probably more immediate possibilities for democratic alternative television than in radio. As mentioned, while low-power radio technologies are relatively inexpensive, they are easily suppressed by a state which opposes democratic and free-wheeling communication. Community radio has been curtailed by saturation of FM and AM frequencies and in most places there is simply not room for legal community radio stations. During the early 1990s in Austin, Texas, for instance, a vicious battle took place between the University of Texas and a local community-based co-op radio group for the remaining FM frequency band. Hence, it has been difficult to develop

new radio outlets for public communication with the previous limited spectrum allotment, although fiber-optic community cable system and the Internet also make possible a dramatic expansion of community and alternative road which could make possible Brecht's vision of a radio system with every individual a sender.

Public Access Television

Public access television has been for some decades now an established venue for alternative democratic communication. The rapid expansion of public access television in the 1970s in the U.S. provided new possibilities for progressive individuals and groups to produce video programming that cuts against the conservative programming which dominates mainstream television in the United States. Progressive access programming is now being cablecast regularly in such places as New York, Los Angeles, Boston, Chicago, Atlanta, Madison, Urbana, New Orleans, Austin, and perhaps as many as 2,000 other towns or regions of the country. Public access television, in most cases, provides free equipment and airtime to individuals and groups who want to make their own programming. Usually, one must take a course to actually use studio and editing equipment and a few systems lease the equipment and airtime, but, for the most part, where there are public access channels, the cable systems make them available for public use and they are usually managed by an independent body, answerable to the community, and often financed by the cable system.

When cable television began to be widely introduced in the early 1970s, the Federal Communications Commission mandated in 1972 that "beginning in 1972, new cable systems {and after 1977, all cable systems} in the 100 largest television markets be required to provide channels for government, for educational purposes, and most importantly, for public access." This mandate suggested that cable systems should make available three public access channels to be used for state and local government, education, and community public access use. "Public access" was construed to mean that the cable company should make available equipment and air time so that literally anybody could make noncommercial use of the access channel, and say and do anything that they wished on a first-come, first-served basis, subject only to obscenity and libel laws and prohibitions against advertising and pitches for money. Creating an access system required, in many cases, setting up a local organization to manage the access channels, though in other systems the cable company itself managed the access center.

In the beginning, however, few, if any, cable systems made as many as three channels available, but some systems began offering one or two access channels in the early to mid 1970s. The availability of access channels depended, for the most part, on the political clout of local governments and committed, and often unpaid,

local groups to convince the cable companies, almost all privately owned, to make available an access channel. Here in Austin, for example, a small group of video activists formed Austin Community Television in 1973 and began broadcasting with their own equipment through the cable system that year. Eventually, they received foundation and CentertainmentA government grants to support their activities, buy equipment, and pay regular employees salaries. A new cable contract signed in the early 1980s called for the cable company to provide $500,000 a year for access and after a difficult political struggle, which I shall mention later, were able to get at least $300,000-$400,000 a year to support Austin Community Television activities.

A 1979 Supreme Court decision, however, struck down the 1972 FCC ruling on the grounds that the FCC did not have the authority to mandate access, an authority which supposedly belongs to the U.S. Congress. Nonetheless, cable was expanding so rapidly and becoming such a high-growth competitive industry that city governments considering cable systems were besieged by companies making lucrative offers (20 to 80 channel cable systems) and were able to negotiate access channels and financial support for a public access system. Consequently, public access grew significantly during the early 1980s.

Where there are operative public access systems, individuals have promising, though not sufficiently explored, possibilities to produce and broadcast their own television programs. In Austin, Texas, for example, there have been weekly anti-nuclear programs, black and chicano series, gay programs, countercultural and anarchist programs, an atheist program, feminist and women's programs, labor programming, and a weekly progressive news magazine, Alternative Views, with which I am involved, that has produced over 470 hour-long programs from 1978 to the present on a wide variety of topics. We combine news reports from alternative sources with discussion, documentaries, and video-footage from alternative sources. Paper Tiger Television in New York combines critique of corporate media by media critics with imaginative sets, visuals, editing, and so on. A labor-oriented program, The Mill Hunk News, in Pittsburgh used to combine news reports of labor issues with documentary interviews with workers, music-videos, and other creative visuals, while Labor Beat in Chicago also uses documentary footage, music, drama, and collages of images, as well as interview and talking head formats, to present alternative information (see Box 4).

There have been some experiments with national progressive satellite networks, although they have suffered from inadequate funding and the failure of often conservative-owned cable systems to carry progressive programming. While public access television is still in a relatively early stage of development in the U.S. and Europe, it contains the promise of providing a different type of alternative television.

Despite obstacles to its use, public access provides the one institution in the commercial and state broadcasting systems that is at least potentially open to progressive intervention. It is self-defeating simply to dismiss broadcast media as tools of manipulation and to think that print media are the only tools of communication and political education open to progressives. Surveys have shown that people take more seriously individuals, groups, and politics that appear on TV; thus the use of television could help progressive movements and struggles gain legitimacy and force in the shifting and contradictory field of U.S. politics. The Right has been making effective use of new technologies and media of communication, and for progressives to remain aloof is a luxury that they can no longer afford.

Of course, many will claim that democratic politics involves face-to-face conversation, discussion, and producing consensus. But for intelligent debate and consensus to be reached, individuals must be informed and radio, television, and computers are important sources of information in the present age. Thus I am not proposing that media politics supplement all political activity and organizing, but am suggesting that a media politics should be developed to help activist groups and individuals obtain and disseminate information. In Austin, Texas, for instance, a group, Council for Public Media, has been working to inform activist groups how they can get information through the new computer technologies and how they can use the press, broadcast media, and other methods of communication to get their messages out. Activist groups are coming to see that media politics is a key element of political organization and struggle and thus more work on developing institutions and strategies for media politics is necessary.

Indeed, if progressive groups and movements are to produce a genuine alternative to the Right, they must increase their mass base and circulate their struggles to more segments of the population. After all, most people get their news and information from television, and the broadcast media arguably play a decisive role in defining political realities, shaping public opinion, and determining what is or what is not to be taken seriously. If progressives want to play a role in local and national political life, they must come to terms with the realities of electronic communication and computer technologies in order to develop strategies to make use of new technologies and possibilities for intervention.

The Democratization of Computers and Information

Other possibilities for expanding a system of democratic techno-politics reside in new computer and information technologies. It appears that there will be a merger of entertainment and information centers in the homes of the future with all possible print media information accessible by computer and all visual media entertainment and information resources available for home

computer/entertainment center access. But the threat--and likelihood if alternative concepts are not developed and disseminated--is that this information and entertainment material will be thoroughly commodified, available only to those who can afford to pay. Consequently, it is necessary to begin devising public alternatives to these private/corporate information and entertainment systems of the future.

Given the growing importance of computers and information in the new techno-capitalist society, producing new information networks and systems must therefore be an essential ingredient of a progressive media and information politics. The computerization of the world is well underway and possibilities are growing for new information networks and computer communication systems. To avoid corporate and government monopolization and control of information, new public information networks and centers are also necessary so that citizens of the future can have access to the information needed to intelligently participate in a democratic society. For computers, like broadcasting, can be used for or against democracy.

Indeed, computers are a potentially democratic technology. While broadcast communication tends to be one-way and unidirectional, computer communication is potentially bi-, or even omni-, directional. Individuals can use computers to do word-processing to communicate with other individuals, or can directly communicate with others via modems which use the telephone to link individuals with each other. Modems can tap into community bulletin boards, web sites, or computer conference programs, that make possible a new type of public communication and progressives should intervene in these information modes as well as participating in public debate and discussion. For instance, many computer bulletin boards and web sites have a political debate conference where individuals can type in their opinions and other individuals can read them and if they wish respond. This constitutes a new form of public dialogue and interaction.

Computer data bases and web sites provide essential sources of information and new technologies that tremendously facilitates information-searching and research. Mainstream data bases include Lexis/Nexis and Dialogue which contain a tremendous array of newspapers, magazines, journals, transcripts of TV programs, news conferences, congressional hearings, and newsletters, reproduced in full. Alternative data bases include Peacenet which has over 600 conferences on topics of ecology, war and peace, feminism, and hundreds of other topics. Here progressives put in alternative information and some of the conferences have lively debates. Between the mainstream and alternative computer data bases, individuals and groups can access a tremendous amount of information in a relatively short time.

I was able to research my book on the media and the Gulf war, for instance, because I was able to access information on various topics from a variety of sources

simply by punching in code words which enabled me to discern the conflicting media versions of the Gulf war and to put in question the version being promoted by the Bush administration and Pentagon. Eventually, the lies and disinformation promoted by the U.S. government in the war were thoroughly exposed by a variety of sources, accessible to computer data base searches. Corporations, government institutions, the major political parties, and other groups are taking advantage of these computer data bases and progressive must learn to access and use them to produce the information necessary to prevail in the public debates of the future.

But the politics of information in the future must struggle to see that alternative information is accessible in mainstream computer data bases, as well as alternative ones. Many data bases and information services omit leftist, feminist, environmentalist, and other alternative information sources from their listings, thus in effect shutting out radical alternatives in information sources, much as the broadcasting networks exclude dissident voices from broadcast communication. Progressive groups and alternative publications should struggle to make sure that their information sources and services are listed in data base bibliographies and source material.

Yet the proliferation of the World Wide Web enables independent and alternative groups and individuals to creat their own web sites, to make their information available to people through the globe, often free of charge. In the next section, I will give some examples of how computer techno-politics have deployed web sites, bulletin-boards, mailing lists, and email campaigns to promote a variety of political struggles. First, however, I want to conclude this section by noting that a synergy is emerging between the new sources of information, new media and technologies, and political organization and struggle. Print and broadcast media organs can obtain information from computers and disseminate it to the public. Political groups can obtain information from these sources and disseminate it back through print, broadcast, and computer technologies. Information critical of, say, transnational corporate policies can be disseminated through a multiplicity of sites, so political groups need to be aware of the potential for the transmission of information through a variety of media in the contemporary era.

Moreover, the Internet may be a vehicle for new forms of alternative radio, television, film, art, and every form of culture as well as information and print material. New multimedia technologies are already visible on web sites and Internet radio and television is now in its infancy. This would truly make possible Brecht's dream of a communications system where everyone was a sender and receiver and would greatly proliferate the range and diversity of voices and texts and would also no doubt give a new dimension of the concept of information/cultural overload.

Indeed, we must obviously gain a whole set of new literacies to use and deploy the new technologies (see Kellner, forthcoming). But in conclusion, I want to limit my focus on new technologies and techno-politics of the present day.

Techno-Politics and Political Struggle

Since new technologies are in any case dramatically transforming every sphere of life, the key challenge is how to theorize this great transformation and how to devise strategies to make productive use of the new technologies. Obviously, radical critique of dehumanizing, exploitative, and oppressive uses of new technologies in the workplace, schooling, public sphere, and everyday life are more necessary than ever, but so are strategies that use new technologies to rebuild our cities, schools, economy, and society. I want to focus, therefore, in the remainder of this section on how new technologies can be used for increasing democratization and empowering individuals.

Given the extent to which capital and its logic of commodification have colonized ever more areas of everyday life in recent years, it is somewhat astonishing that cyberspace is by and large decommodified for large numbers of people -- at least in the overdeveloped countries like the United States. In the U.S., government and educational institutions, and some businesses, provide free Internet access and in some cases free computers, or at least workplace access. With flat-rate monthly phone bills (which I know do not exist in much of the world), one can thus have access to a cornucopia of information and entertainment on the Internet for free, one of the few decommodified spaces in the ultracommodified world of technocapitalism.

Obviously, much of the world does not even have telephone service, much less computers, and there are vast inequalities in terms of who has access to computers and who participates in the technological revolution and cyberdemocracy today. Critics of new technologies and cyberspace repeat incessantly that it is by and large young, white, middle or upper class males who are the dominant players in the cyberspaces of the present, and while this is true, statistics and surveys indicate that many more women, people of color, seniors, and other minority categories are becoming increasingly active. Moreover, it appears that computers are becoming part of the standard household consumer package and will perhaps be as common as television sets by the beginning of the next century, and certainly more important for work, social life, and education than the TV set. Moreover, there are plans afoot to wire the entire world with satellites that would make the Internet and communication revolution accessible to people who do not now even have telephones, televisions, or even electricity.

However widespread and common -- or not -- computers and new technologies become, it is clear that they are of essential importance for labor, politics, education, and social life, and that people who want to participate in the public and cultural life of the future will need to have computer access and literacy. Moreover, although there is the threat and real danger that the computerization of society will increase the current inequalities and inequities in the configurations of class, race, and gender power, there is the possibility that a democratized and computerized public sphere might provide opportunities to overcome these inequities. I will accordingly address below some of the ways that oppressed and disempowered groups are using the new technologies to advance their interests and progressive political agendas. But first I want to dispose of another frequent criticism of the Internet and computer activism.

Critics of the Internet and cyberdemocracy frequently point to the military origins of the technology and its central role in the processes of dominant corporate and state powers. Yet it is amazing that the Internet for large numbers is decommodified and is becoming more and more decentralized, becoming open to more and more voices and groups. Thus, cyberdemocracy and the Internet should be seen as a site of struggle, as a contested terrain, and progressives should look to its possibilities for resistance and circulation of struggle. Dominant corporate and state powers, as well as conservative and rightist groups, have been making serious use of new technologies to advance their agendas and if progressives want to become players in the political battles of the future they must devise ways to use new technologies to advance a progressive agenda and the interests of the oppressed and forces of resistance and struggle.

There are by now copious examples of how the Internet and cyberdemocracy have been used in progressive political struggles. A large number of insurgent intellectuals are already making use of these new technologies and public spheres in their political projects. The peasants and guerilla armies struggling in Chiapas, Mexico from the beginning used computer data bases, guerrilla radio, and other forms of media to circulate their struggles and ideas. Every manifesto, text, and bulletin produced by the Zapatista Army of National Liberation who occupied land in the southern Mexican state of Chiapas in 1994 was immediately circulated through the world via computer networks. In January 1995, the Mexican government moved against the movement and computer networks were used to inform and mobilize individuals and groups throughout the world to support the Zapatistas struggles against repressive Mexican government action. There were many demonstrations in support of the rebels throughout the world, prominent journalists, human rights observers, and delegations travelled to Chiapas in solidarity and to report on the uprising, and the Mexican and U.S. governments were bombarded with messages

arguing for negotiations rather than repression; the Mexican government accordingly backed off their repression of the insurgents and as of this writing in August 1997, they have continued to negotiate with them.

Earlier, audiotapes were used to promote the revolution in Iran and to promote alternative information by political movements throughout the world (see Downing 1984). The Tianenaman Square democracy movement in China and various groups struggling against the remanents of Stalinism in the former communist bloc and Soviet Union used computer bulletin boards and networks, as well as a variety of forms of communications, to circulate their struggles. Opponents involved in anti-nafta struggles made extensive use of the new communication technology (see Brenner 1994 and Fredericks 1994). Such multinational networking and circulation of information failed to stop nafta, but created alliances useful for the struggles of the future. As Witheford (forthcoming) notes: "The anti-nafta coalitions, while mobilizing a depth of opposition entirely unexpected by capital, failed in their immediate objectives. But the transcontinental dialogues which emerged checked --though by no means eliminated--the chauvinist element in North American opposition to free trade. The movement created a powerful pedagogical crucible for cross-sectoral and cross-border organizing. And it opened pathways for future connections, including electronic ones, which were later effectively mobilized by the Zapatista uprising and in continuing initiatives against maquilladora exploitation."

Thus, using new technologies to link information and practice, to circulate struggles, is neither extraneous to political battles nor merely utopian. Even if material gains are not won, often the information circulated or alliances formed can be of use. For example, two British activists were sued by the fastfood chain McDonald's for distributing leaflets denouncing the corporation's low wages, advertising practices, involvement in deforestization, harvesting of animals, and promotion of junk food and an unhealthy diet. The activists counterattacked, organized a McLibel campaign, assembled a website with a tremendous amount of information criticizing the corporation, and assembled experts to testify and confirm their criticisms. The five-year civil trial, ending ambiguously in July 1997, created unprecedented bad publicity for McDonald's and was circulated throughout the world via Internet websites, mailing lists, and discussion groups. The McLibel group claims that their website was accessed over twelve million times and the Guardian reported that the site "claimed to be the most comprehensive source of information on a multinational corporation ever assembled" and was indeed one of the more successful anticorporate campaigns (February 22, 1996; visit http://www. envirolink.org/mcspotlight/home.html).

Many labor organizations are also beginning to make use of the new technologies. Mike Cooley (1987) has written of how computer systems can reskill rather than deskill workers, while Shosana Zuboff (1988) has discussed the ways in which high-tech can be used to "informate" workplaces rather than automate them, expanding workers knowledge and control over operations rather than reducing and eliminating it. The Clean Clothes Campaign, a movement started by Dutch women in 1990 in support of Filipino garment workers has supported strikes throughout the world, exposing exploitative working conditions (see their website at http://www. cleanclothes.org/1/index.html). In 1997, activists involved in Korean workers strikes and Merseyside dock strike in England used websites to gain international solidarity (for the latter see http://www.gn.apc.org/lbournet/docks/).

Most labor organizations, such as the North South Dignity of Labor group, note that computer networks are useful for coordinating and distributing information, but cannot replace print media that is more accessible to more of its members, face-to-face meetings, and traditional forms of political struggle. Thus, the trick is to articulate one's communications politics with actual political movements and struggles so that cyberstruggle is an arm of political battle rather than its replacement or substitute. The most efficacious Internet struggles have indeed intersected with real struggles ranging from campaigns to free political prisoners, to boycotts of corporate projects, to actual political struggles, as noted above.

Hence, to capital's globalization from above, cyberactivists have been attempting to carry out globalization from below, developing networks of solidarity and circulating struggle throughout the globe. To the capitalist international of transnational corporate globalization, a Fifth International of computer-mediated activism is emerging, to use Waterman's phrase (1992), that is qualitatively different from the party-based socialist and communist Internationals. Such networking links labor, feminist, ecological, peace, and other progressive groups providing the basis for a new politics of alliance and solidarity to overcome the limitations of postmodern identity politics (on the latter, see Best and Kellner 1991, 1997, and forthcoming).

Moreover, a series of struggles around gender and race are also mediated by new communications technologies. After the 1991 Clarence Thomas Hearings in the United States on his fitness to be Supreme Court Justice, Thomas's assault on claims of sexual harassment by Anita Hill and others, and the failure of the almost all male US Senate to disqualify the obviously unqualified Thomas, prompted women to use computer and other technologies to attack male privilege in the political system in the United States and to rally women to support women candidates. The result in

the 1992 election was the election of more women candidates than in any previous election and a general rejection of conservative rule.

Many feminists have now established websites, mailing lists, and other forms of cybercommunication to circulate their struggles. Likewise, African-American insurgent intellectuals have made use of broadcast and computer technologies to advance their struggles. John Fiske (1994) has described some African-American radio projects in the "techostruggles" of the present age and the central role of the media in recent struggles around race and gender. African-American "knowledge warriors" are using radio, computer networks, and other media to circulate their ideas and counter-knowledge on a variety of issues, contesting the mainstream and offering alternative views and politics. Likewise, activists in communities of color -- like Oakland, Harlem, and Los Angeles -- are setting up community computer and media centers to teach the skills necessary to survive the onslaught of the mediazation of culture and computerization of society to people in their communities.

Obviously, rightwing and reactionary groups can and have used the Internet to promote their political agendas. In a short time, one can easily access an exotic witch's brew of ultraright websites maintained by the Ku Klux Klan, myriad neo-Nazi groups including Aryan Nations and various Patriot militia groups. Internet discussion lists also promote these views and the ultraright is extremely active on many computer forums, as well as their radio programs and stations, public access television programs, fax campaigns, video and even rock music production. These groups are hardly harmless, having promoted terrorism of various sorts ranging from church burnings to the bombings of public buildings. Adopting quasi-Leninist discourse and tactics for ultraright causes, these groups have been successful in recruiting working class members devastated by the developments of global capitalism which have resulted in widespread unemployment for traditional forms of industrial, agricultural, and unskilled labor.

The Internet is thus a contested terrain, used by Left, Right, and Center to promote their own agendas and interests. The political battles of the future may well be fought in the streets, factories, parliaments, and other sites of past struggle, but all political struggle is already mediated by media, computer, and information technologies and will increasingly be so in the future. Those interested in the politics and culture of the future should therefore be clear on the important role of the new public spheres and intervene accordingly.

पंकज पराशर

बुद्धिजीवी, लोक वृत्त और टेक्नो पॉलिटिक्स



बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों का वर्गीकरण भी विवाद का विषय बनता जा रहा है। जिगमेंट बोमन बुद्धिजीवियों को समाज की एक ऐसी इकाई के रूप में देखते हैं जो सामाजिक संस्थाओं की सेवा करने के लिए वैश्विक मूल्यों का विधेयन करते हैं। इस वर्ग के बुद्धिजीवियों के बारे में ऐसा माना जाता है कि ये बुद्धिजीवी अपनी योग्यता के आधार पर आम जनमानस के लिए मानवाकृतियों, लोक में घटित घटनाओं आदि की बेहतर व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। अमेरिकी बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों की भूमिका को लेकर जो गरमा-गरम बहस छिड़ी हुई है उनमें से एक धड़े का मानना है कि फिलवक्त जो सामाजिक और वैश्विक हालात हैं उसमें बुद्धिजीवियों की स्थिति में आधुनिक बुद्धिजीवियों से लेकर उत्तर आधुनिक बुद्धिजीवियों तक में बदलाव आया है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम के बुद्धिजीवियों में जैसे ही यह बदलाव आया उसका त्वरित असर हिंदी के उन उत्तर-आधुनिक बुद्धिजीवियों पर भी पड़ा, जो कुछ साल पहले तक उत्तर-आधुनिकता के भारतीय प्रवक्ता होने का दावा करते नहीं अघाते थे। जहाँ एक ओर आधुनिक बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के कार्यकारी इकाई के तौर पर नई आधुनिक समाज-व्यवस्था का विधेयन करते हैं वहीं दूसरी ओर इस प्रकार सामाजिक जीवन में बुद्धिजीवियों की भूमिका के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत का भी प्रतिपादन करते हैं।

नोम चोम्स्की के बाद की पीढ़ी में वामपंथी रुझान के कवियों/विचारकों और बुद्धिजीवियों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी जारी है। बुश प्रशासन अपनी तमाम नीतियों को लेकर पनप रहे असंतोष और मुखर होते प्रतिरोधी स्वर को लेकर भी हैरान-परेशान है। गौरतलब है कि 2003 में इराक हमले की पीठिका बनते समय भी वहां के बुद्धिजीवियों ने बुश प्रशासन की आलोचना की थी और आज आम जनता वहाँ से अमेरिकी सैनिकों की अविलंब वापसी की मांग कर रही है। मगर राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश के सिपहसालारों ने इन विरोधों की न तब परवाह की और न अब ऐसा लगता है कि उन पर कोई खास असर पड़ा है। अमेरिका स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डगलस कैलनर ने कुछ वर्ष पूर्व, 2005 के आखिर में छपी अपनी किताब 'मीडिया स्पेक्टैकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी' में इन मुद्दे पर जोरदार बहस की है कि इन दिनों मीडिया में जिन मुद्दों को जनहित के नाम पर उठाया जा रहा है वह असल में जनहित के वास्तविक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की एक शातिर चाल है। 9/11 के बाद मीडिया ने जिस तरह से अपना चेहरा और चाल दोनों को बदला है – कैलनर खास तौर पर इससे चिंतित होते हैं और बुद्धिजीवियों के बीच खास-

खास बिन्दुओं पर चिंतन का आह्वान करते हैं। इसी तरह 'द वार फॉर द व्हाइट हाउस' किताब में वे अमेरिकी विदेश, रक्षा और आर्थिक नीतियों की गंभीरता से नये-नये तथ्यों की रोशनी में न सिर्फ आलोचना करते हैं बल्कि खासी मज़म्मत भी करते हैं।

अभी हाल ही में छपी वाशिंगटन डी.सी. के बाशिंदे मिखाइल मैकडोनाल्ड की 'द अमेरिकन इंटरेस्ट' नामक छपी किताब में खास तौर पर अमरीकी हितों और वैश्विक परिदृश्य की पड़ताल की गई है। उन्होंने एक और बेहद दिलचस्प किताब 'द स्ट्रेंजर इन क्राउफोर्ड' में जार्ज बुश और कालजयी फ्रेंच उपन्यासकार अल्बेयर कामू के बीच तुलना करते हुए एक किताब ही लिख मारी है। बहरहाल, असली मुद्दा यह है कि मीडिया की बदली प्राथमिकता और चाल की बेहतर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डगलस कैलनर ने 'टेक्नो पॉलिटिक्स' जैसी शब्दावली के सहारे बुद्धिजीवियों की भूमिका और नई-नई आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया है। बुद्धिजीवियों को दो वर्गों में वर्गीकृत करते हुए कैलनर कार्यकारी बुद्धिजीवी (फंक्शनल इंटेलेक्चुअल) के बारे में कहते हैं, ये स्थापित सामाजिक मूल्यों का उत्पादन और विधेयन करते हैं। जबकि इसके ठीक विपरीत विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी (क्रिटिकल-अपोजीशनल इंटेलेक्चुअल) स्थापित सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं। कभी-कभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी समाज में मौजूद मूल्यों के खिलाफ ही अपनी आवाज बुलंद करते हैं और ऐसा मानकर चलते हैं कि इन मूल्यों का समाज में दबदबा बढ़ रहा है। मसलन कानून, न्याय, सत्य और अधिकार आदि। ऐसे बुद्धिजीवी कई बार और भी गंभीर मुद्दों का विरोध करते हैं – जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, अश्वेत लोग और स्त्रियों की समानता आदि।

कार्यकारी बुद्धिजीवी पहले रूढ़ और काफी हद तक आदर्शवादी थे, जबकि आज उन वर्गों और तकनीकविदों के हितों के संरक्षक बने हुए हैं जो परिणामों तक पहुँचने के लिए समर्थ साधनों का इस्तेमाल करते हैं। ये बुद्धिजीवी अपनी क्षमताओं को विभिन्न क्षेत्रों, जैसे दवा, भौतिक विज्ञान और अतीत में मौजूद तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते हैं। बिना नतीजे की ओर उँगली उठाये और किसी चीज की परवाह किये बगैर वे जिन मूल्यों की स्थापना और वापसी के लिए प्रयत्नशील रहते हैं – उसकी उपयोगिता और अनुपयोगिता पर आज विमर्श करना बहुत आवश्यक है।

कार्यकारी बुद्धिजीवी समाज को बेहतर बनाने (अपने तरीके से) के लिए तकनीकी जानकारियों में दक्षता हासिल करते हैं, वहीं विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी आलोचक सामाजिक बेहतरी के लिए संघर्षरत हैं। देश-विदेश में ऐसे बुद्धिजीवियों की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने आंदोलनों में न सिर्फ शिरकत की, बल्कि ता-उम्र के लिए उससे जुड़ ही गए। तेलुगू में वरवर राव, अंग्रेजी में अरुंधति राय, बांग्ला में महाश्वेता देवी आदि लेखकों-बुद्धिजीवियों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी परंपरागत तौर पर अपने ज्ञान और लेखन का प्रयोग अन्याय, शक्ति के दुरुपयोग, सत्य के लिए संघर्ष और अन्य वैश्विक मूल्यों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए करते हैं। ज्याँ पॉल सार्त्र के शब्दों में कहें तो, ''विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता तक सीमित है।'' सार्त्र के इस कथन के आधार पर एक विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का काम समाज की विभिन्न कुरीतियों का विश्लेषण करना तथा उनको और अधिक मुखरता प्रदान करना है। यह बुद्धिजीवी के शाब्दिक हथियार हैं जिनके जरिये उन्हें समाज में कहीं भी हो रहे अन्याय का विरोध करना है। हेबरमास (1989) के कथन की रोशनी में अगर देखें तो ''आधुनिक समय में विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता से जुड़े मुद्दे, राजनीतिक वाद-विवाद और विभिन्न किताबों, पत्र-पत्रिकाओं में छपी चीजों पर लिखना और विमर्श करना है।'' हालांकि सभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी वैचारिक रूप से प्रगतिशील नहीं हैं, बावजूद इसके समाज के आधुनिक होने से बुद्धिजीवियों की भौतिक और मानसिक दशाओं में तब्दीलियाँ आई हैं। इन दिनों बुद्धिजीवी वे लोग हैं जो नये विचारों और नये

संस्कारों को पैदा करने में माहिर होते हैं। इनमें से भी कुछ बुद्धिजीवी वर्तमान समाज का समर्थन करते हैं तो कुछ उसका विरोध करते हैं। शायद इन वजहों से भी बुद्धिजीवी, कार्यकारी और विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी के रूप में बँट गए। कार्यकारी बुद्धिजीवी जहाँ एक तरफ समाज की सेवा तकनीकी जानकारियों से करते हैं वहीं नये आदर्श पैदा करके वर्ग, रंग और लिंग को वैधता प्रदान करते हैं। कहना न होगा कि अपने देश में भी सांप्रदायिक शक्तियों के सत्तासीन होते ही ऐसे-ऐसे तुर्रम खाँ, 'बुद्धिजीवी' का बिल्ला लगाये हुए कभी 'वाजपेयी क्लब' बना रहे थे, तो कभी उनकी कविताओं को नये-नये 'रागों' में गाकर सत्ता की आराधना में तन्मयता दिखा रहे थे – अभूतपूर्व समाजवादियों के समर्थन पर टिकी भाजपा राज के समय।

विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी अन्यायी और शोषकों के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। जबकि विरोधी खेमे के परंपरागत बुद्धिजीवी उत्तर आधुनिक सिद्धांतों द्वारा पैदा की गई चुनौतियों के साथ-साथ नई तकनीकों द्वारा तलाशी गई लोकतांत्रिक बहसों की संभावनाओं पर चर्चा करना मुफीद समझते हैं। यह सारी बातें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी और उनकी भूमिका को ठीक से पुनर्परिभाषित करने की माँग करता है।

लोकक्षेत्र (पब्लिक स्फीयर) और बुद्धिजीवी

अगर मूल परिभाषा पर नजर दौड़ाएं तो लोकतंत्र मूलतः सत्ता के विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ सरकारी मामलों में जनता की भागीदारी का नाम है। पुनर्जागरण और 18 वीं शताब्दी की राजनीतिक क्रांति के काल में एक ऐसा लोकक्षेत्र उभरकर सामने आया जहाँ आम आदमी अपने से जुड़े मुद्दों पर बहसें कर सकता था। दिलचस्प यह है कि उस काल में सरकार की आलोचना खास तौर पर आम जनता तक पहुँचाई जाती थी। खुद को अभिव्यक्त करने का साधन बना अखबार और पत्र-पत्रिकाएं। उस वक्त तत्कालीन प्रेस की आजादी आम जन को काफी कुछ सही रूप से चीजों को जानने-समझने का रास्ता फराहम कराती थी। वैचारिक आदान-प्रदान के लिए लोग कॉफी हाउस, पान की दुकान, नाई की दुकान आदि जगहों पर बैठा करते थे और वहीं विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएं छिड़ जाती थीं। दुखद यह है कि बूर्ज्वा समाज के टूटने के बाद तमाम लोगों ने अपनी-अपनी पार्टियाँ बना लीं, संस्थाएं बना लीं और विचारधाराएं विकसित कर लीं। बकौल डगलस कैलनर, "आम जनता को रिझाने के लिए विभिन्न पार्टी और संस्था के लोग लिखने लगे और खुद को खुद के ही द्वारा बुद्धिजीवी का दर्जा दे दिया। देखते-देखते शोषित वर्गों ने भी अपने बुद्धिजीवी पैदा कर लिए। हालांकि ये बुद्धिजीवी विद्रोही विचारधारा के थे और शोषकों के मुकाबले शोषितों के बुद्धिजीवियों में खास बात यह थी, वे समाज के सारे तबके का प्रतिनिधित्व करते थे।" ध्यान रहे कि मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट जैसी महिलाओं ने महिला अधिकारों के लिए आवाज बुलंद की थी। शोषित वर्ग के विद्रोही विचारधारा वाले इन बुद्धिजीवियों ने दमन और उनके कारणों के खिलाफ तो आवाज बुलंद की ही साथ ही इसके हल के लिए इनके समाधानों को सिद्धांत से उठाकर वास्तविकता के धरातल पर प्रयोग करने की बात कही। इसलिए 19 वीं शताब्दी में कर्मचारी वर्ग के लोगों ने शोषकों के खिलाफ अपना एक अलग ही लोकक्षेत्र विकसित किया। यूनियन हॉलों, दफ्तरों, सार्वजनिक स्थानों में इनकी सभाएं, चर्चाएं होने लगीं। इसी दौर में बकौल जुरगेन हेबरमास, "अमेरिका और यूरोप में पनप रहे लोकतंत्र और श्रमिक आंदोलनों ने एक वैकल्पिक प्रेस को जन्म दिया। इसके साथ ही हड़ताल और बैठकों जैसी चीज ने शोषक-विरोधी लोकक्षेत्र को एक नया मंच प्रदान किया।"

आधुनिक समाज के बुद्धिजीवियों में विरोधाभासी रूप से सामाजिक कार्यों को लेकर हमेशा एक मतभेद बना रहा। पारंपरिक रूप से विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों जैसे टॉमस पेन, मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट और बाद में मार्क्स, ह्यूगो, सार्त्र और मार्क्वेज जैसे लोगों ने पुनर्जागरण के दरम्यान अन्याय और शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इसके बावजूद संकीर्ण विचारों के बुद्धिजीवियों ने पुनर्जागरण और

फ्रांसीसी क्रांति की कामयाबियों पर हमला करते हुए कुछ इस तरह का इजहार-ए-खयाल किया जिसके तहत वर्ग, लिंग और रंग के नाम पर दमन और उत्पीड़न को जायज ठहराया गया।

इन बुद्धिजीवियों के विरोध में मिशेल फूको ने शिकायत की थी, ''सार्त्र ने एक आदर्शवादी नमूना प्रस्तुत किया है, जो बुद्धिजीवियों को वैश्विक मूल्यों, मसलन, सत्य, अहिंसा, आजादी और मानवता आदि के लिए लड़ने की सलाह देता है।'' फूको ने इसके विरोध में विशेष बुद्धिजीवी का प्रस्ताव किया जो बिलकुल तटस्थ होकर शोषितों-उत्पीड़ितों के सवालों से जुड़े खास मुद्दों के लिए अपनी आवाज बुलंद करे। फूको का यह विचार उत्तर-आधुनिक राजनीति में प्रासंगिक हो गया और राजनीति को पार्टी की राजनीति से हटाकर सामाजिक आंदोलनों की तरफ मोड़ दिया गया। उत्तर-आधुनिक राजनीति के लिए शक्ति का विकेन्द्रीकरण जरूरी है।

डगलस कैलनर कहते हैं, ''मैं यह मानता हूँ कि आलोचक बुद्धिजीवी या कहें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों के कुछ विचार उपयोगी हैं। आम बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के हनन के खिलाफ आवाज उठाते हैं, जबकि आम लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी दूसरों के लिए आवाज उठाने के बदले व्यक्तिगत या वैश्विक मुद्दों से जुड़े खास मुद्दों पर ही अपनी राय जाहिर करते हैं।'' नतीजा यह होता है कि वर्तमान परिवेश में लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी कहलाने के लिए वैश्विक बुद्धिजीवी के पूरे गुण होने की आवश्यकता नहीं है। कहना न होगा कि बुद्धिजीवियों को व्यक्तिगत इच्छाओं/अनिच्छाओं से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। बिना किसी पक्षपात के अपनी बात कहनी चाहिए - तमाम पूर्वग्रहों को छोड़कर। इसके साथ-साथ अपनी सीमाएं जानते हुए खुद को दूसरे की जगह रखकर सोचना चाहिए।

नई तकनीक, लोकक्षेत्र और नये बुद्धिजीवी

कुछ मामलों में बुद्धिजीवियों और तकनीक में कोई खास संबंध नहीं होता। आज के उच्च तकनीक से संपन्न समाज में कंप्यूटर और त्वरित मीडिया युग में प्रतिबद्ध आम बुद्धिजीवियों को परिभाषित करने की जरूरत है। बीसवीं सदी की शुरुआत में जॉन डिवे ने 'थॉट न्यूज' नामक एक ऐसे अख़बार की परिकल्पना की थी जिसमें विज्ञान की नवीनतम खोजों और विचारों को जगह दी जाए। इसके अलावा बर्टोल्ट ब्रेख़्त और वाल्टर बेंजामिन ने सिनेमा और रेडियो के क्रांतिकारी परिणामों को देखा था और दूसरे बुद्धिजीवियों से यह अपील की, कि वे इन साधनों का इस्तेमाल समाज को और अधिक लोकतांत्रिक बनाने और उसे बदलने में करें। ज्यॉ पॉल सार्त्र ने भी रेडियो धारावाहिकों का अध्ययन किया और इस बात पर बल दिया कि प्रतिबद्ध लेखकों को भी रेडियो और सिनेमा का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे भागना ठीक नहीं है।

पहले रेडियो, टेलीविजन और दूसरी इलैक्ट्रानिक मीडिया पर तमाम तरह की बंदिशें आयद थीं। रेडियो और टेलीविजन का विवाद, बहसें, जानकारियां आदि एक नये लोक वृत्त का निर्माण करते दिखाई दे रहे हैं। डगलस कैलनर जोर देकर कहते हैं कि, ''बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे इन माध्यमों का उपयोग करके जन मामलों में सीधे जनता की भागीदारियों को सुनिश्चित करें और एक नयी संचार राजनीति और मीडिया-परियोजनाओं का निर्माण करें।''

यह तथ्य अब धीरे-धीरे असलियत को काफी हद तक स्पष्ट करता जा रहा है कि आज की राजनीति में यदि कोई बुद्धिजीवी लोकवृत्त (पब्लिक स्फीयर) में अपनी पैठ बनाना चाहता है, समाज को नई दिशा देना चाहता है - तो नई तकनीकों का उन्हें अधिक से अधिक इस्तेमाल करना चाहिए। पहले रेडियो और टेलीविजन ने एक लोकक्षेत्र का या कहें लोकवृत्त का निर्माण किया था लेकिन अब कंप्यूटर और इंटरनेट ने अपने अलग लोकवृत्त बनाये हैं। जानकारियां, बहसें, लोकतांत्रिक सहभागिता और विचारों को पहुँचाने के

लिए नई संभावनाओं को भी पैदा किया है।...और यह कहना शायद गैर-जरूरी है कि इस्तेमाल में लाने से पूर्व इन तकनीकों का बारीकी से अध्ययन जरूरी है।

आज के समय में बुद्धिजीवी होने का मतलब है नई तकनीकों का उपयोग करके विचारों के क्षेत्र में नई और ऊर्जस्वी विचारों की खोज, उसका संपूर्ण वितरण और इससे तैयार हुए लोकवृत्त में अपनी पूरी भागीदारी। डगलस कैलनर इस मुद्दे पर अपनी राय साफ-साफ जाहिर करते हैं, कुछ इस तरह, ''आज के नये बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वह अपनी नीतियां इस तरह से बनाएं कि शिक्षा, लोकतांत्रिक विकास के साथ ही अपनी नीतियों को बेहतर ढंग से प्रसारित करने के लिए नई तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करें। भविष्य में जो वक्त आएगा उसमें बुद्धिजीवियों और नई तकनीक के बीच नाभिनालबद्ध रिश्ता बनाना अनिवार्य हो जाएगा।'' इसके बगैर नई तकनीक से भागने वाले लोग अपनी मेधा का सही इस्तेमाल कर ही नहीं पाएँगे और तब वे कैसा लोकवृत्त बनाएँगे और किस तरह के बुद्धिजीवी रह जाएंगे, यह मुद्दा बहसतलब है।

नव पूँजीवादी समाज में लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह और भी आवश्यक है कि लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति (डेमोक्रेटिक मीडिया पॉलिटिक्स) नई रणनीति के तहत की जाए। मीडिया की लोकतांत्रिक राजनीति में दो तरह की नीतियां होती हैं - पहली कार्यरत मीडिया को लोकतांत्रिक बनाना और दूसरी आम जनता की सुविधाओं, इच्छाओं और जरूरतों के प्रति मीडिया को जिम्मेवार बनाना।

मुख्य धारा की मीडिया के विकल्प के तौर पर एक विपक्षी मीडिया को तैयार करना भी आने वाली 'टैक्नो पॉलिटिक्स' का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है। लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति के लिए मुख्य धारा की पूँजीवादी मीडिया समर्थित नीतियों की तीखी आलोचना, उसमें सुधार और वैकल्पिक मीडिया का विकास, इसकी जरूरी शर्तें हैं। मीडिया को लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास तभी संभव है जब एक वैकल्पिक प्रेस का निर्माण हो। आम जनता की पहुँच में टेलीविजन हो और एक सकारात्मक विपक्षी राजनीति के साथ-साथ ऐसी वैचारिक दृढ़ता से सम्पन्न नीतियां हों जो मुख्यधारा की मीडिया को प्रभावित करें। उसकी नीतियों की परत-दर-परत पड़ताल करके उपयुक्त भाषा-शैली और अंदाज में बेनकाब करने का बेहतर एजेंडा हो।

पिछले कुछ दशकों में टेलीविजन संचार माध्यम के एक बेहतर विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है। 1970 में अमेरिका में हुए टेलीविजन के विकास में प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के लिए नई संभावनाएं पैदा की थीं। उसने इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जो तत्कालीन संकीर्ण समाज की कठोर आलोचनाएं करता था - उन दिनों मुख्यधारा की मीडिया में इसकी भरमार थी। 1970 में जब टेलीविजनों की संख्या में इजाफा होने लगा तब वहाँ 'फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन' का एक आदेश आया जिसके अंतर्गत 1972 के बाद के नए 'केबल सिस्टम' को कम-अज़-कम एक चैनल सरकार को शिक्षा और आम आदमी को नई जानकारियां मुहैया कराने के लिए देने होंगे। शुरुआती दौर में कुछ कंपनियों ने एक चैनल मुहैया कराई तो कुछेक ने दो या तीन।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि लोकतांत्रिक राजनीति में आम सहमति बनाने के लिए आमने-सामने बैठकर बातचीत करना जरूरी है लेकिन एक चतुराई पूर्ण सहमति के लिए जनता का जागरूक और जानकार दोनों होना बेहद आवश्यक है। कहना न होगा कि वर्तमान संदर्भ में यह रेडियो और टेलीविजन के द्वारा ही मुमकिन है। यह जरूरी नहीं है कि मीडिया वर्तमान राजनीति की पूरक बने लेकिन मीडिया राजनीति को बढ़ावा अवश्य दिया जाना चाहिए ताकि इसके माध्यम से जागरूक और जानकार लोग सूचनाओं को

अधिक-से-अधिक लोगों तक प्रसारित कर सकें। अमेरिका के टेक्सास राज्य में 'काउंसिल फॉर पब्लिक मीडिया' अपने कार्यकर्ताओं और आमजनों को यह बताता है कि नई तकनीक और कम्प्यूटर वगैरह का इस्तेमाल अपने विचारों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए कैसे करें? मीडिया राजनीति में ज़्यादा लोगों की भागीदारी, राजनैतिक संरचना की इसकी आवश्यकताओं को दर्शाती है। इसलिए आज नव पूँजीवाद और भूमंडलीकृत शोषण के हथियारों को मात देने के लिए मीडिया राजनीति को और अधिक विकसित करने की जरूरत है - साथ ही इसके लिए और अधिक मेहनत करने की जरूरत भी है।

अगर कोई विकासशील समूह या आंदोलन से जुड़े आंदोलनकर्मी वर्तमान राजनीतिक माहौल में 'अधिकारों' का कोई विकल्प तलाश करना चाहते हैं तो हर हाल में उन्हें अपनी बात अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचानी होगी और खुद से ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को जोड़ना होगा। आखिर ज्यादातर लोग समाचार और अन्य अनेक सूचनाएं टेलीविजन से ही प्राप्त करते हैं। प्रसार माध्यम ही आम जनता के विचारों को बनाने में एक अहम भूमिका निभाता है और यह तय करता है कि किस चीज को गंभीरता से लें और किसको गंभीरता से नहीं लें। अगर वैकल्पिक विकास के यूटोपिया से लैस लोग राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पैठ बनाना चाहते हैं तो उन्हें नई तकनीकों को ध्यान में रखकर ही अपनी नीतियों का निर्माण करना पड़ेगा।

लोकतांत्रिक समाज के निर्माण और विकास में 'टैक्नो पॉलिटिक्स' को बढ़ावा देने के लिए कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी नई-नई संभावनाएं पैदा करता जा रहा है। ऐसा लगता है कि आने वाले समय में घर-घर में मनोरंजन और जानकारियों का भंडार होगा - मगर वे भारतीय नागरिक हर चीज की तरह इससे भी अंततः वंचित रह जाएंगे जो आज भी दो वक़्त की रोटी के लिए संघर्षरत हैं और कल भी संघर्ष से शायद नहीं उबर पाएंगे। यह सारा ताम-झाम अंततः इन मध्यवर्गीय नागरिकों को फायदा पहुँचाएगा जिन्हें मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। दूसरी चिंता इसके साथ यह जुड़ी हुई है कि अगर वैकल्पिक विचारों वाले मीडिया का विकास नहीं हुआ तो इसका उपयोग वही कर पाएंगे जो आर्थिक रूप से बेहद मजबूत स्थितियों में होंगे। नतीजा यह होगा कि गरीब मुल्कों के लोग किसी भी तरह इसका लाभ नहीं उठा पाएंगे। नाइजीरिया, कांगो गणराज्य और दक्षिण अफ्रीकी मूल के लोगों की इस तक पहुंच हो ही नहीं सकेगी। भारत के 'हिंदी पट्टी' के लोग तो आज भी छोटी-से-छोटी जानकारियां नहीं पा सकते हैं। फलस्वरूप, इन निजी मनोरंजन माध्यमों का विकल्प ढूँढ़ना जरूरी होता जा रहा है।

आज के इस टैक्नो पूँजीवादी समाज में कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी की बढ़ती महत्ता विकासशील मीडिया की जरूरत के रूप में उभरा है। पूरी दुनिया कंप्यूटरीकृत होने जा रही है और आने वाले वक्त में जिस देश के नागरिक की इस दुनिया तक पहुँच और दखल नहीं होगी वे हर तरीके से दुनिया में रहकर भी किसी और दुनिया के वासी में तब्दील होते चले जाएंगे। गरीब मुल्कों की सरकारें जिस तरीके से बहुराष्ट्रीय पूँजी के आकाओं और पूंजीवादी मीडिया के सेठों को अपने यहाँ बुलाकर मनचाहे तरीके से काम करने के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं उसके कारण भी जनता अपनी मूलभूत जरूरत की चिंताओं में ही गर्क है। उन्हें यह सोचने और जानने का मौका ही उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है कि हमारा आनेवाला वक्त कैसा होगा और हमारी सरकारें किस तरह की दुनिया बनाने वालों के साथ हैं, सहयोगी हैं? इसलिए निजी कंपनियों और सरकारों के एकाधिकार से बचने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि नये-नये जानकारी केन्द्रों की स्थापना की जाए ताकि लोकतांत्रिक समाज में अपनी सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सके।

कंप्यूटर अपनी क्षमताओं के कारण अंततः एक लोकतांत्रिक तकनीक है, जहां प्रसारण के माध्यम मात्र 'वन वे ट्रैफिक' हैं वहीं कंप्यूटर और इंटरनेट द्विपक्षीय माध्यम है। कंप्यूटर, इंटरनेट, चैटिंग आदि का उपयोग आम जनता एक दूसरे से बातचीत करने के लिए कर सकती है। मोडेम और टेलीफोन लाइनों की

सहायता से तमाम लोग – जो इससे जुड़े हैं, जुड़ सकते हैं – वे लोग तमाम मुद्दों पर विमर्श कर सकते हैं। इस तरह यह एक नये संसार और प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। वर्तमान समय में जन सरोकारों से जुड़े लोगों के लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि वे ऐसे कार्यक्रमों से जुड़कर, इस दुनिया में प्रवेश करके गरीब मुल्कों की व्याख्या प्रस्तुत करें, जिससे उन दमित और शोषित तबकों तक भी इसका लाभ पहुंच सके – जो आज तक तो वंचित हैं ही और सरकार की जैसी नीतियाँ हैं, राजनीतिज्ञों की जो कार्य शैली और प्रतिबद्धताएं हैं उससे आगे भी दुनिया में हो रही हलचलों से वे वंचित रहेंगे। 'टेक्नो पॉलिटिक्स' में शामिल विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों पर ही अंततः यह जिम्मेदारी आयद होती है कि वे एक वास्तविक लोकवृत्त के निर्माण के लिए जन-जन तक सूचनाएं अपने-अपने तरीके से पहुँचाएं।

सहायक ग्रंथ

1. फ्रेडरिक जेमसन : ए क्रिटिकल रीडर, सं. डगलस कैलनर एंड सीन होमर, 2004
2. मीडिया स्पेक्टेकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी : डगलस कैलनर, 2005
3. मीडिया कल्चर : कल्चरल स्टडीज, आइडेंटिटी एंड पॉलिटिक्स बिटवीन द मॉडर्न एंड द पोस्ट मॉडर्न : डगलस कैलनर (1995)
4. द रोल ऑफ पब्लिक इंटेलेक्चुअल : एलन लाइटमैन।
5. द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉरमेशन ऑफ द पब्लिक स्फीयर : एन इनइक्विटी इंटू ए कैटेगरी ऑफ बूर्ज्वाजी सोसाइटी, जुरगेन हेबरमास, 1991, अनुवाद : थॉमस बर्जर, एम.आई.टी. प्रेस।
6. मासेज, क्लासेज, एंड द पब्लिक स्फीयर : माइक हिल, वारेन मोन्टाग, वर्सो, 2001
7. पावर एंड पॉलिटिक्स इन ग्लोबलाइजेशन : द इंडिस्पेंसबल स्टेट : होवार्ड एच. लैन्टर, 2004
8. रूल ऑफ एक्सपर्ट्स : इजिप्ट, टैक्नो पॉलिटिक्स, मॉडर्निटी : टिमोथी मिथेल, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002

पंकज पराशर प्रायः, महत्वपूर्ण किताबों को लेकर 'पहल' में लिख रहे हैं। नोम चोम्स्की के बाद पूंजीवादी दुनिया में वामपंथी रूझान बढ़ने के दृश्य पर वे विस्तृत काम कर रहे हैं। नोम चोम्स्की की ताज़ा किताब 'फेल्ड स्टेट्स' पर अगले अंक में संपादकीय टिप्पणी पाठक पढ़ सकेंगे।

सांझ होइत गाममे

भारतक नक्शापर
जकर कोनो टा जिक्र
कतहु देखार नहि होइत अछि
से एकटा कोनो गाम
आ ओहि गामक एकटा साँझमे हम
ठाढ़ छी चुपचाप
बहुत दिनपर घुरल
कोनो बटोही जकाँ

जे तकैत अछि अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
आ सिंगरहारकेँ नहि देखि

घुरि अबैए बेर-बेर
हिया हारिकें
भ' जाइए ठाढ़
चुप्चाप

चुपचाप ठाढ़ ओ बटोही
तकैत रहैए
ठकनबैत रहैए
सोचैत रहैए
किनसाइत ...
किनसाइत ...
किनसाइत ...

चिन्हबाक प्रक्रियामे
बेर-बेर असफल होइत ओ
बेर-बेर तकैए किछु परिचित निशान
बेर-बेर तकैए किछु पहिचान
अपन स्मृतिक दरिद्रतापर कानि
बैसि जाइत अछि थसथसाक'
चुपचाप कोनो ठाम

ओ तकैत अछि
अपन हृदयमे बसल गाम
गाममे अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
ओ तकैत अछि बेर-बेर

मोन पड़ैत छैक
बेर-बेर पड़ैत छैक मोन
'ने ओ नगरी, ने ओ ठाम ...
फकड़ा गुनबैत ओ बुढ़िया

बुढ़ियाक तमाकुल माँगब
मोन पड़ैत छैक
एक-एक क' सबटा

मोन नहि पड़ैत छैक घर ?

घर नहि मोन पड़ैत अछि
वा घरे नहि मोन पाड़ैत अछि
घर ओ नहि चिन्हि पबैए
वा घरे ओकरा नहि चिन्हैए
घरसँ ओ गेल छल
कि घरे ओत'सँ गेल छल
ई एकटा भयंकर समस्या अछि उपस्थित

एहि मुन्हारि साँझमे
जे निरन्तर गाढ़ भेल जा रहल-ए
तेज आँचपर खौलैत दूध जकाँ
ओ ठाढ़ अछि
निरन्तर अस्पष्ट होइत जा रहल
साँझक गाछ तर
ओ ठाढ़ अछि
ठकमकाएल
साँझ क' घुरल सुग्गा जकाँ
घर केँ तकैत

साँझक गाछमे
गाछक झाँखुड़ सबहक दोगमे
निरन्तर अस्पष्ट होइत गाम

आ गाममे ठाढ़ ओ
निरन्तर अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
निरन्तर
बाढ़िमे आस्ते-आस्ते डुबैत
आ अंततः चक्कडुम होइत
घर जकाँ
ओ अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
साँझ खन गाममे
गाममे साँझे खन
ओ विलीन भेल जा रहल-ए
आस्ते -आस्ते--
आस्ते -आस्ते--
आस्ते आस्ते--

□

नये इलाके में

इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसन्त का गया पतझड़ को लौटा हूँ

जैसे बैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो–
क्या यही है वो घर ?

समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देख कर

ध्यान पंकज प्रकाशन अही आर्टिकलक अनुवाद अपना नाम छपवा लेलक, (धोखासँ प्रदीप विहारीक द्वारासँ अनुवाद करवेलक आ अपना नाम अनुवादक नै मूल लेखक रूपमे पहिल ८६ म छपवा लेलक।

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics Douglas Kellner (http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/) The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life. I, however, want to make another distinction between functional intellectuals who serve to reproduce and legitimate the values of existing societies contrasted to critical-oppositional intellectuals who oppose the existing order. Sometimes oppositional intellectuals voice their criticisms in the name of existing values which they claim are being violated (i.e. truth, rights, rule by law, justice, etc.) and sometimes in the name of values or ideas which are said to be higher potentialities of the existing order (i.e. participatory democracy, socialism, genuine equality for women and blacks, ecological restoration, etc.). Functional intellectuals were earlier the classical ideologues, whereas today they tend to be functionaries of parties or interest

groups, or mere technicians who devise more efficient means to obtain certain ends, or who apply their skills to increase technical knowledge in various specialized domains (medicine, physics, history, etc.) without questioning the ends, goals, or values that they are serving, or the social utility or disutility of their activities. Functional intellectuals are thus servants of existing societies who are specialists in legitimation and technical knowledge, while oppositional intellectuals are critics who struggle to create a better society. Critical intellectuals were traditionally those who utilized their skills of speaking and writing to denounce injustices and abuses of power, and to fight for truth, justice, progress, and other universal values. In the words of Jean-Paul Sartre (1974: 285), "the duty of the intellectual is to denounce injustice wherever it occurs." For Sartre, the domain of the critical intellectual is to write and speak within the public sphere, denouncing oppression and fighting for human freedom and emancipation. On this model, a critical intellectual's task is to bear witness, to analyze, to expose, and to criticize a wide range of social evils. The sphere and arena of the critical/oppositional intellectual is the word, and his or her function is to describe and denounce injustice wherever it may occur. The modern critical intellectual's field of action was what Habermas (1989) called the public sphere of democratic debate, political dialogue, and the writing and discussion of newspapers, journals, pamphlets, and books. Of course, not all intellectuals were critical or by any means progressive. With the rise of modern societies, there was a division between physical and mental labor, and intellectuals became those who specialized in mental labor, producing and distributing ideas and culture, with some opposing and some legitimating the established forms of society. Thus, intellectuals were split into those critical and oppositional individuals who opposed injustice and

oppression, as contrasted to functional intellectuals who produced technical knowledge that served the existing society and those producers of ideology who legitimated the forms of class, race, and gender domination and inequality in modern societies. In the following reflections, I want to discuss some challenges from postmodern theory to the classical conceptions of the critical-oppositional intellectual and some of the ways that new technologies and new public spheres offer new possibilities for democratic discussion and intervention, which call for a redefinition of the critical intellectual. Consequently, I will discuss some changes in the concept of the public sphere and how new technologies and new spheres of public debate and conflict suggest some new possibilities for redefining intellectuals in the present era. The Public Sphere and the Intellectual Democracy involves a separation of powers and popular participation in governmental affairs. During the era of the Enlightenment and 18th century democratic revolutions, public spheres emerged where individuals could discuss and debate issues of common concern (see Habermas 1989). The public was also a site where criticism of the state and existing society could circulate. The institutions and spaces of the 18th century democratic public sphere included newspapers, journals, and a press independent from state ownership and control, coffee houses where individuals read newspapers and engaged in political discussion, literary salons where ideas and criticism were produced, and public assemblies which were the sites of public oratory and debate. Bourgeois societies split, of course, across class lines and different class factions produced different political parties, organizations, and ideologies with each party attracting specialists in words and writing known as intellectuals. Oppressed groups also developed their own insurgent intellectuals, ranging from representatives of working class organizations, to women

like Mary Wollstonecraft fighting for women's rights, to leaders of oppressed groups of color, ethnicity, sexual preference, and so on. Insurgent intellectuals attacked oppression and promoted action that would address the causes of oppression, linking thought to action, theory to practice. Thus, during the 19th century, the working class developed its own oppositional public spheres in union halls, party cells and meeting places, saloons, and institutions of working class culture. With the rise of Social Democracy and other working class movements in Europe and the United States, an alternative press, radical cultural organizations, and the spaces of the strike, sit-in, and political insurrection emerged as sites of an oppositional public sphere. Intellectuals in modern societies were thus conflicted beings with contradictory social functions. The classical critical intellectual -- represented by figures like the French Enlightenment ideologues, Thomas Paine, Mary Wollstonecraft, and later figures like Heine, Marx, Hugo, Dreyfus, Du Bois, Sartre, and Marcuse -- was to speak out against injustice and oppression and to fight for justice, equality, and the other values of the Enlightenment. Indeed, the Enlightenment itself represents one of the most successful discourses of the critical individual, a discourse and movement which assigns intellectuals key social functions. And yet conservative intellectuals attacked the Enlightenment and its prodigy the French Revolution and produced discourses that legitimated every conceivable form of oppression from class to race, gender, and ethnic domination. Against the EN and Sartre's model of the committed intellectual who is engaged for freedom (engagé), Michel Foucault complained that Sartre represented an ideal of the universal intellectual who fought for universal values such as truth and freedom, and assumed the task of speaking for humanity (1977). Against such an exalted and in his view

exaggerated conception, Foucault militated for a conception of the specific intellectual who intervened on the side of the oppressed in specific issues, not claiming to speak for the oppressed, but to intervene as an intellectual in specific issues and debates. Foucault's conception of the specific intellectual has been accompanied within a new postmodern politics with a turn toward new social movements as the domain of contemporary politics (Laclau and Mouffe 1985), replacing the state and the national realm of party politics. For a postmodern politics, power is diffuse and local and not merely to be found in macroinstitutions like the workplace, the state, or patriarchy. Macropolitics that goes after big institutions like the state or capital is to be replaced by micropolitics, with specific intellectuals intervening in spheres like the university, the prison, the hospital, or for the rights of specific oppressed groups like sexual or ethnic minorities. Global and national politics and theories are rejected in favor of more local micro politics, and the discourse and function of the intellectuals is seen as more specific, provisional, and modest than in modern theory and politics, subordinate to local struggles rather than more ambitious projects of emancipation and social transformation. In my view, such a binary distinction between macro and micro theory and politics is problematical, as are absolutist commitments to either modern or postmodern theory tout court (Best and Kellner 1991 and 1997). Using the example of the events of 1989 that saw the collapse of communism, for instance, it is clear that the popular offensives against oppressive communist power combined micro and macropolitics, moving from local and specific struggles rooted in union halls, universities, churches, and small groups to mass demonstrations forcing democratic reforms and even classical mass insurrection aiming at an overthrow of the

existing order, as in Romania. In these struggles, intellectuals played a variety of roles and deployed a diversity of discourses, ranging from the local and specific to the national and general. Thus, whereas I would argue that postmodern theory contains important criticism of some of the illusions and ideologies of the traditional modern intellectual, it goes too far in rejecting the classical role of the critical intellectual. Moreover, I shall suggest that some of the modern conception of the critical and oppositional intellectual remains useful. I would, in fact, reject the particular/universal intellectual dichotomy in favor of developing a normative concept of the critical public intellectual. The public intellectual -- on this conception -- intervenes in the public sphere, fights against lies, oppression, and injustice and fights for rights, freedom, and democracy à la Sartre's committed intellectual. But a democratic public intellectual on my conception does not speak for others, does not abrogate or monopolize the function of speaking the truth, but simply participates in discussion and debate, defending specific ideas, values, or norms or principle that may be particular or universal. But if universal, like human rights, they are contextual, provisional, normative and general and not valid for all time. Indeed, rights are products of social struggles and are thus social constructs and not innate or natural entities -- as the classical natural rights theorists would have it. But rights can be generalized, extended, and can take universal forms -- as with, for instance, a UN charter of human rights that holds that certain rights are valid for all individuals -- at least in this world at this point in time. Consequently, one does not need all of the baggage of the universal intellectual to maintain a conception of a public or democratic intellectual in the present era. Intellectuals may well seek to occupy a higher ground than particularistic interests, a common

ground seeking public interests and goods. But intellectuals should not abrogate the right to speak for all and should be aware that they are speaking from a determinate position with its own biases and limitations. Moreover, intellectuals should learn to get out of their particular frame of reference for more general ones, as well as to be able to take the position of the other, to empathize with more marginal and oppressed groups, to learn from them, and to support their struggles. To perpetually criticize oneself, to develop the capacity for self-reflection and critique -- as well as selfexpression -- is thus part of the duty of the democratic intellectual. New Technologies, New Public Spheres, and New Intellectuals In the following discussion, I will argue that although the public intellectual should assume new functions and activities today, the critical capacities and vision of the classical critical intellectual are still relevant, thus I suggest building on models of the past, rather than simply throwing them over, as in some types of postmodern theory. I want to suggest that rethinking the intellectual and the public sphere today requires rethinking the relationship between intellectuals and technology. In a certain sense, there was no important connection between the classical intellectual and technology. To be sure, intellectuals -- especially scientific scholars like Leonardo de Vinci, Galileo, or Darwin -- deployed technologies and entire groups like the British Royal Society were concerned with technologies and were indeed often inventors themselves. Some intellectuals used printing presses and were themselves printers and many, though not all, of the major intellectuals of the 20th century probably used a typewriter, though I personally know of no major studies of the relationship between the typewriter and intellectuals. Yet a classical intellectual did not have to intrinsically deploy any specific technology and there was thus no intimate

connection between intellectuals and technology. I now want to argue that in the contemporary high-tech societies there is emerging a significant expansion and redefinition of the public sphere and that these developments, connected primarily with media and computer technologies, require a reformulation and expansion of the concept of critical or committed intellectual, as well as a redefinition of the public intellectual. Earlier in the century, John Dewey envisaged developing a newspaper that would convey "thought news," bringing all the latest ideas in science, technology, and the intellectual world to a general public, which would also promote democracy (see the discussion of this project in Czitrom 1982: 104ff). In addition, Bertolt Brecht and Walter Benjamin (1969) saw the revolutionary potential of new technologies like film and radio and urged radical intellectuals to seize these new forces of production, to "refunction" them, and to turn them into instruments to democratize and revolutionize society. Sartre too worked on radio and television series and insisted that "committed writers must get into these relay station arts of the movies and radio" (1974: 177; for discussion of his Les temps modernes radio series, see 177-180). Previously, radio, television, and the other electronic media of communication tended to be closed to critical and oppositional voices both in systems controlled by the state and in private corporations. Public access and low power television, and community and guerilla radio, however, open these technologies to intervention and use by critical intellectuals. For some years now, I have been urging progressives to make use of new communications broadcast media (Kellner 1979; 1985; 1990; 1992) and have in fact been involved in a public access television program in Austin, Texas since 1978 which has produced over 600 programs and won the George Stoney Award for public affairs television. My argument was that

radio, television, and other electronic modes of communication were creating new public spheres of debate, discussion, and information and that intellectuals who wanted to engage the public, to be where the people were at, and who thus wanted to intervene in the public affairs of their society should make use of these new media technologies and institutions, and develop new communication politics and new media projects. In fact, one can argue that the victory of Reagan and the Right in the United States in 1980 was related to the Right's effective mobilization of conservative intellectuals and their use of television, radio, fax and computer communication, direct mailings, telephones, and other sophisticated political uses of new technologies, as well as more traditional print media. Furthermore, one could argue that Clinton's victory over Bush in 1992, and the surprising success of the Perot campaign, were related to effective uses of communication technologies. And more recently in the U.S., the Republican and rightwing success in the 1994 elections can be related to their use of talk radio, computer bulletin boards, and other technologies. Indeed, Newt Grinrich, William Bennett, and other conservatives have made very effective use of public access television, radio, computer networks, book promotion tours with high media exposure, and other technologies to promote their ideas. Yet it is generally acknowledged that the Clinton administration deployed much more effective communications politics in the 1996 election than the Dole campaign. Effective CU politics are thus now essential to political success in national and local conflicts and often which side has the most effective politics of CU wins the struggle in question. Consequently, I would argue that effective use of technology is essential in contemporary politics and that intellectuals who wish to intervene in the new public spheres need to deploy new communications

media to participate in democratic debate and to shape the future of contemporary societies and culture. My argument is that first broadcast media like radio and television, and now computers have produced new public spheres and spaces for information, debate, and participation that contain both the potential to invigorate democracy and to increase the dissemination of critical and progressive ideas -- as well as new possibilities for manipulation, social control, and the promotion of conservative positions. But participation in these new public spheres -- computer bulletin boards and discussion groups, talk radio and television, and the emerging sphere of what I call cyberspace democracy require critical intellectuals to gain new technical skills and to master new technologies. I am thus suggesting that intellectuals in the present moment must master new technologies and that there is thus a more intimate relationship between intellectuals and technology than in previous social configurations. To be an intellectual today involves use of the most advanced forces of production to develop and circulate ideas, to do research and involve oneself in political debate and discussion, and to intervene in the new public spheres produced by broadcasting and computing technologies. New public intellectuals should attempt to develop strategies that will use these technologies to attack domination and to promote education, democracy, and political struggle -- or whatever goals are normatively posited as desirable to attain. There is thus an intrinsic connection in this argument between the fate of intellectuals and the forces of production which, as always, can be used for conservative or progressive ends. Toward a Radical Democratic Techno-Politics A revitalization of democracy in capitalist societies will therefore require a democratic media politics. Such a politics could involve a two-fold strategy of, first, attempting to democratize existing media to make them

more responsive to the "public interest, convenience, and necessity." In the United States, the media watchdog group FAIR (Fairness and Accuracy in Media) has developed this alternative, criticizing mainstream media for failing to assume their democratic and journalistic responsibilities and calling for an expansion of voices and ideas within the media system. Another strategy involves the development of oppositional media, alternatives to the mainstream, developed outside of the established media system. On my view, both strategies are necessary for the development of a democratic media politics and it is a mistake to pursue one at the neglect of the other. Developing a radical democratic media politics thus involves continued relentless criticism of the existing media system, attempts to democratize and reform it, and the production of alternative progressive media. On my account, democratizing our media system will require expansion of the alternative press, a revitalization of public television, an increased role for public access television, the eventual development of a public satellite system, democratized computer networks, and oppositional cultural politics within every sphere of culture, ranging from music to visual to print culture. Community and Low-Power Radio Community radio has long provided an alternative set of voices to the highly commercialized mainstream radio. Citizen-band (CB) and short-wave radio allows individuals to directly communicate with each other. Many countries have also experimented with low-power community radio, which enables groups to actually bring individuals out of their homes to public places to engage in discussion or communal activity. Low-power radio enables individuals to directly communicate with their neighbors through call-in telephone connections, or through discussions in nearby studios, and thus provide democratic and participatory institutions (see Box 3). Low-power radio, however, is

subject to quick suppression by the state, as happened in Japan which had an extensive low-power radio culture in play that was shut-down almost overnight when the state outlawed low-power broadcasting. In the U.S., there have been some low-power radio experiments, but the government too has cracked down on these local attempts to democratize radio. A democratic media politics should thus struggle for low-power radio and to increase the possibilities of direct communication through radio technology. Ironically, despite the higher costs of television technology, there are probably more immediate possibilities for democratic alternative television than in radio. As mentioned, while low-power radio technologies are relatively inexpensive, they are easily suppressed by a state which opposes democratic and free-wheeling communication. Community radio has been curtailed by saturation of FM and AM frequencies and in most places there is simply not room for legal community radio stations. During the early 1990s in Austin, Texas, for instance, a vicious battle took place between the University of Texas and a local community-based co-op radio group for the remaining FM frequency band. Hence, it has been difficult to develop new radio outlets for public communication with the previous limited spectrum allotment, although fiber-optic community cable system and the Internet also make possible a dramatic expansion of community and alternative road which could make possible Brecht's vision of a radio system with every individual a sender. Public Access Television Public access television has been for some decades now an established venue for alternative democratic communication. The rapid expansion of public access television in the 1970s in the U.S. provided new possibilities for progressive individuals and groups to produce video programming that cuts against the conservative

programming which dominates mainstream television in the United States. Progressive access programming is now being cablecast regularly in such places as New York, Los Angeles, Boston, Chicago, Atlanta, Madison, Urbana, New Orleans, Austin, and perhaps as many as 2,000 other towns or regions of the country. Public access television, in most cases, provides free equipment and airtime to individuals and groups who want to make their own programming. Usually, one must take a course to actually use studio and editing equipment and a few systems lease the equipment and airtime, but, for the most part, where there are public access channels, the cable systems make them available for public use and they are usually managed by an independent body, answerable to the community, and often financed by the cable system. When cable television began to be widely introduced in the early 1970s, the Federal Communications Commission mandated in 1972 that "beginning in 1972, new cable systems {and after 1977, all cable systems} in the 100 largest television markets be required to provide channels for government, for educational purposes, and most importantly, for public access." This mandate suggested that cable systems should make available three public access channels to be used for state and local government, education, and community public access use. "Public access" was construed to mean that the cable company should make available equipment and air time so that literally anybody could make noncommercial use of the access channel, and say and do anything that they wished on a first-come, first-served basis, subject only to obscenity and libel laws and prohibitions against advertising and pitches for money. Creating an access system required, in many cases, setting up a local organization to manage the access channels, though in other systems the cable company itself managed the access center. In the beginning, however, few, if any, cable systems made

as many as three channels available, but some systems began offering one or two access channels in the early to mid 1970s. The availability of access channels depended, for the most part, on the political clout of local governments and committed, and often unpaid, local groups to convince the cable companies, almost all privately owned, to make available an access channel. Here in Austin, for example, a small group of video activists formed Austin Community Television in 1973 and began broadcasting with their own equipment through the cable system that year. Eventually, they received foundation and CentertainmentA government grants to support their activities, buy equipment, and pay regular employees salaries. A new cable contract signed in the early 1980s called for the cable company to provide $500,000 a year for access and after a difficult political struggle, which I shall mention later, were able to get at least $300,000-$400,000 a year to support Austin Community Television activities. A 1979 Supreme Court decision, however, struck down the 1972 FCC ruling on the grounds that the FCC did not have the authority to mandate access, an authority which supposedly belongs to the U.S. Congress. Nonetheless, cable was expanding so rapidly and becoming such a high-growth competitive industry that city governments considering cable systems were besieged by companies making lucrative offers (20 to 80 channel cable systems) and were able to negotiate access channels and financial support for a public access system. Consequently, public access grew significantly during the early 1980s. Where there are operative public access systems, individuals have promising, though not sufficiently explored, possibilities to produce and broadcast their own television programs. In Austin, Texas, for example, there have been weekly anti-nuclear programs, black and chicano series, gay programs, countercultural and anarchist programs, an atheist

program, feminist and women's programs, labor programming, and a weekly progressive news magazine, Alternative Views, with which I am involved, that has produced over 470 hour-long programs from 1978 to the present on a wide variety of topics. We combine news reports from alternative sources with discussion, documentaries, and video-footage from alternative sources. Paper Tiger Television in New York combines critique of corporate media by media critics with imaginative sets, visuals, editing, and so on. A labor-oriented program, The Mill Hunk News, in Pittsburgh used to combine news reports of labor issues with documentary interviews with workers, music-videos, and other creative visuals, while Labor Beat in Chicago also uses documentary footage, music, drama, and collages of images, as well as interview and talking head formats, to present alternative information (see Box 4). There have been some experiments with national progressive satellite networks, although they have suffered from inadequate funding and the failure of often conservative-owned cable systems to carry progressive programming. While public access television is still in a relatively early stage of development in the U.S. and Europe, it contains the promise of providing a different type of alternative television. Despite obstacles to its use, public access provides the one institution in the commercial and state broadcasting systems that is at least potentially open to progressive intervention. It is self-defeating simply to dismiss broadcast media as tools of manipulation and to think that print media are the only tools of communication and political education open to progressives. Surveys have shown that people take more seriously individuals, groups, and politics that appear on TV; thus the use of television could help progressive movements and struggles gain legitimacy and force in the shifting and contradictory field

of U.S. politics. The Right has been making effective use of new technologies and media of communication, and for progressives to remain aloof is a luxury that they can no longer afford. Of course, many will claim that democratic politics involves face-to-face conversation, discussion, and producing consensus. But for intelligent debate and consensus to be reached, individuals must be informed and radio, television, and computers are important sources of information in the present age. Thus I am not proposing that media politics supplement all political activity and organizing, but am suggesting that a media politics should be developed to help activist groups and individuals obtain and disseminate information. In Austin, Texas, for instance, a group, Council for Public Media, has been working to inform activist groups how they can get information through the new computer technologies and how they can use the press, broadcast media, and other methods of communication to get their messages out. Activist groups are coming to see that media politics is a key element of political organization and struggle and thus more work on developing institutions and strategies for media politics is necessary. Indeed, if progressive groups and movements are to produce a genuine alternative to the Right, they must increase their mass base and circulate their struggles to more segments of the population. After all, most people get their news and information from television, and the broadcast media arguably play a decisive role in defining political realities, shaping public opinion, and determining what is or what is not to be taken seriously. If progressives want to play a role in local and national political life, they must come to terms with the realities of electronic communication and computer technologies in order to develop strategies to make use of new technologies and possibilities for intervention. The Democratization of Computers and Information Other

possibilities for expanding a system of democratic techno-politics reside in new computer and information technologies. It appears that there will be a merger of entertainment and information centers in the homes of the future with all possible print media information accessible by computer and all visual media entertainment and information resources available for home computer/entertainment center access. But the threat--and likelihood if alternative concepts are not developed and disseminated--is that this information and entertainment material will be thoroughly commodified, available only to those who can afford to pay. Consequently, it is necessary to begin devising public alternatives to these private/corporate information and entertainment systems of the future. Given the growing importance of computers and information in the new techno-capitalist society, producing new information networks and systems must therefore be an essential ingredient of a progressive media and information politics. The computerization of the world is well underway and possibilities are growing for new information networks and computer communication systems. To avoid corporate and government monopolization and control of information, new public information networks and centers are also necessary so that citizens of the future can have access to the information needed to intelligently participate in a democratic society. For computers, like broadcasting, can be used for or against democracy. Indeed, computers are a potentially democratic technology. While broadcast communication tends to be one-way and unidirectional, computer communication is potentially bi-, or even omni-, directional. Individuals can use computers to do word-processing to communicate with other individuals, or can directly communicate with others via modems which use the telephone to link individuals with each other. Modems can

tap into community bulletin boards, web sites, or computer conference programs, that make possible a new type of public communication and progressives should intervene in these information modes as well as participating in public debate and discussion. For instance, many computer bulletin boards and web sites have a political debate conference where individuals can type in their opinions and other individuals can read them and if they wish respond. This constitutes a new form of public dialogue and interaction. Computer data bases and web sites provide essential sources of information and new technologies that tremendously facilitates information-searching and research. Mainstream data bases include Lexis/Nexis and Dialogue which contain a tremendous array of newspapers, magazines, journals, transcripts of TV programs, news conferences, congressional hearings, and newsletters, reproduced in full. Alternative data bases include Peacenet which has over 600 conferences on topics of ecology, war and peace, feminism, and hundreds of other topics. Here progressives put in alternative information and some of the conferences have lively debates. Between the mainstream and alternative computer data bases, individuals and groups can access a tremendous amount of information in a relatively short time. I was able to research my book on the media and the Gulf war, for instance, because I was able to access information on various topics from a variety of sources simply by punching in code words which enabled me to discern the conflicting media versions of the Gulf war and to put in question the version being promoted by the Bush administration and Pentagon. Eventually, the lies and disinformation promoted by the U.S. government in the war were thoroughly exposed by a variety of sources, accessible to computer data base searches. Corporations, government institutions, the major political parties, and other groups are

taking advantage of these computer data bases and progressive must learn to access and use them to produce the information necessary to prevail in the public debates of the future. But the politics of information in the future must struggle to see that alternative information is accessible in mainstream computer data bases, as well as alternative ones. Many data bases and information services omit leftist, feminist, environmentalist, and other alternative information sources from their listings, thus in effect shutting out radical alternatives in information sources, much as the broadcasting networks exclude dissident voices from broadcast communication. Progressive groups and alternative publications should struggle to make sure that their information sources and services are listed in data base bibliographies and source material. Yet the proliferation of the World Wide Web enables independent and alternative groups and individuals to creat their own web sites, to make their information available to people through the globe, often free of charge. In the next section, I will give some examples of how computer techno-politics have deployed web sites, bulletin boards, mailing lists, and email campaigns to promote a variety of political struggles. First, however, I want to conclude this section by noting that a synergy is emerging between the new sources of information, new media and technologies, and political organization and struggle. Print and broadcast media organs can obtain information from computers and disseminate it to the public. Political groups can obtain information from these sources and disseminate it back through print, broadcast, and computer technologies. Information critical of, say, transnational corporate policies can be disseminated through a multiplicity of sites, so political groups need to be aware of the potential for the transmission of information through a variety of media in the contemporary era. Moreover, the

Internet may be a vehicle for new forms of alternative radio, television, film, art, and every form of culture as well as information and print material. New multimedia technologies are already visible on web sites and Internet radio and television is now in its infancy. This would truly make possible Brecht's dream of a communications system where everyone was a sender and receiver and would greatly proliferate the range and diversity of voices and texts and would also no doubt give a new dimension of the concept of information/cultural overload. Indeed, we must obviously gain a whole set of new literacies to use and deploy the new technologies (see Kellner, forthcoming). But in conclusion, I want to limit my focus on new technologies and techno-politics of the present day. Techno-Politics and Political Struggle Since new technologies are in any case dramatically transforming every sphere of life, the key challenge is how to theorize this great transformation and how to devise strategies to make productive use of the new technologies. Obviously, radical critique of dehumanizing, exploitative, and oppressive uses of new technologies in the workplace, schooling, public sphere, and everyday life are more necessary than ever, but so are strategies that use new technologies to rebuild our cities, schools, economy, and society. I want to focus, therefore, in the remainder of this section on how new technologies can be used for increasing democratization and empowering individuals. Given the extent to which capital and its logic of commodification have colonized ever more areas of everyday life in recent years, it is somewhat astonishing that cyberspace is by and large decommodified for large numbers of people -- at least in the overdeveloped countries like the United States. In the U.S., government and educational institutions, and some businesses, provide free Internet access and in some cases free computers, or at least workplace access. With flat-rate

monthly phone bills (which I know do not exist in much of the world), one can thus have access to a cornucopia of information and entertainment on the Internet for free, one of the few decommodified spaces in the ultracommodified world of technocapitalism. Obviously, much of the world does not even have telephone service, much less computers, and there are vast inequalities in terms of who has access to computers and who participates in the technological revolution and cyberdemocracy today. Critics of new technologies and cyberspace repeat incessantly that it is by and large young, white, middle or upper class males who are the dominant players in the cyberspaces of the present, and while this is true, statistics and surveys indicate that many more women, people of color, seniors, and other minority categories are becoming increasingly active. Moreover, it appears that computers are becoming part of the standard household consumer package and will perhaps be as common as television sets by the beginning of the next century, and certainly more important for work, social life, and education than the TV set. Moreover, there are plans afoot to wire the entire world with satellites that would make the Internet and communication revolution accessible to people who do not now even have telephones, televisions, or even electricity. However widespread and common -- or not -- computers and new technologies become, it is clear that they are of essential importance for labor, politics, education, and social life, and that people who want to participate in the public and cultural life of the future will need to have computer access and literacy. Moreover, although there is the threat and real danger that the computerization of society will increase the current inequalities and inequities in the configurations of class, race, and gender power, there is the possibility that a democratized and computerized public sphere might provide opportunities to overcome these

inequities. I will accordingly address below some of the ways that oppressed and disempowered groups are using the new technologies to advance their interests and progressive political agendas. But first I want to dispose of another frequent criticism of the Internet and computer activism. Critics of the Internet and cyberdemocracy frequently point to the military origins of the technology and its central role in the processes of dominant corporate and state powers. Yet it is amazing that the Internet for large numbers is decommodified and is becoming more and more decentralized, becoming open to more and more voices and groups. Thus, cyberdemocracy and the Internet should be seen as a site of struggle, as a contested terrain, and progressives should look to its possibilities for resistance and circulation of struggle. Dominant corporate and state powers, as well as conservative and rightist groups, have been making serious use of new technologies to advance their agendas and if progressives want to become players in the political battles of the future they must devise ways to use new technologies to advance a progressive agenda and the interests of the oppressed and forces of resistance and struggle. There are by now copious examples of how the Internet and cyberdemocracy have been used in progressive political struggles. A large number of insurgent intellectuals are already making use of these new technologies and public spheres in their political projects. The peasants and guerilla armies struggling in Chiapas, Mexico from the beginning used computer data bases, guerrilla radio, and other forms of media to circulate their struggles and ideas. Every manifesto, text, and bulletin produced by the Zapatista Army of National Liberation who occupied land in the southern Mexican state of Chiapas in 1994 was immediately circulated through the world via computer networks. In January 1995, the Mexican government moved against the

movement and computer networks were used to inform and mobilize individuals and groups throughout the world to support the Zapatistas struggles against repressive Mexican government action. There were many demonstrations in support of the rebels throughout the world, prominent journalists, human rights observers, and delegations travelled to Chiapas in solidarity and to report on the uprising, and the Mexican and U.S. governments were bombarded with messages arguing for negotiations rather than repression; the Mexican government accordingly backed off their repression of the insurgents and as of this writing in August 1997, they have continued to negotiate with them. Earlier, audiotapes were used to promote the revolution in Iran and to promote alternative information by political movements throughout the world (see Downing 1984). The Tianenaman Square democracy movement in China and various groups struggling against the remanents of Stalinism in the former communist bloc and Soviet Union used computer bulletin boards and networks, as well as a variety of forms of communications, to circulate their struggles. Opponents involved in anti-nafta struggles made extensive use of the new communication technology (see Brenner 1994 and Fredericks 1994). Such multinational networking and circulation of information failed to stop nafta, but created alliances useful for the struggles of the future. As Witheford (forthcoming) notes: "The anti-nafta coalitions, while mobilizing a depth of opposition entirely unexpected by capital, failed in their immediate objectives. But the transcontinental dialogues which emerged checked -- though by no means eliminated--the chauvinist element in North American opposition to free trade. The movement created a powerful pedagogical crucible for cross-sectoral and cross-border organizing. And it opened pathways for future connections, including electronic ones, which were

later effectively mobilized by the Zapatista uprising and in continuing initiatives against maquilladora exploitation." Thus, using new technologies to link information and practice, to circulate struggles, is neither extraneous to political battles nor merely utopian. Even if material gains are not won, often the information circulated or alliances formed can be of use. For example, two British activists were sued by the fastfood chain McDonald's for distributing leaflets denouncing the corporation's low wages, advertising practices, involvement in deforestization, harvesting of animals, and promotion of junk food and an unhealthy diet. The activists counterattacked, organized a McLibel campaign, assembled a website with a tremendous amount of information criticizing the corporation, and assembled experts to testify and confirm their criticisms. The five-year civil trial, ending ambiguously in July 1997, created unprecedented bad publicity for McDonald's and was circulated throughout the world via Internet websites, mailing lists, and discussion groups. The McLibel group claims that their website was accessed over twelve million times and the Guardian reported that the site "claimed to be the most comprehensive source of information on a multinational corporation ever assembled" and was indeed one of the more successful anticorporate campaigns (February 22, 1996; visit http://www.envirolink.org/mcspotlight/home.html). Many labor organizations are also beginning to make use of the new technologies. Mike Cooley (1987) has written of how computer systems can reskill rather than deskill workers, while Shosana Zuboff (1988) has discussed the ways in which high-tech can be used to "informate" workplaces rather than automate them, expanding workers knowledge and control over operations rather than reducing and eliminating it. The Clean Clothes Campaign, a movement

started by Dutch women in 1990 in support of Filipino garment workers has supported strikes throughout the world, exposing exploitative working conditions (see their website at http://www. cleanclothes.org/1/index.html). In 1997, activists involved in Korean workers strikes and Merseyside dock strike in England used websites to gain international solidarity (for the latter see http://www.gn.apc.org/lbournet/docks/). Most labor organizations, such as the North South Dignity of Labor group, note that computer networks are useful for coordinating and distributing information, but cannot replace print media that is more accessible to more of its members, face-to-face meetings, and traditional forms of political struggle. Thus, the trick is to articulate one's communications politics with actual political movements and struggles so that cyberstruggle is an arm of political battle rather than its replacement or substitute. The most efficacious Internet struggles have indeed intersected with real struggles ranging from campaigns to free political prisoners, to boycotts of corporate projects, to actual political struggles, as noted above. Hence, to capital's globalization from above, cyberactivists have been attempting to carry out globalization from below, developing networks of solidarity and circulating struggle throughout the globe. To the capitalist international of transnational corporate globalization, a Fifth International of computer-mediated activism is emerging, to use Waterman's phrase (1992), that is qualitatively different from the party-based socialist and communist Internationals. Such networking links labor, feminist, ecological, peace, and other progressive groups providing the basis for a new politics of alliance and solidarity to overcome the limitations of postmodern identity politics (on the latter, see Best and Kellner 1991, 1997, and forthcoming). Moreover, a series of

struggles around gender and race are also mediated by new communications technologies. After the 1991 Clarence Thomas Hearings in the United States on his fitness to be Supreme Court Justice, Thomas's assault on claims of sexual harassment by Anita Hill and others, and the failure of the almost all male US Senate to disqualify the obviously unqualified Thomas, prompted women to use computer and other technologies to attack male privilege in the political system in the United States and to rally women to support women candidates. The result in the 1992 election was the election of more women candidates than in any previous election and a general rejection of conservative rule. Many feminists have now established websites, mailing lists, and other forms of cybercommunication to circulate their struggles. Likewise, African-American insurgent intellectuals have made use of broadcast and computer technologies to advance their struggles. John Fiske (1994) has described some African-American radio projects in the "techostruggles" of the present age and the central role of the media in recent struggles around race and gender. African-American "knowledge warriors" are using radio, computer networks, and other media to circulate their ideas and counter-knowledge on a variety of issues, contesting the mainstream and offering alternative views and politics. Likewise, activists in communities of color -- like Oakland, Harlem, and Los Angeles -- are setting up community computer and media centers to teach the skills necessary to survive the onslaught of the mediazation of culture and computerization of society to people in their communities. Obviously, rightwing and reactionary groups can and have used the Internet to promote their political agendas. In a short time, one can easily access an exotic witch's brew of ultraright websites maintained by the Ku Klux Klan, myriad neo-Nazi groups including Aryan Nations and various

Patriot militia groups. Internet discussion lists also promote these views and the ultraright is extremely active on many computer forums, as well as their radio programs and stations, public access television programs, fax campaigns, video and even rock music production. These groups are hardly harmless, having promoted terrorism of various sorts ranging from church burnings to the bombings of public buildings. Adopting quasi-Leninist discourse and tactics for ultraright causes, these groups have been successful in recruiting working class members devastated by the developments of global capitalism which have resulted in widespread unemployment for traditional forms of industrial, agricultural, and unskilled labor. The Internet is thus a contested terrain, used by Left, Right, and Center to promote their own agendas and interests. The political battles of the future may well be fought in the streets, factories, parliaments, and other sites of past struggle, but all political struggle is already mediated by media, computer, and information technologies and will increasingly be so in the future. Those interested in the politics and culture of the future should therefore be clear on the important role of the new public spheres and intervene accordingly

घरबाली आ बगिया। संगहि सड़क नाटक अछि : चिन्हियौ नेपाल, लेहुआयल आँचर, नै आब नै, ककर लाल, कोंटा सिंगार आदि।

द्वितीय : रूपम श्री (सहरसा)

सुश्री रूपम श्रीक जन्म सहरसामेँ भेलन्हि। अहाँ स्नातकमे पढ़ैत छी संगहि संगीतसँ सेहो प्रभाकर कऽ रहल छी। रंगमंचसँ लगाव अहाँकेँ सुजीक प्रयाससँ १९९५ सँ भेल। रूपम श्री विभिन्न संस्था संग रंगमंच कऽ रहल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि इप्टा, पंच कोसी। हिनका द्वारा कएल गेल महत्वपूर्ण नाट्य प्रस्तुति अछि : मधुश्रावणी, कनियाँ पुतरा, पाँच पत्र। रूपम श्रीक प्रिय नाटककार छथि महेन्द्र मलंगिया आ प्रिय निर्देशक छथिन उत्पल झा। मैथिली रंगमंचमेँ काज क'र' मे नीक लगैत अछि। २००३ मे खगौल, पटनामे अहाँकेँ सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रीसँ सम्मानित कएल गेल, तरंग महोत्सवमे उत्कृष्ठ नृत्यक लेल द्वितीय पुरस्कार राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ अहाँ ग्रहण केलहुँ।

तृतीय : कल्पना मिश्रा (दिल्ली)

सुश्री कल्पना मिश्राक जन्म मिथिलाक नागदह गाममे भेलन्हि। बच्चेसँ कल्पना जीक लगाव संगीतसँ भऽ गेलन्हि। अहाँ शास्त्रीय संगीतक प्रशिक्षण प्रयाग विद्यापीठ संगीत समिति, इलाहाबादसँ प्राप्त केलहुँ। अहाँक शिक्षा दिक्षा बेगूसरायमे भेल। पहिने हिनक झुकाव मैथिली संगीत दिस भेल, तत्पचात ई अभिनय दिस सेहो आकर्षित भेलीह। अहाँ दिल्ली स्थित मिथिलांगन संस्थासँ रंगकर्म कऽ रहल छी। मैथिलीक संग भोजपुरी, हिन्दीमे सेहो अहाँ लगातार अपन पहचान बनेबामे सफल भेलहुँ अछि। रंगमंचक संग अहाँ लगातार फिल्म, टेलीविजनक लेल काज कऽ रहल छी। कल्पना जी कतेको मैथिली नाट्य प्रस्तुतिमे अपन अभिनय प्रतिभा देखा चुकल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि : जट जटिन, उगना हॉल्ट, सामा चकेबा आदि। हिनक इच्छा छनि जे महिला कलाकारक प्रति मिथिला समाजक नजरियामे बदलाव अएबाक चाही। कल्पना जीक प्रिय निर्देशक छथि संजय चौधरी आ प्रिय नाटककार महेन्द्र मलंगिया।

सूचना: पंकज पराशरकेँ डगलस केलनर आ अरुण कमलक रचनाक चोरिक पुष्टिक बाद (http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr)बैन कए विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ निकालि देल गेल अछि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५, १६४.१००.८.३, २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....**पंकज पराशरकेँ बैन कए विदेह साहित्य आन्दोलनसँ। निकालल जा रहल अछि।**

सम्पूर्ण दस्तावेज मूल आ पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ , २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....क चोरुक्का *नीचाँक लिंकपर सेहो अछि।*

http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr

विदेहमे किछु अनोनिमस ई-मेल अएलाक बाद ओकर इन्क्वायरीक बाद चेतना समिति द्वारा पंकज पराशरकेँ देल सम्मानकेँ वापस लेबा लेल आ एहि लेखककेँ बैन करबा लेल ई हमर (चेतना समितिक आजीवन मेम्बरक हैसियतसँ) आधिकारिक अनुरोध अछि आ इन्क्वायरीक विस्तृत विविचन नीचा देल जा रहल अछि। कृपया चेतना समिति एहि विषयपर अपन आपात बैसकी करए आ उचित निर्णय लए से अनुरोध।- गजेन्द्र ठाकुर

इन्क्वायरीक विवरण:

पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ ओकर सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि तरहक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो Douglas Kellner क Technopolitics क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक रूपमे नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबओलक। तकर पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२. एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकेँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकेँ हटाओल जा रहल अछि। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) आ आन कार्रवाही लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि। ३.पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल kellner@gseis.ucla.edu पर "पहल" पत्रिका वा तकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणसँ nishikant@jagran.com, sanjay@jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। डगलस केलनरक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहल पत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com पर सेहो पहल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकक पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलक जे एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ

धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरेबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सत्य कथा। दरभंगामे रहैत रही, छतपर हम आ हमर एकटा पिसियौत भाइ साँझमे ठाढ़ रही। सोझाँमे सरवनजीक घरक बाअड़ीमे खूब लताम फड़ल छलन्हि। हमर पिसियौत भाइ हुनका इशारा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बेचारे दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि रस्तामे हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बच्चा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बच्चाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरवन जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बच्चा हुनका भैया कहि सम्बोधित कएलकन्हि आ पाँचटा लताम मँगलकन्हि- से कोना नञि दितियैक- सरवनजीक कहब छलन्हि। आब पंकज पराशर प्रसंगमे की भेल से देखी। प्रदीप बिहारीजीक बेटा प्रणवकेँ पंकज पराशर नोम चोम्स्की आ डगलस केलनरक रचना दैत छथिन्ह आ तकर अनुवाद करबा लेल कहै छथिन्ह। बेचारा जान लगा कऽ अनुवाद कऽ दैत छन्हि, ई सोचि जे जिनका ओ चच्चा कहै छथि- जे क्रान्तिकारी विचारक छथि (मार्क्सवादी!!!) से कोनो नीक पत्रिकामे ई अनुवाद छपबा देथिन्ह। मुदा छह मासक बाद चच्चाजी कहै छथिन्ह जे नोम चोम्स्की बला रचना हेरा गेल आ डगलस केलनर बला रचनाक अनुवाद नञि नीक रहए से रिजेक्ट भऽ गेल। मुदा क्रान्तिकारी कवि (चोरुक्का सेहो विवरण नीचाँमे अछि) दुनू रचना पहल पत्रिकामे पठा दै छथि- पहल-८६ मे डगलस केलनर बला रचना छपितो छन्हि (आ से अनुवादक रूपमे नहि वरन् मूल लेखकक रूपमे) आ ओ बैन सेहो कऽ देल जाइ छथि। हमर सरवन जी एकटा बच्चा द्वारा भैया कहलापर पाँचटा लताम ओकरा दऽ दै छथिन्ह मुदा हमर पराशरजी भातिजोक पाँचटा लताम निर्लज्जतासँ छीनि लैत छथि।

आ हम हुनकर खोजबीन तखन करै छी जखन ओ विदेहंमे आइडेन्टिटी बदलि हमरा गारि पढ़ैत छथि- हुनकर रियल आइडेन्टीटी नाङट करै छी। फेर सभसँ गप करै छी आ पाठकक सहयोगसँ *आरम्भ*, *पहल* क पुरान अंक भेटि जाइत अछि जतए हिनकर कुकृत्य छन्हि।

डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइडक कथा अंग्रेजी विषएमे स्कूलमे पढ़ने रही। एकटा वैज्ञानिक रहथि डॉ. जेकील हृदएसँ कलुषित। मोन करन्हि जे चोरि-उच्चक्कागिरी करी। से एकटा द्रवक खोज कएलन्हि जकरा पीबि कऽ ओ मिस्टर हाइड बनि जाथि आ रातिमे चोरि-उच्चक्कागिरी करथि। एक रातुक गप अछि जे मिस्टर हाइड ककरो हत्या कऽ भागि रहल रहथि मुदा भोर भऽ गेल रहै से लोक सभ हुनका खेहारए लगलन्हि। ओ डॉ.जेकीलक घरमे पैसि गेलाह (कारण डॉ.जेकील तँ ओ स्वयं छलाह) आ केबार भीतरसँ लगा लेलन्हि। लोक सभ चिन्तित जे डॉ. जेकीलकेँ ई बदमाश मारि देतन्हि से ओ सभ केबार पीटए लगलाह। मिस्टर हाइड द्रव पीअब शुरु केलन्हि मुदा ओहि दिन दवाइमे रिएक्शन

नहि भेलैक आ हुनकर रूप डॉ. जेकीलमे नहि बदलि सकलन्हि। आब एहि कथाक अन्तमे मिस्टर हाइड माथ नोचि रहल छथि जे हुनका अपन समस्त पापक प्रायश्चित मिस्टर हाइड बनि करए पड़तन्हि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... हिनकर रियल आइडेन्टिटी हम नाङट करै छी आ ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

मैथिलमे ई एकटा तथ्य छै जे चुपचाप जे गारि सुनै अछि तकरा कहल जाइ छै जे ओ बड़ड नीक लोक छथि। मुदा समए आबि गेल अछि मिस्टर हाइड सभकें देखार करबाक आ ओकरा कठोर सजा देबाक। मुदा ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि। मैथिलीमे बहुत गोटे छथि जे हिन्दीमे बैन भेल लेखककेँ पोसै छथि (मैथिली सेवाक लेल) जे जखन ककरो गारि पढ़बाक होए तँ ओ तकर प्रयोग कऽ सकथि।

एहि ब्लैकमेलरक डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइड बला चरित्र मैथिल सर्जनाक विरोधमे मैथिल-जन पत्रिकामे एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पोसैत रहल।

आरम्भमे सेहो ई एकटा चिट्ठी मैथिलीक सम्पादकक विरोधमे देलन्हि जे छपि गेल आ ओकर घृणित भाषाक कारण भाइ साहेब राजमोहन झाकेँ माफी माँगए पड़लन्हि आ फेर ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुभेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हाइडक ब्लैकमेलिंग आ एब्युजक द्वारे अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैला भरि गेलाक बाद ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

जे.एन.यू.मे छात्र-छात्रा सभसँ पोस्टकार्ड पर साइन लऽ ओहिपर अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घुमैत अपस्याँत कथित गोल्ड मेडेलिस्ट(!!!) मिस्टर हाइडकेँ चिड़ैक खोता तोड़बाक सख शुरुहेसँ छन्हि। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन ई सहरसामे सभसँ पुछने फिरै छथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फाएदा छै तखन ई एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपस्याँत मैथिल युवा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमोहन झा जीक शब्दमे मैथिलीसँ प्रेम नञि करैत अछि। ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि आ जखन ओ माफ कऽ देलखिन्ह तखन फेर हुनका गारि पढ़ब शुरु कऽ देलन्हि। हमरासँ लिखित मेल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिस्टर हाइडक माथ नोचब स्वाभाविके। मिस्टर हाइड ककरो इनकम टैक्स, कस्टम वा सरकारी नोकरीमे देखै छथि, सुनै छथि तँ पाइक मारल जेकाँ हिनका मोनमे ब्लैकमेलिंग कुलुबुलाए लगै छन्हि, प्रायः आनन्द फिल्मक एक गोट कलाकार जेकाँ- जे एहने मिस्टर

हाइड लेल कहै अछि- जे ई डॉक्टर रहितए तँ किडनी बेचितए, से ओ जतए छथि ओतहु ब्लैकमेलिंगक धन्धा शुरू कैये देने छथि। मुदा चिड़ैक खोता उजाड़ैत-उजाड़ैत मधुमाखीक छत्ता उजाड़बाक गल्ती एहेन ब्लैकमेलर कैये दैत अछि। जे सरकारी नोकरी वा इन्कम-टैक्स, कस्टममे ई ब्लैकमेलर रहितए तँ देश जरूर बेचि दैतए।

जे कियो सूचनाक स्वतंत्रताक नाम पर, अन्तर्जालपर स्वतंत्रताक नामपर वा साहित्यिक समालोचनाक नामपर गारि पढ़ैत अछि तँ सर्वदा मोन राखू जे ई सभ स्वतंत्रता अहूँकेँ प्राप्त अछि। एहि घटनाक विषएमे अहाँसँ पत्रकार, न्यूजपेपर, पत्रिका आ हिन्दीक गणमान्य लेखकगण/ प्रोफेसर/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करेबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल ggajendra@gmail.com पर सूचित करू।

कोना पकड़ाएल ई चोर:-स्टेप बाइ स्टेप:-

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com

Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४८ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३.

Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४५ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

pahal=- ८६, aarambh -२३ aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.

Reply ०१/२५/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed२५३a/newDK/intell.htm ehi link par douglas kellner ke lekhak anuvad pahal-८६ ke page १२५-१३१ par achhi-soochnak lel dhanyad pathakgan.

Reply ०१/२४/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...

ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake

Me" hoinh aa Aarambh (ank २३, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March २०००) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.
Reply ०१/२४/२०१० at ०८:०२ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२३/२०१० at ११:४० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and addresses parasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.
Reply ०१/२१/२०१० at १०:०० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
the htpps host matches reliance communications and the corresponding email gamghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com
Reply ०१/२१/२०१० at ०८:५० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, the organisation being taken into confidence.
Reply ०१/२१/२०१० at ०६:१३ PM
१४

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३ aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.
Reply ०१/१८/२०१० at ११:१९ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi
Reply ०१/१८/२०१० at ०९:२७ PM
from ISP २२०.२२७.१७४.२४३ of Dainik Jagran he abused many times earlier too to others. अविनाशकेँ सेहो २२०.२२७.१७४.२४३ आइ.एस.पी.सँ एहि प्रकारक ई-पत्र अबैत रहै मुदा ओ मामिला खतम कs देने रहथिन। ओ टिप्पणी सभ एतेक घृणित छैक जे एतए नहि देल जा रहल अछि।

पाठकक संदेश: एहि घटनाक्रमपर

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu
Dear Gajendra
thanks for the detective work. was there a response?
best regards,
Douglas Kellner
Philosophy of Education Chair
Social Sciences and Comparative Education
University of California-Los Angeles
Box 951521, 3022B Moore Hall
Los Angeles, CA 90095-1521

Fax 310 206 6293
Phone 310 825 0977
http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

dear Gajendraji,
apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.
Rajiv K Verma

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi
shridharam

ओकरा सार्वजनिक नहि करबै।अहां कें सूचनार्थ पठेने छी जे पंकज पहिनेहो इ सब काज करैत रहय छलैए।
avinash

ठीक छै--_-सम्पादक।

Dear Gajendra g

You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha.

Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head jai Maithili jai Mithila

Sunil Mallick

President

MINAP, Janakpur

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.

shyamanand choudhary

Namaskar.

Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.

Dr. Ramanand Jha' Raman'

गजेन्द्र जी ,

चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं | यद्यपि हमहू चेतना क स्थाई सदस्य | जे हो. मुदा निंदास्पद घटना तं ई थिके तें दुखी कयलक | कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यानकनक हमर अपन स्नेग्रही स्वभाव, एहि दुर्घटनाक बाद तं आब चिंता मे ध' देलकय|

देखी,

हम अपने विस्मित भेलहुँ| बहुत दु:खद दृश्य | सृजन विरूद्ध साहित्यिक सन्दर्भ मे ई घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुरूप प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत

सस्नेह,

गंगेश गुंजन.

PRIYA MAITHILJAN

APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. DHANYABAD.

SAPREM,

PK CHOUDHARY

Gajendra babu

pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke

seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.
subhash Chandra yadav

प्रिय ठाकुरजी!
(माननीय संपादक)
"विदेह ई-पत्रिका" [मैथिली]
एखन धरिक उपलब्ध साक्ष्यक आधार पर हम अपनहिक संग जाएब पसिन्न करब।
शंभु कुमार सिंह
Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar;s duplicay
Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more
In the past Pankaj Parasar was accused for lifting the senses and emotions from poems of doyens of Hindi and Maithili poets. What Pankaj did should be condemned. I regret for him.

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country .–

VIJAY DEO JHA
Dear Gajendraji,
I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.
हां अपन मेल में लिखने छी जे विदेह आर्काइव से संबंधित लेखक'क सबटा रचना हटा लेल जायत। अहि से आर्काइव सं ई प्रसंग सेहो, एकर साक्ष्य सेहो मेटा जायत। हमर मत ई जा साक्ष्यब रहबाक चाही निक आ अधलाह दुनु तरहक काज'क। अहां अप्पसन कामेंट आ र्निणय सेहो आर्काइव मे जा के संबंधित रचना के पोस्टा-स्क्रिाप्टर के रुप मे भविष्या'क पाठक'क लेल सुरक्षित राखि सकैत छियन्हि।

ई दोहरेबाक बहुत औचित्यक नहि जे विदेह निक लागि रहल अछि आ अहांक परिश्रम एकदम देखा रहल अछि।
ईति,
सदन।

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole.
I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean.

Thanx for enlightening me on the subject.

Regards,
Bhalchandra Jha.

पंकज पराशरकेर एहन कार्य पर स्मरण अबैत अछि करीब बीस-पचीस साल पहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दरभंगासँ म,म,डॉ, सर गंगानाथ झाक एकमात्र मैथिलीक कारुणिक पदकेँ एक गोट कवि द्वारा अपन कहि प्रसारित कए देल गेल छल, जे बादमे (सजग श्रोता द्वारा सूचना देलाक बाद) आजन्म बैन कए देल गेलाह । कहबाक तात्पर्य जे जँ हम मैथिल दरभैगा- मधुबनीमे गंगानाथ बाबूक पदकेँ अपन कहि सकैत छी तँ ई कोन बड़का गप । निश्चये एहन रचनाकारकेर सङ्ग कड़गर डेग उठाएब आवश्यक ।
ajit mishra

Dear Gajendrajee,
We should take strong step to prevent such intellectual cheats.
My support is always with you.
K N Jha
This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,
Prof. Udaya Narayana Singh
प्रियवर ठाकुर जी,
मैथिल साहित्यकार आब साइबर क्राइम सेहो क रहल छथि, ई जानि अपार प्रसन्नता भेल |
पंकज पराशर के नकारात्मक बुद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल प्राइज सा सम्मानित कराय चाहैत छी |
बुद्धिनाथ मिश्र

Sampadak Mahoday
Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee
ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi
Sadar
SHIV KUMAR JHA

गजेन्द्र भाई,
नमस्कार ! मैथिली मे एहि तरहक काज लगातार भ' रहल अछि । किछु व्यक्ति एहि धंधा मे अग्रसर छथि । मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनभिज्ञताक फायदा कतेको अंग्रेजी पढ़निहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि। पंकज जीक पहल मे छपल लेख के हम सेहो पढ़ने हीं आ किछुए दिनक बाद हम नेट पर मूल लेखकक आलेख के सेहो पढ़लहु । हमरा त' आश्चर्य लागल छल जे पंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक त' बदलि लैतथि मुदा हुनका एतेक ज्ञान रहितनि तखन की छल।

एतबे नहि , हिनक बहुत रास कवितो अंग्रेजी साहित्य स' हेर-फेर कयल गेल अछि । खैर ! जे करथि ... । मुदा एहि बेर कहाबत ठीक होबाक चाही " सौ सोनार के त' एक लोहार के "। प्रकाशन मे जे भी कियो व्यक्ति गलती क' रहल छथि हुनका गंभीर क्रिमिनल बुझबाक चाही। धन्यवाद एहि लेल अहाँ के जे एतेक जोरदार तरीका स' एहि गप्प के उठैलहु।
अहाँक
प्रकाश चन्द्र ।
pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal
kamini

Gajendr jee,
maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai.
हमर मनतब एतबे, जे एक बेर अहां देखार क देलहुं, आब छोडि देल जाओ. हिन्दीयो मे एहिना भ रहल छै. बेर बेर आ खराब भाषा मे लिखल मोन के दुखी करैत अछि. फेर लागैत अछि जे अहि मे समय कियैक नष्ट करी?
हिन्दुस्तान मे जाति आ सेहो मैथिली से जाति नयि जाएत. हम एकरा नयि मानैत छलहुं मुदा आब 30 बरख से मैथिली मे लिखनाक बाद आब देखल जे एक ओर
1 मैथिली साहित्य मे लिली जी, उषा जी आ शेफलिका जी के बाद यदि किओ नाम लैत अछि त हमर.
2 एखनो कोनो पत्रिका बै छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइते छै.
3 एखनो हम ओतबे सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी.
4 दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन के हम अपने तुरिया बुझैत छी) के बाद एहेन कोनो सशक्त कोन, महिला लेखने नयि आएलए.

5 ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी जे हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथव हमर रचना पर किछु नयि लिखल गेलए, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आन किओ. जहन हमर दशक केर चर्च होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नयि रहैत छै. हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोडि देल जाइत छै.

6 एतेक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि. हम ओकरा पुन: टाइप करबा के अहां लग पठायब.

7 जाति पाति धर्म आ द्वेष पर कहियो ध्यान नयि देलाक कारणे त कही हमर ई स्थिति नयि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि.

8 हमर शिक्षक, जे स्वयं हिन्दी के ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बुझेने रहलाह जे हम मैथिली मे लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) से नयि छी, तैं हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नयि नोटिस करताह, कहियो किछु नयि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम के आगरह कारणे हम हुनकर बात नयि माननियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहलअए जे हुनकर कहबी सही छलन्हि की?

9 एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियो. ओकरा विरुद्ध किछु करियु. मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था चाइ, चेतना समिति सनक, सभ बेर विद्यापति पर्व मनबैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक केर पोथी सभ बेर 5-7 टा निकालैथु, से नयि होबैत छन्हि.

10 हमरा भेटल जानकारी के मोताबिक विद्यापति हॉल किराया पर चढै छै. तकरा मे कोनो आपत्ति नयि, यदो ओकरा से किछु आय होबै. मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाएत, त; नयि भेटै छै. यदि ओकर शुल्क चुका दी, तहन त किरायाके रूप मे किऊ ल' सकि छै. एकरा सभ के उजागर करी.

11 व्यक्ति से संस्था पैघ होइत छै. जतेक संस्था सभ छै, तकरा पर लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विभाग सहित.

12 लिली रेक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मरीचिका' केर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल से हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य" मे हम पिछला 25 साल से अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा से अनुवादक नमूना मांगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे स्वनाम धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नयि बूझल त कोनो मैथिल साहित्यकार से पूछि सकैत छलाह. ई तहिने भेलै, जेना एक बेर एक गोट चैनल ऋषिकेश मुखर्जी से हुनकर बायोडाटा मंगने छल आ एखनि पढल समाचारक अनुसारे आ. जानकी वल्लभ श्हस्त्री से हुनकर बायोडाटा पद्मश्री लेल मांअगल गेलैय.

13 अपन विनम्रता दर्शाबैत हम लिली जीक दू तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियन्हि. तैयो अई पर कोनो विचार नयि. लिखला के बाद हमरा कहल गेल जे हम लिली जी से साहित्य अकादमी के अनुवादक अधिकार दियाबे मे मददि करी. आरे भाई, अहां के अनुवाद से मतलब अछि ने, आ जहन हम अनुवाद क; के देब' लेल तैयार छी तहन अकादमी के किअयैक अधिकार चाही? अई लेल जे अकादमी अपन पसीनक आदमी के अनुवाद लेल द; सकय. एखनि धरि ओकरा पर निपटारा नयि भेलैये. अकादमी से फेर कोनो पत्र नयि आएल अछे. अनुवाद तैयार राखल छै. लिली जी आब बहुत बुजुर्ग भ; गेल छथि. हुनक मात्र इयैह इच्छा छै (आ बहुत स्वाभाविक) जे हुनकर पोथी सभ हुनका सोझा मे प्रकाशित भ; जाए.

14 लिली जी के पोथी हिन्दी मे आनबाक श्रेय हमरे अछि, ई मनितहुं ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल

समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
15 मैथिली के भारतीय ज्ञानपीठ से पुस्तक प्रकाशन लेल हमही आगां एलहुं आ प्रभास जी आ लिली जी के पोथी बहार भेलै.भारतीय ज्ञानपीठ से मैथिली पुस्तक प्रकाशन के श्रेय हमरे छन्हि, ईहो मनैत ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
गजेन्द्र जी, मैथिलीक ई सभ मानसिकता पर आन्दोलन करी जाहि से रचनाकार आ वरिष्ठ रचनाकार सभ के अपमानित नयि होब' पडै. अहां चाही त' एकरा विदेह पर द' सकै छी.
हम दोसर बात सेहो लिखि के पठायब. मुदा हम फेर कहब, जे हम व्यक्ति के नयि संस्था आ व्यक्ति के मानसिकता के दोष देबन्हि. लोक पढथु आ पूचाथु ई स्वनामधन्य सभ से जे जकरा से अहां के गोलौंसी अछे, तकरा पर अहां लिखब आ जकरा से नयि अछे, जे मौन भावे लिखि रहलए कोनो विविआद मे पडल बगैर, हुनका लेल ई व्यवहार?
-विभा रानी.
Shri gajendraji
good work.
Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat.
chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi.
Saadhuvaad.
manoj pathak.

संगहि "विदेह" कैँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ १४ जनबरी २०१०) ९३ देशक १,०४२ ठामसँ ३६,७१७ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी.सँ २,११,८९१ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।- गजेन्द्र ठाकुर

संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्त्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्त्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मादेँ।]

१. श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२. श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद। आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।



रमेश

बहस- पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकँ जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत। ‘‘विदेह’’क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अइ पोल-खोल लेल कएक युग धरि विलम्बित भऽ कऽ निबद्ध रहत, से ‘‘समय कँ अकानैत’’ कहब कठिन अछि।

साहित्योमे चौर्यकलाक उदाहरण पहिनहुँ अबैत रहल अछि गोटपगरा। मुदा एक बेरक चोरि पकड़ा गेलाक बाद प्रायः चोरिक आरोपी साहित्यकार मौन-व्रत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठंढ़ाइत रहल अछि।

मुदा ताहि परम्पराक विपरीत अइ बेरक चोर ’सिन्हा चोर’ निकलल अछि आ विगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि- सेन्ह काटिकऽ। आ तेहेन महाचोरकँ मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कऽ पुरस्कृत केलक अछि आ समीक्षाक

चासनीमे चोरायल कविता सबकेँ बोरि देल गेल अछि।

विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोगे टा नहि लगौलक, अपितु एहेन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कऽ अपन ‘‘बोल्डनेस’’ सेहो प्रदर्शित केलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः ‘‘डेयर डेभिल’’ होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओही सीढ़ीकेँ निचाँ खसा दैत अछि। फेर ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि-बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखेबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहेन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तूरकेँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरुरति किऐक होइत छनि?

‘‘विदेहक’’ ‘‘इनक्वायरीक विवरण’’ पढ़ि कऽ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। पहल-८६ आ आरम्भ-२३ मे जे पोल खूजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेवाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। ‘‘मैथिल ब्राह्मण समाज’’, रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा ‘‘विनोद’’ आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन

अछि जे पुरस्कृत करेबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हैत। "विदेह" द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बावजूद एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करेवाक वा आने कोनोटा कार्रवाई करवाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सर्द गुम्मी लधने अछि। एहेन "जड़-संस्था" सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। "विलम्बित कएक युग मे निबद्ध" क भूमिकामे अनेरो विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता कें विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल अँखिगर चोरे एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः मि. हाइडक कोन ठेकान? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। तकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किऐक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पोलिटिक्स की थिक- टेकनिकल पोलिटिक्स थिक, सैह किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानोक यात्रा कयल जा सकैत अछि। "टेक्नो-पोलिटिक्सक" बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह "महेश" पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि। प्रो. अरुण कमलक "नये इलाके में" सेंधमारी कऽ कऽ "समय कँ

अकानल'' जा सकैत अछि। आर तँ आर, अइ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ ''विलम्बित कएक युग...'' पोथीक समीक्षा लिखबा कऽ ''मिथिला दर्शन'' (५) सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत चछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक ''टेक्नो पोलिटिक्स''!

ई मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आरम्भ-२३ आ पहल-८६ कोलकातामे नहि भेटल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक ''चन्द्रभागा में सूर्योदय'' आ एही शीर्षकक नारायणजीक कविता (चन्द्रभागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछऽवला कविताक भावार्थ किऐक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा गेलनि? एकरा ''प्रायोजित समीक्षा'' किऐक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ वेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? ओइ सभ कविताक कनियोँ ''छाया''क शंको नहि भेलनि समीक्षककेँ? ''सभ्यताक सभटा मर्मान्तक पुकार''क नोटिस लेबऽवला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असभ्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक ''पोजीशन फॉल्स'' भऽ जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियें रहनि, उदय चन्द्र झा ''विनोद'' केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिज्ञान तँ पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे ''पराशर'' मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जतेक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भऽ कऽ तीन बेर चोरि

केनाइ “पराशर” महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए ने लेलनि, जखनकि हुनका विचारेँ “मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकऽ विषवमन करैत अछि”(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ “विष-वमन” कोना ने लगौक? हुनका सन “पढ़ाकू” समीक्षक-पाठककेँ “फॉल्स पोजीशन”मे अननिहार “एक्सपर्ट आ हैबिचुएटेड” साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अंततः विदेह-सदेह टा किऐक निन्दा केलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका किऐक नहि केलक? डॉ. रमानन्द झा “रमण” इन्टरनेटपर निन्दा करैत छथि तँ घर-बाहर पत्रिकामे किऐक नहि जकर ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने पत्रिकामे कोना निन्दा करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि लैत अछि, जानकारी भेलाक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त भेलाक बादो? नचिकेताजी नेटपर निन्दा करताह आ “विदेह”मे छपत तँ “मिथिला दर्शन”मे किऐक नहि निन्दा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-पोथीपर छपत, तखन ओही पोथीक चोरि कयल कविताक निन्दा कोना छपत? चारु भाग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजाने मे सही) हुनको लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा

रहल? एहेन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता किऐक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय कतेक उचित, जखन कि ई चोरि तेसर बेरक चोरि थिक आ से छपि-कऽ भण्डाफोड़ भेल अछि। एकरा वरेण्य आ वरीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब किऐक नहि मानल जाय, जखनकि आरम्भ, मैथिल-जन, पहल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहेन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चेन्ह लागल होइक? की पोथीक आकर्षक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु ‘‘ठिक्के छै भाइ’’? अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केलनरक ‘‘टेक्नोपोलिटिक्स’’ तँ छपि गेल ‘‘पहल’’मे चोरा कऽ। आब जीवकान्तजी, ज्ञान रंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पूछथु जे नोम चोम्स्कीवला रचना कतय गेल, की भेल, कोन नामें छपल? पंकज पराशरक नामें कि पदीप बिहारीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे)। ई रिसर्च एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्यिक चोरिक पोल खूजत? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखरिकेँ प्रदूषित करए देल जाय आ से कए बेर? उदय-कान्त बनि कऽ गारि पढ़वाक आदति तँ पुरान छनि डॉ. महाचोर केँ। ककरो ‘‘सरीसृप’’ कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोनो परिवारमे घोंसिया कऽ विष वमन कऽ सकैत छथि। ऑक्टोपसक

सभ गुणसँ परिपूर्ण डॉ. पॉल बाबाकेँ चोरिक भविष्यवाणी करवाक बड़का गुण छनि तेँ हिनका नामी फुटबॉल टीम द्वारा पोसल जाइत अछि, जाहिसँ “विश्व-कप”केँ दौरान अइ “अमोघ अस्त्रक” उपयोग अपना हिसाबेँ कयल जा सकय।

सहरसा-कथागोष्ठीमे पठित हिनकर पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। ई उद्घोषणा करवाक की बेगरता रहैक- से आइ लोककेँ बुझा रहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी तहिया हिनकर कथाकेँ “टिप्पणीक”क्रममे मैथिली-कथाक “टर्निंग प्वाइन्ट” मानने छलाह। आइ ओ “टर्निंग प्वाइन्ट” ठीके एक हिसाबेँ “टर्निंग प्वाइन्ट” प्रमाणित भेल, कारण कथाक ओहि शीर्षकमे सँ “नहि” हटि गेल अछि, हिनकर तेबारा चोरिसँ। हिनकर पहिल चोरि (अरुण कमलक कविता- नए इलाके में) क निन्दा प्रस्तावमे “मामाजी” आ डॉ. महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ “आरम्भ”केँ पठौने छलाह। आइ ओ हस्ताक्षर नहि केनिहार सभ कन्छी काटि कऽ वाम-दहिन ताक-झाँक करवाक लेल बाध्य छथि। द्वैध-चरित्र आ दोहरा मानदण्डक परिणाम सैह होइत अछि। अविनाश तखन तँ देखार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखैत छथि जे “एकरा सार्वजनिक नहि करबै”। नुका कऽ सूचना देवाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब हेवाक डर वा कोनो “टेक्नोपोलिटिक्स”(?) केर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ दैत अछि। जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द झा, अजित मिश्र, के.एन.झा, प्रो.नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र

झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा केलनि अछि, ततहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा "रमण", विभारानीक झाँपल-तोपल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक "प्रबल भाव-भंगिमा" साहित्यकारोक "मेंहायल आवाज"क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी तँ कमाले कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनेवाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोनो चोर बेर-बेर अपन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढ़ा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तँ मैथिलीमे माफ कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि-पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मिलन केना कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्णीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेशीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणें जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ रहि जायत? विभाजीकेँ बुझले नहि छनि जे हुनका लोकनिक

बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने “इजोड़ियाक अडैठी मोड़”। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अर्थालाभ तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे “जड़”लोक छै तँ “चेतन” लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करवाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेवाक होड़सँ बँचवाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिवालियापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर रहि जायत? विभारानीक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक श्रृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेवाको चाही आ तकरा देखार करवाक “बोल्डनेसो” हेवाक चाही। “चाही”वला पक्ष साहित्यमे बेशीए होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक “चुप्पी” एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम

तँ करिते अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझेतैक? विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर होइत छै। तँ संगठित भऽ चोरिक भर्त्सना हेवाक चाही।